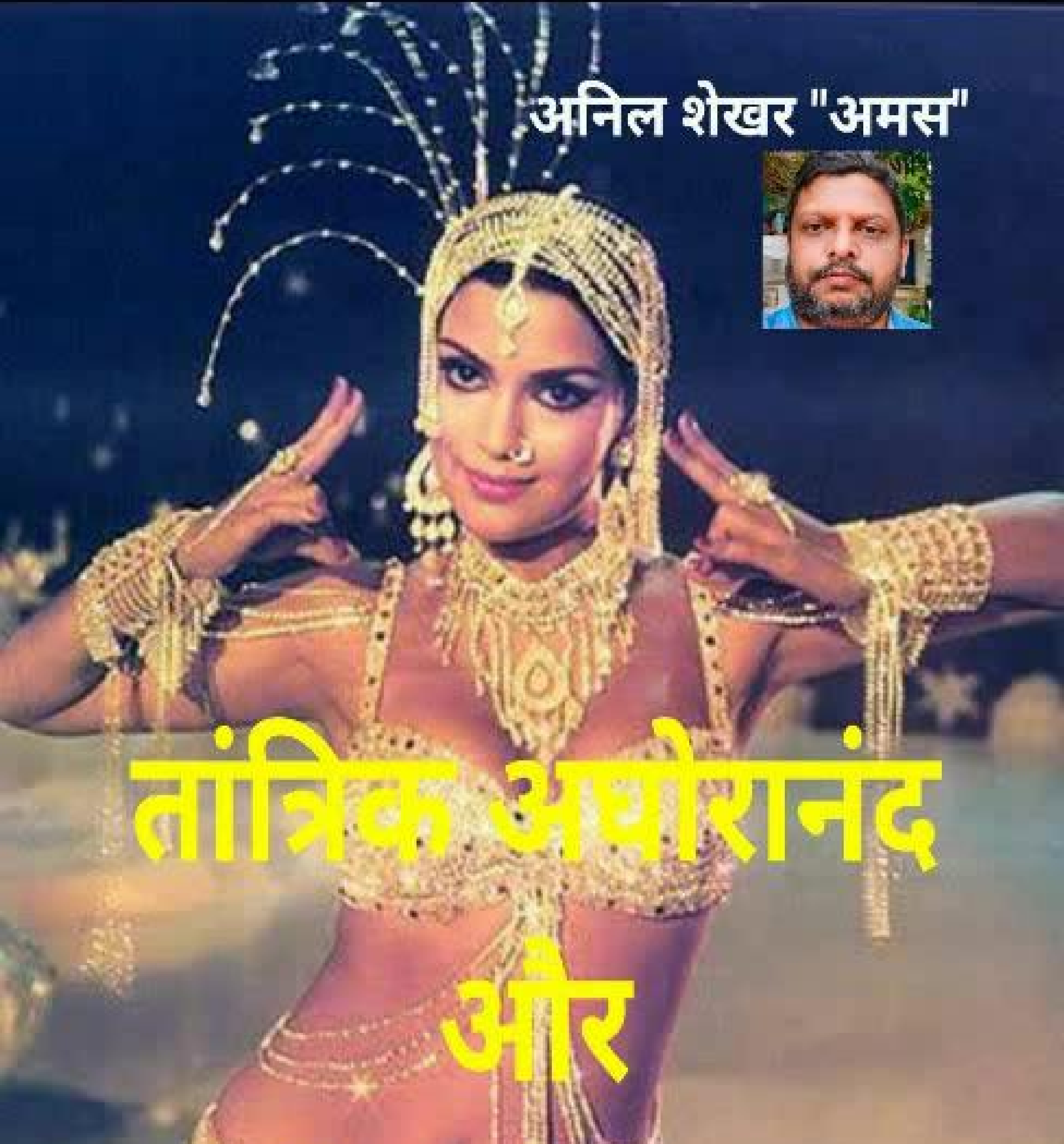
अनिल शेखर "अमस"
तांत्रिक अघोरानंद
और
चंपा बंजारन

पूर्वपीठिका

॥ श्री सदगुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥

सभी पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन ....

तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है,उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ ......

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी ......

मेरी इस कथा का नायक ,मैं , यानि "अघोरानंद", एक गृहस्थ है । जो शासकीय सेवा में था और छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग नामक शहर में रहता था । मेरी पत्नी का युवावस्था में ही देहांत हो गया । उसके देहांत के बाद मैं बेहद अकेला पड़ गया । कुछ समय बाद मेरे जीवन में अजीब अजीब सी घटनाएं घटी । मेरे गुरु ने मुझे अघोर दीक्षा प्रदान की और मुझे अघोरानंद नाम दिया । जिसके बाद मेरा साधनात्मक जीवन प्रारंभ हुआ । साधनात्मक जीवन में मुझे अलग-अलग प्रकार के अनुभव मिले । जिसमें कई बातें ऐसी हैं ....जो नहीं लिखी जा सकती ! और कई बातें ऐसी हैं ..... जो अविश्वसनीय है । बहुत सारी बातें ऐसी हैं.... जो बेहद

रोमांचक हैं ! जिसे पढ़ने में आपको आनंद भी आएगा । ऐसी ही कुछ घटनाओं को गुरु के आशीर्वाद से ! भगवती महानील सरस्वती की कृपा से ! शब्द श्रृंखला में बांधने का प्रयास किया है जो आपको पसंद आएगा ।

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है , इसलिए इसके किसी भाग का अनुकरण करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में ही उतरें , अन्यथा आपको नुक्सान हो सकता है ।

अंत में ....

यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है ....

उसका आनंद लें ...

अनिल शेखर "अमस"

anilshekhar.amas@gmail.com

डिस्क्लेमर

यह संपूर्ण कथानक काल्पनिक है और लेखक की शुद्ध कल्पना है ।

किसी वास्तविक पात्र या प्रसंग या स्थान से किसी भी प्रकार की युति अगर बैठती है तो उसे केवल एक संयोग माना जाए ।

कथा के प्रसंग में जिन साधनाओं तथा मंत्रों का उल्लेख है । उनको प्रतीकात्मक समझा जाए ।

किसी भी प्रकार की साधना तथा प्रयोग सक्षम गुरु के सानिध्य में तथा उनके निर्देशन में ही संपन्न किए जाएं , तभी उपयुक्त परिणाम प्राप्त होते हैं ।

इस कथानक में दिए गए मंत्रों को तथा साधना विधियों को लेखक की कल्पना मान कर पढ़ें तथा स्वयं किसी भी प्रकार से उनका उपयोग न करें । क्योंकि यह गुरुगम्य विषय है ।

किसी प्रकार की त्रुटि होने पर गंभीर दुष्परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं , जिसकी जिम्मेदारी आपकी स्वयं की होगी ।

नरबलि तथा अन्य प्रक्रियाओं का उल्लेख केवल कथा में रोमांच पैदा करने के लिए किया गया है। इसका किसी भी वास्तविक घटना या व्यक्ति से किसी भी प्रकार का संबंध होना महज एक संयोग है।

पाठक स्वविवेक से कार्य करें और साधना के पथ पर किसी योग्य और अनुभवी साधक या गुरु के मार्गदर्शन में ही आगे बढ़े।

कथा में उल्लिखित किसी भी प्रक्रिया का जो कानूनन अपराध हो, प्रयोग ना करें !

यह आपके लिए हानिकारक होगा।

किसी भी गैर कानूनी गतिविधि में संलिप्त होने पर आपको कानून के तहत दंड का पात्र होना पड़ेगा।

अंत में ......

इस रचना को तंत्र कथा के रूप में मनोरंजन के लिए पढ़ें तथा इस का आनंद लें।

सस्नेह

अनिल शेखर

विवरण

लेखक – अनिल शेखर “अमस”

कॉपीराइट - अनिल शेखर “अमस”

प्रकाशन – 21 जून 2021

अन्य प्रकाशित रचनाएँ

तांत्रिक अघोरानंद ।

अघोरानंद की अप्सरा ।

अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।

अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।

अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।

अघोरानंद और छाया की माया ।

अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।

अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।

अघोरानंद और भैरवम भीषणम ।

अघोरानंद और बौनों की बस्ती ।

अघोरानंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी ।

अघोरानंद और दतिया पीठ का चमत्कार ।

अघोरानंद और जटाधारी वैशाली ।

अघोरानंद और चाँदनी महल की आत्माएं ।

अघोरानंद माधुरी और ध्यानलिङ्गं ।

इतनी कथाएं अघोरानंद सीरीज मे प्रकाशित हो चुकी हैं ।

इसके अलावा कुछ कथाएं जो तंत्र विषयक हैं मगर अघोरानंद सीरिज से अलग हैं वे हैं :-

कापालिक चंडेश्वर ।

कापालिक चंडेश्वर और पूर्णानन्द ।

वह रहस्यमय युवती ।

परेतिन की शादी ।

तांत्रिक अघोरानंद

और

चम्पा

बंजारन

घर

अपना घर अपना घर होता है ।

शायद आप लोग भी इस बात को हृदय से स्वीकार करते होंगे !

बाहर चाहे आप कितना भी घूम ले !

किसी होटल में ठहर लें !

किसी पिकनिक स्पॉट पर हो आयें !

लेकिन वहां सब से लौटने के बाद जब आप अपने घर पर आते हैं !

अपने कमरे में आते हैं !

अपने बिस्तर में लेटते हैं......

तो आपको महसूस होता है कि वास्तव में सबसे आरामदायक .....

सबसे अच्छी जगह.... तो यही है ।

कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगता है ।

मेरा घर कुछ खास बड़ा नहीं था और अंदर भी कोई बहुत ज्यादा चीजें नहीं थी , लेकिन जब मैं अपने बिस्तर पर आ कर लेटा तो मुझे अपने अंदर से यही अनुभूति

हुई जैसा संभवतः कश्मीर को देखकर पर्यटकों को होती है ....

कश्मीर के बारे में कहा गया है,

"गर फिरदौस बर रुये ज़मी अस्त/ हमी अस्तो हमी अस्तो हमी अस्त"
अर्थात
धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यहीं है, यही हैं.

आशय यह कि मैं अपने स्वर्ग में पहुंच चुका था और बिस्तर पर पसर कर गहरी नींद में जा चुका था ....

नींद और महाकाली ....

अगर आपका खाना पच जाता है और आपको बिस्तर पर लेटते ही नींद आ जाती है तो आप यह मान कर चलिए कि आप दुनिया के सबसे सौभाग्यशाली लोगों में से एक है ।

हो सकता है मेरी यह बात आपको अजीब लगे मगर आपके पहचान में कई ऐसे लोग होंगे जिनको रातों को नींद नहीं आती ।
मेरे एक मित्र हैं जो रात के 2 बजे के बाद सोते हैं क्योंकि उनको 2 बजे तक नींद नहीं आती ।

इसी प्रकार से अगर कोई चीज खाने के बाद आपको वह हजम हो जाए यानी आपका पेट गड़बड़ ना करें और सुबह आपका शौच सही सलामत चला जाए.....
आसानी से.....
तो वह भी एक बहुत बड़ा सौभाग्य है ।
जिनको कब्ज या बदहजमी की शिकायत होती है या पेट से संबंधित कोई भी समस्या होती है उनको कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है ।

जिसमें सर दर्द से लेकर मानसिक तनाव तक बहुत कुछ साबित है ।

हमारे शरीर में कुंडलिनी शक्ति स्थापित होती है जिसमें अनेक चक्रों की स्थिति बताई गई है ।

पहला मूलाधार चक्र है जिसकी स्थिति लिंग और गुदा मार्ग के बीच वाले स्थान पर बताई जाती है । इसका कार्य होता है आपके शरीर में आने वाले भोजन को मल के रुप में निष्कासित करना जो शरीर को जीवित रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य है ।
आप कल्पना करें अगर आपको 2 दिन शौच ना आए तो आपके अंदर वह मल पदार्थ सड़ने लगेगा और यदि हफ्ते भर तक ऐसा हो जाए तो निश्चित मानिए कि आप की मृत्यु तक हो सकती है ।
इसी बात से आप इस चक्र का महत्व समझ सकते हैं । यह प्रकृति की करुणा है कि उन्होंने इस चक्र को लगभग सभी मनुष्यों में जागृत करके रखा हुआ है, अर्थात यह एक ऑटोमेटिक प्रक्रिया है कि आपने खाना खाया और पचने के बाद वह मल बनकर बाहर निकल गया ।

हम इसके लिए कोई मेहनत या प्रयास नहीं करते !

यह बेहद सहजता से हो जाता है !!

इसलिए हम इसे महत्वपूर्ण नहीं मानते !!!

लेकिन भगवान ना करे किसी दिन अगर आपका मल अवरुद्ध हो जाए ....

आपके पेट से शौच न निकले.....

तो.....

आपको जिस प्रकार की परेशानी होगी वह कल्पना और शब्दों से परे है ।

उस परेशानी से निजात पाने के लिए आप किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार हो जाएंगे ।

दो तीन दिन बाद तो आपको यकीनन हॉस्पिटलाइज करना पड जाएगा .....

हमें प्रकृति का शुक्रगुजार होना चाहिए कि उन्होंने ऐसी व्यवस्था की हुई है कि हम जो खाए वह हमें शक्ति देने के बाद सहज रूप से निष्कासित हो जाए ।

खैर .....

मैं कह रहा था कि खाना अच्छे से पच जाए और नींद अच्छे से आ जाए ....

यह जीवन का सौभाग्य होता है ।

नींद को हम बेहद हल्के में ले लेते हैं लेकिन वास्तव में नींद हमारे स्वास्थ्य के लिए बेहद जरूरी है । जिन लोगों को नींद नहीं आती है, उनका मानसिक संतुलन थोड़ा सा बिगड़ा हुआ रहता है और कई बार लंबे समय तक नींद ना आने पर पागलपन जैसे लक्षण भी दिखाई देने लगते हैं ।
अगर आप मानसिक रोगियों को देखें तो उनमें से अधिकांश को नींद ना आने की समस्या होती है । अधिकांश मनो रोगियों को दवाइयों के साथ नींद आने की दवा भी दी जाती है तभी वह कुछ सामान्य रह पाते हैं ।

तो......
अगर आपको अच्छी नींद आती है तो उसके लिए भी प्रभु का धन्यवाद करना चाहिए कि उन्होंने इतनी बड़ी कृपा आपके ऊपर की है ।

नींद हमारे शरीर का ऑटोमेटिक रिकवरी सिस्टम है । जब आप नींद में होते हैं तो उस समय आपके शरीर के

अंदर का सिस्टम शरीर में पैदा होने वाले विभिन्न प्रकार के विकारों को ठीक करने का प्रयास करता है ....
नष्ट हुई लाखों कोशिकाओं के बदले नई कोशिकाएं बनाने की कोशिश करता है ताकि आपका शरीर सुचारु रूप से चल सके ।

यदि इसे साधनात्मक रूप से व्याख्या करूं तो रात्रि का समय अंधकार का समय होता है !
अर्थात काला या श्याम यानी देवी महाकाली का समय ....
घोर निद्रा का समय.....

जब शरीर का आत्मज्ञान खत्म हो जाता है !
जब हम अपने शरीर के अहंकार को भूल जाते हैं !
कि.....
मैं सरकारी अधिकारी हूं....
मैं शिक्षक हूं.....
मैं अध्यापक हूँ .....
मैं बहुत बड़ा धन्ना सेठ हूं......
मेरे पास 10-12 प्लॉट है.....
मेरे पास 4-6 बड़ी-बड़ी गाड़ियां हैं......

मैं करोड़पति हूं......

मैं अरबपति हूं......

मैं बहुत खूबसूरत हूं.....

मैं बहुत .... हूँ .....

इत्यादि इत्यादि.......

जितनी भी हमारी अहंकार पैदा करने वाली मान्यताएं हैं, वह सारी की सारी नींद के समय विलुप्त हो जाती है ....

उसी समय .....

जब हमारी भौतिक देह की उपस्थिति का भान न्यूनतम हो जाता है .....

जब हम लगभग शून्य की स्थिति में होते हैं.....

तभी ब्रह्मांड को उत्पन्न करने वाले महाशून्य की अधिष्ठात्री देवी महाकाली का कृपा कटाक्ष हमारे शरीर पर पड़ता है......

और वह सब कुछ !

जो हमारे अंदर गड़बडाया होता है उसे वह रिपेयर कर देती है ।

और.....

हम फिर से जीवन की प्रक्रिया में आगे बढ़ने के लिए तैयार हो जाते हैं ।

यह सब वे सहज रुप से कर देती हैं
ठीक वैसे ही जैसे......
एक माँ अपने शिशु को भूख लगने पर दूध पिला देती है......
खाना खिला देती है .....
गीले कपड़े बदल देती है .....
अधिकांश अवसरों पर वह शिशु कुछ भी नहीं बोलता !
यहां तक कि कोई संकेत भी नहीं करता !
लेकिन......
मां शिशु की आवश्यकता को समझ जाती है ।
यह सब कुछ हर माँ बेहद सहजता से करती ही है !
इसके पीछे कारण होता है उसकी ममता और शिशु की उसके ऊपर पूर्ण निर्भरता .....
हमारे सनातन धर्म मे देवी महाकाली को सबसे ज्यादा महत्व दिए जाने के पीछे भी यही कारण है क्योंकि वही वास्तव में जीवन की मूल शक्ति है जो हमें आगे बढ़ते रहने के लिए क्षमता और शक्ति दोनों प्रदान करती है ।

हम भी उस मूल शक्ति के शिशु हैं !

इसलिए नालायक होने पर भी उसकी अहेतुकी कृपा हम पर बरसती रहती है ।

जितना एक साधक के अंदर,

विशेष रूप से महाकाली के साधक के अंदर,

यह शिशु भाव जागता जाता है.....

वह उतना ही महाकाली का प्रिय होता जाता है और उस के सानिध्य में निश्चिंत होकर अपनी जीवन यात्रा को संपूर्ण करता है .....

अस्तु ..... हम आगे कहानी की ओर चलते हैं .....

मधु विद्या ......

घर लौटने के बाद मैं गहरी नींद में सो गया । कई बार मैं 8 से 10 घंटे सो जाता हूं और वैसी नींद मिलने के बाद पूरा शरीर एकदम ताजा तरीन महसूस होता है ।
अगले दिन से कार्यालय का कार्यक्रम प्रारंभ हो गया फिर से वही रूटीन चलने लगा ।
सुबह 10 बजे कार्यालय पहुंचना और शाम को 6 बजे वापस घर पहुंचना ।
ऐसे ही जिंदगी पुराने ढर्रे पर चलने लगी !
जैसे पहले चला करती थी.....

आप लोग भी जानते होंगे कि सरकारी कार्यालयों में काफी छुट्टियां मिलती है । कई बार ऐसा होता है कि रविवार के बाद लगातार दो तीन छुट्टियां मिल जाती है । लगभग हफ्ते भर का अवकाश मिल जाता है ।
ऐसी स्थिति जब भी बनती है तो मेरी इच्छा होती है कि कहीं ना कहीं घूम आऊँ या फिर डोम बाबा से मिल आऊँ ।

उस हफ्ते शुक्रवार से लेकर अगले मंगलवार तक वैसी ही छुट्टियां लगने वाली थी ।

मैं गुरुवार को बाबा से मिलने के लिए शमशान पहुंच गया । जैसा कि आप लोग जानते ही होंगे कि हिंदू मान्यताओं के अनुसार दिन के समय ही अंतिम संस्कार किया जाता है । सूर्यास्त हो जाने के बाद शवों के दाह संस्कार की क्रिया नहीं की जाती है । इसलिए शाम होते-होते बाबा फ्री हो जाते थे जिसके बाद मैं उनसे मिलने के लिए आया करता था । उस दिन भी शाम के लगभग सात बजे के आसपास मैं पहुंचा .....

डोम बाबा से मिले हुए लगभग 2 महीने का समय हो चुका था । वे मुझे देखते ही बेहद प्रसन्न हुए । मैंने आगे बढ़कर उनके चरण स्पर्श किए और उन्होंने मुझे उठा कर अपने सीने से लगा लिया । मेरे ऊपर हमेशा उनका प्रेम भाव बना रहता है । जब भी मैं उन्हें देखता हूं तो किसी बड़े भाई या पिता तुल्य अनुभूति मुझे होती है । वे मेरे अग्रज गुरुभाई हैं । उन्होंने मुझे साधना के पथ पर उंगली पकड़कर चलना सिखाया, इसलिए मैं उन्हें बहुत मानता हूं और सम्मान करता हूं । जब भी मुझे उनके

पास जाने का अवसर मिलता है तो मुझे बेहद खुशी होती है और मेरे आने से वे भी बड़े प्रसन्न होते हैं ।

शमशान में पहुंच जाने के बाद बाबा मुझे लेकर अपनी झोपड़ी में आ गए । उन्होंने बीड़ी का पैकेट निकाला और उसमें से दो बीड़िया सुलगाई और एक मेरी तरफ बढ़ाया । उन्होंने एक लंबा कश मारा । मैं भी बीड़ी के छोटे-छोटे कश मारता हुआ बैठा हुआ था ।

उन्होंने मुझसे मेरा हाल चाल पूछा । मैंने बनारस और गुजरात की कथाएं उनको सुनाई । सुनकर वे बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने खुशी से मेरे सर पर हाथ फेरा ।
कोई भी सच्चा गुरु तब बहुत प्रसन्न होता है जब उसे यह दिखाई देता है कि उसका शिष्य उसके बताए हुए मार्ग का अनुसरण करते हुए सही ढंग से आगे की ओर बढ़ रहा है ....
बाबा के चेहरे पर भी वही खुशी दिख रही थी......

जब मैंने उन्हें कामेश्वर शिव की साधना के विषय में बताया तो बाबा ने मेरी पीठ पर हाथ फेरा .....

और बोले - बेटा ! भगवान शिव सभी शक्तियों को अत्यंत प्रिय है, क्योंकि उनकी विशिष्टता ही यह है कि वे शक्तियों के अनुरूप हो जाते हैं । इस संसार की सारी शक्तियां, चाहे वह महाकाली हो, चाहे वह महाविद्या हो, चाहे वह डाकिनियां हो !!!

सारी की सारी भगवान शिव के प्रति आसक्त हैं और उनको अपने सानिध्य में लेने का प्रयास करती रहती हैं और भगवान शिव किसी को निराश नहीं करते !

उसी देवधिदेव महादेव भगवान कामेश्वर की साधना तुमने संपन्न की है । इस का तात्पर्य यह है कि अब तुम्हारे अंदर भी शिव का वही स्वरुप अंशतः स्थापित हो गया है ।

अब तुम्हारे जीवन में भी शक्तियों का आकर्षण बना रहेगा !

तुम्हारे जीवन में कई प्रकार की शक्तियां आएंगी और तुमसे सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश करेंगी !

इसलिए ऐसे किसी भी आग्रह को जो किसी अच्छे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हो तुम्हें ठुकराना नहीं है ।

इस बात का ध्यान रखना ।

मैं उनकी बात का मतलब समझ नहीं पाया। लेकिन मैंने सहमति में सिर हिला दिया। वह भी मेरी हरकत से समझ गए कि बात मेरी समझ में नहीं आई है।

उन्होंने जोर का अट्टहास लगाया !

मुझसे पूछा - अघोरानंद ! तुझे मेरी बात समझ में आ गई।

मैंने धीरे से कहा - पूरी तरह से समझ में नहीं आई।

उन्होंने पूछा - क्या समझ में आया ?

मैंने कहा - शक्तियां जीवन में आएंगी और जो भी मांगेंगे उनको देना है। अगर उसका उद्देश्य सही लगे।

बाबा ने फिर जोर का अट्टहास किया।

बोले - तेरी यही बात मुझे अच्छी लगती है। बातों का सार तू समझ लेता है। एक अच्छे तांत्रिक के यही लक्षण है।

फिर बोले - मधुमक्खी को तूने देखा है ?

मैं - हां !

बाबा - उसकी खासियत क्या है ?

मैं - वह शहद बनाती है।

बाबा - कैसे ?

यह बड़ा सामान्य सा प्रश्न था, क्योंकि बच्चों को भी पता है कि मधुमक्खियां शहद कैसे बनाती है ।

मैंने कहा - मधुमक्खियां फूलों के रस को इकट्ठा करती है और उससे शहद बनाती है ।

बाबा बोले - तुमने कभी मधुमक्खियों को फूलों पर मंडराते हुए देखा है ?

मैं सोच में पड़ गया ।

फिर मैंने कहा - हां ! देखा है ?

बाबा बोले - मधुमक्खियों को देखा है या भंवरों को देखा है ?

यह सवाल बड़ा अजीब था ....

लेकिन उसे सुनकर मुझे एक झटका सा लगा !

और......

जब मैंने अपने दिमाग पर जोर लगाया तो मुझे लगा कि सचमुच मैंने भंवरों को देखा है !

मधुमक्खियों को नहीं ......

मैंने झिझकते कहा - मुझे लगता है मैंने भंवरों को देखा है ।

बाबा मुसकुराते हुए बोले - मधुमक्खियां फूलों के अंदर से उसका रस निकालती हैं और उसे शहद के रूप में परिवर्तित कर देती है । इसे तुम ध्यान से समझो तो वह फूल के अंदर से उसका सबसे महत्वपूर्ण अंश निकाल लेती है और उससे एक अद्भुत द्रव्य की उत्पत्ति करती हैं । जिसे हम शहद कहते हैं । अधिकांश मधुमक्खियां फूलों के खिलने के साथ ही उसमें से रस को निकाल लेती है ।

अच्छा !

तुम बताओ फूल कब खिलते हैं ?

मैंने कहा - जब सूर्योदय होता है ।

बाबा - अधिकांश लोग यही मानते हैं और सोचते हैं कि सूर्य उगने के साथ फूल खिलते हैं लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं होता । सूर्योदय से पहले फूल खिलना प्रारंभ हो जाता है । उसके किसी की नजर में आने से पहले ही मधुमक्खियां सूर्योदय के पहले फूलों के अंदर से उसका रस निचोड़ कर अपने छत्तों की ओर लौट जाती है ......

यानी.......

हम जिस फूल को देखते हैं...

वह फूल वास्तव में उसके अंदर के अमृत को मधुमक्खियों को सौंप चुका होता है । मधुमक्खियां इतनी सक्षम है कि वह किसी भी मनुष्य या जीव के देखने या फूल के पास पहुंचने से पहले ही उसके अंदर का रस निकाल लेती है ......
यही मधु विद्या है ......
अर्थात रस या अमृत को सबसे पहले बिना किसी की जानकारी के प्राप्त कर लेने की क्रिया ......

मैं भौचक्का होता हुआ जीवन के इस अद्भुत रहस्य को समझने की कोशिश कर रहा था ।
वास्तव मे प्रकृति और उसकी कृतियाँ कितनी रहस्यमय हैं !!!
उन्होंने आगे कहा - एक साधक को किसी मधुमक्खी की तरह होना चाहिए अर्थात मधु विद्या में निपुण !
उसे यह मालूम होना चाहिए कि किस गुरु या किस साधक से कौन सी विद्या प्राप्त करनी है ।
साथ ही उसे यह भी मालूम होना चाहिए कि उस विद्या के अंदर से उसे क्या-क्या गुण और क्या-क्या शक्तियां हासिल करनी है ।

जो साधक इस रहस्य को जान जाता है अर्थात मधु विद्या को समझ लेता है......
वही वास्तविक साधक होता है और साधना के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ता है ।

गुरु अपने शिष्य को मधुमक्खी के समान बनाने का प्रयास करता है.....
ताकि वह मूल रस को .....
मूल अमृत को ......
विद्याओं के मूल रहस्य को......
समझने और प्राप्त करने का ज्ञान प्राप्त कर सके ।
जब ऐसा होता है तभी शिष्य वास्तव में एक सही और अच्छा साधक बनने लगता है ।

अब मेरी समझ में कुछ कुछ बात आ रही थी इसलिए मैंने सर हिलाया !
मुझे सर हिलाता देखकर बाबा बोले - लगता है तेरी समझ में बात आ गई ।

मैंने कहा - बाबा ! मैंने इस प्रकार से तो कभी सोचा ही नहीं, लेकिन वास्तव में मधुमक्खियां इतनी रहस्यमय

है और जीवन और साधना के मूल सूत्र को जीवन में उतारती है , यह जानकर मैं आश्चर्यचकित भी हूं, और इतने छोटे-छोटे जीवो के अंदर प्रकृति के द्वारा डाले गए इन अद्भुत गुणों का व्याख्यान आपके द्वारा जानकर अभिभूत भी ......

बाबा बोले - इस प्रकार से बिना किसी की नजर मे आए !
बिना किसी के स्पर्श के !!
प्राप्त किए गए होने के कारण शहद कभी खराब नहीं होता । शायद तुम यह बात जानते होगे ।
शहद जितना पुराना होता जाता है वह उतना ज्यादा लाभकारी माना जाता है ।

मैंने सहमति में सिर हिलाया क्योंकि यह बात तो मैंने भी सुनी थी, लेकिन उसके पीछे के रहस्य को जानने का अवसर अभी मिल रहा था ।

वास्तव में प्रकृति और उसके छिपे हुए रहस्य अद्भुत है !
जितना आप जानने की कोशिश करेंगे उतना आप प्रकृति और उस परमात्मा के प्रति सम्मान और श्रद्धा

के भाव से भर उठेंगे कि उन्होंने कैसे-कैसे जीवो को कैसे कैसे बनाया है और उनके अंदर कैसी कैसी अद्भुत विशेषताएं भर दी हैं !

बाबा आगे बढ़े- अच्छा एक बात और बता ! फूलों से शहद लाने का काम कौन करता है नर मधुमक्खी या मादा मधुमक्खी ?

मैंने अपना सामान्य ज्ञान लगाया और सोचा तो मुझे लगा कि यह तो परिश्रम वाला काम है इसलिए यह जरूर नर मधुमक्खी करता होगा और मैंने जवाब दिया - नर मधुमक्खी ।

बाबा बोले - तो मादा मधुमक्खी क्या करती है ?
मैंने जवाब दिया - उसका काम होता है मधुमक्खी के बच्चे पैदा करना ।
बाबा ने फिर से एक जोरदार अट्टहास किया ।
बोले - फूलों से रस निकालने का कार्य मादा मधुमक्खियां करती है । यह जीवन के हर क्षेत्र में लागू है कि रस को स्वीकार करने का कार्य मादा का है ।

यदि मनुष्य में भी तुम देखो तो जो जीवन का रस है, वीर्य है, उसे स्वीकार करने का कार्य स्त्री या मादा का है ।
यह एक प्राकृतिक नियम है कि जो भी जीवन में उत्कृष्ट है उसे स्त्री शक्तियां ही ग्रहण करती है ।
इसीलिए इस ब्रह्मांड के सबसे रहस्यमय रस अर्थात भगवान शिव को भी शक्तियां हमेशा घेरे रहती हैं और उनके रस को ग्रहण करती रहती है ।

बाबा के साथ बैठने से इस प्रकार की चित्र विचित्र जानकारियां मिलती रहती है ...
हर बार मैं यह सोचता हूं कि प्रकृति के ऐसे अद्भुत रहस्य वास्तव में बाबा जैसा एक सिद्ध तांत्रिक ही समझ सकता है और उनकी ऐसी व्याख्या कर सकता है ।

मैं इसी सोच में डूबा हुआ था और चर्चा करते करते रात 9 बजे का समय हो चुका था ।
बाबा ने कहा - तू घर नहीं जाएगा । चल अब मेरे भी सोने का समय हो गया है ।
मैं समझ गया कि बाबा मुझे जाने को बोल रहे हैं ।
संभवत: उनकी साधना का समय हो चुका था और ऐसे समय में वे एकांत मे रहना ही पसंद करते थे । मैं अपने

आसन से उठ खड़ा हुआ और झोपड़ी के दरवाजे की ओर आगे बढ़ गया ।

तभी !

बाबा ने फिर एक जोरदार अट्टहास किया और कहा - तूने कामेश्वर शिव की साधना संपन्न की है अर्थात अब तू भी पुष्पों के समान हो गया है !

रस से भरा हुआ !

इसलिए रस प्रदान करने के लिए तैयार रहना !

आने वाले समय में तेरे साथ ऐसा बहुत कुछ होगा !

कई स्त्री शक्तियां तेरे सानिध्य को !

तेरे रस को !

तेरी शक्तियों को ग्रहण करने के लिए आतुर होंगी !

परिस्थितियां और अनुकूलता देखकर तुझे सहज भाव से ऐसी स्थितियों में रहना है ।

कई बार ऐसे अवसरों पर तेरी सिद्धियां भी तेरा साथ नहीं देंगी तब समझ जाना कि यह प्रकृति का अपना तरीका है ।

या यूं समझ ले कि कामेश्वर शिव की साधना और सिद्धि के बाद इस प्रकार की स्थितियों से होकर तुझे गुजरना ही होगा ।

उसके लिए किसी प्रकार का विकार अपने मन में मत लाना क्योंकि यह अवश्यंभावी है !!!

उनकी रहस्यमय बातें पूरी तरह मेरी समझ में नहीं आई ।

मैं प्रणाम करके उनका आशीर्वाद लेकर वापस घर की ओर लौट गया ......

यह सोचने और समझने का प्रयास करते हुए कि उन्होंने जो कहा ....

उसका मतलब क्या था ? लेकिन ऐसी रहस्यमय बातों का कोई मतलब तो नहीं निकलता और तब निकलता है जब ऐसी घटनाएं जीवन में घटने लगती है ।

ऐसी ही घटनाएं आने वाले समय में मेरे साथ घटने वाली थी जिसका पूर्वाभास बाबा ने मुझे करा दिया था ।

यह भी अजीब बात है कि ऐसी घटनाएं जब तक घटित नहीं होती तब तक उनका मतलब समझ में नहीं आता ।

यह एक तरह से अच्छा भी है क्योंकि कई घटनाएं अगर पहले से पता चल जाए तो एक तो उसका रोमांच चला जाता है और दूसरा आदमी पहले से तैयारियां करने लग जाता है ।

वर्तमान में जीना और किसी भी स्थिति के लिए तैयार रहना यह एक अच्छे साधक के लिए जरूरी है ।
उसे ऐसा कुछ भी नहीं सोचना है कि यह नहीं होगा.....
क्योंकि उसके साथ कुछ भी हो सकता है ।
मैं अब तक की सारी घटनाओं के बाद इस प्रकार की मानसिकता में आ चुका था कि किसी भी घटना के लिए हमेशा तैयार रहता था ।
यह मानता था कि मेरा जीवन ऐसा है कि उसमें कभी भी कुछ भी घटित हो सकता है .....

पसंद करता था । इसलिए नाइट लैंप जैसी कोई चीज मेरे कमरे में मौजूद ही नहीं थी ।

तो .....

यह गुलाबी रंग का प्रकाश कहां से आ रहा है ?

यह देखने के लिए मैंने अपनी नजरों को चारों तरफ घुमाया ।

मुझे सामने की दीवाल पर एक अजीब सा दृश्य नजर आया ।

मेरे सामने की दीवार सफेद रंग से पुती हुई थी और बिल्कुल प्लेन थी । उसमें कोई भी चीज जैसे शोपीस या पेंटिंग वेंटिंग कुछ भी नहीं लगी थी । वही दीवाल अचानक से गुलाबी रंग से प्रकाशित हो गई थी और उसमें एक अद्भुत मूर्ति दिखाई दे रही थी ......

वह मूर्ति लगभग एक फुट ऊंची थी !

वह कांसे की बनी हुई लग रही थी और उसमें एक युगल दिखाई दे रहा था ।

जिसमें मुकुट पहने हुए पुरुष के गोद में मुकुट पहनी हुई एक महिला बैठी हुई थी ।

दोनों ही निर्वस्त्र अवस्था में थे !

और दिगंबर अवस्था में युगल मुद्रा में थे !
इस प्रकार की मूर्तियां मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। वह मूर्ति अपने स्थान पर घूम रही थी और उसमें से गुलाबी रंग का प्रकाश बिखर रहा था ....
और साथ ही एक विचित्र सा मंत्र गूंज रहा था ....
वह मंत्र मुश्किल से डेढ़ या दो अक्षरों का रहा होगा ।
वह किसी बीज मंत्र की तरह का मंत्र था, लेकिन संस्कृत या हिंदी जैसा कोई स्वरूप नहीं था उसका !
वह मंत्र बिल्कुल स्पष्ट मेरे कानों में सुनाई दे रहा था ।
ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह युगल मूर्ति उस मुद्रा में उस मंत्र का उच्चारण कर रही हो .....
स्वप्न में मिले हुए मंत्र अपने आप में बेहद शक्तिशाली और स्वयं सिद्ध माने जाते हैं ।
अगर किसी को भी इस प्रकार से स्वप्न में मंत्र मिले तो उसे उस मंत्र का जाप अवश्य करना चाहिए । ऐसे मंत्र हमेशा अनुकूलता प्रदान करते हैं ।
इसमें यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि इस प्रकार के मंत्र वह नहीं होते जो हमने किसी किताब में या किसी उपन्यास या कहानी में पढे हुए होते हैं । वैसे मंत्र अगर आपको सुनाई देते हैं तो वह आपके अपने दिमाग की

उपज होते हैं, क्योंकि हमारे अवचेतन मन में वह मंत्र पढ़ते या देखते समय छप जाते हैं और स्वप्न दिखाई देते हैं ।

स्वप्न मे मिलने वाले मंत्र अधिकतर ऐसे होते हैं जो आपने पहले कभी नहीं सुने हो । ऐसे मंत्रों का जाप अवश्य करना चाहिए ।

यह बात मुझे पता थी तो उसे देखते और सुनते सुनते मैंने भी मन ही मन उस मंत्र का उच्चारण प्रारंभ कर दिया......

पहले पहले मुझे वह ध्वनि उच्चारित करने में दिक्कत हुई क्योंकि वह ध्वनि कुछ अजीब टाइप की थी ....

जैसा कि चीनी भाषा की ध्वनियाँ होती है....

धीरे धीरे बोलते बोलते वह ध्वनि उस मूल ध्वनि के आसपास तक पहुंचने पर मैं भी उसी प्रकार से मंत्रों का उच्चारण करने लगा।

हम कई बार संस्कृत के मंत्रों का उच्चारण करने से झिझक जाते हैं कि ....

हमसे गलत उच्चारण हो जाएगा !

और गड़बड़ हो जाएगी ।

उपज होते हैं, क्योंकि हमारे अवचेतन मन में वह मंत्र पढ़ते या देखते समय छप जाते हैं और स्वप्न दिखाई देते हैं।

स्वप्न मे मिलने वाले मंत्र अधिकतर ऐसे होते हैं जो आपने पहले कभी नहीं सुने हो। ऐसे मंत्रों का जाप अवश्य करना चाहिए।

यह बात मुझे पता थी तो उसे देखते और सुनते सुनते मैंने भी मन ही मन उस मंत्र का उच्चारण प्रारंभ कर दिया......

पहले पहले मुझे वह ध्वनि उच्चारित करने में दिक्कत हुई क्योंकि वह ध्वनि कुछ अजीब टाइप की थी ....

जैसा कि चीनी भाषा की ध्वनियाँ होती है....

धीरे धीरे बोलते बोलते वह ध्वनि उस मूल ध्वनि के आसपास तक पहुंचने पर मैं भी उसी प्रकार से मंत्रों का उच्चारण करने लगा।

हम कई बार संस्कृत के मंत्रों का उच्चारण करने से झिझक जाते हैं कि ....

हमसे गलत उच्चारण हो जाएगा !

और गड़बड़ हो जाएगी।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं होता है ।

अगर आप अच्छे मन से और अच्छे भाव से अपने विकास के लिए या किसी भले कार्य के लिए मंत्र का उच्चारण कर रहे हैं तो धीरे-धीरे आप का उच्चारण सही होने लगता है । आपने किसी मंत्र का 15 दिन या महीने भर उच्चारण कर लिया तो यह मान कर चलिए कि आप का उच्चारण बिल्कुल सही हो जाएगा ।

मेरे साथ भी वैसा ही हो रहा था.....

अब मेरी मंत्र ध्वनि उस युगल मूर्ति से निकलने वाली मंत्र ध्वनि के साथ मैच हो रही थी !

और एक गुंजरण सा पैदा हो रहा था !

जो बेहद सुखद था ....

आत्मिक शांति प्रदान करने वाला था ।

मैं उस दिव्य अवस्था का अनुभव करता हुआ मंत्र उच्चारण में लगा हुआ था ....

वह मूर्ति उस दीवाल से निकलकर मेरी तरफ बढ़ने लगी......

वह हवा में मुझ से लगभग 1 फुट की दूरी पर आकर स्थिर हो गई । अभी भी उसमें से गुलाबी रंग का प्रकाश

निकल रहा था । धीरे-धीरे उस मूर्ति का आकार छोटा होने लगा !

वह मूर्ति छोटी होने लगी .....

धीरे-धीरे उसका आकार लगभग 1 सेंटीमीटर के आसपास का हो गया ।

उसके बाद वह मूर्ति धीरे-धीरे मेरे और करीब आने लगी और मेरे दोनों भौंव के बीच वाले स्थान पर आकर स्थिर हो गई । मैं उसमें से निकल रहे गुलाबी प्रकाश को महसूस कर सकता था......

ऐसा लग रहा था जैसे मेरे दोनों भवों के बीच किसी ने टॉर्च चालू करके रख दिया हो ।

मेरी आंखें धीरे-धीरे बंद हो गई....

मुझे अपने अंदर भी उसी गुलाबी रंग के प्रकाश का अनुभव होने लगा !

ऐसा लगा जैसे मैं अंदर से पूरा गुलाबी गुलाबी हो गया ......

उसी अवस्था में मेरा ध्यान लग गया और मुझे समय और स्थान दोनों का आभास समाप्त हो गया ।

उसके बाद क्या हुआ मुझे पता नहीं चला .....

चटाई वाली......

दूध देने के लिए मेरे घर पर एक बुजुर्ग ग्वालन आती थी। कई सालों से वह मुझे दूध दे रही थी। उसने एक दो बार आवाज लगाई तो मेरा दरवाजा नहीं खुला।
बिजली चली गई थी ! इसलिए डोरबेल भी नहीं बज रहा था।
उसे मेरी आदतों का पता था तो वह समझी कि मैं गहरी नींद में हूं ....
और.....
उसने दरवाजे को जोर से खटकाया।
जब उसका भी कोई असर नहीं हुआ तो जोर-जोर से दरवाजे को पीटते हुए बड़बडाने लगी , फिर उसने 8-10 लातें दरवाजे पर मारी ......
उसकी आवाज सुनकर हड़बड़ा कर मैं अपने ध्यानस्थ अवस्था से बाहर निकल आया।
तब सूरज की रोशनी बिखरी हुई थी , यानी लगभग 8 बजे के आसपास का समय हो चुका था।
अपनी लुंगी संभालते हुए मैं दरवाजे की ओर दौड़ा क्योंकि मुझे पता था कि दरवाजा खुलने के बाद उस

ठेठ देहाती ग्वालन माताराम के द्वारा 8-10 गालियों से मेरा स्वागत होने वाला था । अगर ज्यादा देर हो जाती तो उससे ज्यादा गालियां भी मिल सकती थी .....

जैसे ही मैंने दरवाजा खोला उन्होंने अपने शब्द पुष्पों से मुझे भिगोना चालू कर दिया ....
जिसका सार यह था कि " तुम किसी राज्य के राजकुमार हो क्या ? मैं तुम्हारे राज्य की गुलाम हूँ ? तुम्हारे अलावा किसी और को दूध नहीं पहुंचाना है ? सुबह से शाम तक तुम्हारे दरवाजे पर आवाज लगाते खड़े रहने के अलावा मेरे पास और कोई काम नहीं है ? इत्यादि इत्यादि ......"

मैं सिर झुका कर सुनता रहा !
अपनी पूरी कहानी सुना कर वह दूध देकर चली गई और मैं भी दरवाजा बंद करके अपने रोज के कार्यों में व्यस्त हो गया.....

उस समय दोपहर के लगभग 2 बजे का समय रहा होगा जब दरवाजे पर खटखट की आहट सुनाई दी ।
बिजली तब भी नहीं आई थी ।

दरवाजा खोला तो दो महिलाएं खड़ी हुई थी । एक की उम्र लगभग 60 साल के आसपास रही होगी और दूसरे की उम्र लगभग 25 के आसपास रही होगी ।

दोनों बंजारन लग रही थी ।

उनके हाथों में कोहनिओं तक सफेद रंग के कड़े पड़े हुए थे । दोनों के नाक नक्श सामान्य रुप से सुंदर कहे जा सकते थे और उनका रंग हल्का सावला था । जो लोग मेहनत करते हैं उनका शरीर गठा हुआ होता है । शरीर पर चर्बी नहीं के बराबर होती है । इसलिए उनको देखने से वह बेहद आकर्षक लगते हैं । अन्यथा 35 साल पार हो जाने के बाद पुरुष तोंदधारी बन जाते हैं ..... और महिलाओं के शरीर का आकार गड़बड़ाने लगता है ।

लेकिन महिलाएं जो मेहनत वाला काम करती हैं या आदतन मेहनती होती हैं उनकी देहयष्टि बड़ी सुघड़ होती है । उनका शरीर संतुलित दिखाई देता है ।

दोनों महिलाएं भी वैसी ही थीं ....

अधिक उम्र वाली महिला के चेहरे पर अनुभव की लकीरें स्पष्ट दिखाई दे रही थी ।

उसकी आंखों में एक अजीब सी चमक थी । वह चमक मुझे एक क्षण के लिए महसूस हुई ।

उसके बाद मैंने दोबारा उसे देखा तो उसकी आंखें मुझे सामान्य नजर आईं , यह एक अजीब बात थी ।
उस युवती को देखने से ऐसा प्रतीत होता था जैसे किसी सांचे में डालकर उसे गढ़ा गया हो । लगभग 5 फुट की ऊंचाई वाली वह युवती सुगठित शरीर की स्वामिनी थी, जिसे देखकर कोई भी पुरुष उसे दोबारा अवश्य देखना चाहता । उसने बेहद कसी हुई चोली और घागरा पहना हुआ था जिसमें से उसका शरीर का हर कटाव स्पष्ट नजर आ रहा था ।
उन दोनों के सिर पर चटाईयां रखी हुई थी । जिन्हे वे बेचने आई थी .....
मेरे पास एक चटाई थी लेकिन वह चटाई लगभग रिटायर होने के करीब पहुंच चुकी थी ,और दो-तीन जगह से फट गई थी ।
आमतौर पर जब घर पर महिला ना हो तो पुरुष की कोशिश यह होती है कि जो भी है उसी में काम चला ले .....
बेवजह का टंटा न पाले ...
इसे उसका आलस भी कह सकते हैं लेकिन अक्सर ऐसा ही होता है ।

इसलिए अकेले रहने वाले पुरुषों के घर में आपको फटी हुई चटाई !

फटी हुई चादर !

इधर-उधर लटके हुए कपड़े !

दिखाई दे जाएंगे,

लेकिन जिन घरों में महिलाएं होती हैं..... चाहे वह पत्नी हो, मां हो, बहन हो या बेटी हो , वहां अपेक्षाकृत परिस्थितियां ज्यादा साफ-सुथरी होती हैं ।

इसलिए कहा गया है कि "मकान तभी घर बनता है जब उसमे औरत आती है"

मेरा घर भी स्त्री विहीन था !

इसलिए उसकी स्थिति भी कुछ कुछ वैसी ही थी ।

तो....

मैं कह रहा था कि पुरुष आमतौर पर आलसी होता है लेकिन जब घर पर वह सामग्री आ जाए जिसकी आपको आवश्यकता हो तो संभावना बढ़ जाती है कि आप उसे खरीद ले ......

मुझे लगा कि मैं भी एक चटाई खरीद लेता हूं ।

बुजुर्ग महिला ने जवान महिला को चटाई दिखाने के लिए कहा। उसने मेरी तरफ आंखों ही आंखों में सर के ऊपर रखी हुई चटाई के गट्ठर को नीचे उतारने में मदद का आग्रह सा किया।

मैं उस बात को समझ गया।

जब सिर पर कोई सामग्री का गट्ठर रखा होता है तो उसे अकेले निकालने पर या उतारने पर उसके गिरने की संभावना होती है। इसलिए आम तौर पर सर पर रखे हुए सामान को उतारने के लिए किसी की मदद ली जाती है, खासतौर से तब जबकि सामान के नीचे गिरने पर उसमें टूट-फूट की संभावना हो।

मैंने गठ्ठर के एक छोर पर हाथ लगाया और दूसरी तरफ से उसने उसे उठाया और हम दोनों ने उस गट्ठर को नीचे उतार लिया। उसके बाद मैंने बुजुर्ग महिला के गट्ठर को उतारने में भी मदद की।

वह दोनों वहीं बैठ गई। दोनों के चेहरे से पसीने की बूंदें बह रही थी।

ऐसा लग रहा था जैसे वह सुबह से घूम रही हो।

मोलभाव के बाद मैंने एक चटाई खरीद ली।

तभी बिजली आ गई और पंखा चलने लगा । उनकी नजरें पंखे पर जा रही थी । मैं समझ गया कि वह शायद पंखे की हवा में बैठना चाहती हो । तो मैंने कहा कि आ जाओ अंदर बैठकर थोड़ी हवा खा लो, मैं पैसे लेकर आता हूं । दोनों अंदर आ गई और जमीन पर बैठ गई । जब मैं पैसे लेने के लिए अंदर जा रहा था तो बुजुर्ग महिला ने कहा - बाबू जी थोड़ा पानी पिला दोगे क्या ? मैं सहमति में सर हिला कर अंदर चला गया । एक जग में पानी भरकर साथ में एक गिलास लेकर मैं बाहर आया और उनको दे दिया । उसके बाद मैं पैसे लेने के लिए वापस अंदर गया और चटाई के पैसे लाकर उनको दिए ।

मैंने देखा कि बुजुर्ग महिला ने अपनी कमर पर बंधे हुए थैले में से दो छोटे-छोटे तांबे के गिलास बाहर निकाले और साथ में एक पुड़िया भी ।
उस पुड़िया में कुछ पाउडर जैसा था जो देखने में आमचूर के पाउडर जैसा लग रहा था । उसने उस पाउडर को गिलास मे डाल दिया और उसमें पानी डालने लगी

। गिलास को उसने आधा भर दिया । मैं उनकी यह गतिविधियां देख रहा था ।

पानी डालते ही गिलास में से अचानक झाग बनने लगा !

बिल्कुल वैसा ही जैसे एस्प्रेसो कॉफी में बनता है या बियर की गिलास में बनता है ।

उस झाग से वह गिलास पूरा भर गया । भरते ही बुजुर्ग महिला ने उसे उठाकर गले से उतार लिया । ऐसा उसने दो तीन बार किया।

स्वाभाविक रूप से मेरी उत्सुकता जाग उठी और मैंने उससे पूछा - यह क्या है ?

वह बोली - ताकत बढ़ाने का पावडर है । हमको तो अभी शाम तक धूप में ही घूमना है । इसे पी लेने से ना तो लू लगती है और ना ही थकावट लगती है । यह हम लोग जंगली जड़ी बूटियों से बनाते हैं । पीकर देखोगे ?

मैंने सहमति में सिर हिलाया ।

उसने दूसरे छोटे गिलास में पाउडर डालकर आधा पानी डाला और मेरी तरफ बढ़ा दिया । फिर वैसा ही झाग बनने लगा ।

भरते ही उसने मुझे इशारा किया । मैं उसे उठाकर पी गया ।

उस द्रव का स्वाद कुछ अजीब सा था !

थोड़ा कसैला और थोड़ा मीठा !

उसे पीते ही मुझे अच्छा लगने लगा ....

पैसे लेकर वह दोनों अपना सामान समेटकर जाने लगे ।

आयुर्वेद मेरी रुचि का विषय था और इस प्रकार की औषधि के बारे में जानना वास्तव मे एक लाभदायक स्थिति थी क्योंकि इस प्रकार की औषधि का सेवन बीमार व्यक्तियों के लिए भी और शारीरिक रुप से कमजोर व्यक्तियों के लिए भी फायदा करता !

मेरे मन में विचार आया कि क्यों न इनसे इसकी विधि पूछ लूँ ?

मैंने बुजुर्ग महिला से उसे बनाने की विधि पूछी । मेरा सवाल सुनकर वह मुस्कुराई और बोली- इसे बनाने की विधि थोड़ी कठिन है और हम लोग इसे अपने कबीले के बाहर के लोगों को नहीं बताते हैं ।

कभी-कभी इस प्रकार के प्रतिबंध रहते हैं इसलिए मैंने सहमति में सिर हिलाया । उसके बाद वे दोनों अपने

रास्ते चले गए । मैं भी दरवाजा बंद करके अपने काम में लग गया । भोजन हो गया तो मुझे नई चटाई की याद आई और सोचा कि चलो उस पर लेट कर देखा जाए .....

पेट भरा हो तो नींद आराम से आ जाती है । मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ ! लाइट फिर से चली गई थी ! गर्मी थी तो मैंने सारे कपड़े खोल दिए और चारपाई पर लेट गया ।

चटाई पर लेटते ही मुझे नींद लग गई और मैं गहरी नींद में चला गया ....

जब मेरी नींद खुली तो मैंने धीरे से आंखें खोली । घुप्प अंधेरा छाया हुआ था !

ऐसा लग रहा था जैसे रात हो गई हो !

यह मेरे लिए कोई बहुत आश्चर्य की बात नहीं थी क्योंकि कई बार में दोपहर को सोता था तो उठने के समय रात हो जाती थी ।

मैं थोड़ी देर वैसे ही लेटा रहा उसके बाद उठ कर बैठ गया ।

मेरे मन में दूसरा विचार यह भी आया कि हो सकता है रात हो और लाइट चली गई हो .....

क्योंकि कहीं से भी रोशनी का कोई निशान दिखाई नहीं दे रहा था ।

घर के अंदर की बत्तियां बंद होने पर भी बाहर की या पड़ोस के घर में जलने वाली लाइट की थोड़ी बहुत रोशनी खिड़कियों के कांच से चलती हुई घर के अंदर आ जाती थी ।

लेकिन उस समय बिल्कुल घुप्प अंधेरा दिखाई दे रहा था .....

तो मैंने सोचा संपूर्ण लाइट चली गई होगी ।

उन दिनों मोदी जी नहीं थे !

लाइट बार-बार जाती थी इसलिए मैं तकिये के नीचे एक टॉर्च रख कर सोता था ।

मैंने टॉर्च जलाई !

टॉर्च जलाते ही जो दृश्य मैंने देखा वह बेहद अजीब सा था ....

क्योंकि मैं अपने कमरे में नहीं था ।

चटाई मेरे नीचे बिछी हुई थी और वह तकिया भी लगा हुआ था जिसके नीचे से मैंने अपना टॉर्च निकाला था । लेकिन..... जहां में मौजूद था वह मेरा कमरा नहीं था ।

वह थी ......

एक काली अंधेरी गुफा !

जिसका आकार लगभग 10 फुट बाई 20 फुट का रहा होगा ।

गुफा की दीवाले नम थी । उसमें पानी की चमक दिखाई दे रही थी । जिस स्थान पर मैं लेटा था उसके बगल से छोटी सी पानी की धारा बह रही थी । जहां मैं लेटा था वह पत्थर था जो काफी बड़ा था और करीब-करीब सपाट था ।

यह दृश्य देखकर मैं सोच मे पड गया ।

मैं तो अपने घर में सोया था !

मन में विचार आया कि कहीं यह चटाई अलादीन की उड़ने वाली चटाई की तरह तो नहीं है ?

इस चटाई ने मुझे यह कहां ला पटका ?

यह सोचकर मैं आश्चर्यचकित भी था ।

फिर मुझे ध्यान आया कि मैंने उन लोगों के द्वारा दी गई दिए गए उस द्रव पदार्थ का भी सेवन किया था ।

यानी कि वे दोनों वास्तव में चटाई बेचने वाली नहीं थी .....

बल्कि जादूगरनियां थी !

जिन्होंने मुझे यह जादुई चटाई बेची और उस चटाई के माध्यम से मुझे उस गुफा मे बुला लिया था ।

रहस्यमय गुफा और मीनम्मा.....

मैंने कपालिनी को याद करने की कोशिश की लेकिन कुछ भी सरसराहट महसूस नहीं हुई । आमतौर पर जब भी कपालिनी को याद किया जाता है तो कान के पास हल्की सी सीटी जैसी आवाज या सरसराहट जैसी आवाज महसूस होने लगती है ...

लेकिन वैसा कुछ भी नहीं हुआ ....

जिससे मैं समझ गया कि यहां पर शक्तियों को प्रतिबंधित कर दिया गया है ।

मैंने सोचा कि जायजा लेकर देखता हूं यहां पर क्या-क्या है ?

गुफा के अंदर मैंने थोड़ा आगे चलकर देखा तो पानी के गिरने की आवाज आ रही थी ।

वह एक पहाड़ी झरना था जो काफी ऊंचाई से नीचे की तरफ गिर रहा था । झरने के पानी के पीछे की तरफ यह गुफा बनी हुई थी और उसी झरने का पानी इसके अंदर पतली धार के रूप में आ रहा था ।

बाकी पानी गुफा वाली बड़ी चट्टान पर गिरता था और आगे जाकर फिर नीचे की ओर बहने लगता था ।

नीचे खड़ी चट्टान थी....

जहां से नीचे उतरना संभव नहीं था ।

वहां से मैं वापस लौटा ।

गुफा के दूसरे छोर को देखने के लिए मैं आगे बढ़ता गया ।

उधर गुफा पूरी तरह से बंद दिखाई दे रही थी यानी उधर भी जाने का रास्ता नहीं था ।

मैं चारों तरफ घूम घूम कर देखने लगा ......

तभी गुफा की दीवार गुलाबी रंग के प्रकाश से जगमगाने लगी और उसमें वहीं युगल बिंब दिखाई दिया जो मुझे अपने कमरे में दिखाई दिया था । उसे देख कर मुझे समझ में आ गया कि कोई प्रकृति का या महामाया का संकेत या निमित्त है जिसकी वजह से मैं यहां आ गया हूं ।

मुझे बाबा की कही हुई बात भी याद आ गई । इसलिए मैंने अपने आप को समय पर छोड़ दिया । बहते हुए पानी में से थोड़ा सा पिया और फिर आकर चटाई पर लेट गया.....

ठंडी ठंडी हवा गुफा के अंदर तक आ रही थी और मेरे पास कोई काम था नहीं......

कुछ देर इधर-उधर देखता रहा था और मेरी पलकें फिर बोझिल होने लगी और मैं सो गया।

कितनी देर सोया उसका तो मुझे एहसास नहीं हुआ लेकिन मेरी नींद तब खुली जब मुझे अपने शरीर पर किसी के कोमल हाथ का स्पर्श महसूस हुआ !

वह किसी स्त्री का हाथ था.....

वह हाथ मेरे शरीर के हर हिस्से को छू रहा था !

मैंने एक दो बार उस हाथ को अपने से दूर हटाने की कोशिश की लेकिन कुछ ही समय बाद बाद वह वापस आ जाता था।

आखिरकार में उठ कर खड़ा हो गया।

मैं देखना चाहता था कि वह कौन है ?

मेरे हाथ में टॉर्च था। मैंने उसे जला दिया।

जलाते ही जो मैंने देखा वह होश उड़ा देने के लिए काफी था।

पूर्ण निर्वस्त्र अवस्था में वहीं युवती वहां खड़ी हुई थी जो मेरे घर चटाई बेचने के लिए आई थी।

अब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि यह मुझे किसी विशेष कार्य के लिए वहां से उठा कर लाई है और जब तक वह पूरा नहीं होगा तब तक यह मुझे छोड़ने वाली नहीं है।

फिर भी मैंने उससे पूछा - अरे तुम तो मुझे चटाई बेचने के लिए आई थी। यह तुम मुझे कहां उठाकर ले आई हो ?

यह सुनते ही वो खिलखिला कर हंस पड़ी।

मैंने पूछा - तुम आखिर हो कौन ? और मुझे इस तरह से उठाकर यहां लाने का तुम्हारी उद्देश्य क्या है ?

वह फिर खिलखिला कर हंस पड़ी उसकी हंसी बेहद सम्मोहक थी।

प्रकृति का अपना एक अलग तरीका होता है। वह स्त्रियों को अलग-अलग प्रकार की विशेषताएं देती है। सभी प्रकार से संपूर्ण स्त्रियाँ बहुत कम होती है।

उदाहरण के लिए कई बार आप देखेंगे कि स्त्री बेहद खूबसूरत होती है लेकिन उसकी आवाज बेहद कर्कश होती है। जिसे सुनकर आपको वहां से भाग जाने का भाव मन में पैदा होगा।

वहीं स्त्रियों की आवाज बेहद मीठी होती है जिसे सुनकर आपको उसे दोबारा सुनने का भाव मन में पैदा होता है..... लेकिन कई बार वे खूबसूरत नहीं होती है।

इसी प्रकार से आंखें भी अनेक विशेषताएं अपने अंदर समेटे हुए होती है। उन स्त्रियों की तरफ पुरुष बेहद

आसानी से आकर्षित होता है जिनकी आंखें बोलती हुई आंखें होती है .....
कुछ आंखें ऐसी होती हैं जिनको देखकर निर्जीव होने का एहसास होता है......

उस महिला की आंखों में चंचलता थी और उसकी आवाज बेहद मीठी थी .....
जब वह खिल खिलाकर हंसती तो ऐसा लगता जैसे जलतरंग बज रहे हो और कानों में मिठास घोल रहे हों ......
वह काफी देर तक हंसती रही !
ऐसा लग रहा है जैसे उसकी हंसी रुक ही नहीं रही हो !
फिर उसने कहा – मेरा नाम मीनम्मा है । हम तुम्हें साधना के लिए लेकर आए हैं । हम कालम्मा की पुजारिन हैं । जब हमें विशेष अनुष्ठान करवाना होता है या संतान प्राप्ति करनी होती है तो हम किसी सिद्ध पुरुष की खोज में निकलती है और उस पुरुष को अपने साथ लेकर आ जाती हैं । जो हमारी साधना में सहायक बनता है । तुम्हें भी इसीलिए लाया गया है ।

मैंने थोड़े कमजोर स्वर मे पूछा - इसके लिए मेरी सहमति भी तो अनिवार्य है ।

वह फिर से खिलखिला कर हंस पड़ी ।

बोली - पुरुष की सहमति की क्या जरूरत है ? वह तो स्त्री की देह देखते ही तैयार हो जाता है । तुम अपने आप को ही देख लो ।

उसकी बात सच थी । वास्तव में मेरी देह पूरी तरह से तैयार थी .....

पुरुष को प्रकृति ने बनाया ही ऐसा है कि वह स्त्री की कल्पना मात्र से ! देखने से !! या स्पर्श से ही तैयार हो जाता है ..... जबकि स्त्रियों को तैयार होने में समय लगता है ......।

खैर....

उसकी बात से मुझे यह समझ में आ गया था कि अब मेरा बचना मुश्किल है और इसकी इच्छा पूर्ति मुझे करनी पड़ेगी ।

वह फिर मुझसे आ लिपटी और फिर रात भर काम युद्ध चलता रहा .....

लगभग सुबह के आसपास क्रिया की पूर्णता जैसे ही हुई .....

थकान की वजह से मेरी आंखें लग गई ।

जब मेरी नींद खुली तो सूरज की हल्की हल्की किरणें गुफा के अंदर तक आ रही थी ।

मैंने इधर उधर देखा .....

लेकिन वह युवती वहां पर मौजूद नहीं थी ।

संभवत: कार्य संपन्न होने के बाद वह वहां से चली गई ।

कहां गई ?

कैसे गई ?

यह मुझे समझ में नहीं आया; क्योंकि जैसा मैंने आपको बताया था , वह गुफा एक तरफ से बंद थी और दूसरी तरफ का उसका मुंह एक पहाड़ी झरने के पीछे की तरफ था । वह खड़ी पहाड़ी थी यहां से उतर कर जाना भी एक बड़ा जटिल कार्य था । खासतौर से रात के अंधेरे में .....

इसलिए मुझे यह समझ में नहीं आया कि वह कैसे गई होगी ।

तांत्रिक शक्तियों से संपन्न एक साधक या एक साधिका कुछ भी कर सकता है। इसलिए उस पर ज्यादा चिंता न करते हुए मैं उठ खड़ा हुआ।

बहते हुए पानी से हाथ मुंह धो कर यह सोच ही रहा था कि यहां खाने पीने की व्यवस्था कौन करेगा क्योंकि भूख बड़े जोर की लग रही है।

सारी गुफा खाली थी .....

वहां कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था .....

स्नानादि करके मैं अपना नित्य पूजन संपन्न करके बैठकर सोच ही रहा था कि कुछ खाने को मिल जाता तो बढ़िया होता ! पता नहीं अब कब यह नसीब में आएगा।

तभी......

अचानक.....

मुझे अपने पीछे से घुंघरू की आवाज आई !

वही मीठी आवाज गूंजी - भूख लगी है ! खाना खा लो !

ताजे भोजन की महक से पूरी गुफा महकने लगी थी।

मैं पूजन समाप्त कर चुका था।

क्षमा प्रार्थना का मंत्र उच्चारित कर रहा था।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन ।
यत्पूजितं मया देव! परिपूर्ण तदस्तु मे ॥

इस मंत्र का अर्थ यह है कि हे प्रभु। न मैं आपको बुलाना जानता हूं और न विदा करना। पूजा करना भी नहीं जानता। कृपा करके मुझे क्षमा करें। मुझे न मंत्र याद है और न ही क्रिया। मैं भक्ति करना भी नहीं जानता। यथा संभव पूजा कर रहा हूं, कृपया भूल क्षमा कर इस पूजा को पूर्णता प्रदान करें।

क्षमा मंत्र बोलने की इस परंपरा का आशय यह है भगवान तो हर जगह है। उन्हें न आमंत्रित करना होता है और न विदा करना। हम जैसे गृहस्थ व्यक्तियों के लिए यह संभव नहीं है कि पूजा पूरी तरह से शास्त्रों में बताए गए नियमों के अनुसार हो।

मंत्र और क्रिया दोनों में चूक हो सकती है।

इसके बावजूद चूंकि मैं भक्त हूं। आपकी पूजा कर कृपा प्राप्त करना चाहता हूँ। इसमे मुझसे चूक हो

सकती है, उन चूकों और गलतियों को क्षमा करें। मेरी पूजा पूर्ण नहीं है फिर भी आप मेरी मनोकामना को पूर्ण करते हुए मुझे पूर्णता प्रदान करें ......

किसी भी पूजन के अंत में क्षमा प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए ताकि किसी भी प्रकार की त्रुटि या न्यूनता रह गई हो तो उसे क्षमा कर दें....

क्षमा प्रार्थना करके जैसे ही मैंने पीछे की तरफ देखा .... तो .....
वह युवती मीनम्मा जो कल रात मेरे साथ थी । वही एक पोटली के साथ चटाई पर बैठी हुई थी । वह उसे खोल रही थी । उसने सामने पत्तों का पत्तल(थाली) और दोना(कटोरी) बिछा रखा था और एक छोटी सी मिट्टी की मटकी भी साथ में रखी हुई थी ।
संभवत: उसमें पानी रहा होगा ।
पत्तल में गरम-गरम दो रोटियां रखी हुई थी और साथ में थी ....
आलू पालक की सब्जी ।
दूसरे दोने में रखी थी ..... खोए की जलेबी !

जिसे देखकर मेरा मन ललचा गया । भूख बड़े जोरों की लग रही थी ।

मीनम्मा ने कहा - आओ खा लो ।

भूख लगी हुई थी ! मैं भोजन पर टूट पड़ा ।

मेरे मन में विचार आया कि दो रोटियों से मेरा क्या होगा ?

फिर मन में विचार आया जो मिल रहा है उसे खा लो ! कम से कम मिल तो रहा है ....

मैंने रोटियां तोड़कर खाना प्रारंभ कर दिया।

खाना वाकई स्वादिष्ट था !

खोए की जलेबी का स्वाद तो गजब का था !!

हमारा सनातन धर्म बेहद विस्तृत और रहस्यमय है । इसकी रहस्यमई दुनिया का एक अंश है तंत्र साधनाएं । तंत्र साधना की दुनिया में एक से एक अजीबोगरीब चीजें होती रहती हैं । जिन पर विश्वास करना सहज संभव नहीं होता । ऐसा ही एक चमत्कार मेरे सामने था ।

एक रोटी खा लेने के बाद मेरी निगाह पत्तल पर पड़ी तो वहां फिर दो रोटियां रखी हुई थी और जिस दोने से मैंने

सब्जी खाई थी वह सब्जी भी पहले के ही बराबर हो चुकी थी .....

यह अद्भुत चमत्कार बार-बार होता रहा ।

हर बार जब मेरी रोटी खत्म हो जाती वापस पत्तल में दो रोटियां आ जाती और सब्जी भी दोबारा से भर जाती । यह देख कर मुझे आश्चर्य भी हुआ और पेट भर खाना मिलने की खुशी भी ।

इसलिए मैं पूरी तन्मयता से भोजन करने लगा ।

मेंढक बनाने वाला रहस्यमय पेय ......

भरपेट भोजन हो जाने के बाद मैंने मटकी को उठाकर मुंह से लगा लिया ......

पहला घूंट अंदर जाते ही .....

मुझे पता चल गया कि वह पानी नहीं था .....

यह कुछ तो .....

कड़वा सा था ......

जिसे थूकने की इच्छा हो रही थी ।

मटकी को अपने मुंह से हटा कर उसे थूकने का विचार मन मे आया और मैंने मटकी को हटाने की कोशिश की .....

लेकिन.....

तब तक.....

मीनम्मा का एक हाथ मटकी पर और दूसरा हाथ मेरे सर के पीछे आ चुका था । काफी कोशिश की कि किसी तरह से उसके हाथ को परे ढकेल कर मटकी हटाकर नीचे थूक दूँ .....

लेकिन मेरे सारे प्रयास निष्फल हो गए ।

ऐसा लग रहा था जैसे कि वह दोनों हाथ किसी कोमलांगी युवती के ना होकर किसी मशीनी रोबोट के लोहे के हाथ हों। जिन्हें हटाना लगभग असंभव सा प्रतीत हो रहा था। काफी कोशिश करने के बावजूद उसके हाथ टस से मस नहीं हुए।
मैं उस मटकी को अपने मुंह से नहीं हटा पाया। उसने जबर्दस्ती मुझे एक बार मे मटकी का सारा द्रव पिला दिया।

उसे पीते ही पूरे शरीर में आग सी लग गई !
ऐसा लगने लगा जैसे किसी ने अंगारे घोलकर पिला दिया हो .....
या.....
लाल मिर्च का घोल पिला दिया हो।
पूरे शरीर में गर्मी लगने लगी !
इतनी गर्मी जैसे मई जून के महीने में धूप में लगती है ......
आधे घंटे में मेरा पसीना छूटने लगा !
पसीना भी थोड़ा बहुत नहीं बल्कि रोम छिद्रों से होकर धार के रूप में निकलने लगा।

ऐसा लग रहा था जैसे शरीर का पूरा पानी पसीने के रूप में बाहर निकल जाना चाहता हो ।

लगभग पंद्रह मिनट तक वैसी ही स्थिति रही....

और मेरा पूरा शरीर ढीला हो गया ।

बड़े जोरों की प्यास लग रही थी ।

गुफा के अंदर बहते हुए पानी से मैंने अपनी प्यास बुझाई ।

मैंने कम से कम 4-6 गिलास पानी तो जरूर पिया होगा ।

तब जाकर थोड़ी राहत महसूस हुई ।

पसीना अब भी बह रहा था ....

शरीर की गर्मी बरकरार थी !

मैं अपनी चटाई पर आकर लेट गया ।

थोड़ी देर में मेरे पसीने से वह चटाई भीग गई......

इतना पसीना बह रहा था ......

मीनम्मा ने मुझे उठकर उस बहते हुए पानी में लेटने के लिए कहा ।

मुझे लगा शायद इससे गर्मी से कुछ राहत मिलेगी ।

मैं लेट गया !

मेरे शरीर के नीचे से पानी बह रहा था ।

मीनम्मा मटकी से पानी भर भर कर मेरे ऊपर डालती भी जा रही थी ।

उसके भाव वैसे थे जैसे किसी मां के भाव होते हैं जब अपने नन्हें शिशु को वात्सल्य के साथ पानी डालकर नहलाती है।

वास्तव में स्त्री सहस्त्र रुपा होती है ।

उसका व्यक्तित्व अनेक स्वरूपों में हमारे सामने आता है । अगर आप विवाहित हैं तो आपने अपनी पत्नी के अंदर पत्नी के अलावा इस मातृ स्वरुप को भी तब जरूर अनुभव किया होगा जब आप बीमार पड़े होंगे, या किसी गंभीर विवशता की स्थिति में पहुंचे होंगे और उसने आपको सांत्वना दी होगी ......

पानी से मुझे थोड़ी राहत महसूस होने लगी, क्योंकि शरीर की गर्मी को बहते हुए पानी की ठंडक शांति प्रदान कर रही थी ।

लगभग एक घंटा मैं उसी प्रकार पानी मे पड़ा रहा .....

अभी भी गर्मी पूरी तरह से शांत नहीं हुई थी । हाँ पहले की तुलना में थोड़ी कम लग रही थी ।

मीनम्मा ने मुझे सहारा देकर उठाया और चटाई पर ले जाकर लिटा दिया ।

मुझे अपने शरीर में बेहद तीव्र ऊर्जा का अनुभव हो रहा था । इतनी ताकत लग रही थी जैसे मैंने कोई ताकत की दवा खा ली हो । चटाई पर लेटे लेटे मेरी आंखें धीरे-धीरे बोझिल होने लगी । तभी मैंने देखा कि झरने के पानी के अंदर से कुछ उड़ता हुआ अंदर की ओर आ रहा है । वह एक पोटली थी जो किसी अज्ञात शक्ति के द्वारा लाई जा रही थी । उस पोटली को लाकर उस शक्ति ने मेरे बगल में रख दिया । मीनम्मा भी मेरे पास आकर बैठ गई । उस पोटली में से उसने हरे रंग का कोई लेप निकाला । जिस की खुशबू हल्दी से मिलती-जुलती थी, लेकिन उसकी खुशबू बेहद मादक थी , उसे सूंघने मात्र से नशे जैसा आभास हो रहा था । वह उस लेप को मेरे माथे पर लगाने लगी ....

लेप के लगते ही मुझे अपने माथे पर ठंडक का एहसास होने लगा । उसके बाद उसने मेरे तलवों पर भी उस लेप को लगाया । जहां जहां वह लेप लग रहा था वहां ठंडक का एहसास हो रहा था । सबसे अंत में उसने मेरी नाभि पर उस लेप का गोल घेरे में लेप किया और

कुछ बूंद नाभि के ऊपर भी डाल दी । शांति का अनुभव मुझे हो रहा था......

उसने लगभग मेरे पूरे शरीर पर उस लेप को लगा दिया । सिर्फ लिंग वाला भाग छोड़ दिया । सिर्फ उसी भाग में मुझे गर्मी का एहसास हो रहा था बाकि पूरा शरीर धीरे-धीरे शांत होता जा रहा था । बाहर के झरने से टकराती हुई ठंडी ठंडी हवा अंदर आ रही थी और अब शरीर भी काफी ठंडा हो चुका था जिसकी वजह से मुझे नींद आने लगी और मैं सो गया ।

जब नींद खुली तो शाम का धुंधलका महसूस हो रहा था सूरज की हल्की हल्की रोशनी बिखरी हुई थी यानी तकरीबन 6:30 या 7 बजे का समय रहा होगा । गुफा मे मीनम्मा नहीं थी .... हाँ , गुफा के अंदर एक छोटी सी मशाल जल रही थी जो गुफा की दीवाल पर बने हुए एक गड्ढे में फंसी हुई थी । उसकी रोशनी गुफा के अंदर किसी पुराने फ्लोरोसेंट बल्ब की तरह बिखरी हुई थी । पीली पीली मध्यम सी रोशनी.....

वह हरा लेप मेरे ऊपर लगा हुआ था जो अब तकरीबन सूख चुका था .....

उसकी पपड़ियाँ मेरे शरीर पर मौजूद थी । मैं उठ कर खड़ा हो गया । मेरे खड़े होते ही वे पपडियां शरीर से झड़ने लगी ।

इस बात को वे पाठक और पाठिकाएं आसानी से समझ पाएंगे जिन्होंने उबटन लगाया हो या सर पर मेहंदी लगाई हो ....

वह भी सूखने के बाद इसी प्रकार से झड़ने लगती है ....

उसके बाद नहाना ही एकमात्र विकल्प होता है ....

मैंने सोचा बाहर झरने के पानी में स्नान कर लिया जाए .....

फिर आगे बढ़ कर मैंने झरने के पानी में जो कि काफी ठंडा था .....

स्नान किया.....

और पूरे शरीर को रगड़ रगड़ कर साफ़ किया । अब सारा लेप मेरे शरीर से निकल चुका था !

लेकिन.....

मेरी चमड़ी का रंग हल्का हरा दिखाई दे रहा था !

बिल्कुल वैसा.....

जैसा पत्तों का दिखाई देता है ।

सिर्फ नाभि के नीचे का भाग, जहां उसने लेप नहीं लगाया था , वह अपने सामान्य रंग में था । बाकि पूरा का पूरा शरीर हरा हरा दिखाई दे रहा था। यह देख कर मुझे बड़ा अजीब लगा ।

आप स्वयं कल्पना करें कि अचानक किसी दिन आपके शरीर का रंग हरा हो जाए तो आपको कैसा लगेगा ?

ठीक वैसी ही स्थिति मेरी भी थी ।

मैंने उसे काफी रगड़ कर देखा ।

जब हाथ के रगड़ने से कोई प्रभाव नहीं दिखा.....

तो नीचे पड़े हुए छोटे पत्थर को उठाकर उससे घिसकर देखा !

लेकिन चमड़ी में उठ रहे दर्द के अलावा कोई खास प्रभाव उस हरे रंग पर दिखाई नहीं दिया ।

वह वैसा का वैसा ही रहा !

काफी देर तक प्रयास करने के बाद मैंने प्रयास करना छोड़ दिया और अपने आप को परिस्थितियों के हवाले कर दिया ।

अच्छी तरह से नहा लेने के बाद मैं गुफा के अंदर पडी हुई एक शिला पर बैठकर बाहर का नजारा देख रहा था और सोच रहा था कि अब आगे क्या होगा ?
तभी मीनम्मा उड़ती हुई झरने को पार करके गुफा के अंदर आई .....

अंदर आते ही वह मेरे पास आकर खड़ी हो गई और खिलखिला कर हंसने लगी और पूछा - अब कैसा लग रहा है ?
मैंने कहा - ठीक है ! लेकिन यह मेरे शरीर का रंग हरा कैसे पड़ गया ? यह रंग तो छूट ही नहीं रहा है ।
मेरी बात सुनकर वह फिर से खिलखिला कर हंस पड़ी ।
बोली - वह भी ठीक हो जाएगा !
तुम चिंता मत करो जाकर उस चटाइ पर लेट जाओ....
अभी इसका इलाज कर देती हूँ ।
उसकी बात सुनकर मन मे उम्मीद जागी और मैं चटाई पर जाकर लेट गया ।

उसने अपनी पोटली के अंदर से एक छोटी सी शीशी निकाली । उसमें कुछ तेल जैसी चीज भरी हुई थी ।

सबसे पहले उसने कुछ बूंद तेल अपने हाथ में लिया और मेरे दाहिने हाथ पर लगा दिया और उसे मलने लगी । करीब-करीब एक-दो मिनट तक उसने उसे मेरी त्वचा पर रगड़ा होगा और उसके बाद छोड़ दिया और कहा - अब जाकर हाथ धोकर आ जाओ ।

कुछ विश्वास और कुछ अविश्वास के साथ मैं चटाई से उठा और बहते हुए पानी में जाकर अपना हाथ धोने लगा......

पहली बार जब उस पर पानी पड़ा तो एक तेज जलन का एहसास हुआ ।

ऐसा लगा जैसे एसिड के छींटे पड़ गए हो .....

मैंने पलट कर उसकी ओर देखा तो वह बोली - पहली बार ही जलन होता है । बाद में ठीक हो जाएगा ..... अच्छे से धोकर आ जाओ ।

मैंने थोड़ा झिझकते हुए फिर हाथ को पानी में डूबाया । इस बार जलन नहीं हुई । मैंने उसे रगड़ कर धोया ..... लेकिन......

हरा रंग वैसा का वैसा ही रहा ।

उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा ।

मुझे लगने लगा कि कहीं यह मेरा मजाक तो नहीं बना रही । इसने मुझे ऐसा ही हरा मेंढक जैसा रहने देना है और इस अवसर का लाभ उठाकर मेरी टांग खींच रही है । यह सोचता हुआ मैं अनमने ढंग से वापस चटाई पर आकर बैठ गया ।

महामृत्युंजय मंत्र और श्री यंत्र ......

उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। मैंने छुड़ाने की कोशिश की .....

लेकिन जैसा कि मैंने बताया था वह जब पकड़ती थी, तो ऐसा लगता था जैसे कोई मशीनी हाथ पकड़ रहा हो ....

इतनी ताकत जिसे छुड़ाना लगभग असंभव होता था। मैंने थोड़ी कोशिश की लेकिन जब नहीं छुड़ा पाया तो चुपचाप बैठ गया। अब मेरा दाहिना हाथ उसके हाथ में था। कुछ देर तक उसने आंखें बंद करके होठों में कुछ-कुछ बुदबुदाया। संभवत किसी मंत्र का उच्चारण कर रही होगी। करीब 2 मिनट तक उसका बुदबुदाना चलता रहा।

उसके बाद उसके होठों से बिल्कुल स्पष्ट संस्कृत में महामृत्युंजय मंत्र की ध्वनियां निकलने लगी।

।। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्

उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।

उस मंत्र का पाठ करते हुए वह मेरे दाहिने हाथ पर अपना हाथ फेर रही थी......

मैं उसको आश्चर्यचकित होकर देख रहा था कि वह इतनी निर्दोष संस्कृत का उच्चारण कैसे कर रही है ? कहां मैं उसे देहाती महिला समझ रहा था, यह तो उच्च कोटि की साधिका लग रही है । यह सोचकर मेरे हृदय में उसके प्रति सम्मान का भाव जागृत होने लगा ।

महामृत्युंजय मंत्र की तीन आवृत्तियां संपन्न होते-होते मेरे हाथ का रंग धीरे-धीरे वापस पहले के जैसा होने लगा और लगभग 3-4 मिनट के बाद मेरा दाहिना हाथ वापस पुरानी स्थिति में आ चुका था ।

हां ! बाकी का पूरा शरीर अभी भी हरा था । केवल दाहिना हाथ और नाभि के नीचे लिंग क्षेत्र का स्थान अपने सामान्य रंग में था ।

कुल मिलाकर मैं किसी होली खेल कर आए हुए आदमी की तरह दिख रहा था जिसके ऊपर चूड़ी रंग लगा दिया गया हो ।

उसके बाद उसने मेरे शरीर के बाकी हिस्सों पर भी उस बोतल में से तेल निकालकर लगाया और फिर नहा कर आने के लिए कहा । जिसके बाद पुनः वही मंत्र जाप और महामृत्युंजय मंत्र की प्रक्रिया से गुजरने के बाद मेरे शरीर का रंग वापस सामान्य हो गया । उसके बाद मेरा

पूरा शरीर ठंडा लग रहा था लेकिन गुह्य भाग में अभी भी गर्मी का आभास मुझे हो रहा था।

मीनम्मा ने अपनी पोटली में से एक और शीशी निकाली .....

उसमें गाढे लाल रंग का द्रव भरा हुआ था। उसे निकालकर उसने मेरी नाभि पर लगाना प्रारंभ कर दिया। नाभि में एक गोलाकार आकृति बनाने के बाद उसने अधोमुखी और ऊर्ध्वमुखी अर्थात उल्टे और सीधे त्रिकोण बनाना प्रारंभ कर दिया। जिनका मध्य भाग मेरी नाभि क्षेत्र था। वह कुछ-कुछ श्री यंत्र के जैसी संरचना बना रही थी। अगर आपने श्रीयंत्र देखा होगा तो उसमें इसी प्रकार से पांच उल्टे त्रिकोण और चार सीधे त्रिकोण बने हुए होते हैं। जिनके द्वारा श्री यंत्र का निर्माण कार्य होता है, जो कि तंत्र साधना के क्षेत्र में सबसे रहस्यमय और सबसे विशिष्ट यंत्र माना जाता है। यंत्र निर्माण हो जाने के बाद उसने संभवतः श्री यंत्र को आधार बनाकर उसके प्रत्येक कोने पर और तिकोनों के ऊपर देवी देवताओं की स्थापना करना प्रारंभ कर दिया। दिलचस्प बात यह थी कि उसे वे सारे मंत्र कंठस्थ थे

। वह बिना किसी किताब को देखें प्रत्येक बिंदु पर एक एक देवी को स्थापित करती जा रही थी ।

किसी भी यंत्र में जब देवी या देवता की स्थापना की जाती है तो सबसे अंत में प्रमुख देवी या देवता की स्थापना की जाती है । उसके पहले यंत्र के बाहर बने हुए कमल दल या त्रिकोण पर उस देवी या देवता के मंडल में आने वाले समस्त शक्तियों का आह्वान और पूजन किया जाता है । सबसे अंत में मध्य भाग में अर्थात यंत्र के बीच में प्रमुख देवी या देवता को स्थापित करके फिर पूजन प्रारंभ किया जाता है । यह एक सामान्य प्रक्रिया है ।

मीनम्मा जो मेरे साथ कर रही थी उसमें भी वह इसी प्रक्रिया का पालन कर रही थी । फर्क सिर्फ इतना था कि यहां पर यंत्र किसी ताम्रपत्र पर बना होने की बजाय मेरे शरीर पर बना हुआ था । जिसका मूल आधार मेरा शरीर ही था । जिसका पूजन वह अपने हाथ में रखे हुए लाल रंग के उस द्रव से कर रही थी ।

पूजन करते करते जब मध्य भाग में शक्ति स्थापना हो गई, तब उसने एक विशिष्ट मंत्र का उच्चारण करते हुए मेरे शरीर पर हाथ फेरना प्रारंभ कर दिया ।

जैसे ही उसका हाथ मेरे अंग पर पड़ा ....

वैसे ही मुझे ऐसा लगा जैसे सारे शरीर की गर्मी एक साथ उधर दौड़ पड़ी हो !

वह पूरी तरह से फिर तैयार हो गया !

मीनम्मा का मंत्रोच्चार जारी था उसके स्पर्श के साथ मेरे मन मे प्रचंड काम भाव उठने लगा ......

वह मुझसे आ लिपटी ।

मीनम्मा ने अपना अभीष्ट कार्य पूरा किया और उसके बाद वह उसी प्रकार से लुप्त हो गई ।

उसके जाने के बाद मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे मेरे शरीर से सारी शक्तियां निकल गई हो और मैं शक्तिहीन हो गया हूं ।

पूरा शरीर पस्त हो चुका था ।

थकान से मेरी आंखें बोझिल होने लगी !

उसके बाद क्या हुआ ?

मुझे पता नहीं चला ......

संभवत: मैं बेहोश हो गया या गहरी नींद में चला गया ।

जब उठा तो सुबह हो चुकी थी । धूप निकल आई थी अर्थात 8 या 9 बजा होगा ....

गुफा में कोई नहीं था ।

न तो मीनम्मा !

न उसकी पोटली !!

न ही उसकी तेल की बोतल !!!

सब कुछ गायब था ।

मुझे अपने हरे रंग की याद आई और मैंने अपने शरीर को देखा । वापस सबकुछ सामान्य हो चुका था और मेरे शरीर का रंग अपने मूल स्वरुप में लौट चुका था उसे देख कर मुझे खुशी हुई कि मैं मेंढक से वापस इंसान बन गया ......

फिर मैंने 2 मिनट तक बैठकर रात के घटनाक्रम के बारे में सोचा तब मुझे डोम बाबा की बात याद आई ।

उन्होंने कहा था - "तूने कामेश्वर शिव की साधना संपन्न की है अर्थात अब तू भी पुष्पों के समान हो गया है !

रस से भरा हुआ !

इसलिए रस प्रदान करने के लिए तैयार रहना !

आने वाले समय में तेरे साथ ऐसा बहुत कुछ होगा !

कई स्त्री शक्तियां तेरे सानिध्य को !

तेरे रस को !

तेरी शक्तियों को ग्रहण करने के लिए आतुर होंगी !

परिस्थितियां और अनुकूलता देखकर तुझे सहज भाव से ऐसी स्थितियों में रहना है ।
कई बार ऐसे अवसरों पर तेरी सिद्धियां भी तेरा साथ नहीं देंगी तब समझ जाना कि यह प्रकृति का अपना तरीका है ।
या यूं समझ ले कि कामेश्वर शिव की साधना और सिद्धि के बाद इस प्रकार की स्थितियों से होकर तुझे गुजरना ही होगा ।
उसके लिए किसी प्रकार का विकार अपने मन में मत लाना क्योंकि यह अवश्यंभावी है !!!

उनकी रहस्यमय बातें उस समय मेरी समझ में नहीं आई थी ......
लेकिन अब कुछ कुछ मतलब मुझे समझ में आने लगा था ।
उनकी बात याद आते ही मन को थोड़ी सी शांति मिली । फिर मैंने अपने आप को परिस्थितियों के हवाले छोड़ दिया कि अब जो होगा देखा जाएगा !
जब मन में इस प्रकार की निश्चिंता का भाव आ जाए तो फिर मन सहज हो जाता है और ऐसा होना चाहिए .....

जीवन का यही मूल सार है ।

जीवन में परेशानियां बाधाएं और चिंताएं तो आती रहती हैं । जिनसे हर व्यक्ति को जूझना ही पड़ता है । उनका समाधान निकालना ही पड़ता है । यह कार्य रो रो कर भी किया जा सकता है और हंसते खेलते भी किया जा सकता है ......

मेरे विचार में हंसते खेलते कर लेना ज्यादा अच्छा है , क्योंकि उसमें इन परेशानियों का और उन से जूझने का ज्यादा साहस और क्षमता प्राप्त हो जाती है । हम आसानी से उन समस्याओं के पार हो जाते हैं । इसके विपरीत अगर उन्हीं समस्याओं को रोते रोते पार किया जाए, तो समस्याएं बड़ी लगने लगती है ! उनकी तीव्रता और उग्रता दोनों बढ़ जाती है । जिससे मानसिक तनाव भी दुगना हो जाता है ।

इनसे बचने का यही उपाय है कि

..... जो होगा देखा जाएगा ....

महिला तांत्रिक और लिंग परिवर्तन.......

उस रात मे मीनम्मा के साथ की वजह से हुई भयंकर थकावट नींद से दुरुस्त हो गई थी । अब शरीर में ताजगी का एहसास हो रहा था, लेकिन पसीने से चिपचिपा रहा था ।

तो....

मैंने सोचा कि क्यों न स्नान कर लिया जाए ।

मैं उस गुफा से बाहर निकला और बाहर गिरते हुए झरने के पानी में नहाने लगा ....

तभी मुझे बहुत सारी महिलाओं के खिल खिलाने की आवाज सुनाई देने लगी । ऐसा लग रहा था जैसे बहुत सारी लड़कियां या महिलाएं एक साथ मस्ती कर रही हो ....

यह आवाज नीचे से आ रही थी ।

पहाड़ी झरना गुफा के सामने से होता हुआ नीचे गिरता था ।

गुफा के सामने लगभग चार छह फुट की जगह थी जहां झरने की कुछ बौछारें गिरती रहती थी । वह जगह जैसा कि आप लोग जानते हैं पानी गिरने की वजह से काफी फिसलन भरा हो चुका था ।

उत्सुकतावश मैंने आगे बढ़कर नीचे की तरफ देखा तो झरने के पानी में लगभग 50 फीट नीचे ढेर सारी युवतियाँ और महिलायें स्नान कर रही थी और एक दूसरे के ऊपर पानी फेंक कर जल क्रीड़ा कर रही थी । उनको देखने के चक्कर में मेरा संतुलन बिगड़ गया ....

चट्टान पर फिसलन थी और मैं वहां से फिसल कर नीचे की तरह गिरने लगा ....

मेरे मुंह से चीख निकल गई ।

मेरी चीख ने उनका ध्यान खींचा और मेरे नीचे गिरते ही उनमें से तीन चार युवतियों ने मुझे किसी गुड्डे की तरह अपने हाथों में कैच कर लिया !

ठीक वैसे ही जैसे एक बच्चा गुड़िया फेंकता है तो दूसरा उसे अपने हाथ में पकड़ लेता है ।

यह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी, क्योंकि मेरा वजन लगभग 70 किलो के आसपास था .....

और उनको देखकर ऐसा लगता था जैसे उनका वजन ज्यादा से ज्यादा 40-50 के आसपास ही होगा ।

उसके बावजूद उन्होंने मुझे बड़ी आसानी से अपने हाथों में लपक लिया था ।

जबकि मैं यह सोच रहा था कि अब कुछ हड्डियां तो जरूर टूटेंगी ।

खैर.....

उनके इस प्रकार से झेल लेने की वजह से मैं बच गया ।

लेकिन........

क्या वाकई में बच गया था ?

नहीं ....

बल्कि यह तो एक बहुत बड़े मायाजाल का प्रारंभ था ।

जब उन्होंने मुझे लपक लिया तो मैंने धीरे से अपनी आंखें खोली और बचने के लिए भगवान का शुक्रिया अदा किया उन्होंने मुझे जमीन पर पानी पर उतार दिया ।

वह संख्या में आठ स्त्रियाँ थी । उन्होंने जो वस्त्र पहने हुए थे वह तीन अलग-अलग रंगों की हाफ साड़ियां थी । हरे, पीले और सफेद रंग की !

सभी के बाल खुले हुए थे । उस साड़ी के अलावा उनके शरीर पर कोई और वस्त्र नहीं था ।
अब मैं उन सब के बीच में निर्वस्त्र खड़ा हुआ था । कुछ देर बाद मुझे अपनी स्थिति का आभास हुआ और मैंने अपना हाथ अपने गुप्त भाग पर रख लिया ।
उनमें से जो सबसे वरिष्ठ लग रही थी और लगभग 40 साल के आसपास की थी । वह मुझे पकड़कर पास ही बने हुए पेड़ की ओट में ले गई । वहां एक बड़ा सा पत्थर पड़ा हुआ था । उसने मुझे पकड़ कर उस पत्थर के ऊपर बैठा दिया । अब मैं निर्वस्त्र उस पत्थर पर बैठा हुआ था ।

जैसा कि मैंने आपको बताया था परिस्थितियों के हिसाब से मैंने अपने आप को छोड़ दिया था !
अब जो भी होना था वह महामाया की इच्छा थी ।
लेकिन जो होने वाला था ....
वह वास्तव में कल्पना से परे था ।
महिला ने अपने पहने हुए वस्त्र को उतार फेंका और वह भी निर्वस्त्र हो गई । उस महिला ने मेरे गुप्त भाग को स्पर्श किया । जिसके बाद मेरा शरीर अपनी पूर्ण

अवस्था में आ गया और वह मेरे ऊपर चढ़ गई । फिर उसने मेरी नाभि में स्पर्श किया और उसके बाद मेरे वक्ष स्थलों को स्पर्श करते हुए मेरे चेहरे की और उसके हाथ बढ़ने लगे ।

मुझे लगा कि संभवतः यह भी मेरा उपभोग करेगी ।

उसके आघात प्रारंभ हो चुके थे और साथ ही उसके मुंह से मंत्र की ध्वनिया भी निकलती जा रही थी ......

तभी अचानक वह मुझ से परे हट गई ।

जैसे ही वह मुझ से परे हटी हल्का धुआं सा छाने लगा ।

आसपास सब धुंधला धुंधला सा दिख रहा था और मुझे अपने गुप्त भाग में तीव्र पीड़ा का आभास होने लगा ।

पूरे शरीर में अकड़न सी होने लगी....

ऐसा लग रहा था जैसे शरीर के भीतर कुछ विचित्र घटित हो रहा है ।

थोड़ी देर के बाद धुआं छटने लगा ....

जब धुआ पूरी तरह से छट गया तो जो मैंने देखा....

वह कल्पना से परे था ।

मेरा पूरा देह परिवर्तन हो चुका था !

मेरे वक्ष स्थल विकसित हो चुके थे !!

चेहरा सौम्य हो चुका था....

और गुप्तांग भी स्त्री अंगों में परिवर्तित हो चुके थे !!!
यानी मैं पूरा का पूरा स्त्री स्वरूप में आ चुका था ।

उसके बाद उस महिला ने मुझे एक सफेद रंग की साड़ी पहना दी ।
अब मैं संपूर्ण रूप से एक स्त्री बन चुका था । उसने मेरा हाथ पकड़कर साथ आने का इशारा किया और वह मुझे लेकर आगे बढ़ने लगी और वापस उन स्त्रियों के पास आ गई और हम सब एक साथ एक दिशा में चल पड़े । हम सब एक झुंड के रूप में आगे बढ़ते जा रहे थे । मेरा हाथ पकड़े हुए उनमें से जो सबसे वरिष्ठ महिला थी वह और उसके पीछे पीछे 20 से 30 साल की आयु वर्ग की बाकी महिलाएं ।

वह रहस्यमय गुरुकुल ....

धीरे धीरे चलते हुए हम लगभग एक किलोमीटर चलने के बाद एक गांव जैसी जगह पर आ गए ।

खुली जगह थी......

जहां पर लगभग 10 बच्चियां सफेद रंग की हाफ साड़ी पहने हुए थी । उनके बाल जुड़े की शक्ल में सिर के एक तरफ बंधे हुए थे । कमर पर एक पट्टा बंधा हुआ था और वह अपने हाथों में छोटे-छोटे शस्त्र लेकर अभ्यास कर रही थी । यह अभ्यास बहुत कुछ केरल के कलारी पयट्टू जैसा लग रहा था ।

मार्शल आर्ट का नाम आता है तो हमारे दिमाग में सबसे पहले कराटे, जूडो, कुंग फू, शाओलिन जैसे नाम पूरी सहजता से उभर आते हैं !

लेकिन क्या वास्तव में यही मूल मार्शल आर्ट है ....?

आपको जानकर हैरानी होगी कि मार्शल आर्ट भी सनातन धर्म की ही देन हैं।

भारत के दक्षिण वर्ती प्रांत केरल मे दुनिया की सबसे पुरानी युद्ध कला या मार्शल आर्ट आज भी

अपने मूल स्वरुप में जिंदा है । इसे कलारिपयट्टू (kalaripayattu) के नाम से जाना जाता है । जो कि सभी तरह के मार्शल आर्ट की जननी है ।

दुर्भाग्य की बात यह है कि हम अपने इतिहास और अपनी क्षमताओं के बारे में जानते नहीं हैं और जानना भी नहीं चाहते ।
हम केवल वही मानते समझते और जानते हैं जो विदेशी या हमारे स्वयंभू वैज्ञानिक सोच वाले बुद्धिजीवी हमें बताना चाहते हैं । हमारी चीजें हमें ढकोसला और अवैज्ञानिक लगती हैं, जबकि अगर आप खोजें तो सनातन धर्म यथार्थ के सबसे ज्यादा करीब है । उसकी परंपराएं और उसकी संस्कृति वास्तव में दुनिया की सबसे वैज्ञानिक और मानव के अनुकूल संस्कृति है । जो उसे प्रकृति के साथ सानिध्य प्राप्त करने और “वसुधैव कुटुंबकम” की मूल भावना को आत्मसात करने की प्रेरणा देती है जहां यह पूरी पृथ्वी उसका स्वयं का परिवार होता है ।

मलायलम में कलारी का मतलब होता है "युद्धस्थल" और पयट्टू का मतलब होता है "पारंगत या प्रशिक्षित

होना" या "अभ्यास करना"। जब इन शब्दों को आपस में जोड़ा जाता है तो इसका मतलब होता है "युद्धस्थल के लिए प्रशिक्षित होना"।

कलारिपयट्टू एक बेहद प्राचीन युद्ध कला है। भारतीय परंपरा और जनश्रुति के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण इस विद्या के असली जनक थे । इस विद्या के माध्यम से ही उन्होंने चाणूर और मुष्टिक जैसे मल्लों का वध किया था।

जैसा कि मैंने कहा कि हम अपने पास मौजूद चीजों का महत्व नहीं समझते हैं और उन्हें महत्व देने की जरूरत भी नहीं मानते हैं । इसका एक उदाहरण केरल के इस अद्भुत मार्शल आर्ट की सबसे बुजुर्ग महिला ट्रेनर मीनाक्षी अम्मा का है । जिनकी क्षमता को और उनके द्वारा इस ज्ञान के प्रसार को सन 2017 में पद्मश्री के रूप में सम्मान मिला । जबकि उनकी आयु लगभग 76 वर्ष की हो गई थी । इससे आप समझ सकते हैं कि हम अपनी चीजों को कितना महत्व और सम्मान देते हैं । ऐसी घटिया सोच ने भारत की और सनातन धर्म की अद्भुत और शानदार उपलब्धियों को अंधविश्वास और

अवैज्ञानिक मानने की मानसिकता अपनाने पर विवश कर दिया है । जिसे हम पीढ़ियों से अपने सर पर लादकर गर्व से अपने आप को वैज्ञानिक मान कर घूम रहे हैं ।

वहाँ जो अभ्यास चल रहा था वह संभवत इसी विद्या का अभ्यास था क्योंकि अभ्यास की प्रक्रिया है काफी कुछ कलारी पयट्टू से मिलती जुलती थी....
उन बच्चियों की उम्र मुश्किल से 9 या 10 साल की रही होगी । उनकी चपलता किसी तितली की तरह थी । बिजली की गति से वे एक दूसरे के ऊपर लपकती थी और उनका विरोधी भी उसी चपलता के साथ अपने आप को बचा लेता था । उसे देखना अपने आप में एक अद्भुत अनुभव था ।

वहां से होते हुए हम और आगे बढ़े......

आगे बढ़ने पर वैसा ही एक और नजारा देखने को मिला । यहां पर भी 6-7 बच्चियां बैठी हुई थी जो पत्थर के बने हुए खरल पर कुछ हरे रंग के पत्तों को पीस रही थी । उनके बीच में एक महिला खड़े होकर उन्हें इसकी

प्रक्रिया समझा रही थी । एक यंत्र जलती हुई आग के ऊपर रखा हुआ था और वह महिला उस यंत्र को बीच-बीच में हिलाते जाती थी । एक बच्ची लकड़ी के डंडे से उसमें रखे हुए बर्तन के अंदर की चीजों को हिला रही थी । एक और बच्ची कुछ सूखी हुई जड़ी बूटियों को कूट रही थी । यानी कुल मिलाकर ऐसा लग रहा था जैसे उन बच्चियों को औषधियों की शिक्षा दी जा रही हो ।

मैं आश्चर्यचकित था कि जंगल के ऐसे भाग में इस प्रकार की विद्या का संरक्षण और आने वाली पीढ़ी में ट्रांसफर कितनी सहजता से किया जा रहा है ......

हम और आगे बढ़े वहां का नजारा कुछ अलग ही था एक लगभग 20-25 साल की एक महिला एक दूसरी महिला के साथ खड़ी थी । उनके सामने लगभग 12 बच्चियां नीले रंग की साड़ी पहने हुए खड़ी थी । संभवत: अलग अलग विभाग के हिसाब से साड़ियों का रंग चयन किया गया होगा, इसलिए सभी की साड़ियों का रंग अलग अलग था । हां जो महिलाएं सिखा रही थी उनकी साड़ियों का रंग पीला था । संभवतः यह टीचर होने का प्रमाण था ।

जो महिलाएं खड़ी हुई थी उसमें से एक महिला दूसरी महिला के गर्दन वाले हिस्से पर हाथ रख कर उन बच्चियों को कुछ समझा रही थी । उनकी भाषा अजीब सी थी । जो मुझे समझ में नहीं आ रही थी । पर ऐसा लग रहा था कि वह बच्चियों को शरीर के अंगों के बारे में कुछ बताने की कोशिश कर रही होगी । वह उस क्षेत्र को छू रही थी और बच्चियों को अपने अपने साथियों के उस क्षेत्र को छूने के लिए बोल रही थी । 2-2 की जोड़ियों में बच्चियां खड़ी थी और उन्मे से एक शांत खड़ी थी और दूसरी उस महिला के द्वारा बताए जा रहे बिंदु को छूने की कोशिश कर रही थी । तभी उस महिला ने एक अजीब सी आवाज निकाली !

जो शायद किसी प्रकार का संकेत था और उसने उस महिला की कान और गर्दन के बीच वाले एक नस पर अपने अंगूठे को दबा दिया ।

जैसे ही उसने अंगूठे को दबाया वह महिला किसी कटे हुए वृक्ष की तरह जमीन पर गिर पड़ी ।

इस नजारे को देखकर मैं बेहद आश्चर्यचकित था कि कैसे एक उंगली के दबाव से किसी को जमीन पर गिराया जा सकता है ।

जब मेरी नजर उस महिला से हटी तो मैंने देखा कि उन बच्चियों के जोड़ों में से दो जोड़ों में से एक एक बच्चियां उसी प्रकार नीचे गिर चुकी थी जैसे वह महिला गिरी थी, अर्थात उस बिंदु को उन बच्चियों ने भी पकड़ लिया था । यह संभवतः शरीर के अंगों पर दबाव बनाने से होने वाले प्रभाव को सिखाने का प्रक्रम रहा होगा ।

वहां से होते हुए हम आगे बढ़े और आगे जाने पर एक झोपड़ी बनी हुई थी जहां पर बाकी सारी महिलाएं रुक गई । जो महिला मेरा हाथ पकड़े हुए थी ......

वह मुझे लेकर कक्ष के अंदर गई ।

कक्ष के अंदर एक महिला बैठी हुई थी जो संभवत किसी प्रकार की पूजा में संलग्न थी । उसके सामने एक पात्र रखा हुआ था जिसमें कोई जड़ी जैसी चीज जल रही थी ......

उसका धुआं फैला हुआ था.......

यह धुआं ठीक वैसा ही था ...

जैसा अष्टगंध के डब्बे को खोलने से आता है या मंदिरों में जब भगवान के सामने हवन आदि संपन्न होते हैं तब आता है !

बेहद शांति प्रदान करने वाला और मनमोहक !

उसकी खुशबू को आत्मसात करता हुआ मैं वहां पर खड़ा था ।
वह महिला भी मेरे साथ वहीं पर खड़ी हुई थी । थोड़ी देर के बाद वह महिला जो थोड़ी वृद्ध लग रही थी उठ खड़ी हुई और उसने अपने इष्ट को प्रणाम किया ।
संभवतः उसका पूजन संपन्न हो चुका था उसके बाद वह पलटी ।

उसे देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया ...... क्योंकि यह वही बुजुर्ग महिला थी जो चटाई बेचने मेरे घर पर आई थी ।
वह मुझे देख कर मुस्कुराई !
मेरे चेहरे पर भी मुस्कुराहट बिखर गई, क्योंकि बाहर जो कुछ मैंने देखा उसके बाद मुझे लगा कि वास्तव में वह भी तो महामाया का ही कार्य कर रही थी ।
उसने मेरे साथ की महिला को जाने का इशारा किया ।
वह कक्ष से बाहर हो गई । पास में ही एक लकड़ी का तखत जैसा बिछा हुआ था । वह उस पर जाकर बैठ गई और मुझे भी बैठने का इशारा किया ।
उसने मुझसे पूछा - कुछ पियोगे ?

मेरे मन में मीनम्मा के द्वारा पिलाई गई मटकी की याद आ गई और मुझे लगा कि यह फिर कुछ ना कुछ गड़बड़ सड़बड़ चीज पिलाएगी, इसलिए मैं चुपचाप सर झुका कर बैठा रहा ।

वह ठठा कर हंस पड़ी और बोली - चिंता मत करो मैं तुम्हें कुछ भी ऐसा वैसा नहीं पिलाऊंगी ।

मैं शांत रहा तो फिर उसने पूछा - कॉफी पियोगे?

मुझे लगा कि वह मजाक कर रही होगी ।

मैंने प्रश्नवाचक निगाहों से उसकी तरफ देखा ।

वह मेरा संशय समझ गई ।

उसने हवा में हाथ लहराया और उसके होठों से कुछ मंत्रों का उच्चारण हुआ । लगभग दो-तीन मिनट का समय लगा होगा फिर उसने मुझे आंख बंद करने के लिए कहा ......

मैं आंख बंद करके बैठ गया !

उसके बाद मुझे तीन चुटकियों की आवाज सुनाई दी और फिर कुछ ऐसी आवाज जैसे कोई बर्तन सामने रखा गया हो ।

तभी उन्होंने आंख खोलने के लिए कहा ।

जैसे ही मैंने अपनी आँखों को खोला सामने में स्टील के बर्तन में भाप उड़ती हुई कॉफी रखी हुई थी। तांत्रिक साधिकाओं के साथ अपने लंबे अनुभव की वजह से मैं जानता था कि वह कुछ भी करने में सक्षम होती है !

उसका प्रमाण था वह शानदार नेस्कैफे कॉफी !

जो उस कॉफी के पहले घूंट को गले से उतारते ही मुझे एहसास हो गया !

क्योंकि उसका स्वाद अलग ही होता है।

कॉफी भी कई प्रकार की होती है।

जिसमें से कुछ ब्रांड जिनके विज्ञापन टीवी पर आते हैं उनका स्वाद तो आप जानते ही होंगे।

एक ब्लैक कॉफी होती है जो इंडियन कॉफी हाउस के आउटलेट पर पाउडर के रूप में मिलती है। इसे आप पानी में उबालकर कॉफी बना सकते हैं। इसका स्वाद भी बिल्कुल अलग सा होता है। इसके अलावा फिल्टर कॉफी भी लोग पीते हैं। कुल मिलाकर कई प्रकार की चीजें हैं और नेस्कैफे मेरी पसंद की कॉफी थी।

उसे पीना वास्तव में काफी सुकून देने वाला था।

कॉफी पी लेने के बाद मेरी सहज प्रवृत्ति जागृत हो गई थी, और मैं जानने के लिए उत्सुक हो गया कि आखिर यह सब क्या हो रहा है ?

कुछ कुछ जानकारी मीनम्मा ने दी थी लेकिन मैं जानता था कि इसके आगे भी बहुत कुछ है । इसके संबंध में वह बुजुर्ग महिला ही बता सकती है ।

जब किसी जटिल विषय के बारे में पूछना हो तो सीधे उसके बारे में पूछने पर अधिकांश साधक क्रोधित हो जाते हैं और फिर मामला अटक जाता है । मैं काफी वर्षों से इस क्षेत्र में था । अनेक साधक साधिकाओं से मिल चुका था ।

इसलिए मैं ऐसा कोई रिस्क नहीं लेना चाहता था ।

तो मैंने हल्के विषय से बातचीत को प्रारंभ करने का मूड बनाया और पूछा - बाहर में किस चीज का प्रशिक्षण चल रहा है ? क्या यह कलरी पयटू है ?

मेरी बात सुनकर वह बुजुर्ग महिला मुस्कुराई । जैसे मेरे भाव को समझ गई हो ।

उसने कहा - हां यह कलारिपयट्टू है । उसमें कुछ संशोधन और परिवर्तन हम लोगों ने भी किया है ।

उसका बोलने का लहजा यह बता रहा था कि वह भी पढ़ी-लिखी महिला है ।

उसका बोलने का अंदाज आत्मविश्वास से भरा हुआ था ।

जैसा कि आमतौर पर उन लोगों का होता है जो किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने आप को समर्पित कर देने का माद्दा रखते हैं ।

उन्होंने आगे बताया - कलरी पयट्टू विद्या के तीन अंग है । जिसमें से एक तो शस्त्र विद्या से संबंधित है । जो युद्ध कला को सीखने और सिखाने से संबंधित है । इसमें अपने शरीर पर नियंत्रण करने विपरीत परिस्थितियों में अपने आप को संतुलित रखने और मानसिक रूप से शांत रखने का अभ्यास कराया जाता है । यह तीनों चीजें किसी भी लड़ाई में जीतने के लिए जरूरी होती है । बाल्यावस्था में ही इसका ज्ञान कराना जरूरी होता है ताकि शरीर में चपलता एकाग्रता और शक्ति का संतुलन हो सके । इसलिए यह विद्या छोटी आयु के बच्चों से सिखाना प्रारंभ करते हैं । जो इसे काफी अच्छी तरह सीख पाते हैं । बड़े हो जाने के बाद ज्यादा समय लगता है क्योंकि शरीर उतना मुलायम नहीं रह

जाता ...कठोर हो जाता है ! उसे पहले मुलायम बनाना पड़ता है तब जाकर विभिन्न प्रकार की युद्ध मुद्राएं करने लायक स्थिति बनती है ।

इसका दूसरा अंग है मर्म विद्या ।

यह विद्या शरीर के विभिन्न अंगों में गुजरती हुई नाड़ियों से संबंधित है । हमारे शरीर में 72000 नाडियां मानी जाती है । इनके अलग-अलग प्रकार की संधियों या बिंदुओं पर लगभग 108 के आसपास मर्म स्थल हैं । जिनका ज्ञान हम करवाते हैं । इन मर्म स्थलों पर अलग-अलग प्रकार के दवाब से कई प्रकार के उपचार हो सकते हैं और शरीर को कई प्रकार से शिथिल भी किया जा सकता है ।

बाहर मे जो तुमने देखा वह इसी विद्या का अभ्यास कर रही है । अभी वह शत्रु को बेहोश करने की विद्या सीख रहे हैं । गले के पास जो एक मर्म है, नाडियों का एक बिंदु है उस बिंदु विशेष पर एक विशेष प्रकार से दबाव डालने से मस्तिष्क शरीर को शिथिल हो जाने का संकेत दे देता है और व्यक्ति बेहोश हो जाता है । इस विद्या का प्रयोग युद्ध के दौरान भी किया जा सकता है और सामान्य जीवन में भी किसी शत्रु को विवश करने के

लिए किया जा सकता है । कई ऐसे बिंदु हमारे शरीर में है जिनके ऊपर उचित ढंग से दबाव डालने पर उस अंग को कुछ समय के लिए लगभग लकवा ग्रस्त जैसा बनाया जा सकता है । उस क्षण विशेष के लिए या उस समय अवधि के लिए वह अंग काम करना बंद कर देता है ।

उदाहरण के लिए अगर कमर के पास के हिस्से में स्थित मर्म को दबा दिया जाए तो उस व्यक्ति का पैर का हिस्सा शिथिल हो जाएगा और वह चलने में अक्षम हो जाएगा । इसे वही ठीक कर सकता है जो इस विद्या का जानकार हो । डॉक्टर इसे ठीक नहीं कर सकते क्योंकि वह इसका कारण नहीं ढूंढ पाएंगे और दवाइयां बहुत धीरे-धीरे काम करती है । संभवत तुमने भी देखा होगा कि जो व्यक्ति लकवा ग्रस्त हो जाते हैं उनको ठीक होने में 6 महीने से साल भर का वक्त लगता ही है और उसके बाद भी प्रभावित अंग में शक्ति नहीं आ पाती है ।

मैं सोच में पड़ गया ....

क्योंकि यह बात तो सच है ।

मेरे एक मित्र हैं !

जिनको हाई बीपी की बीमारी थी और साथ ही काम की अधिकता की वजह से वे लगभग 15 दिनों तक ठीक से नहीं सो पाए । इसकी वजह से शरीर में शिथिलता आने लगी और लगभग 20 दिन के बाद उनका बायां हिस्सा लकवा ग्रस्त हो गया । एक प्रतिष्ठित अस्पताल में उनको ले जाया गया लेकिन डॉक्टरों की लापरवाही कह लीजिए या व्यस्तता कह लीजिए.....

उनको वह इंजेक्शन समय पर नहीं लग पाया जो लकवे के तुरंत बाद लगाया जाता है ।

यहां तक कि उनका MRI भी नहीं हो पाया ।

इन सबके चलते वह गंभीर अवस्था में जाने लगे ।

तीसरे दिन दूसरे अस्पताल में शिफ्ट किया गया । जहां MRI आदि करने के बाद उनका इलाज चालू हुआ तो डॉक्टरों का कहना था कि अगर आप तुरंत लाए होते तो परिस्थितियां बेहतर होती ! लेकिन जो होना था .....

वह तो हो चुका था ।

आज लगभग 6 महीने बीत चुके हैं और वह मित्र बड़ी मुश्किल से कुछ कदम ही चल पाते हैं ।

फिजियोथेरेपी से लेकर एक्यूप्रेशर तक सब कुछ चल रहा है, लेकिन सुधार की गति काफी कम है ....

खैर .....

वे आगे बोली - इसके अलावा तीसरी विद्या उपचार या आयुर्वेदिक औषधि से संबंधित है। जिसमें मालिश भी एक मुख्य भाग है। जिसका प्रयोग कलरी पयट्टू में किया जाता है।

केरल में आयुर्वेदिक मालिश के जानकार लोग इस मर्म विद्या का उपयोग अपने मरीजों की सुप्त पड़ी हुई नाड़ियों को जागृत करके उन्हें स्वस्थ बनाने के लिए करते हैं।

तुमने मालिश के जानकारों के विषय में अवश्य सुना होगा, जिनके पास जाने से कई प्रकार के मोच और दर्द का बड़ी आसानी से वह इलाज कर लेते हैं, क्योंकि यह नस से संबंधित समस्या है और नस को सही जगह पर बैठा देने से इस प्रकार का दर्द ठीक हो जाएगा ।

मैंने सहमति में सिर हिलाया।

आयुर्वेद एक बेहद उच्च स्तर का विज्ञान है जिसमें हम प्रकृति के माध्यम से प्रकृति में उत्पन्न होने वाले पौधों के औषधीय गुणों को पहचान कर उन्हें बीमार व्यक्ति के इलाज में प्रयुक्त करते हैं। यदि इस विद्या का सही

उपयोग हो तो बहुत सारी बीमारियों का इलाज हो सकता है ।
हम इन बच्चियों को यह तीनों विद्या सिखा रहे हैं जो आने वाली पीढ़ियों तक इन के माध्यम से सुरक्षित रह पाएगी ।

यह बात सुनने में अजीब लगती है मगर सच है कि हमारी बहुत सारी विद्याओं को लुप्त करने का प्रयास लगातार किया जाता रहा है । इनमें से आयुर्वेद भी एक है । आयुर्वेदिक औषधालय काफी समय से मौजूद है । सरकारी आयुर्वेदिक औषधालय भी कई वर्षों से कार्य कर रहे हैं...... लेकिन उनकी स्थिति के बारे में आप लोग भी जानते होंगे ।

बाबा रामदेव के पतंजलि योगपीठ के द्वारा स्थापित किए गए निशुल्क चिकित्सालय की वजह से आयुर्वेद को फिर से एक नई पहचान मिली है । उनके द्वारा कोरोनावायरस के इलाज के लिए एक टेबलेट का इस्तेमाल करने की सलाह दी थी । जिस पर काफी बवाल मचा था । यह इस बात को समझने के लिए काफी है कि हम भारतवासी भारत के किसी व्यक्ति के

द्वारा बनाई हुई चीजों पर बहुत ज्यादा विश्वास नहीं करते।

बड़ी कंपनियों द्वारा भारतीय उत्पादों और भारतीय जन औषधिओं को दबाने का प्रयास कई प्रकार से किया जाता रहा है। इसका एक उदाहरण है कॉलगेट टूथपेस्ट। अगर आपने कुछ सालों पहले के इस टूथपेस्ट के विज्ञापनों को देखा होगा तो याद होगा। यह विज्ञापन थियेटरों में भी फिल्म के पहले दिखाए जाते थे और उसमें यह बताया जाता था कि खुरदुरे और दानेदार पदार्थ दांतों को खराब कर सकते हैं। प्राचीन काल में कोयले और नमक के पाउडर से दांत मांजने की हमारी परंपरा रही है। जिसके विषय में यह एडवरटाइजमेंट गलत प्रचार करता था। कालांतर में जैसे बाबा रामदेव की दंत कांति टूथपेस्ट मार्केट में आई और उसने धीरे-धीरे मार्केट पर कब्जा कर लिया तब उन्होंने एक नया विज्ञापन निकाला जिसमें नमक से लेकर वेद शक्ति तक का सहारा लिया गया।
यहां तक कि चारकोल के विषय में भी बताया जाने लगा जो कि कोयले का ही एक स्वरूप है।

यानी....

अंततः......

हम जो नमक और कोयला इस्तेमाल कर रहे थे वह वास्तव में दातों के लिए अच्छा था ।

हमने कई साल उन्हीं चीजों को बेकार समझकर इस्तेमाल नहीं किया ।

इसी प्रकार आयुर्वेद भी उपेक्षित होता रहा है । बहुत सारी गंभीर बीमारियों में एलोपैथिक इलाज अपेक्षित होता है उदाहरण के लिए अगर आप का एक्सीडेंट हो जाए तो आपको सर्जरी करानी पड़ेगी और हो सकता है लोहे की प्लेट भी लगानी पड़े । ऐसे में आप के इलाज में एलोपैथिक सिस्टम काम का साबित होगा ।

पाचन संस्थान के गड़बड़ी वाले मामलों में आप आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग करके काफी लाभ प्राप्त कर सकते हैं । इसी प्रकार त्वचा रोगों से संबंधित कई बीमारियों में खासतौर से एलर्जी में आपको आयुर्वेदिक औषधियों से लाभ प्राप्त होगा ।

खैर .....

देवकी गुरुक्कल........

बुजुर्ग महिला से मैंने पूछा कि - क्या आप केरल से हैं ? उनके चेहरे की बनावट और घुंघराले बाल कुछ-कुछ वैसा ही इशारा कर रहे थे ।

वह मेरी तरह देख कर मुस्कुराई और बोली - हां ! मैं केरल से हूं ।

मेरा नाम देवकी है । यहां मुझे सभी देवकी गुरुक्कल कहते हैं । केरल में कलरी के गुरुओं को गुरुक्कल कहा जाता है । मैं बचपन से ही कलरी पायट्टू का अभ्यास करती थी लगभग साढ़े तीन साल की उम्र से मुझे मेरे माता पिता ने इस विद्या का अभ्यास कराना प्रारंभ कर दिया था । वह दोनों एक ऐसे परिवार से संबंधित थे जो इस विद्या को पीढ़ियों से सिखाता आ रहा है ।

मैंने पूछा - तो क्या हम केरल में हैं ?

उन्होंने कहा - नहीं ! हम कृष्णा नदी के तट पर प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग मल्लिकार्जुन के क्षेत्र में है । अर्थात आंध्र प्रदेश में है ।

मैंने पूछा - आप यहां तक कैसे पहुंचे ?

उन्होंने बताया - यह एक लंबी कहानी है । उस समय मेरी आयु लगभग 20 वर्ष की थी । अपने माता-पिता के साथ मैं कामाख्या के दर्शन करने के लिए आसाम पहुंची । केरल में हमारे घर के सामने नदी हुआ करती थी । इसलिए तैरना स्वाभाविक रूप से मुझे भी आता था और मेरे माता-पिता को भी ...... मैं यह बताना चाहूंगी कि जिसके घर के सामने नदी होती है वह तैरने के मामले में किसी मछली की तरह होता है । नदी में बाढ़ भी आई हुई हो तब भी ऐसे लोग नदी में नहाते भी हैं और तैरते भी हैं क्योंकि उन्हें पता होता है कि किस प्रकार से बहाव का सहारा लेना है और किस प्रकार से नदी से वापस आना है ।

कामाख्या के दर्शन से पहले उमानंद भैरव के दर्शन करना आवश्यक माना जाता है । उमानंद भैरव का मंदिर ब्रह्मपुत्र नदी के बीच में स्थित है । सनातन धर्म में हर देवी शक्ति का एक पुरुष देव स्वरूप भी होता है जिसे उसका भैरव कहा जाता है । भगवती कामाख्या के भैरव का नाम उमानंद है । जिनके नाम से यह मंदिर जाना जाता है । यह ब्रह्मपुत्र नदी के बीच में पीकॉक

द्वीप में स्थित है। जिस पर्वत पर मंदिर का निर्माण किया गया है, उसे भस्मांचल के नाम से जाना जाता है।

कहा जाता है कि भगवान शिव ने यहां पर भयानंद के रूप में निवास किया था। कालिका पुराण के अनुसार, सृष्टि की शुरुआत में शिव ने इस स्थान पर भस्म का छिड़काव किया था और देवी पार्वती को ज्ञान प्रदान किया था।

एक अन्य किंवदंती के अनुसार यह भी कहा जाता है कि, जब शिव इस पहाड़ी पर ध्यान में थे, कामदेव ने उनके योग को बाधित किया। इसके बाद कामदेव शिव के क्रोध की आग से जलकर भस्म हो गए जिसके कारण इस पहाड़ी को भस्मांचल नाम मिला। ऐसा कहा जाता है कि उर्वशीकुंड यहाँ स्थित है। यहाँ देवी उर्वशी का निवास है, जो कामाख्या के भोग के लिए अमृत (अमृत) लेकर आती है। इसलिए इस द्वीप को उर्वशी द्वीप नाम भी मिला।

नदी में आने वाले भंवर के बारे में आपने सुना होगा। उस समय नदी मे ऐसा ही एक भंवर आया था जिसमें

नाव उलझ गई और पलट गई । मैं उस भंवर के बीच में गिर गई ।

मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे कोई मुझे नीचे की तरफ खींच रहा हो ।

उसके बाद क्या हुआ ?

मुझे पता नहीं चल पाया ......

जब मुझे होश आया.....

तो मैं नदी के तट पर पड़ी थी ।

मेरे आस पास कोई नहीं था !

केवल घना जंगल दिखाई दे रहा था !!

तभी......

मुझे हाथियों की चिंघाड़ सुनाई देने लगी .....

संभवत: हाथियों का झुंड पानी पीने के लिए नदी तट पर आ रहा था ।

मेरे अंदर इतनी शक्ति नहीं थी कि मैं वहां से उठकर भाग सकूं ......

मौत मुझे अपने सामने दिखाई दे रही थी ।

इतना कहकर देवकी गुरुक्कल ने विराम लिया ।

मेरी तरफ गहरी नजरों से देखा । जैसे तय कर रही हों कि इसे बताना चाहिए या नहीं बताना चाहिए । उनके चेहरे पर आश्वस्ति के भाव उभरे और एक मुस्कान आई । फिर उन्होंने आगे बताना प्रारंभ किया ।

बोली - बड़ी मुश्किल से घिसटकर मैंने अपने आप को एक बड़े पत्थर की ओट में छुपा लिया , और सोचने लगी कि अब संभवतः हाथियों का झुंड मुझे नहीं देख पाएगा ।

हाथियों की चिंघाड़ करीब आती जा रही थी ।

मेरे दिल की धड़कन भी बढ़ती जा रही थी ।

मैं संभावित मृत्यु से दो-चार होने के लिए अपने आप को मानसिक रूप से तैयार कर रही थी !

नदी में बहने के कारण और संभवतः उस भवर से निकलने के लिए किए जा रहे प्रयासों की वजह मेरा शरीर बुरी तरह थक कर चूर हो चुका था ।

ऐसा लग रहा था जैसे उसमें जान भी बड़ी मुश्किल से बाकी रह गई हो !

उस पत्थर के पीछे तक घिसटकर जाने में मुझे जितनी ताकत लगी उसके बाद मेरी सांसें फूलने लगी थी और मैं हांफने लगी थी ।

इससे तुम मेरी स्थिति का अंदाजा लगा सकते हो । कलरी जैसे मार्शल आर्ट को करने वाली युवती , जिसका तीन-चार घंटे नित्य अभ्यास में बीतता हो , वह इस अवस्था में आ चुकी थी कि उससे चला भी नहीं जा रहा था । वह बड़ी मुश्किल से घिसटकर एक पत्थर की ओट में अपने आप को बचाने की कोशिश कर रही थी ।
चिंघाड़ अब बेहद करीब आ चुकी थी......
हाथियों का झुंड नदी के पास पानी पीने के लिए पहुंच चुका था !
सूंड से पानी फेंकने की आवाज सुनाई दे रही थी ......
संभवत: वे आपस में जल क्रीड़ा कर रहे होंगे ।

टीवी पर आपने भी हाथियों को नहाते हुए देखा होगा । वह पानी अपनी सूंड में खींच कर अपने ऊपर भी डालते हैं और एक दूसरे पर भी उछलते हैं ।
इसके बीच में कुछ नन्हे हाथी रहते हैं जो अपनी बदमाशियां अलग करते रहते हैं ।
वही सब चल रहा था.....
किसी ने मुझे नहीं देखा ।

लगभग आधा एक घंटे तक उनका कार्यक्रम चलता रहा ।

उसके बाद एक चिंघाड़ की आवाज आई ।

संभवतः वह उनके मुखिया की रही होगी !

उसके बाद सारे लोग वापस मुड़कर जाने लगे ।

करीब 10 मिनट में नदी तट वापस खाली हो चुका था ।

मैं "जान बची तो लाखों पाए" सोचती हुई पत्थर के पीछे से निकलने का विचार बना रही थी ।

अपनी ताकत को समेटने की कोशिश कर रही थी तभी मुझे अपने शरीर में एक हवा का झोंका सा लगा ।

मैंने ऊपर देखा ......

तो......

एक विशाल हाथी !

अपनी सूंड से मेरे ऊपर हवा फेंक रहा था !

मुझे लगा .....

कि बस....

यह आखिरी क्षण है !

मैंने आंखें बंद करके अपने सभी देवी देवताओं को याद कर लिया और संभावित मृत्यु के लिए तैयार हो गई ।

जैसा मैंने बताया , मैं केरल में रहती थी तो हथियों के बारे मे जानती थी । केरल के मंदिरों में शोभा यात्रा निकलते समय हाथियों की प्रमुख भूमिका रहती है । उन्हें सोने के बने हुए आभूषणों से विशेष रुप से सजाया जाता है ।

जिस मंदिर में जितनी ज्यादा हाथियों की संख्या रहती है, वह उतना प्रतिष्ठित मंदिर माना जाता है । जिन भक्तों की विशेष मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती है ,वह मंदिर में हाथी का बच्चा या हाथी दान करते हैं । उसके बाद वह हाथी उस मंदिर की संपत्ति हो जाता है । उसकी देखभाल मंदिर के द्वारा की जाती है । उसे काफी राजसी ढंग से रखा जाता है ।

शोभा यात्रा के समय उन हाथियों को सजाकर भगवती के शान में निकाला जाता है ।

हाथी विशालकाय प्राणी होते हैं, लेकिन वह काफी शांत होते हैं । हाथियों को काफी बुद्धिमान माना जाता है । केरल के जंगल पहाड़ियों में हैं । वहां पर गाड़ियों को लेकर जाना आसान नहीं होता । इसलिए जंगलों से पेड़ काटने और उन्हें बाहर तक लाने का काम हाथियों से कराया जाता है ।

इसके लिए उन्हें बचपन से ट्रेनिंग दी जाती है। हाथी केवल अपने महावत की बात सुनता है। इसलिए महावत की भूमिका भी बेहद महत्वपूर्ण होती है। कहा जाता है कि हाथी के मस्तक पर मणि होती है, लेकिन यह मणि नहीं होती अपितु हाथी के मस्तक से जब मद निकलता है तो वह उसके कपोलों की झुर्रियों में इकट्ठा हो जाता है। जब वह सख्त हो जाता है तो उसे निकाल लेते हैं और घिस कर उसे आकार देते हैं और गले में पहनते हैं। लोग उसे 'गजमुक्ता' कहते हैं।

जब हाथी के मस्तक से मद निकलता है तब बहुत मद मस्त हो जाता है। कई बार बेकाबू भी हो जाता है और अपने महावत तक का कहना भी नही मानता। कई बार वह महावत को उठाकर जमीन पर पटक देता है और अपने पैरों से कुचल देता है।
इस अवस्था में हाथी नियंत्रण से बाहर हो जाता है। जब इतना शक्तिशाली जीव नियंत्रण से बाहर हो जाए तो वह बड़ी मुश्किल से काबू में आता है। जब तक वह काबू में आता है तब तक कई बार गाड़ियों को पलट

चुका होता है । कई दुकानों को तबाह कर देता है यानी कुल मिलाकर तबाही का मंजर बना देता है ।

हाथी का मद उत्तेजक औषधि के रूप में भी प्रयोग किया जाता है । इसके अलावा भी उसके कई प्रयोग हैं । इसके विषय में कहा जाता है कि यह पूर्ण नपुंसक पुरुष को भी पुरुषत्व प्रदान करने में सक्षम है ।

मुझे लगने लगा कि कहीं यह मेरा कचूमर ना निकाल दे । अगर अपना एक पाव मुझ पर रख दे तो फिर मेरा बचना नामुमकिन हो जाएगा !

मैं आंखें बंद कर ऐसी किसी घटना की प्रतीक्षा कर रही थी ।

लेकिन......

हुआ इससे बिल्कुल उलट......

उस हाथी ने मुझे अपनी सूंड में लपेटकर उठा लिया । उसने मुझे इस प्रकार से सूंड में लपेटा था कि मेरा पेट पूरा दब गया और मेरे मुंह से पानी की धार निकल पड़ी । यह वह पानी था जो मैंने नदी में बहने के दौरान संभवत पी लिया होगा । जब पानी निकल गया तब मुझे थोड़ा ठीक लगने लगा । वह हाथी मुझे अपने सूंड में लपेट चुका था । वह मुझे लेकर एक ओर चलने लगा

। मैंने कूदने की कोशिश की लेकिन उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा । वह मुझे लेकर एक दिशा में आगे बढ़ गया ! लगभग आधे घंटे तक वह चलता रहा ....

पेड़ों के झुरमुट के बीच से होते हुए हम आगे बढ़ रहे थे ! इतने बड़े-बड़े पेड़ थे कि सूरज की रोशनी भी नीचे तक नहीं आ पा रही थी !!

लगभग एक घंटा चलने के बाद मुझे नगाड़े जैसे किसी वाद्य की ध्वनि सुनाई देने लगी । इससे मुझे लगा कि जरूर यहां पर कोई गांव या बस्ती होगी.....

जहां यह मुझे लेकर जा रहा है ।

मन में भय भी था .....

क्योंकि.....

कामाख्या तांत्रिकों का गढ़ है !

यहां पर होने वाली घटनाओं के विषय में ऐसी ऐसी बातें प्रचलित हैं, जिन्हें सुनकर किसी का भी दिल दहल जाए !

यह ऐसा क्षेत्र है ...... जहां आज भी बलि प्रथा चलती है ।

उस समय तो नर बलि भी होती थी ।

मुझे ऐसा लगने लगा कि कहीं यह हाथी मुझे किसी

ऐसे ही गांव में तो नहीं ले जा रहा.......

जहां पर मेरी नरबलि दे दी जाएगी ।

इस प्रकार की अनेक भावनाएं मन में उठ रही थी !

और जैसे जैसे उठ रही थी......

वैसे वैसे मन का डर भी बढ़ता जा रहा था ।

रस भैरवी ......

नगाड़ों की आवाज अब बेहद करीब सुनाई दे रही थी, अर्थात गांव करीब आ गया था ।

वह हाथी मुझे उठाएं उठाएं उसी प्रकार गांव तक ले आया ।

गांव के बीचो बीच एक मंदिर बना हुआ था । मंदिर बहुत बड़ा नहीं था, लेकिन देखने से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह काफी पुराना रहा होगा ।

उस मंदिर के सामने एक युवती खड़ी थी !

जिसे देखने से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह 18-20 साल की रही होगी ।

उस हाथी ने मुझे उसके पास ले जाकर जमीन पर उतार दिया और सूंड उठाकर चींघाड़ा !

जैसे उसे सेल्यूट कर रहा हो !!

उसके बाद किसी सिपाही की तरह पीछे मुड़ कर चला गया ।

ऐसा लग रहा था जैसे उसे यह काम सौंपा गया हो और उसने वह काम पूरा कर लेने के बाद अपने रिपोर्टिंग

ऑफिसर को इसकी जानकारी दी हो और वापस चला गया हो ।

यह मेरे लिए एक नए प्रकार का अनुभव था ।

हाथियों के द्वारा कई प्रकार के काम किए जाते हैं , यह तो मुझे पता था और मैंने देखा भी था ।

आमतौर पर ऐसे काम के दौरान उनके साथ महावत जरूर रहता है और वही उसे गाइड करता रहता है कि क्या करना है ?

यह हाथी अपने आप संभवतः उस युवती के मानसिक निर्देश पर मुझे नदी किनारे से उठाकर यहां तक पहुंचा गया था ।

कामाख्या सिद्ध तांत्रिकों का क्षेत्र माना जाता है और यहां पर कुछ भी हो जाना संभव है, जिसका उदाहरण मैं देख रही थी कि किस प्रकार से एक विशालकाय हाथी आज्ञाकारी पशु बनकर इस युवती के निर्देशों का पालन कर रहा था ।

उस युवती ने अपनी कमर में मृग चर्म बांधा हुआ था और ऊपर का हिस्सा अनावृत था ।

मैं जमीन पर पड़ी हुई थी क्योंकि मेरे शरीर में उठने लायक ताकत भी नहीं बची थी ।

उसने अपने हाथों से 3 बार ताली बजाई !

ऐसा लग रहा था जैसे उसने किसी को कोई इशारा किया हो ।

यह कुछ कुछ वैसा ही था जैसे हम फिल्मों में देखते हैं । जब राजा या दरबार का कोई प्रमुख व्यक्ति ताली बजाता है और उनकी आवश्यकता की चीजें हाजिर हो जाती हैं......

यहां भी लगभग वैसा ही हुआ ।

अचानक वहां पर शून्य से एक बेहद आकर्षक युवती जो हल्के आसमानी रंग की साड़ी पहने हुए थी ...... प्रकट हो गई ।

उसके हाथ में एक ट्रे जैसा पात्र था । जिसके ऊपर एक कलश रखा हुआ था और उस कलश में कुछ नीले रंग का द्रव भरा हुआ था । कलश कांच का बना हुआ था इसलिए उसके अंदर की सारी चीजें दिखाई दे रही थी । वह उस कलश को लेकर मेरी तरफ बढ़ी और मेरी बगल में आकर बैठ गई ।

उसने मुझे सहारा देकर बिठाया और उस पात्र को मेरे होठों से लगा दिया .....

उसका स्वाद अजीब सा था !

एक पल को ऐसा लगता था जैसे वह मीठा है और दूसरे पल ऐसा लगता था जैसे करेले का रस पी रही हूं ।

उस पात्र में लगभग एक लीटर द्रव रहा होगा ।

जो उस युवती ने मुझे जबरन पिला दिया और मुझे फिर उसने वापस जमीन पर लिटा दिया ।

जिस प्रकार से शून्य से वह प्रकट हुई थी उसी प्रकार से वह वापस लुप्त भी हो गई ।

मैं सोच में पड़ गई !

मुझे ऐसा लगा कि संभवतः वह कोई अप्सरा या यक्षिणी रही होगी या फिर कोई तंत्र साधिका या जादूगरनी ।

उस द्रव को पीते ही मुझे अजीब सा लगने लगा !

ऐसा लग रहा था जैसे चक्कर आ रहे हो !

लगभग चार-पांच मिनट के बाद मैं बेहोश हो गई । जब मेरी आंखें खुली तो मैंने देखा कि मैं उस मंदिर के अंदर जमीन पर पड़ी हुई हूं ।

सामने वह युवती मेरी ओर पीठ करके कुछ मंत्र जाप में संलग्न है ।

उसके सामने एक चौकोन पीठ जैसा बना हुआ था जिसके ऊपर फूल बिखरे हुए थे....

वहां कोई मूर्ति नहीं थी ।

यह देखकर मुझे थोड़ा सा आश्चर्य हुआ !

आमतौर पर मंदिरों में मूर्तियां अवश्य होती है लेकिन यहां पर मूर्ति नहीं थी ।

दूसरी अजीब बात यह थी कि मंदिरों का आकार इस प्रकार का होता है कि अंदर जाने के लिए एक गलियारा होता है और आगे जाकर गर्भ ग्रह होता है । जिसके मध्य में मूर्ति की स्थापना होती है ।

लेकिन यह मंदिर कुछ अलग किस्म का था ......

उस मंदिर का आकार गोल था ।

कुछ-कुछ वैसा ही जैसा चौसठ योगिनी मंदिरों का होता है । फर्क सिर्फ इतना था कि योगिनी मंदिरों की तुलना में इसकी आकृति छोटी थी । जिसका व्यास लगभग 20 फीट का रहा होगा ।

उसके मध्य में एक मंडप बना हुआ था ।

मंडप के नीचे एक चौकोर प्लेटफार्म बना हुआ था जिसके ऊपर वह युवती बैठी थी ।

उसने मृग चर्म का आसन बिछा रखा था । जिसके ऊपर वह बैठी हुई थी ।

उसके लंबे लंबे काले बाल कमर तक बिखरे हुए थे ।

कुछ मंत्र ध्वनियाँ उसके मुख से उच्चारित हो रही थी ।

तभी......

उसकी खनकती हुई आवाज गूंजी - देवकी ! इवीड़े वरु !

मलयालम में इसका मतलब होता है - देवकी यहां आओ ।

मैं उसके मुंह से मलयालम सुनकर आश्चर्य चकित थी ।

विशेष रुप से अपना नाम सुनकर मैं स्तंभित वही खड़ी रह गई ।

तभी उसने दोबारा से कहा - देवकी ! इवड़े वरुगा !!

अब संशय की कोई गुंजाइश नहीं थी !

वह मुझे ही पुकार रही थी !

मैं उठकर चलते हुए उसके पास पहुंच गई !

वहां पर मैंने देखा कि उसके सामने बने हुए चौकोर पीठ में वास्तव में पत्थर पर एक आकृति सी उभरी हुई है, जो कुछ-कुछ स्त्री अंगों के समान दिखाई दे रही थी ।

उस समय मुझे तंत्र और साधनाओं के विषय में कोई विशेष ज्ञान नहीं था । इसलिए मुझे समझ में नहीं आया कि यह आकृति यहां पर क्यों बनी हुई है ?

मैं उसे ताकते हुए वहीं पर खड़ी थी , तभी उसने दोबारा से कहा - ईरिक्कू ।

मुझे अपने सामने उंगली से इशारा किया ।

उसका मतलब था कि आकर बैठो ।

मैं संकोच और कुछ कुछ भय के साथ उस आसन पर जाकर बैठ गई ।

उसके सामने भी एक मृग चर्म बिछा हुआ था।

अब मैं और वह युवती आमने-सामने थे तथा बीच में वह योनि मंडल बना हुआ था ।

उस युवती ने बताना प्रारंभ किया - देवकी ! जैसा तुम जानती हो कि यह तंत्र का मूल क्षेत्र है पूरे विश्व में तंत्र साधनाओं को यहीं से प्रचारित संचालित और नियंत्रित किया जाता है । जितने भी साधक हैं वे किसी ने किसी

स्वरुप में यहां आकर शक्तियां प्राप्त करते हैं और यही की शक्तियों के द्वारा नियंत्रित भी किए जाते हैं ।

इतना कहकर वह एक क्षण को रुकी और मेरी तरफ देखा ।

मेरे मन में विचार आ रहा था कि यह सब यह मुझे क्यों बता रही है ?

संभवतः उसने मेरे विचारों को पढ़ लिया और उसके चेहरे पर एक आकर्षक मुस्कान बिखर गई ।

उसके बाद उसने कहा - देवकी ! तुम भी इसी परंपरा का एक हिस्सा हो । इसलिए तुम्हें यहां बुलाया गया है । सनातन धर्म का उत्थान और पुनर्स्थापना की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है और आने वाले 50 वर्षों में यह वापस अपनी पूर्व गौरव और समृद्धि को प्राप्त करेगा । इस कार्य में हजारों सिद्ध साधकों का योगदान रहेगा !

जिसमें से एक तुम भी हो !

इसलिए तुम्हें यहां बुलाया गया है ।

मैंने पूछा - आप कौन है ?

उसने मुसकुराते हुए कहा - मिट्टी के कण का कोई नाम नहीं होता । मैं भी इस अनंत ब्रह्मांड के अंदर बिछड़े हुए अनंत कणों में से एक हूं । हां ! अगर तुम मेरा नाम पूछ

रही हो तो मेरा नाम है रस भैरवी । मैं कामाख्या तंत्र क्षेत्र की एक विशेष परंपरा के विस्तार के लिए तुम्हें यहां लेकर आई हूं ।

यह सब सुनना मेरे लिए बेहद अजीब था, क्योंकि मैंने कभी तंत्र साधनाओं के विषय में या उन्हें करने के विषय में सोचा भी नहीं था ।
मेरे जीवन का मूल लक्ष्य कलरी पयटू सीखना और उसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना था ।
जिसके लिए मैंने बचपन से ही प्रयास किए थे ।
मैं मन ही मन सोचने लगी कि यह कौन सा दूसरा विभाग सौंपा जा रहा है जिसके विषय में मुझे कोई जानकारी नहीं है ।
मेरे मन में ऐसे विचार आते ही उसने मेरे विचारों को पढ़ लिया और कहा - तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं है ।
इस कार्य के साथ-साथ तुम्हारे कलरीपयटू विस्तार का कार्य भी चलता रहेगा ।
यह सुनकर मुझे थोड़ा संतोष हुआ !
फिर भी तंत्र साधना सीखना मेरे जैसे सामान्य स्त्री के लिए थोड़ा सा अजीब विषय था ।

केरल तंत्र साधनाओं के क्षेत्र में भी काफी आगे है। खास तौर से अथर्ववेद में वर्णित साधना को विशेष रुप से संपन्न किया जाता है।

तांत्रिक क्रियाओं के माध्यम से अनेक प्रकार की चमत्कारिक घटनाएं घटित होती रहती हैं।

इनमें से कुछ घटनाओं के बारे में मेरी मां ने मुझे बताया था।

उन्होंने अपने रिश्ते के एक भाई के विषय में बताया था, जो सर्प तंत्र का विशेषज्ञ था। विषैले सांप का विष किसी भी मनुष्य की जान ले सकता है। तंत्र में कई प्रकार के टोटके होते हैं। जिससे सांप के विष को उतारा भी जाता है।

कई बार उसे किसी स्थान विशेष पर रोक कर रख दिया जाता है जब तक कि उसका कोई स्थाई इलाज संभव ना हो। इस प्रकार से बांधा हुआ विष उस स्थान पर काफी समय तक रुका रहता है और बाकी शरीर पर उसका दुष्प्रभाव नहीं पड़ता।

मेरी माता जी ने जिस तंत्र विशेषज्ञ का विवरण किया था वह इन सब से अलग था। उन्होंने बताया कि अगर कोई सर्प किसी व्यक्ति को काट लेता था और

वह विषैला होता था तब "रामन आशान" को बुलाया जाता था। राम उनका नाम था जिसे केरल मे रामन कहा जाता है। आशान का अर्थ होता है उस्ताद या विशेषज्ञ। इस प्रकार से रामन आशान का मतलब होता था ......

राम उस्ताद !

या राम गुरु !!

या राम विशेषज्ञ !!!

रामन आशान अपने कार्य में इतने विशेषज्ञ थे कि पीड़ित व्यक्ति के घाव को देखकर जान जाते थे कि उसे किसी विषैले सर्प ने काटा है या सामान्य सर्प ने ।

अगर सामान्य सर्प ने काटा होता था तो उसके काटे का इलाज बता देते थे लेकिन अगर किसी गंभीर रुप से विषैले कोबरा सरीखे सांप ने काटा होता तो वह उस व्यक्ति को जमीन पर लिटा कर उसके चारों तरफ एक चक्कर मार देते और फिर आसन लगाकर बैठ जाते थे।

सामान्य तौर पर विषैले सांप काटने के बाद बहुत ज्यादा दूर नहीं जाते हैं।

आसपास ही मौजूद रहते हैं !

मरीज को जमीन पर लिटाने के बाद रामन आशान आसन लगाकर बैठते । वे कुछ विशेष क्रियाएं और मंत्र जाप करते थे तो जिस सांप ने उस व्यक्ति को काटा होता था वह मंत्र शक्ति से विवश होकर उस स्थान पर आ जाता था ।

आने के बाद रामन आशान संकेतों के द्वारा उससे विष निकालने के लिए कह देते ।

आम तौर पर शुरुआत में सर्प नहीं मानता था ......

फिर वे कुछ और मंत्रों का प्रयोग करते थे ......

जिसके बाद वह सर्प विवश होकर.......

काटे हुए स्थान पर अपना मुख लगा देता था और पूरे विष को वापस चूस लेता था ।

इस प्रक्रिया में लगभग आधा घंटे का समय लगता था । जैसे ही वह सर्प विष को पूरा बाहर खींच लेता था । वह व्यक्ति धीरे-धीरे जागृत होने लगता था लेकिन सर्प इस उलटफेर को बर्दाश्त नहीं करता था और इसे अपना अपमान मानता था । जिसके एवज में उसी स्थान पर वह अपना फन तब तक पटकता रहता था जब तक उसके प्राण नहीं निकल जाते थे, यानी वह उसी स्थान पर अपने फन पटक कर प्राण त्याग कर देता था ।

हां ! वह मरीज अवश्य स्वस्थ हो जाता था ।
कालांतर में रामन आशान की मौत भी किंग कोबरा के काटने से हुई ।
उन्होंने अपने शिष्यों को बताया भी कि उन्हें किंग कोबरा ने काटा है ......
जब शिष्यों ने उन्हें बचाने का प्रयास किया तो उन्होंने मना कर दिया और कहा - नहीं ! अब समय नहीं है !!
लगभग 34 वर्ष की अवस्था में उनका देहांत हो गया था ।
इस प्रकार की रोमांचक और चमत्कारी कहानियां मैंने कई रिश्तेदारों से और अपनी मां से अवश्य सुनी थी !
स्वयं तंत्र साधना करना पड़ेगा ऐसा मैंने नहीं सोचा था ।
तंत्र साधना के विषय में सुनी गई कथाएं और उसके चमत्कार हमें प्रभावित और आकर्षित अवश्य करते हैं लेकिन उसे करने से हम डरते भी हैं कि किसी प्रकार का दुष्प्रभाव ना हो जाए ।
ठीक वही डर मेरे अंदर भी था ।
इसलिए मैं उसे करने से झिझक रही थी ।

रस भैरवी ने आगे कहा - प्रकृति के द्वारा तुम्हारा चयन किया गया है । महामाया की यही इच्छा है । तुम्हारे पास इसे स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है । अगर तुम स्वीकार नहीं करोगी तो मुझे तुमसे मजबूरन यह करवाना पड़ेगा । अभी-अभी तुमने देखा होगा कि किस प्रकार एक विशालकाय हाथी केवल मेरे मानसिक संकेत पर तुम्हें उठाकर यहां ले आया ...... जब मैं उतने विशालकाय प्राणी को नियंत्रित कर सकती हूँ तो तुम्हारे मस्तिष्क पर नियंत्रण करना मेरे लिए बच्चों के खेल के समान है ।

मैं वैसा बड़ी आसानी से कर सकती हूं !

लेकिन.....

मैं चाहती हूं कि तुम बातों को समझो और अपने मन से पूरी लगन से इस विद्या को सीख कर आगे बढ़ाने का कार्य करो ।

देवकी गुरुक्कल बोली - मेरे पास कोई विकल्प नहीं था ....

इसलिए मैंने सहमति में सिर हिला दिया ।

मेरे सर हिलाते ही वह बोली - देखो देवकी ! सनातन धर्म के जितने ग्रंथ उपलब्ध है। उनमें सर्वाधिक ग्रंथ तंत्र विषयक ही है अर्थात तंत्र साधनाएं और मंत्रों का विज्ञान हमारे ऋषियों के द्वारा काफी उन्नत अवस्था में विकसित किया जा चुका था।

कालांतर में वह धीरे-धीरे विलुप्त होता चला गया और आज स्थिति यह है कि हम उनको ढकोसला और अंधविश्वास मानते जा रहे हैं।

इस स्थिति को बदलना होगा और इसके लिए जरूरी है कि कुछ ऐसे लोग तैयार हों जो साधनाओं के क्षेत्र में काफी आगे बढ़ सके और जनकल्याण के साथ-साथ नए साधकों को भी तैयार कर सकें।

यह एक लंबा प्रक्रम है.....

जो संपूर्ण भारत में चल रहा है।

जिसका मार्गदर्शन हिमालय में स्थित एक अति विशिष्ट गोपनीय आश्रम के द्वारा संचालित गुरु मंडल के द्वारा किया जाता है।

तंत्र साधना और आयुर्वेद का काफी गहरा संबंध है। तुमने कलारिपयट्टू और मर्म विद्या का ज्ञान प्राप्त किया है। इसके साथ-साथ तुम्हें आयुर्वेदिक औषधियों का

भी काफी ज्ञान है । अभी केवल तंत्र साधना ही एक ऐसा क्षेत्र है, जिसके विषय में तुम्हें सिखाना बाकी है ! उसके बाद तुम वास्तव में देवकी से देवकी गुरुक्कल बन जाओगी, लेकिन तुम्हारा कार्यक्षेत्र अलग होगा ।
तुम्हें इन सारी विद्याओं को अगली पीढ़ी तक पहुंचाना है ताकि यह सुरक्षित रह सके और विकसित हो सके ।
तुम्हारा कामाख्या आना नाव का पलटना और तुम्हारा इस ग्राम तक पहुंचना सब पूर्व निर्धारित था ।
सब उस महामाया के द्वारा रचे गए नाटक का एक अंश था । उसकी इच्छा के बिना कुछ भी होना संभव नहीं है ।
यह शायद तुम भी जानती होगी ।

मैं सोच में पड़ गई क्योंकि वास्तव में घटनाओं का सूत्र इतनी स्पष्टता से एक दूसरे के साथ जुड़ता जा रहा था कि मुझे उस युवती की बात में सच्चाई लगने लगी ।
वहां पर वैसे भी मेरी राय का कोई महत्व नहीं था । ऐसी स्थिति में मैंने सहमत हो जाना ही सबसे अच्छा विकल्प समझा ।

स्त्री प्रदेश : असम ....

असम को स्त्री प्रदेश भी कहा जाता है।
वहां प्राचीन काल से ही तंत्र साधना के क्षेत्र में स्त्री शक्तियों का विशेष प्रभाव मौजूद रहा है। आज भी असम के कामाख्या क्षेत्र में तंत्र साधिकाओं का एक बहुत बड़ा वर्ग मौजूद है जो अद्भुत तांत्रिक शक्तियों में निपुण है।
असम एक ऐसा क्षेत्र है जहां पर कामाख्या नामक शक्तिपीठ मौजूद है। इस शक्तिपीठ के विषय में आप सभी को जानकारी होगी। इसलिए थोड़ा सा संक्षिप्त विवरण दे रहा हूं। यहां भगवती का गुप्त अंग गिरा था ऐसा माना जाता है। यहां पर कामाख्या मंदिर में उसी की पूजा की जाती है। वहां कोई विग्रह नहीं है बल्कि योनि मंडल बना हुआ है। ऐसा माना जाता है कि जून के महीने में 3 दिनों के लिए उस योनि मंडल से रजस्राव होता है। इस दौरान मंदिर के पट बंद रहते हैं और उस पूरे क्षेत्र में पूजा पाठ का कार्यक्रम रोक दिया जाता है। इस दौरान यह भी देखा गया है कि ब्रह्मपुत्र की नदी का पानी भी लाल रंग का हो जाता है।

उस समय विशेष में, मंदिर में योनि मंडल के ऊपर वस्त्र बिछा दिए जाते हैं। इन वस्त्रों को बाद में प्रसाद के रूप में दर्शनार्थियों को दिया जाता है। इसे कामाख्या तार कहते हैं। ऐसी मान्यता है कि इस वस्त्र का एक तार भी अगर किसी के शरीर पर ताबीज में या किसी अन्य रूप में मौजूद है तो उसके ऊपर किसी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग प्रभाव नहीं डालेगा।

इसे मूल शक्तिपीठ माना जाता है।

सभी प्रकार के जीवो के जन्म लेने का कारण योनि ही होता है। संभवतः इसीलिए इस पीठ को सबसे ज्यादा मान्यता दी गई है। तांत्रिक क्षेत्र में जो भी सिद्ध पुरुष हुए हैं उन सभी ने इस तांत्रिक क्षेत्र में आकर कोई न कोई साधना सिद्धि अवश्य प्राप्त की है।

शाबर मंत्र साधना के अधिकांश विशेषज्ञ या सिद्ध पुरुष कामाख्या को ही अपनी शक्तियों का केंद्र मानते हैं। वे यथासंभव वहां जाकर दर्शन करने या वहां साधना करने की कोशिश जरूर करते हैं। इससे उनकी शक्तियां और उनकी साधनात्मक क्षमता दोनों बढ़ जाती है।

कामाख्या को कामरूप, कौरु नगर जैसे नामों से भी जाना जाता है। इन स्थानों पर रहने वाली स्त्रियों को तंत्र विद्या में निपुण माना जाता है। यही नहीं यह भी मान्यता है कि वह बड़ी आसानी से किसी को भी जानवर जैसे पक्षी या पशु में परिवर्तित करके अपने पास बंदी बना लेती हैं। फिर उस से मनचाहा काम भी करवाती हैं। आवश्यकता अनुसार अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करती रहती है।

कामाख्या पीठ का मेरा निजी अनुभव यह है कि कोई भी ऐसा काम जो नहीं हो पा रहा हो तो एक बार भगवती कामाख्या के दरवाजे पर पहुंच कर उनसे निवेदन करके जरूर देखें।
साल भर के अंदर वह कार्य अवश्य पूर्ण हो जाता है।
हां ! इस बात का ध्यान जरूर रखेंगे कि वह कार्य किसी को कष्ट पहुंचाने वाला या किसी सामाजिक मान्यता को नष्ट करने वाला ना हो।
आप अपने विकास के लिए कोई भी इच्छा रखे और भगवती कामाख्या के दर्शन को जाएं तो 90% संभावना है कि आपका काम हो जाएगा।

वहाँ की तंत्र साधिकाओं के विषय में मुझे कहीं पढ़ी हुई एक घटना की याद आ रही है जिसे मैं आप लोगों के साथ शेयर करना चाहूंगा। जो कामाख्या से संबंधित हैं और संभवत किसी विदेशी जिज्ञासु ने लिखी है।
वह विदेशी भारत में कामाख्या के तंत्र साधिकाओं के विषय में सुनकर आया था। काफी मेहनत करने के बाद वह ऐसी ही एक साधिका के संपर्क में आया जिसने उसे प्रत्यक्ष में तंत्र साधना का प्रयोग करके दिखाने पर सहमति व्यक्त कर दी।

साधिका के निर्देश पर वह विदेशी एक काले रंग का मुर्गा लेकर आया। एक लगभग आठ फीट गहरा गड्ढा खुदवाया गया, मुर्गे को उस गड्ढे में डाल दिया गया और उसे चटाई से ढक दिया गया।

इसके पश्चात वह साधिका उस गड्ढे से लगभग 4 फीट दूर बैठ गई। विदेशी भी वहीं पर बैठा रहा था कि देख सके कि कुछ गड़बड़ी तो नहीं हो रही है।

उस साधिका ने कुछ मंत्रों का उच्चारण किया और काली मिर्च के कुछ दानों को चटाई की ओर उछाल

दिया । उनके चटाई पर गिरने की हल्की सी आवाज भर विदेशी पर्यटक को सुनाई दी !

उसके बाद मुर्गे की चीख एक बार सुनाई दी !

उसके बाद सब कुछ शांत हो गया ।

कुछ समय के बद उस साधिका ने अपनी आंखें खोली और उस विदेशी पर्यटक को चटाई हटाकर नीचे देखने के लिए कहा ।

उसे लगा कि कुछ खास तो घटित नहीं हुआ है ....

तो जैसा मुर्गा है बिल्कुल वैसा ही होना चाहिए ।

लेकिन......

जैसे ही उसने चटाई हटाई तो नीचे वह मुर्गा मृत अवस्था में पड़ा हुआ था । वह तुरंत गड्ढे में कूदा और उस मुर्गे को लेकर बाहर निकला ।

उस मुर्गे के प्राण पखेरू उड़ चुके थे ।

मंत्र शक्ति का प्रभाव उस पर्यटक को पता चल गया था ।

उस साधिका ने बताया कि यह तो तुम्हें दिखाने के लिए इस गड्ढे में मुर्गे को रखा गया है, अगर मुर्गा यहां से 100 किलोमीटर दूर भी होता तो भी उसकी यही हालत होनी थी ।

इतना कहकर साधिका वहां से लुप्त हो गई ।

वह विदेशी आँखें फाड़कर खड़ा रह गया .....

इस घटना से आप कामाख्या तंत्र क्षेत्र की साधिकाओं की क्षमता के बारे में समझ सकते हैं ।

ऐसा माना जाता है कि उनके द्वारा की गई तंत्र की काट बहुत मुश्किल होती है !

लगभग असंभव ।

गुरु गोरखनाथ तंत्र क्षेत्र के अद्भुत विद्वान माने जाते हैं और साबर तंत्र साधना में उनका स्थान बेहद प्रतिष्ठित और सिद्ध पुरुषों में लिया जाता है । उनके गुरु मछेंद्रनाथ थे ! जो इस क्षेत्र से गुजर रहे थे !

तभी यहां की रानी ने उन्हें महल में बुला लिया और उसके बाद ऐसा प्रयोग संपन्न किया कि गुरुदेव मच्छिंद्रनाथ सारी साधना और ज्ञान भूलकर राजकाज संभालने और रानी के साथ रास विलास में लीन हो गए ।

जब काफी समय बीत गया और गुरु मछिंद्रनाथ का कोई पता नहीं चला ......

तो गोरखनाथ अपने गुरु की तलाश में निकले !

और किसी प्रकार से रानी के चंगुल से अपने गुरु को निकाल कर ले जाने में सफल हो सके ।

तो कुल मिलाकर कहने का तात्पर्य यह है कि कामाख्या एक रहस्यमय जगह है और वहां रहने वाली महिला साधिकाओं का रहस्य उससे भी गहरा है ।
दिखने में उनमें कोई भी विशिष्टता नहीं दिखाई देगी !
वे सामान्य महिलाओं की तरह ही दिखेंगे लेकिन जब वे अपनी औकात पर आ जाएं तो अच्छे-अच्छे तांत्रिकों को अपने जूते की नोक पर रख लेती हैं और उंगलियों पर नचाती हैं ।
एक प्रकार से वह उसी महामाया की अंश हैं जो इस संपूर्ण सृष्टि को अपनी उंगलियों पर नचाते रहती है ।
खैर ....

योनिमंडल और वह रहस्यमय मूर्ति ......

देवकी गुरुक्कल आगे बोली - जैसा मेरा वहां पहुंचना पूर्व निश्चित था उसी प्रकार से मेरा सहमत होना भी पूर्व निश्चित था । इसलिए मेरे सहमति के साथ ही उस साधिका ने आगे की प्रक्रिया प्रारंभ की ।

रस भैरवी ने मुझे पद्मासन में बैठने का इशारा किया और स्वयं भी पद्मासन में बैठ गई ।

उसके मुंह से कुछ अजीब अजीब से मंत्रों का उच्चारण प्रारंभ हो गया जो मेरी समझ में नहीं आ रहे थे ।

मैं अक्षत योवना थी, अर्थात उस समय तक किसी पुरुष के संपर्क में नहीं आई थी । तंत्र साधना के क्षेत्र में इसका बहुत ज्यादा महत्व माना जाता है । ऐसे साधिकाओं को साक्षात भगवती का स्वरुप माना जाता है । इसीलिए नवरात्रि के समापन के समय कन्या पूजन या कुमारी पूजन का इतना ज्यादा महत्व है ।

जैसे-जैसे मंत्रों का उच्चारण बढ़ता जा रहा था वैसे वैसे वातावरण में एक अजीब सी खामोशी छाती जा रही थी ।

उस मंदिर में हम दोनों के अलावा कोई नहीं था ।
उस समय शाम का धुंधलका छाने लगा था .....
रस भैरवी का मंत्र जाप जारी था ......
हम दोनों पद्मासन में बैठे हुए थे ।

धीरे-धीरे रात होने लगी !
आसमान खुला हुआ था तारे दिख रहे थे !
लेकिन चांद का कोई अता पता नहीं चल रहा था !
संभवत: वह अमावस्या की रात थी ....

उसका मंत्र जाप उसी प्रकार जारी रहा !
लगभग डेढ़ 2 घंटे तक उसने विशेष मंत्रों का उच्चारण किया और मैं अपने आसन से उठने लगी ।
शुरु में मुझे थोड़ा डर लगा और मैं हड़बड़ाने लगी,
लेकिन उसने मुझे शांत रहने का इशारा किया ।
मेरा शरीर धीरे-धीरे जमीन से ऊपर उठने लगा और उठते उठते लगभग जमीन से एक हाथ ऊपर आ गया ।

उसके बाद अचानक मुझे अपने कपड़े गीले होने का आभास होने लगा ।

मेरा रजस्राव प्रारंभ हो चुका था ।

तभी मैंने देखा कि उस युवती ने एक पीतल के पात्र को मेरे नीचे खिसका दिया ।

मैं उसी प्रकार पद्मासन में हवा में लटकी हुई थी और नीचे के पात्र में रजस्राव हो रहा था ।

यह क्रम लगभग आधे घंटे तक चलता रहा और उस दौरान वह पात्र लगभग आधा भर गया ।

रस भैरवी ने पात्र को बाईं तरफ खींच दिया । उसने उंगली का हल्का सा इशारा किया तो मेरा आसन वापस जमीन पर आकर स्थिर हो गया ।

मुझे अटपटा लग रहा था !

मान्यता के अनुसार रितु काल को अपवित्र माना जाता है और मैं भी उसी मान्यता के साथ पली-बढ़ी थी इसलिए मुझे ऐसा लगा कि इस स्थिति मे पूजन में ऐसे बैठना उचित नहीं है ।

इसलिए मैं उठना चाहती थी ।

लेकिन उसने मुझे मना कर दिया और वहीं बैठे रहने का इशारा किया ।

युवती के दाहिनी ओर लगभग तीन इंच ऊंची एक पत्थर की बनी हुई लाल रंग की मूर्ति रखी हुई थी। जो किसी मूंगे जैसे रत्न की बनी हुई थी और काफी पुरानी लग रही थी।

उसका आवरण खुरदुरा था !

जैसे सामान्य तौर पर मूर्तियों का बाहरी हिस्सा चिकना होता है वैसा नहीं था !!

यह कुछ-कुछ वैसा था जैसे सिलबट्टे के पत्थर का होता है ऊपर नीचे रेतीली सतह जैसा।

वहां मध्यम तीव्रता के साथ एक छोटा सा दीपक जल रहा था.......

इसलिए बहुत ज्यादा स्पष्ट कुछ दिखाई नहीं दे रहा था !

उस युवती ने उस मूर्ति को उठाकर उस पात्र में रख दिया।

वह मेरी तरफ देख कर बोली - भगवती से प्रार्थना करो !

रस भैरवी ने अपना हाथ मेरे सामने बने उस योनि मंडल पर रखने का इशारा किया। मैंने अपने दोनों हाथ उस मंडल के ऊपर रख दिए।

मेरे दोनों हाथों के ऊपर उसके दोनों हाथ आकर जम गए।

उसके हाथ बेहद गर्म थे ।
ऐसा लग रहा था जैसे बुखार से तप रहे हो ।

मेरे दोनों हाथों पर हाथ रखे रखे उसने फिर से मंत्र उच्चारण प्रारंभ कर दिया और बीच-बीच में उस मूर्ति की ओर देखती रहती थी लेकिन वहां कुछ भी घटित नहीं हो रहा था......
मुझे लगा कि यह कैसी अजीब सी पूजन पद्धति है ?
और यह युवती कर क्या रही है ?
कहीं मैं किसी गलत तांत्रिक विद्या वाली जगह पर तो नहीं आ फसी ?
यह सारे विचार मेरे मन में तूफान मचा रहे थे । उसका मंत्र जाप जारी था ।
वह अचानक कुछ क्षण के लिए रुकी और बोली -
देवकी ! तुम अपने मन में गलत विचार मत लाओ ।
तुम्हें यहां लाने का कोई गलत उद्देश्य नहीं है । तुम एक सकारात्मक कार्य मे सहयोग करने के लिए जन्म ली हुई एक सिद्ध आत्मा हो इसलिए अपने मन से इन नकारात्मक विचारों को हटाओ और देवी के चरणों में ध्यान लगाओ .....

ताकि कार्य शीघ्र पूर्ण हो सके ।

उसकी बातों से मुझे झटका सा लगा !

मैंने अपने ध्यान को एकत्र करके उस योनि मंडल की ओर ध्यान देने का प्रयास किया ।

रस भैरवी मंत्र जाप करने लगी !

लगभग 5-7 मिनट का मंत्र जाप हुआ होगा......

और उसके बाद जो हुआ.....

उसे देखकर आश्चर्य से मेरी आंखें फटी रह गई !!

उस पात्र में जो रक्त एकत्र हुआ था वह धीरे-धीरे कम होने लगा !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह मूर्ति उस रक्त को ग्रहण कर रही हो .....

लगभग 5 मिनट के बाद वह पात्र पूरा खाली हो चुका था और युवती के चेहरे पर मुस्कुराहट के भाव आ चुके थे !

उसने मेरे हाथों को पकड़ा और खुश होकर बोली - देवी ने तुम्हें स्वीकार कर लिया है ।

अब तुम साक्षात उनका अंश हो चुकी हो ।

मेरी आंखें अभी भी उसी पात्र पर अविश्वास के साथ टिकी हुई थी !

वह पात्र लगभग 4 इंच के व्यास का था और उसमें कम से कम 100 मिली लीटर के आसपास रक्त अवश्य रहा होगा !

इतना रक्त उस तीन इंच की छोटी सी मूर्ति में समा जाना वास्तव में आश्चर्यजनक था !

उसका आकार मेरी छोटी उंगली के बराबर था लंबाई में भी और मोटाई में भी !!

इतनी छोटी मूर्ति के अंदर इतना सारा द्रव समा जाना सामान्य बुद्धि से तो असंभव है, लेकिन मेरी आंखें उस दृश्य को देखकर फटी की फटी रह गई !

मैं कभी उस मूर्ति को देखती तो कभी उस युवती को जिसके चेहरे पर प्रसन्नता के भाव दिखाई दे रहे थे ।

बाद में उस युवती ने मुझे बताया कि वह भगवती कामाख्या की साधना का एक विशिष्ट चरण था ।

इसके बाद साधना का एक लंबा का क्रम चलता रहा वहां पर मुझे लगभग 8 साल तक रहना पड़ा और इस

दौरान उस युवती ने मुझे कई प्रकार की साधना सिखाई ।

वह गांव तंत्र साधिकाओं का गांव था ।

वहाँ मैंने अपने सामने कई प्रकार के अविश्वसनीय दृश्य देखें ।

रस भैरवी के पास एक बाज था !

जिसे वह आवश्यकता अनुसार किसी भी जीव में परिवर्तित कर लेती थी !

जब उसे दूध की आवश्यकता होती तो वह गाय बन जाता !

जब उसे कुवे से पानी निकालने की जरूरत होती तो वह बैल बन जाता और बाकी समय बाज बना रहता ।

अंतिम परीक्षण .....

जब मुझे वहाँ रहते-रहते लगभग 7 साल से ज्यादा हो चुके थे जब रस भैरवी ने मुझे अंतिम परीक्षण के लिए तैयार रहने को कहा ।
यह एक विचित्र प्रकार का परीक्षण था जिसमें आत्म नियंत्रण की पराकाष्ठा की परीक्षा ली जानी थी !

सबसे पहले मुझे 3 दिन तक केवल जल का सेवन करके कुछ विशेष मंत्रों का जाप करना था । जो मैंने कर लिया ।
उसके बाद चौथे दिन वह मुझे एक गुप्त कक्ष में ले गई, जो उस मंदिर के नीचे था ।
वह लगभग 6 फुट बाई 10 फुट का कमरा था जिसमें अंदर आने के लिए केवल एक प्रवेश द्वार था ।
वह सामान्य द्वार नहीं था !
उसे खोलने के लिए रस भैरवी ने कुछ विशेष प्रकार के मंत्र पढे । जिसके बाद वह दरवाजा किसी ऑटोमेटिक सिस्टम से अपने आप एक ओर सरक गया । अंदर आ

जाने के बाद उसने फिर से कुछ मंत्रों का उच्चारण किया तो वह अपने आप बंद हो गया ।

अब हम दोनों उस कमरे में मौजूद थे !

उस कमरे के बीच में एक योनि मण्डल बना हुआ था ।

बगल में कुछ विशेष प्रकार की तांत्रिक सामग्री रखी हुई थी । जिसमें तीन नरमुंड और कुछ हड्डियों के अलावा विभिन्न प्रकार के रुद्राक्ष तथा वह विग्रह था । जो प्रारंभ में उल्लेख में आया था ।

उसमें से हल्की-हल्की किरणें निकल रही थी और वह चमक रहा था ।

रस भैरवी ने बताना प्रारंभ किया - देवकी ! तुम्हारी तंत्र साधना लगभग पूर्ण हो चुकी है ।

अंतिम चरण में तुम्हें महाकाली के एक विशेष स्वरुप की साधना संपन्न करनी है ।

जिसके बाद तुम तंत्र क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त कर सकोगी ।

देवी महाकाली के 9 विशिष्ट स्वरुप माने गए हैं । जो इस प्रकार हैं

दक्षिण काली ।

भद्रकाली ।

श्मशान काली ॥

काल काली ।

गुह्य काली ।

कामकला काली ॥

धन काली ।

सिद्धि काली तथा

चंड काली ॥

इसमें कामकला काली का महत्व सर्वाधिक है ।

इसके विषय में यह कहा जाता है कि यह महाकाली के समस्त स्वरूपों में सबसे महत्वपूर्ण और प्रमुख साधना है ।

इसलिए इसे अत्यंत गोपनीय माना जाता है ।

इसके 11 विशिष्ट साधक माने गए हैं जो इस प्रकार हैं :-

इंद्र ।

वरुण ।

कुबेर ।

ब्रह्मा ।

महाकाल ।

बाण ।

रावण ।

यम ।

चंद्र ।

विष्णु तथा

महर्षि गण ॥

उनके साधकों के विषय में जानकर आप स्वयं समझ गए होंगे कि यह साधना कितनी उच्च कोटि की है । कामकला काली की उपासना अत्यंत महत्वपूर्ण मानी गई है ।

तांत्रिक ग्रंथों के अनुसार जब जीवन में भाग्योदय होता है तभी इस विद्या की प्राप्ति होती है !

इसके विषय में यह भी कहा जाता है कि यदि प्राण दान देकर भी यह विद्या प्राप्त होती है तो यह ज्यादा महंगी नहीं है !!

सर्वस्व दान करने पर गुरु की प्राप्ति होती है और गुरु की प्राप्ति होने पर ही इस गोपनीय विद्या की प्राप्ति हो सकती है !!!

इसके साथ रस भैरवी ने जो कामकला काली का मंत्र बताया था , उसके विषय में उन्होंने कहा कि यह मंत्र

त्रैलोक्य आकर्षण मंत्र भी कहा जाता है । इस मंत्र के ऋषि महाकाल हैं .....

यह मंत्र पूर्ण रूप से बीज अक्षरों से बना हुआ था और वह भी विचित्र प्रकार के बीज अक्षरों का था , जिन का उच्चारण करना भी काफी जटिल था ।
वह बीजाक्षर इस प्रकार थे

। त ल ठ ल ह ।

....

। क्ष थ ल ह ।

....

। क्ष द ल ह ।

....

। ह म्ल ।

....

। व्य ई ।

....

॥ ॐ ॥

यह एक अभूतपूर्व साधना है !

इसे संपन्न करना दो धारी तलवार के ऊपर चलने के समान है। विरले लोग ही इस साधना को संपूर्ण कर पाते हैं।
इससे विद्या लक्ष्मी, मोक्ष लक्ष्मी तथा राज्य लक्ष्मी सब कुछ प्राप्त होता है अर्थात इस साधना के करने से धन लाभ, यश लाभ, अष्ट सिद्धि, वशीकरण, स्तंभन, आकर्षण, यहां तक कि ग्रहों की गतियों का स्तंभन, जल तथा वायु का स्तंभन, धारा और नदी का स्तंभन, शत्रु की सेना का स्तंभन तथा वाक स्तंभन जैसी अभूतपूर्व क्षमताएं प्राप्त हो जाती हैं।

यह साधना युगल साधना का सर्वोच्च्च स्तर है। इस साधना के प्रारंभिक स्तर में परीक्षण देना होता है तथा आत्म नियंत्रण जब सिद्ध हो जाता है तब आगे की प्रक्रिया संपन्न की जाती है।
उसके बाद उन्होंने एक विशेष मंत्र का उच्चारण संपन्न किया तथा बताया कि यह सिद्ध पुरुष आह्वान मंत्र है। जिसके माध्यम से किसी ऐसे सिद्ध योगी का आह्वान किया जाता है जिसने श्यामा साधना संपन्न की हुई हो।

तंत्र साधना के विषय में बहुत सारी भ्रांतियां हैं, और उसे स्त्री-पुरुष संबंधों पर आधारित किसी गेम की तरह प्रचारित किया जाता है, लेकिन वास्तव में तंत्र साधना बेहद जटिल और आत्म नियंत्रण की प्रबलता के साथ ही संपन्न की जा सकती है ।

मैंने रस भैरवी से पूछा - श्यामा साधना क्या होती है ?
रस भैरवी ने बताया-तंत्र साधना में स्त्री और पुरुष दोनों को ऊर्जा का स्वरूप माना गया है । इसे तुम एक प्रकार से दो विपरीत प्रकार की ऊर्जा समझ सकती हो । इन दोनों को मिलाने पर एक वर्तुल या चक्र पूरा होता है । इसमें प्रवेश करने के लिए साधक और साधिका में कठोर आत्म नियंत्रण होना चाहिए तभी इस प्रकार की साधना में प्रवेश किया जाता है । विशेष रुप से काम काली साधना में यह अति आवश्यक है ।
इसकी प्रारंभिक अवस्था श्यामा साधना होती है । इस साधना में स्त्री और पुरुष नग्न अवस्था में एक दूसरे के सामने बैठते हैं, और एक दूसरे को देखते हुए मंत्र जाप करना होता है ।

पूरे मंत्र जाप की अवधि में शरीर के अंदर किसी भी प्रकार का विकार आने का मतलब साधना का खंडित होना और आगे की साधना के लिए अयोग्य सिद्ध हो जाना होता है ।
इसलिए गुरु केवल उन्ही साधकों को इस साधना की अनुमति देता है, जो वास्तव में अपने मन को और भावनाओं को नियंत्रित करना सीख चुके होते हैं ।
क्योंकि......
काम एक ऐसा भाव है जो सबसे अंत में नियंत्रित होता है ।

इस साधना की अवधि 24 घंटे की होती है । इस पूरे कालखंड में अगर दोनों में किसी प्रकार का विचलन नहीं आता है तो उन्हें आगे की प्रक्रिया में संलग्न होने के योग्य समझा जाता है ।

मुझे यह क्रिया सुनने में ही बेहद विचित्र और असंभव सी लग रही थी ।
मैंने सोचा - पुरुष और स्त्री स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे को आकर्षित करते हैं । स्त्री के शरीर के वे अंग जो दिखाई देते हैं वह पुरुष के लिए आकर्षण का प्रमुख

कारण होते हैं । उदाहरण के लिए किसी युवती के लो कट ब्लाउज या टीशर्ट पर लगभग 99% पुरुषों का भाव परिवर्तित हो जाता है और यहां तो पूर्ण निर्वस्त्र अवस्था में बैठी हुई स्त्री के बारे में चर्चा की जा रही थी ऐसे मे कोई पुरुष कैसे नियंत्रित रह सकता है । यह स्थिति वास्तव में बेहद कठिन और असंभव सी थी ।

मेरे मन के विचारों को रस भैरवी ने भांप लिया । उसने कहा - हां ! तुम्हारी सोच सही है । स्त्रियाँ ज्यादा आत्म नियंत्रित होती हैं । उनमें विकार थोड़ी देर से आता है ..... लेकिन...... आम तौर पर पुरुष अनियंत्रित होता है ! उसके अंदर काम विकार बेहद जल्दी और तुरंत पैदा हो जाता है । यह नियम 20 वर्ष से लेकर 60 वर्ष तक की आयु के सभी प्रकार के पुरुषों पर लागू होता है । इनमे से हर कोई किसी भी स्त्री को देखते ही उसे अपनी नजरों से तौलने लगता है । पुरुषों की इसी प्रवृत्ति के कारण उन्हें साधनात्मक रूप से भी जल्दी सफलता नहीं मिलती है । इसकी तुलना में स्त्रियाँ ज्यादा आसानी से सफलता प्राप्त कर लेती हैं और उनको सिद्धि भी जल्दी मिल जाती है।

इसलिए श्यामा साधना के सिद्ध पुरुष साधक बहुत कम ही होते हैं । मैं एक ऐसे ही सिद्ध पुरुष का आह्वान कर रही हूं जिसने श्यामा साधना संपन्न की हुई है । अभी मैंने इसका प्रारंभिक मंत्र जपा है । इससे उन्हे संकेत मिल गया होगा । इसके आगे का मंत्र जाप तुम्हें संपन्न करना है जब वे प्रत्यक्ष हो जाएंगे तो उसके बाद आगे की प्रक्रिया संपन्न होगी । जिसमें तुम दोनों को एक दूसरे के सामने निर्वस्त्र अवस्था में बैठकर मंत्र जाप संपन्न करना है !

वह भी पूरे 24 घंटे तक !! यदि तुम इस प्रक्रिया को पूर्ण कर लेती हो तो फिर तुम्हें आगे का मार्ग बताया जाएगा ।

इतना कह कर रस भैरवी दरवाजा पुनः उसी प्रकार खोलकर बाहर चली गई ।

जैसा कि मैंने पहले भी बताया था कि 3 दिन तक मुझे केवल जल पर रखा गया था अर्थात शरीर के अंदर का सभी प्रकार का मल बाहर निकल चुका था और शरीर किसी रुई के फाहे की तरह हल्का हो चुका था ।

बाबा जानी .....

हम ऐसा मानते हैं कि भोजन करने से हमें ताकत मिलती है और कुछ अर्थों में यह सच भी है, लेकिन कई ऐसे लोग आपको मिल जाएंगे जो इस मिथक को तोड़ते हुए महसूस होंगे ।

इसका एक उदाहरण है गुजरात के योगी जिनका नाम है प्रहलाद जानी , उन्होंने 11 वर्ष की अवस्था में अन्न का त्याग कर दिया था । बिना अन्न जल ग्रहण किए लगभग 80 साल तक जीवित रहने के बाद 2020 में 91 वर्ष की अवस्था में उन्होंने अपने प्राण त्यागे । वे अपने अनुयायियों के बीच बाबा जानी और माताजी के नाम से भी प्रसिद्ध थे । बाबा जानी गुजरात के प्रसिद्ध अंबाजी मंदिर के पास स्थित एक गुफा में रहते थे ।

मेहसाणा जिले के चारदा गांव में 13 अगस्त 1929 में जन्मे बाबा बताते थे - जब मैं 7 साल का था, तब कुछ साधू मेरे पास आए। उन्होंने मुझे साथ चलने के लिए कहा था तो मैंने इनकार कर दिया था। इस घटना के करीब छह महीने बाद देवी जैसी तीन कन्याएं (दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती) मेरे पास आईं और मेरी जीभ पर

अंगुली रखी। उसके बाद से मुझे न तो प्यास लगती थी और न ही भूख लगती। कई बार मैं जंगलों में 100-200 किमी तक पैदल चला जाता , इसके बावजूद मुझे कभी भूख प्यास नहीं लगती थी ।

अहमदाबाद में 2010 में 22 अप्रैल से 06 मई तक यानी कि 15 दिन तक प्रह्लाद जानी को स्टर्लिंग अस्पताल में रखा गया । जिसमें डिफेंस इंस्टीट्यूट ऑफ़ फिजियोलॉजी एंड एप्लाइड साइंसेज के निदेशक डॉ जी. इलावलगान, न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. सुधीर शाह, डॉ. उरमन ध्रुव (परामर्श चिकित्सक और मधुमेह विशेषज्ञ), डॉ. हिमांशु पटेल (नेफ्रोलॉजिस्ट) जैसे लोगों ने उनका परीक्षण किया था ।

इस जांच के दौरान प्रहलाद जानी की लगातार 24 घंटे सीसीटीवी कैमरे से और व्यक्तिगत तौर पर भी सुपरविजन किया गया. उनका एमआरआई, अल्ट्रासाउंड, एक्स-रे किया गया. साथ ही उनपर क्लीनिकल, बायोकेमिकल और रेडियोलॉजिकल परीक्षण भी किए गए.

इस पंद्रह दिवसीय जांच दौरान प्रह्लाद जानी ने एक बार भी न कुछ खाया न पीया ही था. न ही इस दौरान उन्होंने मल मूत्र ही त्याग किया था.

बाबा जानी पर हुई इन जांच प्रक्रियाओं के अगुआ रहे अहमदाबाद के न्यूरॉलॉजिस्ट डॉ. सुधीर शाह ने कहा था - उनका कोई शारीरिक ट्रांसफॉर्मेशन हुआ है। वे अनजाने में ही बाहर से शक्ति प्राप्त करते हैं। उन्हें कैलरी यानी भोजन की जरुरत नहीं पड़ती। हमने कई दिन तक उनका अवलोकन किया, एक एक सेकंड का वीडियो लिया, उन्होंने न तो कुछ खाया, न पिया, न पेशाब किया और न शौचालय गए।

यह मानव शरीर की अभूतपूर्व क्षमताओं का एक उदाहरण है । जो यह बताता है कि हमारे शरीर के अंदर देवी कृपा से कह लीजिए या अंतर्निहित शक्तियों के जागरण की वजह से कह लीजिए ऐसा कुछ भी है जो हमें बिना भोजन और पानी के भी ऊर्जा प्रदान कर सकता जिंदा रख सकता है । अगर वैज्ञानिक ढंग से सोचें तो ऊर्जा का जो समीकरण है वह बेहद रोमांचक

समीकरण है जिसे निम्नलिखित सूत्र के माध्यम से बताया जाता है

$$E = mC2$$

यह विश्व विख्यात वैज्ञानिक आइंस्टाइन का उर्जा सूत्र कहा जाता है। इसमें यह बताया गया है कि किसी पदार्थ की मात्रा के अंदर कितनी ऊर्जा हो सकती है। इसमें एम पदार्थ की मात्रा और सी प्रकाश की गति को जो लगभग 300000 किलोमीटर प्रति सेकंड होती है, प्रदर्शित करता है। इसी सूत्र के आधार पर परमाणु बमों का भी निर्माण किया जाता है .

इसे यदि हम सरलता से समझें और 1 मिली ग्राम पदार्थ से पैदा होने वाली संभावित ऊर्जा की गणना करें, तो बड़ी ही विशाल संख्या हमें प्राप्त होती है, जो लगभग 90 अरब जूल होती है। यह ऊर्जा कितनी बड़ी है इसकी गणना के लिए अगर हम एक 100 वाट के बल्ब को इस ऊर्जा से चलाएं तो उसे लगभग 29 वर्षों तक लगातार जलाया जा सकता है। गूगल पर सर्च करके आप इसके बारे में और जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे शास्त्रों में कहा जाता है कि अन्न मय कोष से निकलने के बाद प्राण मय कोष में व्यक्ति पहुंचता है । जहां पर उसे अन्न की आवश्यकता कम हो जाती है और प्राण अर्थात जो सांस हम लेते हैं उसी के माध्यम से इतनी द्रव्य की मात्रा हम प्राप्त कर लेते हैं जो हमारे शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लायक ऊर्जा पैदा कर देती है । वह संभवतः इसी प्रकार की किसी प्रक्रिया के तहत होता होगा जब हमारा शरीर उस चीज के अंदर से सारी ऊर्जा को निकाल ले ।

अस्तु ......

श्यामा साधना

देवकी गुरुक्कल आगे बोली - तीन दिनों के उपवास के बाद मेरा शरीर हल्का हो चुका था और मुझे काफी सुखद एहसास हो रहा था । ऐसा लग रहा था, जैसे शरीर के अंदर की सारी नस नाड़ियाँ साफ हो चुकी हो । रस भैरवी के द्वारा दिए गए मंत्र का जाप करते हुए मैं उसी आसन पर बैठी हुई थी । लगभग तीन घंटे तक मंत्र जाप करने के बाद एक आकृति मेरे सामने पर प्रकट हुई । वह एक तेजस्वी पुरुष आकृति थी । उसकी आयु लगभग 35-40 वर्ष की लग रही थी । गठा हुआ शरीर और चमकती हुई आंखें । अब वह योगी मेरे सामने बैठे हुए थे और मैं उसके सामने । हम दोनों एक दूसरे के आमने सामने निर्वस्त्र अवस्था में बैठे हुए थे ।

उसने मुझे प्रणाम किया !

यह देख कर मुझे संकोच हुआ और मैंने भी उसे प्रणाम किया ।

उसके बाद वह बोले - क्या हम प्रारंभ करें ।

मैंने कहा - हां ।

उन्होंने शून्य में हाथ हिलाया और उनके हाथ में कुछ पूजन सामग्री आ गई । जिसमें लाल रंग के कुछ पुष्प की पंखुड़ियां और कुछ चावल के दाने मौजूद थे ।
उन्होंने उस सामग्री के द्वारा मेरा पूजन संपन्न किया तथा पात्र को मेरी तरफ बढ़ा दिया । मैंने पात्र को अपने हाथ में ले लिया और जिस प्रकार मेरा पूजन संपन्न किया था ... उसी प्रकार उनका भी पूजन संपन्न किया ।
पुनः हम दोनों ने एक दूसरे को हाथ जोड़ा । महामाया को प्रणाम किया और फिर मंत्र जाप प्रारंभ हो गया ।
उसकी आंखें हल्की खुली हुई थी और उन आंखों से वह मेरी ओर देख रहा था ।
मेरे लिए यह एक अजीब सा अनुभव था !
क्योंकि इससे पहले कभी भी इस अवस्था में मैं किसी पुरुष के सामने नहीं बैठी थी !
तो !
मुझे बड़ा अटपटा सा लग रहा था ।
रस भैरवी जो कि स्त्री थी तो उसके साथ ऐसा कुछ भी अनुभव नहीं लगता था लेकिन एक पुरुष के सामने इस प्रकार से बैठना वास्तव में मन में विचलन पैदा कर रहा था ।

जिसे संभवतः वह समझ गये ।

उन्होने कहा - देवकी ! हम साधना के उच्च स्तर को प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं, जो शरीर से ऊपर है । इसलिए मैं और तुम सिर्फ मानव देह को माध्यम बना रहे हैं । पुरुष और स्त्री एक शारीरिक अवस्था है । तुम भी एक आत्मा हो मैं भी एक आत्मा हूं । हम उस परम ऊर्जा का एक अंश है तथा उसी ऊर्जा को संपूर्ण रूप से अपने अंदर समाहित करने की प्रक्रिया में संलग्न हो रहे हैं । ऐसी स्थिति में तुम अपने अंदर से स्त्री और पुरुष का भेद निकाल दो, फिर सोचो कि मैं एक कठिन परीक्षण को पार करने के लिए सन्नद्ध हूं और किसी भी स्थिति में इसे पार कर जाऊंगी । मेरा और तुम्हारा साथ इस साधना तक सीमित है । इसके बाद तुम अपने कार्य क्षेत्र में चली जाओगी । मैं अपने कार्य क्षेत्र में चला जाऊंगा । इसलिए इस प्रक्रिया या हमारे बीच हुए इस साधना के विषय में तुम्हें कुछ भी चिंतन या विचार करने की आवश्यकता नहीं है । यह भी साधना का एक अंग है । ऐसा मन में भाव रखते हुए उस महामाया के चरणों में पूर्ण ध्यान लगाते हुए जो मंत्र तुम्हें रसभैरवी ने दिया है,

उसका जाप प्रारंभ करो और अपने लक्ष्य की प्राप्ति की कामना करो ।

इतना कहकर उन्होंने मेरा उत्साह बढ़ाया तो मुझे भी लगा कि वास्तव में यह सब सोचने का समय नहीं है ।

हम दोनों मंत्र जाप में संलग्न हो गए ।

वह 24 घंटे की साधना कठिन थी, लेकिन सफलता पूर्वक संपन्न हो गई ।

साधना के 24 घंटे पूर्ण हो जाने के बाद पुनः हम दोनों ने एक दूसरे का पूजन संपन्न किया और वह दिव्य पुरुष जिस प्रकार से प्रकट हुए थे उसी प्रकार से लुप्त हो गए ।

उनकी लुप्त हो जाने के साथ ही वहां रखा हुआ वह विग्रह लाल रंग के प्रकाश से चमचमाने लगा और उसके बाद उसका आकार धीरे-धीरे छोटा होता हुआ एक चींटी के जैसा हो गया .....

वह अपने स्थान से हवा में उठ गया.....

धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ने लगा ......

मैं आश्चर्य से उसे देख रही थी ।

वह मूर्ति किस प्रकार से इतनी छोटी होती जा रही है ।
वह धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ रही थी और मेरे पास आते आते वह मेरे गुह्य भाग की ओर बढ़ने लगी ......

लगभग चींटी के आकार में वह मेरे गुह्य भाग में प्रवेश कर गई ।

जैसे ही उसका प्रवेश हुआ मुझे अत्यंत तीव्र पीड़ा का आभास हुआ !

ऐसा लगा जैसे मेरे संपूर्ण शरीर में अग्नि शिखाएं प्रज्वलित हो गई हो !

या.....

मैं किसी दहकते हुए अग्नि कुंड में कूद गई हूं !

उसके बाद मैं बेहोश हो गई ।

जब मुझे होश आया तो मैं उसी मंदिर के बाहर योनि मंडल के पास लेटी हुई थी ।

मेरा सर रस भैरवी की गोद में रखा हुआ था ।

वह किसी माता की तरह मेरे सर पर हाथ फेर रही थी ।

वास्तव में गुरु और शिष्य का संबंध मां और पुत्र के जैसा ही होता है ।

गुरु अपने शिष्य को वात्सल्य प्रदान करता है। जिसके प्रभाव में वह साधना के क्षेत्र में लगातार आगे बढ़ता जाता है।

आप किसी छोटे बच्चे को देखें तो उसकी मां उसे बहुत सारी चीजें सिखाती है......

इस दौरान वह उसे फटकारती भी है और पुचकारती भी है। इस पूरी प्रक्रिया में उसका एकमात्र उद्देश्य बच्चे को जीवन जीने के योग्य बनाना होता है।

ठीक वैसे ही एक गुरु अपने शिष्य को दंडित भी करता है। उसे कठोर प्रशिक्षण भी देता है और अपना स्नेह भी प्रदान करता है, ताकि वह इस कठोर परीक्षण को आराम से पार कर जाए और पूर्णता प्राप्त करें।

यही गुरु और शिष्य के संबंध का सार है।

अगर आपका गुरु आप से मीठी-मीठी बातें कर रहा है!

आपकी चिरौरी कर रहा है!

आपको फूसलाने की कोशिश कर रहा है!

आप को महान और अच्छा बताने की कोशिश कर रहा है!

तो समझ जाइए कि वह आप को बेवकूफ बना रहा है।

कन्याओं को विद्याओं में पारंगत बनाना है । उन्हें कलरी पयटू के साथ-साथ तंत्र साधनाओं का भी ज्ञान करवाना है । उन्हें अलग-अलग क्षेत्रों में पुनः प्रतिष्ठित करना है ताकि यह ज्ञान जो लगभग विलुप्त होने की कगार पर आ चुका है वह वापस स्थापित हो सके ।

रस भैरवी बोली - मेरे पास जो भी ज्ञान था ,वह सब कुछ मैं तुम्हें दे चुकी हूं । तुम अपने आप में एक सक्षम और सशक्त तंत्र साधिका बन चुकी हो । इसलिए अब मैं तुम्हें तुम्हारे कार्यक्षेत्र पर पहुंचा रही हूं । तुम्हारे साथ यहां से वे 6 युवतियाँ भी जाएंगी जिनके साथ तुम्हें आगे कार्य करना है ।

वह 6 युवतियाँ लगभग 20 वर्ष की आयु की थी, जिन्हें मेरे साथ भेजा गया था ।

वहां मेरे प्रवास के अंतिम 4 वर्ष में यह सभी मुझसे कलरी पायटू का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही थी । उस समय मुझे पता नहीं था कि यह मेरे साथ आने वाली है । मुझे ऐसा लगा था कि संभवतः रस भैरवी अपने क्षेत्र की महिलाओं को भी इस मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण देना चाहती हैं, इसलिए मुझे लगभग 25 कन्याओं को

कन्याओं को विद्याओं में पारंगत बनाना है। उन्हें कलरी पयटू के साथ-साथ तंत्र साधनाओं का भी ज्ञान करवाना है। उन्हें अलग-अलग क्षेत्रों में पुनः प्रतिष्ठित करना है ताकि यह ज्ञान जो लगभग विलुप्त होने की कगार पर आ चुका है वह वापस स्थापित हो सके।

रस भैरवी बोली - मेरे पास जो भी ज्ञान था ,वह सब कुछ मैं तुम्हें दे चुकी हूं। तुम अपने आप में एक सक्षम और सशक्त तंत्र साधिका बन चुकी हो। इसलिए अब मैं तुम्हें तुम्हारे कार्यक्षेत्र पर पहुंचा रही हूं। तुम्हारे साथ यहां से वे 6 युवतियाँ भी जाएंगी जिनके साथ तुम्हें आगे कार्य करना है।
वह 6 युवतियाँ लगभग 20 वर्ष की आयु की थी, जिन्हें मेरे साथ भेजा गया था।
वहां मेरे प्रवास के अंतिम 4 वर्ष में यह सभी मुझसे कलरी पायटू का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही थी। उस समय मुझे पता नहीं था कि यह मेरे साथ आने वाली है। मुझे ऐसा लगा था कि संभवतः रस भैरवी अपने क्षेत्र की महिलाओं को भी इस मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण देना चाहती हैं, इसलिए मुझे लगभग 25 कन्याओं को

प्रशिक्षण देने का काम सौंपा गया था। जो दिन में लगभग 4 घंटे मैं करती थी।

उसके बाद का सारा समय विभिन्न साधनाओं में बीतता था।

उन कन्याओं की आयु 4 वर्ष से लेकर 16-17 वर्ष तक की थी, जिन्हें मैंने प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया था।

वे 4 वर्षों के कठोर परिश्रम के बाद इस कला में पर्याप्त निपुण हो चुकी थी। उन्हीं में से 6 युवतियों को रस भैरवी ने मेरे साथ जाने के लिए चुना था। एक तरह से देखा जाए तो वह उस आयु वर्ग में सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकी थी।

जब हम सब यहाँ पहुंचे उस समय यहां घनघोर जंगल था। यहां यह छोटा सा गांव मौजूद था। जो उजड़ गया था। यहां के सारे लोग गांव छोड़कर जा चुके थे।

हम लोगों ने काफी मेहनत करके इसे वापस रहने लायक बना लिया।

इस कार्य में हमें लगभग 3 महीने का वक्त लगा।

वह रहस्यमय वनस्पति ....

तीन महीने के बाद एक दिन रस भैरवी एक योगी के साथ यहाँ प्रकट हुई ।

वह लगभग 20 से 22 वर्ष के बीच का युवक था ।

वह युवक आयुर्वेद का उद्भट विद्वान था । उसने हमें बहुत सारी औषधियों का ज्ञान करवाया । इस क्षेत्र में अनेक रहस्यमय औषधियां भी मौजूद हैं । जिनका प्रयोग विभिन्न प्रकार के तंत्र प्रयोगों में किया जा सकता था इसके विषय में भी उसने हमें जानकारी दी । तुम्हें जो ताकत वाला पेय पिलाया था वह भी उनमे से एक था ।

भैरवी ने बताया - इन्हीं छह युवतियों से इस क्षेत्र में आगामी समय मे सिद्ध साधिकाओं की एक श्रृंखला बनेगी । उसके लिए आवश्यक है कि इनको संतान की प्राप्ति हो । संतान की प्राप्ति के लिए पुरुष की आवश्यकता है । इसलिए मैं योगी को यहां पर ले कर आई हूं ।

हमें संतान के रूप में केवल कन्याओं की आवश्यकता है, जिसके लिए योगी के शरीर में कुछ औषधियों का

लेप करके कुछ विशेष क्रियाएं करनी पड़ेगी । यह प्रक्रिया थोड़ी जटिल होगी और हमें कुछ औषधियों का भी प्रयोग करना पड़ेगा । यह औषधियां इन जंगलों में मौजूद हैं, लेकिन उन्हें पहचानने के लिए किसी आयुर्वेद के जानकार व्यक्ति की आवश्यकता पड़ेगी । इसलिए मैं इन्हें लेकर आई हूं । यह तुम्हें एक अति विशिष्ट औषधि के बारे में भी समझाएंगे ।

जिसका प्रयोग भविष्य में भी तुम्हें करना होगा ।

हम सभी लोग एक साथ जंगल में कुछ जड़ी बूटियों की खोज में निकले ।

लगभग 3 दिन घूमने के बाद वह औषधि मिल गई । वह एक विचित्र प्रकार की औषधि थी । जिसमें एक समय में केवल तीन पत्ते लगते थे ।

मध्य दोपहरी के समय !

जब सूर्य बिल्कुल सर के ऊपर होता है !

उस समय उसमें एक फूल खिलता था !

जो लगभग हथेली के आकार का होता !

सूरजमुखी के जैसे दिखने वाले इस फूल का रंग बिल्कुल हरा होता था ।

उस फूल को खिलने के साथ ही उसे तोड़ना पड़ता था, क्योंकि उसके खिलते ही पत्तियों का रंग हरे से काला पड़ने लगता था और उसके बाद वे झड जाती थी ।
इसमें मुश्किल से डेढ़ या दो मिनट का समय लगता था ।
पत्तों को आधा या ज्यादा हरा रहते-रहते तोड़ना पड़ता था ......
तभी वह पत्तियां और फूल औषधि बनाने के काम आता ।
लगभग 7 दिन के प्रयास के बाद हम उस औषधि को पहचानने और उसे तोड़ कर लाने में सफल हो सके ।
हम सभी को साथ में ले जाने का मकसद यही था कि हम भी उसे औषधि को पहचान सकें ।
उसे तोड़कर लाने के बाद उन पत्तों का एक विशेष विधि के द्वारा लेप बनाया गया ।
जो हम लोगों ने ही बनाया !
केवल उस युवक ने हमें उसकी विधि बता कर दी ।
बीच-बीच में जहां गलती होती थी, वहां सुधार करता गया । जब वह लेप तैयार होने लगा तो उसमें हल्की

हल्दी जैसी खुशबू आती थी और उसका रंग बिल्कुल हरा था ।

उस लेप को लगभग एक महीने तक इस्तेमाल किया जा सकता है लेकिन इसकी शर्त यह कि उसे ऐसी जगह पर रखा जाए जहां लगातार पानी गिरता हो या नमी मौजूद रहे । इसीलिए यह सारी प्रक्रिया उसी गुफा में संपन्न की जाती है जहां पर मीनम्मा तुमसे मिली थी ।
अब मुझे उस गुफा का रहस्य समझ में आने लगा क्योंकि वहां पर केवल मैं और मीनम्मा ही मौजूद थे । अर्थात वह गुफा केवल इसी उपयोग में लाई जाती थी ।

आमतौर पर पुत्र या पुत्री होने के लिए स्त्री को जिम्मेदार माना जाता है लेकिन वास्तविकता यह नहीं है । बच्चे के लिंग निर्माण के लिए अर्थात उसके लड़का या लड़की होने के लिए क्रोमोजोम या गुण सूत्र जिम्मेदार होते हैं । पुरुष का शुक्राणु और स्त्री का अंडाणु दोनों में 23 जोड़े क्रोमोसोम पाए जाते हैं ।
इनमें से 22 जोड़ी एक जैसे होते हैं केवल 1 जोड़ी ऐसी होती है जो सेक्स का निर्धारण करती है ।

महिलाओं में यह जोड़ी xx होती है और पुरुषों में xy
।

इस आखिरी जोड़ी का एक क्रोमोजोम मां की तरफ से और एक क्रोमोजोम पिता की तरफ से बच्चे को मिलता है ।
मां की तरफ से बच्चे को केवल एक्स मिल सकता है क्योंकि मां के पास वाइ क्रोमोजोम नहीं होता । इसलिए बच्चे के लिंग निर्धारण में मां का कोई योगदान नहीं होता ।
पिता के पास एक्स और वाइ दोनों क्रोमोजोम पाए जाते हैं इसलिए बच्चे को पिता से अगर एक्स क्रोमोजोम मिलेगा तो वह लड़की होगी और यदि पिता से वाई क्रोमोजोम मिलेगा तो वह लड़का होगा ।

देवकी गुरुक्कल बोली - वह हरा लेप पुरुष के अंदर स्थित क्रोमोजोम में एक्स को ताकतवर बनाता है और वाई को कमजोर कर देता है । जिससे पुरुष के शुक्राणु से एक्स क्रोमोजोम ही गर्भाधान के समय अंडाणु को संपर्कित होकर उसे कन्या भ्रूण के रूप में विकसित कर देता है । जिससे कन्या संतान उत्पन्न होती है ।

मैंने पूछा - इसका मतलब ऐसी औषधियां भी होंगी जो केवल वाइ क्रोमोजोम को मजबूत बनाती होंगी जिससे बालक उत्पन्न किया जा सकता होगा ।

देवकी गुरुक्कल बोली - हां ! आयुर्वेद का विषय विस्तार बहुत व्यापक है इसके अंदर असीमित संभावनाएं मौजूद हैं ।
इसके संबंध में आचार्य चरक की एक कथा प्रचलित है ।

आचार्य चरक ......

आचार्य चरक आयुर्वेद के सबसे प्राचीन मर्मज्ञ माने जाते हैं। उनके आश्रम में विद्यार्थी आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। उन्होंने अपने सारे शिष्यों को एकत्रित करके कहा - मैं तुम्हें 1 महीने का समय देता हूं। इस 1 महीने के अंदर हमारे आश्रम के आसपास उगी हुई वनस्पतियों में से जो वनस्पतियां किसी काम की नहीं है , किसी रोग के उपचार में काम नहीं आती है, उनको इकट्ठा करके मेरे पास ले आओ। ताकि मुझे पता चले कि तुम सब ने आयुर्वेद की शिक्षा अच्छी तरह से प्राप्त कर ली है और तुम्हें औषधियों का ज्ञान हो चुका है।

सभी शिष्य रोज सवेरे निकल जाते और उन्हें जो वनस्पति काम के लायक नहीं लगती उसे तोड़कर अपने पास रख लेते। इस प्रकार से 1 महीने के अंदर सभी लोगों के पास काफी सारी वनस्पतियां इकट्ठा हो गई। एक महीना पूर्ण हो जाने के बाद आचार्य फिर आसन पर बैठे और एक एक करके शिष्य अपने द्वारा इकट्ठा

किए गए वनस्पतियों और उनके बेकार होने के कारणों का विवरण देने लगे ।

शिष्यों की बात सुनकर आचार्य सहमति में सिर हिलाते और अगले शिष्य को आने का आदेश देते ।

इस प्रकार सारे शिष्य एक-एक करके आते गए और अपने विवरण बताते गए ।
सबसे अंत में एक शिष्य आया !
जिसके हाथ में कुछ भी नहीं था ।
उसके खाली हाथ को देखकर सभी शिष्य हंस पड़े और कानाफूसी करने लगे.......
आचार्य चरक की भवे भी तन गई .....
उनके चेहरे से क्रोध छलकने लगा ।
उन्होंने पूछा - तुम खाली हाथ कैसे लौटे ? क्या तुमको इस सारे वन प्रांतर में एक भी बेकार का पौधा नहीं मिला ।

शिष्य ने सकुचा कर जवाब दिया - गुरुवर ! मैंने इस वन प्रांतर का चप्पा चप्पा छान लिया ! हर एक वनस्पति को मैंने परख लिया । लेकिन मुझे एक भी

वनस्पति ऐसी नहीं मिली। जिसका कोई उपयोग ना हो ! जो बेकार हो। हर वनस्पति में किसी न किसी प्रकार का औषधीय गुण विद्यमान है ! इसलिए मैं कोई भी बेकार की वनस्पति नहीं ला पाया।

आचार्य अपने आसन से उतर कर उसकी ओर बढ़े। सभी शिष्य संभावित दंड की आशंका से भयभीत हुए, लेकिन आचार्य चरक ने आगे बढ़कर उस शिष्य को अपने गले से लगा लिया।

और कहा - वास्तव में तुम्हीं ने आयुर्वेद का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया है। प्रकृति में कोई भी वनस्पति ऐसी नहीं है, जिसके अंदर कोई न कोई औषधीय गुण मौजूद ना हो। इसलिए इस प्रकृति में उपलब्ध हर वनस्पति आयुर्वेद की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। तुमने इस मर्म को समझा है।

वास्तव में तुम मेरे सर्वश्रेष्ठ शिष्य हो।

गुरुकुल निर्माण

इतना कह कर देवकी गुरुक्कल ने मेरी ओर देखा ।

उनकी आंखों में साधना का तेज जगमगा रहा था ।

जिस साधक ने किसी लक्ष्य के निमित्त अपने यौवन को झोंका हो ।

जिसने अपनी जवानी के वर्ष किसी साधना या किसी मार्शल आर्ट या किसी भी कला के लिए समर्पित किए हो .....

वही उस क्षेत्र का विशिष्ट व्यक्तित्व बन पाता है ।

सनातन धर्म में जो वर्तमान स्थिति है वह आध्यात्म को बूढ़ों का विषय मानती है !

ऐसा माना जाता है कि जब पुरुष या स्त्री किसी काम के ना रह जाए..... तब उनको भगवान का नाम लेना चाहिए ......

यह एक गलत सोच है !

जितनी छोटी उम्र से आपका अध्यात्म के क्षेत्र में प्रवेश हो जाए उतनी ज्यादा संभावना है कि आप उस परम सत्ता का स्पर्श प्राप्त कर सकेंगे !

साधनाओं को और सिद्धियों को समझ सकेंगे ।

यह हर क्षेत्र की तरह अध्यात्म में भी लागू होता है ।
खैर .....

देवकी गुरुक्कल आगे बोली - उस फूल को निचोड़ कर उसका तेल भी बनाया गया ।
रस भैरवी हम सभी को लेकर उस युवा योगी के साथ उस ऊपर वाली गुफा में चली गई । वहां सबसे पहले उन्होंने उन युवतियों को वह लेप लगाने की प्रक्रिया समझाई तथा उस युवक के ऊपर उस लेप का प्रयोग किया गया ।

रस भैरवी ने बताया कि उस औषधीय लेप के लगा देने के बाद देह के अंदर से सभी प्रकार के रोगाणु तथा अन्य बीमारियां लुप्त हो जाती है और लगभग कायाकल्प हो जाता है । इस प्रक्रिया के द्वारा पूर्ण पुरुषत्व जागृत हो जाता है । यह मेरे लिए बिल्कुल नई जानकारी थी । उस के बाद रस भैरवी ने हमसे उस युवक की आयु पूछी ।
जैसा कि मैंने बताया था उसे देखने पर उसकी आयु 20-22 वर्ष की लगती थी तो हम सभी ने 20-25 वर्ष के बीच की अवस्था बताई ।

हमारी बात सुनकर रस भैरवी और वह युवक दोनों ठठाकर हंस पड़े । हम उन्हें हंसता हुआ देख रहे थे क्यूँकि हमारी समझ में नहीं आया कि वह क्यों हंस रहे हैं ।

रस भैरवी ने बताया - इस सिद्ध योगी का नाम शंभवाचार्य है और इनकी आयु 90 वर्ष की है। इन्हे रस सिद्धि भी प्राप्त है अर्थात पारद विद्या का ज्ञान भी है , इसके अलावा आयुर्वेद के विशेषज्ञ तो हैं ही ।
यह सुनकर मेरी आंखें फटी की फटी रह गई क्योंकि वह योगी किसी भी दृष्टि से 90 वर्ष का दिखाई नहीं देता था ।
उसके चेहरे पर एक झुर्री तक नहीं थी !
गठीले बदन का वह योगी कहीं से भी 25 वर्ष से अधिक आयु का नहीं दिखाई देता था ।
हम सभी उसकी बात ध्यान से सुन रहे थे ।
वहां जो युवतियां खड़ी थी, उनको संभवत: इस बात पर विश्वास था लेकिन मुझे विश्वास नहीं हो रहा था ।

मेरी यह बात भैरवी समझ गई !

उसने मुझसे पूछा - अच्छा मैं तुम्हें कितने वर्ष की लगती हूं ?
इसका जवाब मेरे लिए देना आसान था क्योंकि वह लगभग 25-26 वर्ष की युवती दिखाई देती थी ....
लेकिन उस योगी के संबंध में जो बात कही गई थी उसे सुनकर मैं बोलते बोलते रुक गई.....
क्योंकि ....
जब से मैं रस भैरवी से मिली थी तब से उसकी आयु और आकृति में कोई बदलाव मुझे महसूस नहीं हुआ था ......
वह अब भी वैसी की वैसी दिखती थी अर्थात यहां भी कुछ बात जरूर थी .....
यह सोच कर मैं उसकी तरफ मौन होकर देखने लगी ।

मेरी दशा देखकर भैरवी फिर से खिलखिला कर हंस पड़ी और बोली - देवकी ! मेरी आयु 114 साल की है । लगभग 10 साल पहले 104 साल की आयु में शंभवाचार्य ने अपनी औषधियों के माध्यम से दूसरी बार मेरा कायाकल्प किया था । जिसके बाद मेरी देह षोडशी युवती के जैसी हो गई थी ।

मुझे अभी 24 वर्ष और जीवित रहना है । इसलिए इस बीच हो सकता है तुमसे एक आध बार और मुलाकात हो जाए ।

भैरवी की बातों को सुनकर मुझे विश्वास नहीं हुआ लेकिन अविश्वास करने का भी कोई लाभ नहीं था ।

भैरवी ने आगे बताया - आयुर्वेद में कायाकल्प औषधियां होती है जो शरीर के समस्त विकारों और रोगों को नष्ट कर देती है । रस विद्या के अंतर्गत इस प्रकार की अति विशिष्ट औषधियों का निर्माण संभव है । इसके साथ कुछ विशेष साधनाएं और योगिक क्रियाएं भी करनी होती है । इनके नियमित अभ्यास से शरीर की अवस्था लगभग स्थिर हो जाती है । उसमें आयु के बढ़ने के लक्षण दिखाई देने बंद हो जाते हैं । इसलिए यह योगी अभी भी युवा दिखाई देते है ।

जो हरा लेप लगाया गया था वह कन्या संतान की उत्पत्ति का कारण बनेगा ।

जिस प्रकार से संतान को माता पिता के गुण मिलते हैं , उसी प्रकार से इन युवतियों की संतानों को कुछ गुण विरासत में मिलेंगे ।

पहला उनके अंदर स्थित तंत्र साधनाओं का गुण !

दूसरा तुम्हारे द्वारा सिखाए गए कलरी पायटू विद्या का अंश भी उन्हें प्राप्त होगा !

इसके अलावा इस आयुर्वेदाचार्य के अंश होने की वजह से उनके अंदर आयुर्वेद को आत्मसात करने की प्रवृत्ति सहज रुप से विद्यमान होगी !!

यह सारी चीजें तुम्हें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होगी ।

तुम्हारे प्रशिक्षण को प्राप्त करके यह बच्चे अद्भुत प्रतिभावान बनेंगे । जो भविष्य में इन विद्याओं को सहेजने का काम करेंगे ।

इसके बाद शाम होते ही एक युवती को वहां छोड़कर हम सभी वापस आ गए । वह युवती वहां 3 दिन तक रही और इस प्रकार से बारी-बारी से वे छह युवतियां वहां पर तीन-तीन दिन योगी शंभवाचार्य के साथ रहे । इस प्रकार से लगभग 18 दिन बीत चुके थे ।

इस दौरान रस भैरवी ने मुझे कामकला काली से संबंधित मंत्र का तीन लाख मंत्र जाप करने के लिए कहा था । मेरा मंत्र जाप पूरा हो चुका था ।

उन्होंने मुझे बताया कि यह साधना अनेक प्रकार से की जा सकती है । एक स्वरूप वह है जो इन युवतियों को सम्पन्न कराया गया है । इसका उद्देश्य उच्च स्तर की सिद्ध आत्माओं को देह प्रदान करना है, जो तुम्हारे लक्ष्य में सहायक होंगे । इस प्रक्रिया के द्वारा एक विशेष क्षण में गर्भाधान संपन्न किया जाता है, जो तांत्रिक तथा ज्योतिष की दृष्टि से एक श्रेष्ठ संतान की उत्पत्ति के लिए आवश्यक होता है ।

गुरुत्व या शिवत्व प्राप्ति कराने वाला इस साधना का एक दूसरा स्वरूप तुम्हें सम्पन्न कराया जाएगा । इसमे आत्मनियंत्रण रखना होता है तथा दोनों को 36 घंटे तक संयुक्त अवस्था में रहते हुए भी स्खलित नहीं होना है ।

इस प्रकार से अगर यह साधना संपन्न हो जाती है तो उस साधिका के अंदर काली तत्व जागृत हो जाता है । वह साक्षात महाकाली का स्वरूप हो जाती है । उसके

बाद उसके अंदर गुरु तुल्य ज्ञान का और सिद्धियों का प्रस्फुटन होने लगता है ।

तुम आने वाले समय में एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी संभालने वाली हो ।
इस क्षेत्र का यह गुरुकुल तुम्हारे निर्देशन में कार्य करेगा और यहां की गुरु परंपरा की तुम पहली गुरु होगी ।
इसके बाद जो भी तुम्हारा उत्तराधिकारी बनेगा , उसे भी इसी प्रक्रिया से गुजरने के बाद अपना स्थान उसे प्रदान करना है ।
इस बात का ध्यान रखना ।
इसलिए इस पूरी प्रक्रिया को अच्छी तरह से समझ लो और अपने मस्तिष्क में बैठा लो ।
एक समय ऐसा आएगा जब तुम्हें इससे आगे की साधनात्मक अवस्थाओं में जाना पड़ेगा और तब तुम्हें इस गुरुकुल के लिए एक नए गुरु की जरूरत होगी जो तुम्हारा कार्य आगे बढ़ाएगी ।

इसके बाद मुझे गुफा में पहुंचाने के बाद रस भैरवी ने अनेक गोपनीय रहस्य को बताने के बाद , हम दोनों को वहां छोड़ दिया और हमारी 36 घंटे की वह

गोपनीय साधना संपन्न हुई । यह एक युगल साधना थी जो काफी कठिन थी लेकिन महामाया की कृपा से सफलतापूर्वक संपन्न हो गई ।

उन युवतियों ने कालांतर में 6 कन्याओं को जन्म दिया । समय के साथ यह प्रक्रिया जारी रही । हर युवती ने तीन-तीन कन्याओं को जन्म दिया । इस प्रकार से बच्चों की संख्या बढ़ने लगी । जब वे थोड़ी बड़ी हुई तब मैंने उन बच्चों को प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया । प्रारंभिक चरण में कलरी पयटू की शिक्षा होती है । इसलिए वह कार्य मेरा था । जब सभी के तीन-तीन बच्चे हो गए तब वह युवतियाँ भी मेरे कार्य में हाथ बटाने लगी ।

बच्चियों को 4 साल से लेकर 8 वर्ष की अवस्था तक सबसे पहले कलारी पयट्टू का अभ्यास कराया जाता है, क्योंकि इस आयु वर्ग में शरीर में बेहद ज्यादा लचक होती है । कलरी के अलग-अलग जटिल मुद्राओं को आसानी से सीखा जा सकता है । एक बार जब इनका अभ्यास प्रारंभ हो जाता है तो शरीर में इतनी लोच आ जाती है कि उम्र बढ़ जाने के बाद भी शरीर वैसा मुड़ जाता है ।

जब बच्चियां 8 साल की हो जाती है तो उसके बाद उन्हें 4 साल तक मर्म विद्या अर्थात शरीर के विभिन्न संवेदनशील बिंदुओं और नाड़ी गुच्छों के विषय में समझाया जाता है । साथ ही साथ आयुर्वेद मालिश तथा जड़ी बूटियों का ज्ञान भी कराया जाता है इस दौरान भी कलारी पयट्टू का अभ्यास जारी रहता है । तीसरे चरण मे 12 से 16 वर्ष की अवस्था तक इन बच्चों को तंत्र साधना की शिक्षा दी जाती है । इस दौरान उन्हें बेहद कठोर साधनात्मक अनुशासन से होकर गुजरना पड़ता है और साथ ही अपने पहले के दोनों विषयों को भी जारी रखना पड़ता है ।

जब तीनों चरण पूरे हो जाते हैं तो 16 वर्ष की आयु के बाद उन्हें 1 वर्ष तक कामाख्या साधना संपन्न करवाई जाती है । जो कि उनके अंदर के स्त्री तत्व को पूर्ण रूप से विकसित करने में मदद करती है । जब यह हो जाता है तो फिर किसी सिद्ध पुरुष की खोज की जाती है जो संतान उत्पत्ति के लिए उपयुक्त हो ।

मैंने पूछा - आप यहां पर केवल कन्याओं को ही रखती हो। पुरुषों को नहीं रखने के पीछे कोई विशेष कारण है क्या ?

देवकी गुरुक्कल बोली- हां स्त्री और पुरुष दोनों एक साथ रहेंगे तो यह संभावना है कि उनका ध्यान भटक जाए। जैसे जैसे शरीर में यौवन उभरने लगता है मन में विकार भी आने लगते हैं। यह तब ज्यादा होता है जब विपरीत लिंगी अपने आसपास मौजूद हो।
ऐसी स्थिति में अभ्यास कम हो जाएगा और दूसरी चीजें ज्यादा होने लगी।
इससे बचने के लिए हम केवल कन्याओं को यह विद्या सिखाते हैं। अगर एक स्त्री कोई चीज सीख जाती है तो वह कई लोगों को इससे प्रभावित कर सकती है और सिखा भी सकती है।
यह सब सुनने में बेहद प्रभावी लग रहा था लेकिन वास्तव में इस प्रकार की प्रक्रियाओं को संपन्न करना बेहद जटिल है।
उन्होंने आगे बताया - यहां जो स्त्री शक्तियां आती है। वह अपनी पहली तीन पुत्रियों को यहीं छोड़ देती है और

उसके बाद विवाह करके अपना घर बसा लेती हैं और जो विद्याएं उन्होंने यहां पर सीखी है उसका समाज में प्रचार भी करती रहती हैं। पूरे वर्ष में दो बार उन्हें अपने बच्चों से मिलने आने का अवसर भी मिलता है, लेकिन इसमें गोपनीयता का पूरा ध्यान रखा जाता है।

उन्हें तांत्रिक विद्याओं के द्वारा ही यहां पर बुलाया जाता है क्योंकि सामान्य रूप से कोई भी इस गांव तक नहीं आ सकता। यह चारों तरफ से तांत्रिक शक्तियों के द्वारा बंधा हुआ है और कोई भी सामान्य व्यक्ति इसे नहीं देख सकता।

तुम एक सिद्ध पुरुष हो !

इसलिए इसे देख पा रहे हो !!

अगर कोई सामान्य व्यक्ति होता तो यहाँ की कोई भी चीज उसे नहीं दिखाई देती। केवल जंगल दिखता ......

अभी यहां कन्याओं की तीसरी पीढ़ी चल रही है।

मीनम्मा दूसरी पीढ़ी की है उसके दो बच्चे अभी गुरुकुल में है। तीसरी संतान की उत्पत्ति के लिए उसने तुम्हारा साथ लिया है।

उत्तराधिकारी ....

अभी मेरी आयु 64 वर्ष की हो चुकी है और मेरी पूर्ण आयु 70 वर्ष की है ।

इस हिसाब से मेरे पास 6 वर्ष है और इन 6 वर्षों में मुझे इस गुरुकुल के लिए एक उत्तराधिकारी भी निश्चित करना है ।

देवकी गुरुक्कल ने मुझे बताया - तुम्हें यहां बुलाने के पीछे प्रमुख कारण यही था कि इसके लिए एक ऐसे योगी की आवश्यकता है जिसने श्यामा साधना संपन्न की हुई हो ।

तुमने श्यामा साधना संपन्न की है, इसलिए इस कार्य के लिए तुम्हारा चयन किया गया है ।

अभी जिन कन्याओं को कामाख्या साधना करवाई जा रही थी ।

उन्हीं से जो सर्वश्रेष्ठ साधिका होगी उसे यह साधना संपन्न करानी है .....

अगर वह इसमें सफल हो जाएगी तो उसे इस गुरुकुल को भविष्य में मेरे बाद संभालना होगा ।

मैं चाहती हूं कि तुम मेरे इस कार्य में मेरी सहायता करो
।
मैंने पूछा - मुझे क्या करना होगा ?
उन्होंने कहा - अभी एक कन्या कामाख्या साधना कर
रही है । सफल हुई तो वही मेरी उत्तराधिकारी बनेगी
। जिसे पहले श्यामा साधना संपन्न करनी है । उसके
पश्चात विशेष मंत्रों के द्वारा अत्यंत गोपनीय कामकला
काली साधना को संपन्न करना होगा जिससे उसके
अंदर भगवती का स्वरूप समाहित हो सके ।
यह साधना केवल उसी स्त्री को संपन्न करवाई जाती है
जिसके अंदर के काम विकार पूरी तरह से नष्ट हो गए हो
या जिसने अपने आप को आत्म नियंत्रित करने की कला
में पूर्णता प्राप्त कर ली हो ।
यह स्थिति भी केवल महामाया की कृपा से प्राप्त होती
है ।

मैं उनकी बातों को ध्यान से सुन रहा था.....
उन्होंने आगे कहा - यह सारा संसार मैथुनी सृष्टि माना
जाता है ।

यहां पर स्त्री और पुरुष के बीच में स्वाभाविक आकर्षण प्रकृति के द्वारा दिया हुआ है । यह किसी को सिखाने की जरूरत नहीं पड़ती । चाहे जानवर हो चाहे स्त्री पुरुषों या फिर जंगल में रहने वाले आदिवासी स्त्री पुरुष....... जो कि दुनिया से बिल्कुल अलग है लेकिन वह भी आपस में संसर्ग करते हैं और संतान की उत्पत्ति करते हैं । यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है । जो प्रकृति के द्वारा मनुष्य में सहज प्रदान की गई है ।

मनुष्यों में यह भावना केवल संतान उत्पत्ति के लिए नहीं होती, जबकि बाकी सारे जानवरों में यह भावना संतान उत्पत्ति के लिए ही प्रमुख रूप से पैदा होती है । अगर तुम देखोगे तो सबसे सार्वजनिक रूप से जो जानवर कामुक व्यवहार करता हुआ दिखाई देता है वह है कुत्ता .....

तुम देखोगे कि एक कुत्तिया के पीछे 7-8 कुत्ते घूमते रहते हैं......

ऐसा लगता है जैसे उन्हें इसके अलावा दुनिया में कोई और काम नहीं है इतनी शिद्दत से वह इस में लगे रहते हैं .....

काफी देर तक यही क्रम चलता रहता है !

यह सबके सामने होता है !
इसलिए बेहद सरलता से दिखाई देता है.....

लेकिन इसका एक दूसरा पहलू भी है.....
जब यह प्रक्रिया संपन्न होती है .... वह लगभग 15 से 20 दिन का कालखंड होता है .... जब ऐसे दृश्य आपको दिखाई देते हैं ।
बाकी समय में वही कुत्तिया उन कुत्तों के बगल से गुजर जाए तो भी वह कुछ नहीं करते ।
यानी.....
उनकी यह सारी क्रिया अपनी वंशावली को आगे बढ़ाने के लिए होती है ।
वह केवल संतानोत्पत्ति के लिए आपसी सहवास करते हैं ।
इसे ऐसा भी कहा जा सकता है कि वह उनके अंदर एक उन्माद पैदा करता है !
जो निश्चित समय या कालखंड के अंदर ही होता है ।
इसके ठीक विपरीत मनुष्यों में कामवासना साल भर विद्यमान रहती है ।
पूरे 365 दिन 24 घंटे !

मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो अपने आपको सभ्य कहता है, लेकिन साल भर कहीं ना कहीं बलात्कार की घटनाएं सामने आती रहती है ।

इसे ऐसा भी कहा जा सकता है कि मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो आपसी संसर्ग में आनंद ले सकता है......

वह हमेशा उस आनंद की प्राप्ति के लिए भटकता रहता है ......

इसके लिए बलात्कार जैसे जघन्य अपराध को अंजाम देने से भी नहीं चूकता ।

यह मनुष्य की निकृष्टता है !

लेकिन यही वास्तविकता है !

मनुष्य की यही काम वासना उसे आगे बढ़ने से रोकती है !

आध्यात्मिक जीवन में आगे बढ़ने के लिए इससे ऊपर उठना ही पड़ता है !

अगर आप देखें तो जीवन के हर क्षेत्र में जो भी व्यक्ति काफी ऊंचाई पर पहुंचा होता है..... उसके अंदर यह नियंत्रण आता ही है तभी वह उस उच्चता को प्राप्त कर सकता है ।

चाहे वह आध्यात्म का क्षेत्र हो या फिर कोई और ..... इसे नियंत्रित करने की क्षमता जिसमें आ जाती है वही अपनी इस मूल उर्जा को सही ढंग से उपयोग करता है और किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ता है ।

हमारे शरीर के अंदर एक कुंडलिनी शक्ति विद्यमान है । जिसमें चक्रों की उपस्थिति बताई जाती है जैसे जैसे चक्रों के अंदर जागृति या चेतन्यता आती जाती है..... उस साधक का आध्यात्मिक स्तर बढ़ता जाता है । यही उसे विभिन्न प्रकार के ज्ञान को आत्मसात करने की क्षमता प्रदान करता है । जो व्यक्ति इस प्रकार से ज्ञान को प्राप्त कर लेता है , वही कालांतर में एक श्रेष्ठ गुरु बन सकता है ।

तंत्र में कामवासना को प्रतिबंधित करने के विषय में बहुत ज्यादा प्रयास नहीं किया गया है । कई स्थानों पर इसे उन्मुक्त रुप से प्रदर्शित भी किया गया है । खजुराहो जैसे मंदिर इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है ।

जब इसे नियंत्रित करके उच्चतर अवस्था की स्थिति में स्त्री और पुरुष के संबंध बनते हैं तो असीमित ऊर्जा

उत्पन्न होती है, यदि वह ऊर्जा नियंत्रित कर ली जाए तो दोनों साधकों के अंदर शक्ति का जागरण..... कुंडलिनी का जागरण तथा दिव्य आध्यात्मिक अनुभूतियां पैदा होने लगती है ।

इसके लिए जरूरी है कि दोनों में आत्म नियंत्रण मौजूद हो......

इतना कहकर देवकी गुरुक्कल रुकी !

जैसा कि मैंने आपको बताया था मैं जिज्ञासु प्रवृत्ति का हूं । इसलिए कई बार अटपटे प्रश्न भी कर डालता हूं ।

इसलिए मैंने पूछा - आपकी अपनी कोई संतान नहीं है क्या ? क्योंकि अगर आपकी संतान होती तो उसके अंदर आपके गुण वैसे ही मौजूद रहते और वह श्रेष्ठ गुरु बन सकती ।

मेरी बात पर देवकी गुरुक्कल मुस्कुरा उठी ।

उन्होंने कहा - किसी भी क्षेत्र में शिखर पर पहुंचे हुए व्यक्ति के बच्चे उसके समान नहीं होते । उदाहरण के लिए महात्मा गांधी का बेटा महात्मा गांधी के समान नहीं बन पाया .....

और पीछे जाएं तो महात्मा बुद्ध का बेटा बुद्ध नहीं बन पाया......

और तो और .....

भगवान कृष्ण का बेटा भगवान कृष्ण के समान नहीं बन पाया .....

और ना ही भगवान राम का पुत्र भगवान राम के समान बन पाया !

इसलिए यह सोचना कि पिता किसी क्षेत्र में अद्धितीय है तो उसका बेटा भी अद्धितीय होगा यह एक लगभग असंभव नहीं तो बेहद कठिन संयोग है ।

हमारे यहां यह परंपरा है कि गुरु के पुत्र को गुरु मान लिया जाता है......

कई जगह 3 महीने 6 महीने या पांच सात साल के बच्चे को भी गुरु मान लिया जाता है ।

अब आप स्वयं सोचें कि इतना छोटा बच्चा कहां से उस ज्ञान को अपने अंदर समाहित कर पाता होगा और क्या उससे गुरु मान लेना उचित है ?

बुद्ध धर्म में सर्वोच्च गुरु दलाई लामा माने जाते हैं। दलाई लामा का उत्तराधिकारी दलाई लामा का पुत्र नहीं होता। वह कोई और होता है।

ईसाई धर्म में सर्वोच्च पद पोप का होता है।
वहां भी पोप का पुत्र पोप नहीं होता बल्कि उस समय के श्रेष्ठतम धार्मिक व्यक्ति को वह दर्जा दिया जाता है।
अगर हमारे शंकराचार्य परंपरा को देखें तो वहां पर भी पिता से पुत्र को पद देने की परंपरा नहीं है।
जो सबसे श्रेष्ठ शिष्य होता है.....
जिसका उस ज्ञान पर अधिकार होता है....
उसे गुरु का पद दिया जाता है।
खासतौर से तंत्र साधना के क्षेत्र में हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि जिसने स्वयं साधना नहीं की है वह आपको साधना नहीं सिखा सकता।
इसलिए मेरी संतान हो जाने से उसमें मेरी सारी योग्यताएं आ जाएंगी ऐसा मानना गलत है। यह तो हुई एक बात !

दूसरी बात यह कि इस गुरुकुल की जो व्यवस्था है उसमें यह जरुरी है कि गुरु पद पर आसीन महिला को पूर्ण ब्रम्हचर्य का पालन करना है ।

उसे श्यामा साधना और उसके बाद कामकला काली साधना के जन्म विशिष्ट क्रम को पूरा करना होता है । उसके बाद उसे पुरुष की आवश्यकता ही नहीं रहती । उसके अंदर स्थित कुंडलिनी शक्ति जागृत होते ही उसके अंदर स्थित स्त्री और पुरुष दोनों जागृत हो जाते हैं । उसके अंदर स्थित स्त्री और पुरुष के बीच का दिव्य सहवास प्रारंभ हो जाता है । वह स्वयं उस कुंडलिनी शक्ति के द्वारा सृजित होने वाले आनंद में डूबी रहती है । उसे दैहिक सहवास की आवश्यकता ही नहीं रहती । वह इन सब से परे हो जाती है....

तभी उसके अंदर महाकाली का प्राकट्य होता है । इसलिए जो मेरी उत्तराधिकारी बनेगी । वह भी इसी परंपरा का पालन करेगी । जो श्यामा साधना की प्रक्रिया से पूर्णता प्राप्त करके आगे बढ़ जाएगी । वही इस प्रकार की शक्तियों को अपने अंदर समाहित करने

के योग्य होगी । उसे ही इस गुरुकुल का भार संभालना है और इन कार्यों को आगे बढ़ाना है ......

मै सोच मे पड़ गया !

यह बात सुनने में अजीब लग सकती है लेकिन यह एक नग्न सत्य है कि जब आध्यात्म में परिवारवाद आ जाए तो उस आध्यात्मिक संस्थान या उस आध्यात्मिक गुरु का महत्व कम होने लगता है । उदाहरण के लिए भगवान आदि शंकराचार्य सनातन धर्म के विशिष्ट गुरु माने जाते हैं लेकिन उन्होंने संतान की उत्पत्ति नहीं की ! अपने श्रेष्ठ शिष्यों को अलग-अलग पीठों पर स्थापित कर दिया था और वही कार्य को आगे बढ़ाते रहें ।
वही परंपरा आज भी चली आ रही है......
वर्तमान समय की बात करें तो स्वामी रामकृष्ण परमहंस विवाहित थे लेकिन उन्होंने संतान उत्पत्ति नहीं की ......
बल्कि विवेकानंद जैसे उच्च कोटि के शिष्य को अपनी शक्तियों के द्वारा विकसित करके सामने ला दिया !
कई ऐसे संत हुए हैं जिन्होंने अपनी स्वयं की संतान उत्पन्न नहीं की लेकिन उनके शिष्य काफी उच्च कोटि के साधक बने !!!

दूसरी ओर प्रसिद्ध संत आसाराम बापू है जो स्वयं विभिन्न आरोपों में घिरे हुए हैं .....
और उनके द्वारा उत्तराधिकारी के रूप में नियुक्त उनका पुत्र भी लगभग उसी प्रकार के आरोपों में दोषी माना गया है !
ऐसी स्थितियां विचलित करती हैं !
जिन से बचने के लिए साधना जगत मे आमतौर पर गुरु पद श्रेष्ठ शिष्यों को ही दिया जाता है ।
यही साधना जगत का सौंदर्य है .....
वही परंपरा तंत्र साधना को अनंत काल से जीवित रखे हुए हैं ।

फिर मैंने सोचा - मैं तो अभी स्त्री शरीर में हूं । मैं यह कार्य कैसे कर सकता हूं ?
वह मेरी तरफ देख कर हंस पड़ी और उसने कहा - जो तुम्हें पुरुष से स्त्री बना सकती है । वह क्या वापस तुम्हें पुरुष नहीं बना सकती ?
उनकी बात वास्तव में सही थी !
मुझे अपनी सोच पर शर्मिंदगी महसूस हुई ।

योनि मण्डल का पूजन....

उन्होंने आगे कहा - दरअसल तुम्हें स्त्री बनाने के पीछे एक विशेष मकसद है। योनि मंडल का पूजन जो मैंने रस भैरवी के साथ संपन्न किया था वही पूजन तुम्हें भी संपन्न कराना होगा तभी तुम इस कार्य को संपन्न कर सकते हो। इसके साथ यह शर्त जुड़ी हुई है कि योनि मंडल का यह पूजन केवल स्त्रियां ही कर सकती हैं। पुरुष रुप में तुम इसका पूजन नहीं संपन्न कर सकते। इसलिए तुम्हें स्त्री बनकर ही इस पूजन को संपन्न करना है।
आज रात को मैं तुम्हें पूजन संपन्न करवाऊंगी।

शाम को देवकी गुरुक्कल मुझे लेकर उसी झरने के तट की ओर चली गई। यह वही जगह थी जहां पर मुझे पुरुष से स्त्री में रुपांतरित किया गया था। वहां पहुंचने के बाद तट के किनारे चलते चलते वह एक गुफा तक मुझे ले गई हम दोनों उस गुफा के अंदर प्रवेश कर गए।

वह क्षेत्र बेहद बड़ी-बड़ी झाड़ियों से और वृक्षों से घिरा हुआ था।

कुछ फूलों के पौधे लगे थे ....

जो मुश्किल से दो-दो फुट के थे !

और उनमें कई फूल खिले हुए थे ।

ऐसा लग रहा था जैसे पत्तियों से ज्यादा उस में फूल खिले हुए हो !

इस प्रकार के पौधे मैंने कभी नहीं देखे ।

पौधों मे आमतौर पर पत्तियों की संख्या ज्यादा रहती है और फूलों की संख्या कम रहती है ।

वहां चारों तरफ रंग बिरंगी तितलियां उड़ रही थी । वह भी संख्या में 10-12 नहीं.....

बल्कि सैकड़ों......

ऐसा लग रहा था.....

जैसे विभिन्न रंगों के फूल उस पूरे प्रांगण में पंख लगाकर उड़ रहे हैं !

ऐसे ऐसे रंगों की तितलियां जो मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखी !

बिल्कुल काले से लेकर पूरे सफेद तक ....

और.....

पूरे हरे से लेकर.... पूरे लाल तक !

इसके अलावा अलग-अलग प्रिंट वाली तितलियां यानि जितनी प्रकार की संभव हो सकती हैं उतने प्रकार की तितलियाँ वहां उड़ रही थी ।
यह देखना अपने आप में एक बेहद अद्भुत और आनंददायक अनुभव था.....
जिसका विवरण देना नामुमकिन है ।

वहां से होते हुए हम उस गुफा के अंदर पहुंचे ।
गुफा के अंदर बेहद मादक खुशबू बिखरी हुई थी । एक ऐसी खुशबू जिसे सूंघते रहने का मन करें ....
बेहद मादक !
मन को लुभा देने वाली !
ऐसा महसूस कराने वाली कि बस उस खुशबू को सूंघते हुए खड़े रहना ही जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य हो !

लगभग 50 फीट अंदर जाने के बाद वह स्थान आया ....
जहां पर योनि मंडल बना हुआ था ।
वह एक पत्थर का बना हुआ स्वरुप था !
जिसके आसपास पानी की पतली धारा बह रही थी ।
ऊपर छत से बूंद बूंद करके पानी उस मंडल पर टपक रहा था.....

ठीक वैसे ही जैसे जलहरि से शिवलिंग के ऊपर टपकता है ।

धीरे धीरे शाम ढल रही थी और अंधेरा घिरने लगा था .....

देवकी गुरु कल ने बताया - यह कामाख्या में स्थित योनि मंडल का ही स्वरुप है। जो भी कन्या रजस्वला होती है, उसके प्रथम रज का अर्पण यहां पर किया जाता है । तुम भी प्रथम बार रजस्वला होने वाले हो इसलिए तुम्हारे रज का भी अर्पण इस योनि मंडल में किया जाएगा । इसके बाद आगे की प्रक्रिया संपन्न होगी ।

यह सुनने में बेहद अजीब था ।

मैं विवाहित था और पत्नी के रजस्वला काल को मैंने देखा था .....

लेकिन सपने में भी नहीं सोचा था कि मेरे साथ भी यह स्थिति कभी आ सकती है.....

लेकिन वह स्थिति आने वाली थी.....

हम दोनों उस योनि मंडल के एक एक छोर पर बैठ गए ।

उन्होंने मंत्र जाप प्रारंभ कर दिया ।
लगभग आधे घंटे तक वह मंत्र जाप चलता रहा ....

मुझे अपने निचले भाग में खिंचाव सा महसूस होने लगा
और उसकी पीड़ा भी होने लगी .....
यह मेरे लिए बिल्कुल नए प्रकार का अनुभव था और
उसके बाद मेरा रज स्राव प्रारंभ हो गया ।
खून की बूंदे धीरे-धीरे उस योनि मंडल पर गिरती रही
और विलुप्त होती रही ......
वह पूजन लगभग अर्धरात्रि तक चलता रहा । साथ ही
मेरे योनि भाग से रक्त की बूंदे भी उसी प्रकार टपकती
रहीं ।

बिजली कड़क रही थी ......
हल्की बारिश चालू हो चुकी थी !
धीरे-धीरे बारिश का वेग बढ़ने लगा !
लगभग अर्ध रात्रि का समय हो चुका था !
पूजा का पहला क्रम समाप्त हो चुका था ....

काफी रक्तस्राव हो चुका था ...
इसलिए थोड़ी थकावट महसूस हो रही थी....

धीरे-धीरे बारिश की तीव्रता बढ़ती गई और मूसलाधार बारिश होने लगी !

बीच-बीच में बिजली के कड़कने की आवाज भी आती रहती थी......

हम दोनों इस गुफा में बैठे हुए थे ।

देवकी गुरुक्कल कुछ गोपनीय क्रियाएं संपन्न कर रही थी ......
संभवत: देवी से संबंधित कुछ मुद्राओं का प्रदर्शन ......
जो मैंने आज तक नहीं देखी थी ।

गुफा के अंदर रोशनी के लिए एक छोटी सी मशाल जल रही थी ..... हर तरफ अंधेरा छाया हुआ था ।

बारिश थम गई !
सब कुछ शांत हो गया ......

देवकी गुरुक्कल के मुंह से महा कामकला काली का गोपनीय ध्यान उच्चरित हो रहा था......

उद्यद्घनाघनाश्लिष्यज्जवा कुसुम सन्निभाम्

मत्तकोकिलनेत्राभां पक्वजम्बूफलप्रभाम् ।
सुदीर्घप्रपदालम्बि विस्त्रस्तघनमूर्द्धजाम् ॥
ज्वलदङ्गार वच्छोण नेत्रत्रितयभूषिताम् ।
उद्यच्छारदसंपूर्णचन्द्रकोकनदाननाम् ॥
दीर्घदंष्ट्रायुगोदञ्चद् विकराल मुखाम्बुजाम् ।
वितस्तिमात्र निष्क्रान्त ललज्जिह्वा भयानकाम् ॥
व्यात्ताननतया दृश्यद्वात्रिंशद् दन्तमण्डलाम् ।
निरन्तरम् वेपमानोत्तमाङ्गा घोररुपिणीम् ॥
अंसासक्तनृमुण्डासृक् पिबन्ती वक्रकन्धराम् ।
सृक् कद्वन्द्वस्त्रवद्रक्त स्नापितोरोजयुग्मकाम् ॥
उरोजा भोग संसक्त संपतद्रुधिरोच्चयाम् ।
सशीत्कृतिधयन्तीं तल्लेलिहानरसज्ञया ॥

ललाटे घननारासृग् विहितारुणचित्रकाम् ।
सद्यश्छिन्नगलद्रक्त नृमुण्डकृतकुण्डलाम् ॥
श्रुतिनद्धकचालम्बिवतंसलसदंसकाम ।
स्त्रवदस्त्रौघया शश्वन्मानव्या मुण्डमालया ॥
आकण्ठ गुल्फलंबिन्यालङ्कृतां केशबद्धया ।
श्वेतास्थि गुलिका हारग्रैवेयकमहोज्ज्वलाम् ॥
शवदीर्घाङ्गुली पंक्तिमण्डितोरः स्थलस्थिराम् ।

कठोर पीवरोत्तुङ्ग वक्षोज युगलान्विताम् ॥

महामारकतग्राववेदि श्रोणि परिष्कृताम् ।

विशाल जघना भोगामतिक्षीण कटिस्थलाम् ॥

अंत्रनद्धार्भक शिरोवलत्किङ्किणि मण्डिताम् ।

सुपीनषोडश भुजां महाशङ्खाञ्चदङ्गकाम् ॥

शवानां धमनीपुञ्जैर्वेष्टितैः कृतकङ्कणाम् ।

ग्रथितैः शवकेशस्त्रग्दामभिः कटिसूत्रिणीम् ॥

शवपोतकरश्रेणी ग्रथनैः कृतमेखलाम् ।

शोभामानांगुलीं मांसमेदोमज्जांगुलीयकैः ॥

असिं त्रिशूलं चक्रं च शरमंकुशमेव च ।

लालनं च तथा कर्त्रीमक्षमालां च दक्षिणे ॥

पाशं च परशुं नागं चापं मुद्गरमेव च ।

शिवापोतं खर्परं च वसासृङ्मेदसान्वितम् ॥

लम्बत्कचं नृमुण्डं च धारयन्तीं स्ववामतः ।

विलसन्नूपुरां देवीं ग्रथितैः शवपञ्जरैः ॥

श्मशान प्रज्वलद् घोरचिताग्निज्वाल मध्यगाम् ।

अधोमुख महादीर्घ प्रसुप्त शवपृष्ठगाम् ॥

वमन्मुखानल ज्वालाजाल व्याप्त दिगन्तरम् ।

प्रोत्थायैव हि तिष्ठन्तीं प्रत्यालीढ पदक्रमाम् ॥

वामदक्षिण संस्थाभ्या नदन्तीभ्यां मुहुर्मुहुः ।

शिवाभ्यां घोररूपाभ्यां वमन्तीभ्यां महानलम् ॥

विद्युज्झार वर्णाभ्यां वेष्टितां परमेश्वरीम् ।

सर्वदैवानुलग्नाभ्यां पश्यन्तीभ्यां महेश्वरीम् ॥

अतीव भाषमाणाभ्यां शिवाभ्यां शोभितां मुहुः ।

कपालसंस्थं मस्तिष्कं ददतीं च तयोर्द्वयोः ॥

दिगम्बरां मुक्तकेशीमट्टहासां भयानकाम् ।

सप्तधानद्धनारान्त्रयोगपट्ट विभूषिताम् ॥

संहारभैरवेणैव सार्द्ध संभोगमिच्छतीम् ।

अतिकामातुरां कालीं हसन्तीं खर्वविग्रहाम् ॥

कोटि कालानल ज्वालान्यक्कारोद्यत् कलेवरम् ।

महाप्रलय कोट्यर्क्क विद्युदर्बुद सन्निभाम् ॥

कल्पान्तकारणीं कालीं महाभैरवरूपिणीम् ।

महाभीमां दुर्निरीक्ष्यां सेन्द्रैरपि सुरासुरैः ॥

शत्रुपक्षक्षयकरीं दैत्यदानवसूदनीम् ।

चिन्तयेदीदृशीं देवीं काली कामकलाभिधाम् ॥

अचानक तूफान चलने लगा ......

भयानक बारिश होने लगी .....

लग रहा था .... जैसे बादल फट पड़े हो !

मोटी मोटी बूंदें जमीन पर टकरा रही थी और पूरे माहौल को भयानक बना रही थी !

जैसे इतना ही काफी नहीं था......
तभी बिजलीयों का कड़कना प्रारंभ हो गया !
वह भी निरंतर .....

एक बिजली के गिरने की अनुभूति समाप्त होने से पहले ही दूसरी बिजली का प्रकाश पुंज उस पूरे प्रांगण को रोशनी से नहला देता था.....

यह निश्चित ही किसी परा ब्रह्मांडीय सत्ता के आगमन का शुभ संकेत था !

कोई अद्वितीय शक्ति......
जो केवल महामाया महाकामकला काली ही हो सकती है.....
अपने विकराल स्वरुप के साथ दर्शन देने को जैसे आतुर हो रही थी ......

महाकाली का स्वरुप अत्यंत ही प्रचंड है ।

सामान्य साधकों को उनका स्वरुप कभी भी स्पष्ट नहीं होता क्योंकि उस प्रचंडता को सहन करना लगभग असंभव है ....

यह वही संभव कर सकता है ....

जिसका संपूर्ण शरीर साधना और योग के माध्यम से उस अवस्था में पहुंच गया हो जिसे कुंडलिनी जागरण की अवस्था कहा जाता है ।

एक ऐसी अवस्था ......

जहां व्यक्ति अपने प्राणों से साक्षात्कार कर लेता है.....

ऐसा साधक ही महाकाली के उस उग्र रूप को देख सकता है !

वह भी केवल कुछ क्षण के लिए !!

सामान्य व्यक्ति अगर उस स्वरुप को देख ले तो न जाने क्या हो जाए ......

इसलिए करुणामई मां महाकाली कभी भी अपने भक्तों को अपने उग्र रूप में दर्शन नहीं देती है ।

वह हमेशा आभासी स्वरुप में या सौम्य स्वरुप में ही दर्शन देती है.......

ताकि साधक सुरक्षित रह सके ......

यहां पर तो भगवती के जाज्वल्यमान स्वरुप को अपने अंदर स्थापित कर चुकी एक दिव्य साधिका भगवती के उस प्रचंड स्वरूप का ध्यान करते हुए आह्वान कर रही थी ....

ऐसी स्थिति में वह अपने वास्तविक उग्र स्वरूप में ही प्रकट होगी ....

यह मेरे मानस पटल पर स्पष्ट हो चुका था !!

मैं उस भयानक स्वरुप के दर्शन के लिए मानसिक रूप से तैयार हो रहा था ......

मन में अपरिमित भय का संचार भी हो रहा था ......

तभी एक कड़कती बिजली गुफा के मुहाने पर आकर गिरी.......

उसके गिरते ही.....

पूरी गुफा रोशनी से जगमगा उठी ।

ऐसा लगातार होने लगा ......

लग रहा था ......

जैसे साक्षात इंद्र भगवान अपने वज्र प्रकाश से भगवती के आगमन को इंगित कर रहे हैं !

संपूर्ण प्रकृति को सावधान कर रहे हैं कि वह परा सत्ता अब प्रकट होने को है !

जब छठी बार बिजली गिरी .....

तो.....

गुफा के मुहाने पर......

एक विराट स्वरूप दिखाई दिया .....

जो लगभग 20 फुट ऊंचा रहा होगा !

वह भगवती का दिव्य स्वरूप था !

उनका रंग ऐसा था जैसे वर्षा के काले बादलों के ऊपर जब सूर्य की रक्तिम किरणें स्पर्श करती हैं तो उनका रंग होता है .....

लगभग पके हुए जामुन के फल के समान .....

वैसा उनका श्याम वर्ण जगमगा रहा था ।

लाल अंगारों के समान चमकते हुए उनके दोनों नेत्र

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे अंगारों की वर्षा कर रहे हो !

वहीं उनके खुले हुए तीसरे नेत्र से अग्नि किरणें

निकलकर चारों और बिखर रही थी .....

उनकी लंबी काली सघन केश राशि इतनी लंबी थी कि वह उनके विशाल शरीर को लांघती हुई उनके पैरों तक पहुंच रही थी .....

उनके दांत बाहर की तरफ निकले हुए थे जो बेहद भयानक लग रहे थे.....
उनके दांत दिखाई दे रहे थे और लप-लप करती हुई लाल जीभ लगभग एक हाथ बाहर निकली हुई थी ....
उनके गले में नर मुंड की माला लटकी हुई थी !
वह सारे मुंड ऐसे लग रहे थे जैसे अभी अभी काट कर उन्हें माला में गूँथ दिया गया हो !
कटी हुई गर्दन से रक्त वह कर नीचे गिर रहा था , जो उनके पर्वत समान विशाल उन्नत स्तन युगलों के ऊपर से बहकर नीचे की ओर टपक रहा था ।

वे नर मुंडो से रक्त को सीत्कार लेकर पी रही थी ...
उनकी पतली कमर में नर मुंडो से बनी हुई करधनी लटकी हुई थी जो उनके विशाल नितंबों के ऊपर शृंखला की तरह बिखरी हुई थी ।

उनका आकार बेहद भयानक था और उनके 16 हाथ दिखाई दे रहे थे । ऐसा लग रहा था जैसे सभी ओर हाथ ही हाथ दिखाई दे रहे हो ।

उनके शरीर पर सर्वत्र नर कपाल सुशोभित हो रहे थे....

उनके हाथों में विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र शोभित हो रहे थे....

खंडग, त्रिशूल, चक्र, बाण, अंकुश, लालन कैंची और अक्षमाला दाहिनी ओर के हाथों मे विद्यमान थी ।

पाश, परशु, नाग, धनुष, मुद्गर, सियार, तथा वसा रक्त और मेद से भरा हुआ कपाल उनके बायेँ हाथों में रखा हुआ था ......

उनके पैरों में शव की हड्डियों से बने हुए विशालकाय झांझर पड़े हुए थे । जो उनके पैरों की शोभा बढ़ा रहे थे .....

कड़कती हुई बिजली श्मशान में जलती हुई चिता की तरह दिखाई दे रही थी । उस प्रकाश में यह दिखाई दे रहा था कि वह एक विशालकाय औंधे पड़े हुए शव के ऊपर एक पाव रखकर खड़ी हुई थी और दूसरा पांव उठा हुआ था.....

उनके मुख से अग्नि की ज्वाला निकल रही थी जो साक्षात आसमान से गिरती हुई बिजलीयों का स्वरुप दिखाई दे रही थी.....

उनके दाहिने और बाएं तरफ दो सृगालिनें अर्थात सियारीने खड़ी हुई थी ।

दोनों का स्वरुप सामान्य नहीं था बल्कि वे अत्यंत विशालकाय थी ....

उनके मुंह से भी अग्नि ज्वालायें निकल रही थी ।

वह उग्र देवी अपने कपाल में से सामग्री निकालकर उनकी ओर उछाल रही थी और वह उछल उछल कर उसे ग्रहण कर रही थी ।

महामाया भयानक अट्टाहास कर रही थी जिससे बादलों के गडगड़ाने जैसा आभास हो रहा था ।

उनका वहअग्नि के समान प्रचंड स्वरुप......

आसमान से गिरती हुई अग्निशिखाओं के बीच.....

अट्टहास करता हुआ.....

अत्यंत भयानक प्रतीत हो रहा था !

जिसे देखकर स्तंभित होता हुआ मैं उनके चरणों में दंडवत मुद्रा में लेट गया ।

उसके बाद संभवतः उस दिव्य दर्शन से निकले तेज की अधिकता के कारण बेहोश हो गया ......

उस महोग्र स्वरूप की तेजस्विता को सहन न कर पाने के कारण मैं बेहोश हो गया ।

जब मुझे होश आया तब सूरज निकल चुका था !

लगभग 7- 8 बजे का समय रहा होगा यानी लगभग 5 घंटे मैं बेहोश रहा हूंगा ।

अगले दिन हम गांव वापस लौटे ।

वहां पहुंचने के बाद देवकी गुरुक्कल मुझे अपने कक्ष में ले गई ।

वहां पर उन्होंने मेरे माथे को अपने दाहिने अंगूठे से छुआ ....

वह स्पर्श किसी अंगारे के स्पर्श जैसा था !

मेरी आंखें मिच मिचाने लगी और माथे पर खिंचाव महसूस होने लगा !

ऐसा लग रहा था जैसे माथे के बीच वाले भाग को दोनों तरफ से कोई पकड़कर खींच रहा हो ।

यह स्थिति लगभग आधा मिनट तक रही होगी । मैं भयंकर दर्द की वजह से आंखें भी नहीं खोल पा रहा था ।

बड़ी मुश्किल से जब मैंने आंखें खोली तो सामने देवकी गुरुकल का जो स्वरुप दिख रहा था वह मेरी कल्पना से भी परे था ......

उनकी संपूर्ण आकृति किसी अद्वितीय प्रकाश से चमचमा रही थी .....

वह प्रकाश हल्का गुलाबी रंग का था !

यह प्रकाश उनके चारों तरफ पाँच पाँच फीट तक फैला हुआ था !

जो लगभग वैसा था......

जैसे देवताओं के फोटो में पीछे दिखाई देता है !

लेकिन वह स्पष्ट प्रकाश उनके पूरे शरीर से निकलता हुआ दिखाई दे रहा था ....

संभवतः वह उनका आभामंडल था जो भगवती के दर्शन के बाद प्रचंड स्वरुप में मुझे दिखाई दे रहा था !

वह प्रकाश अत्यंत ही सुंदर दिखाई दे रहा था !

उस प्रकाश में लिपटी हुई किसी देवी की तरह दिखाई दे रही थी !

मेरा सिर श्रद्धा से उनके चरणों में झुक गया .....
जैसे ही मैंने उनके चरणों पर अपना माथा रखा ......
उन्होंने अपने बाएं अंगूठे से मेरे भ्रूमध्य पर स्पर्श किया ....
जैसे ही वह स्पर्श मेरे माथे पर हुआ मुझे बिजली का एक तेज झटका सा लगा और मैं उछलकर पीछे की तरफ गिर पड़ा !
उसके बाद क्या हुआ मुझे पता नहीं चला ।
फिर जब मुझे होश आया तो सुबह हो चुकी थी ।
बाहर रोशनी बिखरी हुई थी !
मैं उसी कक्ष में जमीन पर पड़ा हुआ था !
मैंने उठने की कोशिश की लेकिन उठ नहीं पाया । ऐसा लग रहा था जैसे शरीर में शक्ति बाकी नहीं रही हो ....
मैं दुबारा से जमीन पर पसर गया !
संभवत: सो गया.....
एक-दो घंटे की नींद लेने के बाद मुझे थोड़ा सा ऊर्जा का एहसास हुआ....
तभी देवकी गुरुक्कल कक्ष में आई और उन्होंने पूछा - कैसे हो ?
मैंने कहा - ठीक हूं ।

उन्होने पास रखे हुए कलश से एक गिलास पानी निकाला । उसे अपने दोनों हाथों के बीच में रख कर वे कुछ मंत्र जाप करने लगी उसके बाद उन्होंने वह पानी मुझे पीने के लिए दे दिया ।

उसे पीते ही शरीर में ताकत का एहसास होने लगा !
उन्होने कहा - जिस कन्या का चयन मैंने उत्तराधिकारी के रुप में किया है.... उसका जन्म भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी को हुआ था , अर्थात जन्माष्टमी .... जो काली जयंती भी मानी जाती है । उस दिन अर्धरात्रि के समय पैदा हुई कन्या अगर विशेष लग्न में पैदा हुई हो तो उसे तंत्र साधना के क्षेत्र मे विशिष्ट माना जाता है .....
इस कन्या के हाथ में त्रिशूल शंख और चक्र जैसे विशिष्ट चिन्ह मौजूद है.... जो इस बात का प्रतीक है कि यह तंत्र क्षेत्र में काफी आगे जा सकती है ।
मैंने इसे काफी परीक्षणों के बाद इस पद के योग्य स्वीकार किया है ।
यदि यह श्यामा साधना और कामकला काली साधना को संपन्न कर लेती है तो वही आने वाले समय में इस गुरुकुल को संभालेगी ।

मैंने कहा - आप जिस प्रकार से इनको प्रशिक्षित कर रही हैं , मुझे पूरा विश्वास है कि वह यह परीक्षण भी पार कर लेगी । आपने उसकी योग्यता देखकर ही उसे चुना होगा ।

मेरी बात सुनकर देवकी गुरुक्कल के चेहरे पर आश्वस्ति के भाव उभरे ।

फिर उन्होंने कहा - मैंने तुम्हारे अंदर योनि मंडल को स्थापित कर दिया है.....
इसके कारण तुम पूर्ण रूप से अर्धनारीश्वर का स्वरूप बन चुके हो !
साक्षात भगवान शिव और शक्ति की संयुक्त कृपा प्राप्त साधक ।
यह अत्यंत दुर्लभ अवस्था है जो करोड़ों में से किसी एक साधक को प्राप्त होती है !
पुरुष के रूप में साधना कर लेना या स्त्री के रूप में साधना कर लेना भी कठिन होता है लेकिन असंभव नहीं होता ।
कई साधक ऐसी क्रियाओं को संपन्न करते हैं ।
लेकिन.....

एक पुरुष होते हुए स्त्री देह धारण करके योनि मंडल का पूजन कर लेना .....
जीवन का सौभाग्य है !
ऐसा सौभाग्य विरले साधकों को प्राप्त होता है ।

इस साधना के अगले चरण में तुम्हें मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग के प्रांगण में बैठकर विशेष अर्धनारीश्वर मंत्र का जाप करना है ताकि तुम इस साधना के अंतिम चरण को संपन्न कर सको ......

मल्लिकार्जुन मंदिर.......

इसके बाद उसने मुझे मल्लिकार्जुन मंदिर के पास पहुंचा दिया। वहाँ उनके मुख से स्तुति उच्चारित हुई:-

श्रीशैलशृङ्गे विबुधातिसङ्गे तुलाद्रितुङ्गेऽपि मुदा वसन्तम्।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसारसमुद्रसेतुम्॥
जय मल्लिकार्जुनम , जय मल्लिकार्जुनम ॥
उन्होंने बताया :-
शिवपुराण के अनुसार श्रीमल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग बारह ज्योतिर्लिंगों में से द्वितीय ज्योतिर्लिंग है। मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग आन्ध्र प्रदेश के कृष्णा ज़िले में कृष्णा नदी के तट पर श्री शैल पर्वत पर स्थित हैं। इसे दक्षिण का कैलाश भी कहते हैं।

प्रचलित किंवदंती के अनुसार शिव और पार्वती के पुत्रों कार्तिकेय और गणेश मे पहले विवाह करने के लिए होड लग गई।
कार्तिकेय का कहना था कि वे बड़े हैं इसलिए उनका विवाह पहले होना चाहिए किन्तु श्री गणेश अपना

विवाह पहले करना चाहते थे । दोनों भवानी और शंकर के पास पहुँचे।

इस समस्या का हल निकालने के लिए उनके माता-पिता ने कहा कि एक प्रतियोगिता कर लेते हैं इसमें जो भी यही होगा वह पहले विवाह करेगा ।

इस बात पर दोनों की सहमति बन गई उन्होंने पूछा कि प्रतियोगिता क्या होगी ?

शिवजी बोले - तुम दोनों में जो कोई इस पृथ्वी की परिक्रमा करके पहले यहाँ आ जाएगा वह विजयी होगा उसी का विवाह पहले होगा।

यह सुनते ही कार्तिकेय जी प्रसन्न हो गए । उनका वाहन है मोर । उनका शरीर भी गठा हुआ और दुबला पतला है । यह दोनों ही स्थितियां उनके लिए अनुकूल थी । उन्हें लगा कि यह प्रतियोगिता तो वही जीतेंगे । मोर पर चढ़कर कार्तिकेय जी पृथ्वी की परिक्रमा करने के लिए दौड़ पड़े।

इधर मोटे तगड़े शरीर वाले गणेश जी धर्म संकट में पड़ गए ।

एक तो उनका शरीर भारी.....

ऊपर से उनका वाहन चूहा....

ऐसी स्थिति में उन्हें लगने लगा कि बड़े भैया तो बाजी मार ले जाएंगे ।

गणेश जी के सामने भारी समस्या उपस्थित थी।

गणेश जी शरीर से ज़रूर स्थूल हैं किन्तु वे बुद्धि के सागर हैं । उन्होंने विचार किया कि ऐसा कुछ हल निकालना पड़ेगा और उनके दिमाग में एक विचार आया.....

उन्होंने अपनी माता पार्वती तथा पिता देवाधिदेव महेश्वर से एक आसन पर बैठने का आग्रह किया । उन्होंने सोचा कि यह पृथ्वी की परिक्रमा करने के बजाय कर क्या रहा है ?

लेकिन वे दोनों एक आसन पर गणेश जी की बात का मान रखने के लिए बैठ गए .....

उन दोनों के आसन पर बैठ जाने के बाद गणेश जी ने उनकी सात परिक्रमा की फिर विधिवत् पूजन किया ।

माता-पिता बच्चे के लिए उसका सर्वस्व..... संपूर्ण ब्रह्मांड ..... होते हैं ।

उनकी परिक्रमा करने का मतलब संपूर्ण ब्रह्मांड की परिक्रमा हो गई अर्थात पृथ्वी की परिक्रमा भी पूर्ण हो गई .....

इस प्रकार श्री गणेश माता-पिता की परिक्रमा करके पृथ्वी की परिक्रमा से प्राप्त होने वाले फल की प्राप्ति के अधिकारी बन गये।

उनकी चतुर बुद्धि को देख कर शिव और पार्वती दोनों बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने श्रीगणेश का विवाह करा दिया।

उधर कार्तिकेय जी की यात्रा जारी थी .....

कार्तिकेय जब पृथ्वी की परिक्रमा करके वापस लौटे गणेश के विवाह का वृतांत सुनकर रुष्ट हो गए ।

अब जो होना था वह तो हो चुका था । भगवान शिव और पार्वती ने उन्हें मनाने का प्रयास किया लेकिन वह नहीं माने ।

माता पिता के मना करने पर भी वे उन्हें प्रणाम कर क्रोच पर्वत पर चले गए।

बालक के इस प्रकार चले जाने से माता पार्वती दुखी हो गई । पार्वती के दुखित होने पर, और समझाने पर भी धैर्य न धारण करने पर,शंकर जी ने देवर्षियो को, कार्तिकेय को समझाने के लिए भेजा लेकिन वे नहीं माने, सभी निराश होकर वापस लौट आए।

इस पर पुत्र वियोग से व्याकुल पार्वती ने स्वयं जाने का निर्णय लिया और उनके अनुरोध पर पार्वती के साथ, शिवजी भी स्वयं वहां गए।

कार्तिकेय जी का क्रोध अभी भी शांत नहीं हुआ था.... वह अपने माता पिता का आगमन समाचार सुनकर क्रोच पर्वत को छोडकर तीन योजन और दूर चले गये। वहा पहुंचने पर पुत्र कार्तिकेय के न मिलने पर वात्सल्य से व्याकुल शिव-पार्वती ने उसकी खोज में अन्य पर्वतों पर जाने से पहले वहां अपनी ज्योति स्थापित कर दी।
उसी दिन से यह ज्योतिर्लिंग मल्लिकार्जुन कहलाया। मल्लिका, माता पार्वती का नाम है, जबकि अर्जुन, भगवान शंकर को कहा जाता है। इस प्रकार मल्लिकार्जुन नाम जगत् में प्रसिद्ध हुआ।

ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन शिवजी और पूर्णिमा के दिन पार्वतीजी आज भी वहां आते रहते है। यह एक ऐसा ज्योतिर्लिंग है जहां पर शक्तिपीठ भी स्थापित है ।

इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन से, धन-धान्य की वृद्धि के साथ, प्रतिष्ठा आारोग्य और अन्य मनोरथों की भी प्राप्ति होती है। यहां देवी के शक्तिपीठ में उनके भ्रमरांबिका स्वरुप की स्थापना है । इसलिए ऐसा माना जाता है कि यहां पूजन करने से अश्वमेध यज्ञ के समान फल प्राप्त होता है ।

देवकी गुरुक्कल के साथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने के लिए हम मंदिर के अंदर पहुंचे । मंदिर का आकार बहुत बड़ा नहीं है गर्भ ग्रह भी उसी अनुपात में छोटा है । ऐसा क्यों है यह तो भगवान शिव ही जाने ....
सौभाग्य से जब हम लोग पहुंचे तो वहां दर्शनार्थियों की संख्या नहीं के बराबर थी ।
एक प्रेमी जोड़ा दर्शन करने के लिए आया हुआ था और वह दर्शन से ज्यादा एक दूसरे में ज्यादा मगन था और जल्दी-जल्दी दर्शन करके बाहर निकल गया ....
अब मंदिर था और हम दोनों थे ....
पुजारी देवकी को पहले से जानता था । इसलिए उसने हमें वहां बैठकर कुछ देर पूजन करने की अनुमति दे दी ।

देवकी गुरुक्कल ने अर्धनारीश्वर मंत्र बताया और उसका जाप प्रारंभ करने के लिए कहा ।

लगभग 108 बार मैंने वही बैठकर जाप किया । उसके बाद उन्होंने वहां से चलने के लिए कहा ।

यह मंदिर नदी तट पर स्थापित है और इसी के पास में देवी का शक्तिपीठ है ....

जिन्हें भ्रमराँबिका के नाम से जाना जाता है ।

वहां से निकलकर हम लोग महामाया के दर्शन करने के लिए पहुंचे । वहां भी 108 बार इस मंत्र का जाप करने के बाद हम बाहर निकल गए । बाहर निकलने के बाद देवकी गुरुक्कल ने मुझे वहीं रह कर उस मंत्र का 11000 जाप करने का निर्देश दिया ।

वे बोली - मैं तीन दिन के बाद तुम्हें वापस लेने के लिए आऊंगी । तब तक तुम्हें इसी परिसर में रहना है ।

जो भी घटनाएं होंगी.....

उसका साक्षी बने रहना है । किसी भी घटना में हस्तक्षेप करने की कोशिश नहीं करना है इस बात का ध्यान रखना ।

मैं समझ गया कि कुछ और घटित होने वाला है जिसके लिए वे सचेत कर रही है ।

मंदिर के पास एक चबूतरे पर मैंने अपना आसन लगा लिया और मंत्र जाप प्रारंभ कर दिया ।

मंत्र छोटा था रात भर के अंदर मेरा जाप पूरा हो गया ।

क्या किया जाए ? यह सोचकर मैं मंदिर से बाहर की तरफ निकलने लगा ।

नदी तट पर पहुंचकर मैंने स्नान किया ।

जाप की गर्मी शरीर में बस गई थी !

जिसे शांत करने के लिए दो-तीन घंटे पानी मे ही पडा रहा ।

यह मेरे लिए स्वाभाविक स्थिति थी !

लेकिन ....

मैं यह बात भूल गया कि उस समय मैं स्त्री शरीर में हूं ....

और.....

कोई महिला इस प्रकार से दो-तीन घंटे पानी में पड़ी रहे तो लोगों को अस्वाभाविक लगने लगता है । किनारे पर खड़े लोग अजीब अजीब सी नजरों से मेरी तरफ देख रहे थे ।

यह एक विचित्र स्थिति है.....

आज भी हमारे समाज में पुरुषों द्वारा किए जाने वाले अधिकांश कृत्य सहज स्वीकार कर लिए जाते हैं !

लेकिन वही क्रियाएं अगर महिलाएं करें तो उन्हें विभिन्न प्रकार की नजरों का सामना करना पड़ता है !

उन्ही नजरों का सामना मुझे करना पड़ रहा था ।

खैर.....

मैं भी पूरी लापरवाही से नदी से बाहर निकला ।

और आगे बढ़ गया .....

लेकिन मेरे पूरे कपड़े भीग चुके थे.....

इसलिए शरीर के सारे हिस्से दिखाई दे रहे थे और लोगों की नजरें मेरे पीछे पीछे लगी हुई थी ।

मेरे पास कोई रास्ता नहीं था .....

क्योंकि मेरे पास कोई दूसरे कपड़े भी नहीं थे इसलिए मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ता हुआ पास बने हुए स्नान घर में पहुंचा और वहां मैंने अपनी साड़ी निचोड़ी उसके बाद थोड़ा सा ठीक लगा । वहाँ से बाहर निकल कर नदी के किनारे-किनारे चलने लगा ।

रहस्यमय बंजारन .....

थोड़ा आगे बढ़ने पर जंगल था ।
जंगल देखने पर आमतौर पर डर लगता है लेकिन साधक के लिए जंगल अपना घर होता है !
मैं भी कुछ वैसी ही अनुभूति कर रहा था और उस जंगल में बनी हुई छोटी पगडंडी पर आगे बढ़ने लगा .....

लगभग 10-15 मिनट तक चलने के बाद आगे घना जंगल था !
लोग दिखाई देने बंद हो गए थे !
मैं निश्चिंत भाव से आगे बढ़ता जा रहा था !
कुछ और आगे जाने पर एक छोटा सा मंदिर जैसा पुराना खंडहर दिखाई दिया ! जिसके सामने एक बड़ा सा मैदान सा था । उसके पास एक चबूतरा बना हुआ था ।

मैं रात भर जगा हुआ था और नहा लेने के बाद सोने की इच्छा मन में पैदा हो गई थी ।
वह चबूतरा दिखते ही मैं आगे बढ़कर उसमें लेट गया और थोड़ी ही देर में नींद के आगोश में चला गया ।

उस समय सुबह के 10 बज रहे थे। जब मैं उस चबूतरे पर लेटा। लगभग 12 बजे के आसपास हल्की बारिश होने लगी। खुले में सोना अब संभव नहीं था। इसलिए मैं उस मंदिर के खंडहर के अंदर जाकर सो गया। जब नींद खुली तो चारों तरफ अंधेरा छाया हुआ था। यानी रात का समय हो चुका था।

तभी किसी की आवाज सुनाई देने लगी !
ऐसा लगा जैसे कोई महिला मंत्र उच्चारण कर रही है।
मेरे मन में इच्छा हुई कि बाहर निकल कर देखूँ कि आखिर इस बियावन जंगल में कौन मंत्र जाप कर रहा है ?
सहज स्वाभाविक उत्सुकता मेरे अंदर जाग उठी।
जिसकी पूर्ति करने की कामना मन के अंदर उठने लगी ......
तभी.....
मन में देवकी गुरुक्कल के द्वारा दी गई समझाईश याद आने लगी.....
कि साक्षी रुप में देखना है.....
किसी घटना में हस्तक्षेप नहीं करना है।

यह ध्यान में आते ही मुझे लगा कि जो भी हो रहा है उसमें मुझे हस्तक्षेप नहीं करना है, बल्कि उसका साक्षी होना है अर्थात उसे देखना भर है ।
देखने के लिए जरुरी था कि मैं उस खंडहर से बाहर निकलता .....
वह भी सावधानी से ....

मैंने खंडहर की खिड़की से बाहर की तरफ देखा और बाहर जो नजारा मैंने देखा वह मेरी कल्पना से परे था । खंडहर के बाहर जो छोटा सा मैदान था , उस मैदान में एक महिला एक हाथ में छोटी सी मशाल लेकर खड़ी थी और कुछ विचित्र प्रकार के मंत्रों का उच्चारण कर रही थी ।
उसकी दृष्टि आसमान की तरफ थी ......
जैसे वह वहां से किसी को आमंत्रित कर रही हो !
उसकी पीठ मेरी ओर थी !
इसलिए उसका स्वरुप मुझे दिखाई नहीं दे रहा था । उसकी वेशभूषा वैसी ही थी जैसी किसी बंजारन की होती है ।

बड़े घेर वाला लहंगा और उसपर कसी हुई चोली ।

दोनों रंग बिरंगे ।

हाथों में सफेद रंग की चूड़ियां !

जो लगभग कोहनियों तक आई हुई थी ।

ठेठ बंजारन वेशभूषा ......

काफी कुछ वैसी ही.....

जैसी चटाई बेचने आते समय दोनों महिलाओं ने धारण की हुई थी !

इससे मुझे आभास हुआ कि संभवतः यह भी उन्हीं लोगों से संबंधित है ।

वह उसी तरह खड़ी रही .....

लगभग 10-15 मिनट तक उसका मंत्र जाप चलता रहा । उसके बाद उसने अपने हाथ में पकड़ी हुई छड़ी से उस मैदान में एक बड़ा सा गोल घेरा बना दिया ।

यह सारी प्रक्रियाएं काफी रहस्यमय लग रही थी । जिसे देखकर मुझे लगा कि मुझे भी रक्षा मंत्र का उच्चारण कर लेना चाहिए । किसी भी प्रकार की रहस्यमय तांत्रिक क्रियाओं के दौरान स्वयं की रक्षा के लिए इन मंत्रों का उच्चारण किया जाता है । मैने रक्षा मंत्र का उच्चारण

करके अपने आप को सुरक्षित कर लिया और आने वाले किसी भी संभावित परिस्थिति के लिए तैयार किया ।

अब वह गोल घेरे के अंदर खड़ी हुई थी !

घेरा लगभग दो बैडमिंटन के मैदान के बराबर बड़ा रहा होगा .....

मैंने देखा .....

आसमान से बहुत सारे बिंदु ......

जो जुगनू की तरह चमक रहे थे.....

धीरे-धीरे उस घेरे के अंदर उतरते जा रहे थे ।

उसमें से एक बिंदु जमीन पर छपाक से टकराया और उसके टकराते ही मैदान के एक छोर पर एक बड़ा सा सिंहासन प्रकट हो गया ।

बाकी चमकते हुए बिंदु पृथ्वी से लगभग 10 फुट ऊंचाई पर ठहर गए !

सिंहासन के प्रकट होते ही वह महिला धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ने लगी ।

उसकी पीठ मेरी तरफ थी !

इसलिए उसकी आयु और अवस्था दोनों का आभास नहीं हो रहा था ।

सिंहासन तक पहुंचने के बाद वह मेरी ओर पलटी उसके दाहिने हाथ में मशाल था और बाएं हाथ में छड़ी थी ।

वह छड़ी बिल्कुल सर्पाकार थी !

उसे देखने से ऐसा प्रतीत होता था जैसे कोई सांप अकड़ गया हो !

ऊपरी हिस्सा किसी विशालकाय सर्प के फन की तरह फैला हुआ था .....

वह लकड़ी ठीक उसी तरह बल खाने के समान मुड़ी हुई थी जैसा सांप चलते समय टेढ़ा मेढ़ा हो जाता है ।

वह आगे बढ़कर सिंहासन पर बैठ गई !

अपने बाएं हाथ में पकड़ी हुई छड़ी को जमीन पर गाड़ दिया और दाहिने हाथ में रखी हुई मशाल को हवा में उछाल दिया ।

वह मशाल हवा में जाकर लटक गई और उसकी रोशनी बढ़ने लगी ....

डे एंड नाइट क्रिकेट मैच में जो फ्लैश लाइट जलती है .....

कुछ कुछ वैसे ही अनुभूति मशाल के प्रकाश से हो रही थी .....

इतना तेज प्रकाश था कि रात में भी दिन के जैसा आभास लगने लगा ।

अब उसका स्वरूप दिखाई देने लगा था !

वह लगभग 17-18 वर्ष की युवती दिखाई दे रही थी !

जिसका मुख मंडल पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह सौंदर्य वान था ।

वह किसी फिल्म की हीरोइन की तरह बेहद खूबसूरत थी .....

वह पूरे राजसी अंदाज में सिंहासन पर बैठी हुई थी ।

ऐसा लग रहा था जैसे किसी राज्य की महारानी हो ....

जैसे ही वह आसन पर बैठी .....

जो बिंदु हवा में लटके हुए थे ।

वह धीरे-धीरे जमीन को स्पर्श करने लगे !

जैसे जैसे वे जमीन को स्पर्श करते थे.....

वैसे वैसे उनमें से मानव आकृतियां स्पष्ट होने लगती ।

सभी ने पूरे सम्मान के साथ उस युवती का सर झुका कर अभिवादन किया ।

युवती ने उस अभिवादन को हाथ उठाकर स्वीकार किया और हाथों के इशारे से उन्हें जाने का निर्देश दिया ।

फिर उसने हवा में अपना हाथ हिलाया ।

थोड़ी देर में वहां किसी मेले जैसा दृश्य दिखाई देने लगा ......

बहुत सारे टेंट तन गए थे .....

इसमें सभी प्रकार की खाने-पीने की सामग्री रखी थी ।

सभी लोग घूम घूम कर उसका लुत्फ उठा रहे थे .....

सैकड़ों स्त्री-पुरुष वहां मौजूद थे !

उसके सामने महफिल जमने लगी ।

कुछ कलाकार बेहद सुंदर ढंग से वाद्य यंत्रों को बजाने लगे और उसकी धुन पर सुंदर-सुंदर युवतियां नृत्य करने लगी ....

लगभग एक घंटे तक वही चलता रहा ....

उसके बाद नृत्यकारों की वह महफ़िल उसके सामने से हट कर दूसरी ओर चली गई ।

उसके सामने अब जादूगरों का कार्यक्रम चालू हो गया ।

हवा में से कबूतर पैदा करना .....

कबूतर को गायब कर देना ....

जैसे करतबों से खेल चालू हुआ ।

उसके बाद एक बड़ी सी टेबल पर एक सुंदर युवती को लिटा दिया गया ।

आमतौर पर हम जो जादूगरों के कार्यक्रम देखते हैं उसमें ऐसी स्थिति में कलाकार के ऊपर कपड़ा डाल दिया जाता है .....

लेकिन यह युवती टेबल पर ऐसे ही लेटी हुई थी ।

करतब बाज ने उसके चारों तरफ चक्कर लगाया ।

उसके बाद उसने अपने कमर में लगी म्यान से एक लंबी तलवार निकाली.....

वह तलवार लगभग तीन साढे तीन फुट लंबी रही होगी ......

वह मशाल की रोशनी में चमचमा रही थी !

उसका फाल कम से कम 4 इंच चौड़ा रहा होगा । जो देखने से ही बेहद खतरनाक दिखाई दे रहा था ।

उसे हाथ में लेकर वह उस युवती के चारों तरफ झूमते हुए नृत्य करने लगा ....

युवती भी उस टेबल पर पड़े पड़े अपने शरीर को मादक अंदाज में हिला रही थी ।

ढेर सारे लोग उसके इर्द-गिर्द जमा हो गए थे ।

वह सारे लोग उस युवती के सिंहासन से एक मर्यादित दूरी पर ही खड़े रहते थे ।

उसके पास लगभग 10 फुट के दायरे में कोई नहीं
जाता ......
हां ! उसके इर्द-गिर्द दो पुरुष सेवक पंखा चलने के
लिए अवश्य खड़े थे ।

उस मदारी पुरुष का नृत्य धीरे-धीरे तेज होने लगा और
विभिन्न मुद्राओं में नृत्य करते हुए वह उस टेबल के चारों
तरफ चक्कर मारने लगा ।
जिस प्रकार से वाद्य यंत्रों की ध्वनि बढ़ती जा रही थी
उससे पूरे माहौल में सम्मोहन का वातावरण समा गया
था ।
ठीक वैसा ही......
जैसा भांगड़े के ढोल बजने के साथ शरीर में थिरकन पैदा
होने लगती है ।
वैसी ही स्थिति वहां पर आ गई थी सारे लोग थिरक रहे
थे ।
पूरा माहौल नृत्यमय हो चुका था ।
तभी करतब बाज ने तलवार को हवा में लहराते लहराते
अपने बाएं हाथ को युवती के ऊपर हवा में फेरा ....
उस युवती ने हिलना डुलना बंद कर दिया ।

वह बिल्कुल स्थिर हो गई .....

नगाड़ों की ध्वनि अचानक से तेज हो गई !

बिल्कुल उन्माद जैसा वातावरण पैदा हो गया !

और तभी ......

खचाक की आवाज आई !

मेरी सांसे अटक सी गई ......

उस मदारी ने युवती के गले पर उस तलवार से वार कर दिया था ....

उसका सर कट कर अलग हो चुका था ।

जो सीधा जाकर उस राजकुमारी के चरणों में पड़ा हुआ था ......

अभी भी उसकी आंखें खुली हुई थी ....

और चेहरे पर मुस्कान बिखरी हुई थी !

लेकिन अजीब बात यह थी कि ना उसकी गर्दन से खून निकल रहा था ना उसकी कटी हुई खोपड़ी से.....

वह करतब बाज उस टेबल के चारों तरफ उसी प्रकार झूमता हुआ नृत्य कर रहा था । जिसे देखकर सारे लोग शोर मचा रहे थे ।

युवती का शरीर टेबल पर पड़ा था !

सिंहासन पर बैठी हुई युवती ने अपने हाथों को हल्के से हवा में घुमाया और वह कटा हुआ सिर हवा में उछल कर मदारी के हाथ में आ गया !

मदारी उसे लेकर कुछ देर तक उस टेबल के चारों तरफ नृत्य करता रहा और अंत में उसने उस सिर को बाएं हाथ में पकड़े पकड़े तलवार का वार अपने ही गले पर कर दिया !

अब उसका सर कट कर टेबल पर गिर चुका था ।

वह सिरकटा मदारी अब एक हाथ में युवती का सिर और दूसरे हाथ में तलवार लेकर नृत्य कर रहा था .....

कुछ चक्कर लगा लेने के बाद उसने युवती के सिर को वापस उसके शरीर में लगा दिया !

वह उठकर टेबल पर बैठ गई ! और अपनी मादक अदाएं दिखाने लगी ..... भीड़ ने शोर मचाना चालू कर दिया ।

फिर उसने मदारी के सिर को टेबल से उठाया और उसकी कटी हुई गर्दन पर रख दिया । फिर दोनों एक साथ नृत्य करने लगे ।

जिसे देखकर सिंहासन पर बैठी हुई युवती ने प्रसन्न मुद्रा में अपना हाथ हिलाया और आगे बढ़ने का इशारा किया !

वे दोनों भी उसी प्रकार दूसरी तरफ चले गए ।

इसी प्रकार के अलग-अलग कार्यक्रम रात भर चलते रहे और वह किसी राजकुमारी की तरह बैठकर उनका आनंद लेती रही ।

लगभग पौ फटने वाली थी जब उसने सिंहासन से नीचे कदम रखा !

जैसे ही उसने सिंहासन से नीचे कदम रखा सारी सभा स्तब्ध हो गई !

शांत हो गई !

जमीन पर गड़ी हुई अपनी छड़ी को उसने बाहर खींचा ....

जैसे ही उसे बाहर खींचा !

सारी चीजें वापस उसी प्रकार से जुगनू के आकार में बदलने लगी और धीरे-धीरे आसमान में उड़ कर गायब हो गई !

सबसे आखिर में गायब हुआ उसका सिंहासन !!

फिर उसने हवा में हाथ बढ़ाया तो ऊपर जलती हुई मशाल वापस उसके हाथ में आ गई ।

मशाल और छड़ी को हाथ में लिए लिए उसने आसमान की तरफ देखकर फिर कुछ देर तक मंत्र जाप किया और उस छड़ी को जमीन पर छोड़ दिया ।

जहां-जहां घेरा बना था उसी घेरे में छड़ी पहले की उल्टी दिशा में घूम गई ।

वह सारा घेरा मिट गया ।

घूम जाने के बाद वह वापस उस युवती के हाथों में आ गई !!

मुझे लगा कि उसका कार्यक्रम पूरा हो चुका था !!!

मैं अवाक और स्तब्ध खड़ा था .....

वह युवती जिस प्रकार से रहस्यमय ढंग से आई थी उसी प्रकार रहस्यमय ढंग से जंगल की ओर चली गई ।

मैं हतप्रभ सा खड़ा हुआ इस पूरे प्रकरण को देख रहा था !

जो वास्तव में किसी अद्भुत चमत्कार जैसा लग रहा था !

जिस प्रकार की घटनाएं घट रही थी उससे मुझे यह तो पता चल गया था कि यह प्रेत लीला थी ...... लेकिन

मुझे यह समझ में नहीं आ रहा था कि वह युवती वास्तव में युवती थी या प्रेतनी ?

इसी उहापोह में झूलता हुआ मैं कुछ देर तक वहां खड़ा रहा ....

जब तक वह युवती नजरों से ओझल नहीं हो गई ।

उसके बाद मै निकल कर मैदान में आया ।

वहां कुछ भी नहीं था ।

थोड़ी देर में पौ फटने लगी !

हल्की हल्की रोशनी बिखरने लगी थी .....

मैंने देखा वहां पर ऐसा कोई निशान नहीं था जिससे पता लगे कि यहां रात भर महफिल सजी हुई थी !

विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम संपन्न हो रहे थे ......

मैं आश्चर्य के साथ खड़ा हुआ रात की घटनाओं के बारे में सोच रहा था !

लेकिन....

कोई बात समझ में नहीं आई ।

इसलिए धीरे-धीरे वापस सामान्य होने के बाद जंगल से बाहर निकल कर नित्य कर्मों को संपन्न करने नदी तट पर आ गया ।

एक दिन गुजर चुका था और अब दो दिन बाकी थे ।
जैसा कि देवकी गुरुकल ने मुझे कहा था.... मुझे तीन दिन भगवान मल्लिकार्जुन के सानिध्य में साक्षी भाव से बिताने थे । वहां घटने वाली घटनाओं को देखना भर था ....
उसमें हस्तक्षेप करना मना था ।

पहली रात बंजारन की प्रेत लीलाओं को देखते हुए गुजरी और प्रातः मैं कृष्णा नदी के तट पर पहुंच चुका था ......
रात्रि कालीन प्रेत लीला का प्रभाव कहिए ....
उन मंत्रों के द्वारा उत्पन्न हुई ऊर्जा का प्रभाव कहिए....
मेरा शरीर आग जैसा तप रहा था ।
मंत्रों में शक्ति होती है या नहीं होती ?
यह एक सामान्य चर्चा का विषय है ।
कई लोग मंत्रों को अंधविश्वास मानते हैं ।
कई लोगों का मानना होता है कि अनगढ़ बेमेल शब्द लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए लिखे गए हैं ।
लेकिन.....

अगर आप श्रद्धा से विश्वास के साथ किसी भी मंत्र का उच्चारण करना प्रारंभ कर दें !

नित्य आधा घंटा या एक घंटा मंत्र जाप करते रहे ....

तो महीने दो महीने के अंदर आपको अपने अंदर एक अलग ही ऊर्जा का आभास होगा ।

कई बार आपको अपने शरीर का ताप बढ़ा हुआ महसूस होगा ....

यह उस मंत्र की ऊर्जा का साक्षात प्रमाण है ।

यह किसी एक व्यक्ति विशेष के साथ नहीं बल्कि बहुसंख्यक लोगों को ऐसा ही अनुभव होगा ।

मेरे विचार से इससे बड़े प्रमाण की आवश्यकता नहीं है कि मंत्रों में शक्ति होती है ।

मेरे गुरुदेव ने बताया था कि वास्तव में मंत्र उस शक्ति विशेष का कोड वर्ड होते हैं ।

जब हम इन मंत्रों को निरंतर जपते रहते हैं तो संबंधित शक्तियां ....

जिसे आप ब्रह्मांड में समाहित कह लीजिए !

या अपने आप में समाहित कह लीजिए !!

वह जागृत होने लगती है....

उनकी कृपा दृष्टि से उससे संबंधित कार्य धीरे-धीरे बनने लगते हैं ।

उदाहरण के लिए अगर आप अध्यापन कार्य में लगे हैं किसी चीज की शिक्षा दे रहे हैं .... तो सामान्य परिस्थिति में आप जितना अच्छा लोगों को समझा सकते हैं ..... उससे बेहतर आप तब समझा पाएंगे जब आपने सरस्वती साधना की हुई हो !

सरस्वती साधना करने के लिए बहुत ज्यादा लंबे चौड़े प्रपंच की आवश्यकता नहीं है ।

आप देवी सरस्वती का फोटो सामने लगा लीजिए और उनके मंत्रों का नित्य एक घंटा जाप करना प्रारंभ कर दीजिए ।

मन में आपकी भावना सात्विक हो !

आपके अंदर यह विचार हो कि मैं दूसरों को बेहतर ढंग से अपने ज्ञान को समझा सकूँ !

यदि ऐसा आप छह महीने या साल भर नित्य करते रहेंगे तो आपको अपने अंदर की पढ़ाने की या सिखाने की क्षमता में व्यापक उछाल दिखाई देगा । जो वे लोग भी महसूस कर पाएंगे जो आप से सीख रहे हैं ।

यह तो हुआ मंत्रों का प्रभाव !

अस्तु....

अद्भुत यान

रात की उस तांत्रिक लीला को देखने की वजह से या उन मंत्रों के प्रभाव से मेरे अंदर ऊष्मा भर गई थी ।

ऐसा मेरे साथ अक्सर होता है ।

जब भी मैं किसी मंत्र का जाप करने के लिए बैठता हूं तो मेरे शरीर का ताप बढ़ने लगता है ।

कभी-कभी कुछ ऐसे विशेष अवसर आते हैं जब भगवती स्वयं संकेत कर देती है कि आज इस मंत्र का जाप करना है !

दीपावली शिवरात्रि जैसे विशेष अवसरों पर अगर दो-तीन घंटे से ज्यादा मंत्र जाप हो गया तो उस दिन कम से कम 4 बार ना नहा लूं तो शरीर का ताप कम नहीं होता ।

ऐसा लगता रहता है जैसे बुखार हो रहा हो ।

ठीक वैसे ही स्थिति उस समय भी थी ।

पास में कृष्णा नदी बह रही थी ....

मैं आराम से उसमें उतर गया ।

पानी के अंदर...

लगभग गले तक पानी में खड़ा होकर अपने आप को शांत करने का प्रयास करने लगा ।

धीरे-धीरे शरीर की उष्मा कम होती जा रही थी । बीच-बीच में डुबकी भी लगा लेता था ताकि सर भी ठंड होता रहे ।

लगभग आधे घंटे तक पानी में उसी प्रकार अठखेलियां करने के बाद ....

शरीर का ताप कुछ कम होने लगा ।

जब ऐसा महसूस हुआ तो मुझे लगा कि अब आगे की क्रियाओं को संपन्न करने के लिए बाहर निकलना चाहिए ।

लेकिन मुझे पता नहीं था कि उसके बाद करना क्या है ?

तो मैं नदी से बाहर निकलने के विषय में विचार करने लगा ....

जब मैं बाहर निकलने के विषय में विचार कर रहा था .....

तभी ....

मुझे पानी के अंदर किसी प्रकार की हलचल का आभास हुआ ।

मैंने पीछे मुड़ कर देखा तो एक विशाल कमल नुमा आकृति नदी के ठीक बीच मे जल के ऊपर स्थिति थी वह किनारे की तरफ बढ़ रही थी ।

मैं तब तक नदी के किनारे पर चढ़ चुका था ।

वह आकृति भी धीरे-धीरे मेरी ओर ही आ रही थी ।

उसका आकार लगभग 8 फुट के करीब रहा होगा । वह किसी कमल के फूल की तरह दिखाई दे रही थी ।

लेकिन....

वह एक विचित्र किस्म की संरचना थी !

जो संभवत: किसी धातु या पत्थर की बनी हुई प्रतीत हो रही थी ।

उसमें पंखुड़ियां थी, जो उसी प्रकार से चिपकी हुई थी, जैसे कमल की कली में उसकी पंखुड़ियां चिपकी रहती है ।

उसके अंदर क्या था ?

यह दिखाई नहीं दे रहा था ।

धीरे-धीरे वह आकृति किनारे की तरफ बढ़ रही थी ।

किनारे से लगभग 20 फुट की दूरी पर वह आकृति रुक गई !

मैं आश्चर्य से उसे देख रहा था, क्योंकि वह एक बड़ी अजीब सी चीज थी ।

विचित्र आकार की किसी धातु या पत्थर की बनी हुई चीज अगर पानी में इस प्रकार तैरती दिखाई दे तो आश्चर्य होना स्वाभाविक है क्योंकि उसके नीचे कोई नाव जैसी चीज दिखाई नहीं दे रही थी ।

न ही वहाँ प्लेटफार्म या ऐसा कुछ था जिसके ऊपर वह चीज तैर रही हो ।

मैंने उसे इधर उधर झांक कर देखने की कोशिश जरूर की ....

लेकिन कुछ समझ में नहीं आया !

मैं शांत होकर उसे देखता रहा !

तभी मुझ से लगभग एक फुट की दूरी पर पानी के अंदर से कुछ बाहर की तरफ आता हुआ प्रतीत हुआ !

यह कुछ कुछ सूरजमुखी के फूल जैसी पत्थर की बनी हुई लगभग मटमैले रंग की आकृति थी !

जो धीरे धीरे पानी की सतह पर आ रही थी ।

कहां से आ रही थी ?

यह पता नहीं ।

लेकिन इसकी उपस्थिति का आभास मुझे तब महसूस नहीं हुआ था जब मैं वहां पर स्नान कर रहा था ।
उसे देखकर मुझे लगा कि संभवतः यह आकृति भी उसी कमल दल वाली आकृति के साथ जुड़ी हुई होगी ।
मैं उसे बड़े गौर से देख रहा था !
वह मुझसे लगभग एक डेढ़ फुट की दूरी पर आकर स्थिर हो गई ।
वह मेरे इतने करीब थी कि मैं आसानी से उसके ऊपर पैर रख सकता था ।
देखते-देखते वैसी ही आठ आकृतियां एक के बाद एक सामने पानी की सतह पर दिखाई देने लगी । जो लगभग एक सीध में उस कमल की आकृति के पास तक जा रही थी ।
उसे देखकर मुझे लगने लगा कि संभवतः यह मेरे लिए उस आकृति तक पहुंचने का कोई मार्ग होगा ।
तभी .... जो आकृति मेरे सबसे करीब थी वह हलके प्रकाश से जगमगाने लगी ।
जबकि बाकी आकृतियां वैसे ही दिखाई दे रही थी । मैं अपनी अंतः प्रेरणा के वशीभूत होकर उस आकृति की ओर बढ़ने लगा !

मैंने चमकती हुई उस पहली आकृति के ऊपर पैर रखा ।

जैसे ही उस पर पैर रखा ....

वह चमक जो उसमें से निकल रही थी .....

वह गायब हो गई !!

उसके बाद जो अगली आकृति थी ...... उसमें से उसी प्रकार की चमक दिखाई देने लगी ।

मैंने अपना पैर आगे बढ़ाया ।

जब मैंने दूसरे आकृति के ऊपर पैर रखा तब तीसरी चमकने लगी ।

मैंने पैर उठाकर उस पर रखा और जिज्ञासावश पीछे मुड़कर देखा तो.....

पहली आकृति गायब हो चुकी थी ।

मेरे वापस जाने का रास्ता बंद था !

जिस प्रकार से वह पानी में प्रकट हुई थी उसी प्रकार से वह पानी में विलुप्त हो चुकी थी, यानी अब मेरे पास आगे बढ़ने के सिवाय कोई रास्ता नहीं था .....

मैं सूरजमुखी के फूलों के समान उन आकृतिओं के ऊपर पैर रखता हुआ कमल के समान बनी हुई संरचना के पास वाली आकृति पर जाकर खड़ा हो गया .....

जैसे ही मेरे दोनों पैर अंतिम आकृति के ऊपर टिके !

मैंने पीछे मुड़ कर देखा......

तो पीछे की सारी आकृतियां गायब हो चुकी थी ।

मैं पानी में उस अंतिम विचित्र किस्म की आकृति के ऊपर खड़ा हुआ था !
बिलकुल वैसे ही जैसे वहां पर कोई चबूतरा बना हुआ हो और उस चबूतरे पर मैं खड़ा हूं !
वहां खड़े हुए मुझे लगभग 5 सेकंड हुए होंगे जब अचानक उस कमल की पंखुड़ियों के बीच में दरार आने लगी और धीरे-धीरे वे चार दिशा में चार पंखुड़ियां खुल गई .....
उनके खुलते ही उसके अंदर भी एक सूरजमुखी जैसी आकृति दिखाई दे रही थी ।
मैं उसके ऊपर चढ़ गया !
जैसे ही मैं उसके ऊपर चढ़ा ....
चारों पंखुड़ियां धीरे-धीरे बंद होने लगी और वह मेरे चारों तरफ से उठते हुए आकर जुड़ती चली गई !
एक प्रकार से मैं उसके अंदर कैद हो गया !!

वह पंखुड़ियां इतनी बारीकी से बनी हुई थी कि जब वे चारों आपस में जुड़ती थी तो उनके बीच में रत्ती भर का भी गैप नहीं होता था ।

वह बिल्कुल किसी कमल की कली की तरह सुडोल दिखाई देती थी ।

मैं उसके अंदर धड़कते हुए दिल के साथ खड़ा हुआ था ।

जैसा कि मैंने बताया कि उसकी ऊंचाई लगभग 8 फुट के आसपास थी तो मैं उस में आसानी से खड़ा हो सकता था ।

हां ! आगे क्या होगा ?

यह उत्कंठा मन में अवश्य हिलोरे मार रही थी ।

धीरे धीरे कमल नुमा आकृति में कंपन होने लगा और वह अपने स्थान पर धीरे-धीरे घूमने लगी ।

घूमते घूमते मुझे ऐसा लगा कि वह अपने स्थान से उठ गई और हवा में उड़ने लगी ......

दो चार मिनट का समय लगा होगा , उसके बाद वह आकृति रुक गई । ऐसा लगा .... जैसे उसने लैंड कर दिया ।

किसी जगह पर उसके रुकने का आभास हुआ ।

मैं प्रतीक्षा करने लगा.... कि पता नहीं अब यह कौन सी नई जगह पर मैं पहुंच गया ?

रुकने के बाद धीरे-धीरे उसकी पंखुड़ियां उसी प्रकार से खुली जैसे पानी के ऊपर वे खुली थी ।

सामने एक झोपड़ी बनी हुई थी जिसका दरवाजा खुला हुआ था ।

वह घनघोर जंगल के बीच में था ।

चारों तरफ दूर-दूर तक बड़े-बड़े लंबे-लंबे पेड़ दिखाई दे रहे थे ।

जिसमें से अधिकांश सागौन के पेड़ थे ।

अगर आपने सागौन के पेड़ देखे हो .....

सागौन का जंगल देखा हो तो आप उसकी विशालता का अंदाज लगा सकते हैं ।

सागौन के पेड़ लगभग 25-30 फुट की ऊंचाई के होते ही हैं ....

अधिकांश पेड़ उससे लंबे ही होते हैं और सागौन के जंगल में सारे पेड़ उसी प्रकार से लंबे लंबे होते हैं !

उनके पत्ते भी काफी बड़े बड़े होते हैं ।

इसलिए वहां दूर की चीजें दिखाई नहीं देती ठीक वैसा ही जंगल वहां मौजूद था । लगभग 20-25 मीटर के बाद कुछ दिखाई नहीं दे रहा था ।

मैं सोच में पड़ गया कि यह मैं कहां आ गया ?

फिर मन में विचार आया की देवकी गुरुक्कल ने इस प्रकार की घटनाओं के विषय में संकेत तो दे ही दिया था ....

इसलिए अब जो भी होगा वह देखा जाएगा ।

मैं उस विमान से यानी उस कमल रूपी संरचना से बाहर निकल आया ....

मेरे बाहर निकलते ही 10-15 सेकंड के बाद वह कमल नुमा संरचना वापस बंद होने लगी और बंद होकर उसी प्रकार स्थिर खड़ी रही ।

उसे देख कर मुझे रावण के पुष्पक विमान की याद जरूर आई ।

यह एक बेहद अजीब लेकिन सत्य बात है कि केवल सनातन धर्म के ग्रंथ रामायण में विमान का उल्लेख है .....

अर्थात आप कल्पना करें कि उस समय रावण विमान में यात्रा करता था ....

यानी कोई न कोई ऐसी तकनीक उनके पास उपलब्ध थी .....

जो किसी को भी वायु गमन करने की क्षमता प्रदान करती थी या यूं समझ लीजिए कि उस समय के लोग विमान बनाने की कला में निपुण थे ।

हमारे प्राचीन ग्रंथों में विमान शास्त्र नाम का भी एक ग्रंथ है । जिसके अंदर विमान बनाने और उसके डिजाइन के संबंध में बहुत सारी बातें लिखी हुई है । इसी को आधार बनाकर एक फिल्म का भी निर्माण किया गया था ।

जिसका नाम "हवाईजादा" है, जो सन 2015 में बनी थी । इसमें मिथुन चक्रवर्ती और आयुष्मान खुराना जैसे कलाकारों ने काम किया था । यह फिल्म एक वैज्ञानिक शिवकर बापूजी तलपड़े के जीवन पर बनी है, जिन्हें भारत का पहला मानव रहित विमान बनाने का श्रेय जाता है। फिल्म 1895 के बंबई पर आधारित है ।

राइट ब्रदर्स ने जिस हवाई जहाज का आविष्कार किया था , वह 17 दिसंबर, 1903 में उड़ाया गया था ।

इससे करीब 8 साल पहले ही शिवकर बापूजी तलपडे नाम के एक मराठा ने अपनी पत्नी की सहायता से 1895 में हवाई जहाज को बनाया जो 1500 फीट ऊपर उड़ा और फिर वापस नीचे गिर गया। मुंबई स्थित चिर बाजार में रहने वाले शिवकर बापूजी तलपडे अपने अध्ययन काल से ही हवाई जहाज बनाने की विधि को जानने और समझने के लिए इच्छुक थे। आपको बता दें कि भारत में विमान शास्त्र के सबसे बड़े ज्ञाता महर्षि भारद्वाज ने सबसे पहले इस विषय पर पुस्तक लिखी और फिर इसके बाद अन्य ज्ञाताओं ने सैकड़ों पुस्तकों के जरिए विमान बनाने की तकनीक को और अधिक विस्तृत तरीके से पेश किया था।
भारत में विमानशास्त्र से संबंधित जो भी पुस्तकें उपलब्ध हैं, उनमें से सबसे पुरानी किताब 1500 वर्ष पहले लिखी गई थी। महर्षि भारद्वाज की यह किताब शिवकर बापूजी तलपडे के हाथ लगी और उन्होंने इसका विश्लेषण भी किया।

पुस्तक के आठवें अध्याय के सौ खंडों में विमान बनाने की तकनीक का विस्तृत वर्णन है और इस पूरी पुस्तक

में विमान का निर्माण करने से जुड़े 500 सिद्धांतों को शामिल किया गया है ।

तत्कालीन बड़ौदा नरेश सर सयाजी राव गायकवाड़ और बम्बई के प्रमुख नागरिक लालाजी नारायण के अलावा महादेव गोविंद रानाडे के सामने शिवकर बापूजी तलपडे ने अपना हवाई जहाज उड़ाया ।
ऐसा माना जाता है कि राइट ब्रदर के द्वारा हवाई जहाज के अविष्कार से 8 साल पहले तलपड़े जी हवाई जहाज का आविष्कार कर चुके थे लेकिन भारत के गुलाम होने और अन्य कारणों की वजह से उनको इसका सम्मान नहीं मिल पाया ।

बात जो भी हो.....
यह घटना इस बात को साबित करने के लिए पर्याप्त है कि सनातन धर्म के ग्रंथों में बहुत सारी ऐसी गोपनीय जानकारियां छुपी हुई है .....
जिसके बारे में अगर सही खोजबीन की जाए तो उससे विमान जैसी अभूतपूर्व चीजों का निर्माण भी किया जा सकता है ।
अस्तु ......

मुझे लगा कि वह कमल नुमा आकृति भी उसी प्रकार का कोई विमान है, क्योंकि उसके चलते समय या उठते समय किसी प्रकार की ध्वनि या किसी मशीन के चलने की जानकारी नहीं होती थी ।
वह किसी अज्ञात शक्ति के द्वारा संचालित विमान था । संभव है कि इस प्रकार के विमानों को मन: शक्ति या किसी अन्य मानवेत्तर शक्तियों के द्वारा चलाया जाता हो ।

भारतीय धर्म ग्रंथों में विमान के उल्लेख को कल्पना की उपज कहा जाता रहा है.....
लेकिन पिछले दिनों एक ऐसी घटना के विषय में विवाद पैदा हुआ था जो इसे वास्तविकता मानने के लिए मजबूर करता है !

प्राचीन भारत के लगभग 5000 वर्ष पुराने एक विमान को वर्ष 2012 में कंधार के पास अफगानिस्तान की एक गुफा में पाया गया । जिसे ढूंढने में अमेरिकन नेवी सील के कमांडो कामयाब हुए थे, लेकिन इसके साथ एक अजीब सी घटना घटी कि जिन 8 कमांडो ने उस विमान

के पास जाने की या संभवत उसे छूने की कोशिश की थी वे अचानक गायब हो गए ।
यहां यह बताना सामयिक होगा कि अफगानिस्तान प्राचीन काल में भारत का ही एक हिस्सा था । महाभारत कालीन गांधार नाम का प्रदेश वर्तमान काल का अफगानिस्तान माना जाता है ।

कमांडो के गायब हो जाने के बाद एक 40 सदस्यीय टीम जिसमें जर्मन शेफर्ड कुत्ते भी शामिल थे वहां पर जांच के लिए भेजे गए थे । लेकिन उन 40 सदस्यों और कुत्तों का भी बाद में कुछ पता नहीं चल पाया कि वह कहां चले गए ....

अभी तक यह पता नहीं चल पाया है कि उन सैनिकों के साथ क्या हुआ ?
एक विचार यह है कि वह विमान किसी प्रकार की तकनीक के द्वारा सुरक्षित रखा गया था । जब उसे गुफा से बाहर निकालने की कोशिश की गई, तो उसे निकालने वाले वह सैनिक भी उसी टाइम वेल में फंस गए, जिसमें वह विमान फंसा हुआ था ।

टाइम वेल के विषय में जो व्याख्या की जाती है वह यह है कि यह इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रेडिएशन से पैदा हुआ एक प्रकार का ग्रेविटी फील्ड है, जिसका जिक्र अल्बर्ट आइंस्टीन नामक वैज्ञानिक ने अपनी यूनिफाइड फील्ड थ्योरी नाम के सिद्धांत में किया था ।

कुछ अपुष्ट सूत्रों के द्वारा ऐसा भी कहा जाता है कि वर्ष 2011-12 में हुई इस खोज को इतना महत्वपूर्ण माना गया था कि 2012 की गर्मियों में संभवत: यूएस प्रेजिडेंट बराक ओबामा के अलावा ब्रिटेन के प्रधानमंत्री डेविड कैमरन और फ्रांस के प्रेसिडेंट निकोलस सरकोजी के साथ-साथ जर्मनी की चांसलर एंजेला मर्केल ने भी इस स्थान का सीक्रेट टूर किया था ....
लेकिन इसके विषय में कोई जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई.....
इसलिए इसे साबित नहीं किया जा सकता ।

इस के विषय में यह भी कहा जाता है कि इस विमान में चार मजबूत पहिए लगे हुए थे और इसमें प्रज्वलन शील हथियार भी थे । जिन्हें आज की भाषा में आग फेकने वाली मिसाइल कहा जा सकता है । इसके अलावा यह

भी दावा किया गया कि इसके अंदर कोई रिफ्लेक्टर टेक्नोलॉजी भी मौजूद थी जो अपने टारगेट पर तेज लाइट फेंक सकती थी। सैनिकों के उस विमान के पास जाते समय ऐसा ही कुछ हुआ था और एक जोरदार प्रकाश वहां पर फैल गया था जिसके बाद सैनिक गायब हो गए थे और उनसे संपर्क टूट गया।

यह कुछ-कुछ आज के समय के लेजर हथियारों के जैसा माना जा सकता है।

यह काफी चर्चा का विषय रहा ....

मगर इस बात की पुष्टि किसी भी देश की सरकार ने नहीं की और ....

ना ही अमेरिकन सेना के द्वारा इसके विषय में कोई पुख्ता विवरण आधिकारिक रूप से जारी किया गया ....

इसलिए यह अभी भी एक रहस्य बना हुआ है कि यह दावा कितना सही है और कितना गलत !

इसके विषय में अधिक जानकारी के लिए आप गूगल सर्च कर सकते हैं जिसमें आपको इस विषय पर काफी लेख मिल जाएंगे

खैर .....

मैं उस विमान से उतर कर झोपड़ी की ओर बढ़ने लगा ।

जब मैं उस झोपड़ी के पास पहुंचा.....

तो.....

झोपड़ी के अंदर से .....

किसी स्त्री की आवाज आई - अघोरानंद ! अंदर आ जाओ ।

अब यह बड़ी अजीब बात थी कि इस जंगल में मुझे कौन पहचानता है .....

लेकिन तांत्रिकों की दुनिया में यह कोई बड़ी बात नहीं है ।

इससे मुझे यह बात तो समझ में आ गई कि जिसने भी मुझे यहां बुलाया है ....

वह मुझे जानता है और किसी न किसी कारण से ही मुझे यहां बुलाया गया होगा !

तो !

मैं धीरे-धीरे झोपड़ी के दरवाजे से अंदर प्रवेश करने लगा । झोपड़ी की साइज बहुत बड़ी नहीं थी लगभग 8 फुट बाई 10 फीट की रही होगी ।

उस कक्ष में एक विचित्र किस्म का सन्नाटा बिखरा पड़ा था .....

बिल्कुल किसी श्मशान की तरह !

हवा में सनसनाहट फैली हुई थी !

जिससे मुझे यह अनुभूति होने लगी कि ....

यहां जो भी है वह किसी उग्र साधना में सिद्धहस्त है !

दरवाजे के आगे लगभग 2 फुट की दूरी पर एक पर्दा लगा हुआ था ।

उसे मैंने ढकेल कर खोला ।

अंदर देखा तो वहां पर एक लगभग 4 फुट लंबा और 2 फुट के आसपास चौड़ा पुआल का आसन सा बिछा हुआ था ।

उसमें मेरी ओर देखती हुई वही बंजारन युवती बैठी हुई थी .....

जिसे मैंने रात को उस खंडहर के पास वाले मैदान में देखा था । उसे इस प्रकार से अपने सामने देखने की उम्मीद मुझे नहीं थी ।

लेकिन....

वह साक्षात मेरे सामने बैठी हुई थी !

उसे इस प्रकार से देखकर मेरे पांव ठिठक गए ।

मैं वहीं पर खड़ा हो गया !

मुझे लगा कि कहीं उसकी साधना को देख लेने की वजह से यह मुझसे क्रोधित तो नहीं हो गई है ?

ऐसी स्थिति में कुछ भी हो सकता था ।

और मुझे सावधान रहने की जरूरत थी ।

मेरे मन में यह विचार आते ही मेरा हाथ अपने आप मेरे गले में पड़ी हुई गुरु माला पर चला गया ।

तंत्र साधना के क्षेत्र में किसी भी शिष्य की सबसे बड़ी सिद्धि होती है उसकी गुरु सिद्धि ।

गुरु श्रृंखला भगवान शिव से चली हुई मानी जाती है ....

तो !

जब आप उस गुरुत्व के साथ अपने आप को जोड़ लेते हैं .....

तो आपका संबंध सीधे भगवान शिव तक जुड़ जाता है ।

तब .....

आपके पास किसी भी समस्या का समाधान निकालने की अनंत क्षमता विकसित हो जाती है । मुझे अपनी

गुरु साधना और गुरुवर की क्षमता पर पूरा विश्वास था कि वह किसी भी असामान्य परिस्थिति से मुझे बाहर निकालने में पूर्णत: समर्थ है ।

उनके द्वारा सिखाए गए विभिन्न तांत्रिक प्रयोग मुझे बहुत सारी क्रियाओं से निपटने की शक्ति से संपन्न बना चुके थे....... लेकिन उनका वरद हस्त मुझे हमेशा आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए आवश्यक लगता है ।

मेरे मन में विचारों का यह आलोडन विलोड़न चल रहा था ......

तभी उस बंजारन स्त्री ने आवाज लगाई - अघोरानंद !

तुम चिंता मत करो ।

तुम्हारा यहां आना पूर्व निर्धारित है ....

वरना देवकी गुरुकल तुम्हें यहां पर तीन दिन रुकने के लिए नहीं कहती ।

जो तुमने देखा है.....

वह तुम्हें दिखाया गया है ।

इसलिए विचलित हुए बिना यहां मेरे पास आओ ।

यह सुनकर मेरे मन का संशय दूर हो गया और मैं धीरे-धीरे उसके पास जाकर खड़ा हो गया ।

वह वास्तव में वही युवती थी , जो रात को दिखाई दी थी ।

अभूतपूर्व सौंदर्य की स्वामिनी वह युवती मेरे सामने अपने आसन पर बैठी हुई थी ।

उसकी चमकती हुई आंखें और उन से दमकता हुआ तेज .... उसके साधनात्मक बल का बखान कर रहा था ।

मैंने उसे हाथ जोड़कर प्रणाम किया ।

उसने बैठने का इशारा किया ....

मैं सामने बैठ गया ।

मैं सोचता हुआ बैठा था कि यह बंजारन आखिर कौन है ?

मेरे मन में यह जिज्ञासा बड़े जोर से उठ रही थी ।

लेकिन ......

पूछने में थोड़ी सी झिझक हो रही थी ।

इसलिए मैं अपनी इस जिज्ञासा को दबाते हुए बैठा था ।

तभी ....

उसने कहा - तुम्हारी जिज्ञासा मैं समझ रही हूं । सबसे पहले यह जान लो कि मैं भी देवकी गुरुक्कल के गुरुकुल का ही एक हिस्सा हूं । जैसा कि तुमको पता होगा कि अपने पहले तीन पुत्रियों को गुरुकुल में छोड़ने के बाद कोई भी युवती अगर उसकी इच्छा हो तो समाज में अन्य युवतियों की तरह जाकर रह सकती है ।

देवकी गुरुकल के द्वारा सिखाए गए युवतियों में से अधिकांश इसी प्रकार विवाहित होकर अपने परिवार में जीवन यापन करती हैं ।

लेकिन....

मेरी मानसिकता अलग थी !

मुझे ऐसा लगता था कि मुझे तंत्र साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ना है !!

गुरुकुल से जो कुछ मैंने सीखा है उससे भी आगे की स्थितियां मुझे प्राप्त करनी है ।

जब जाने का समय आया तो मैंने देवकी गुरुकल से यह बात कही उन्होंने मेरी बात को स्वीकार किया और अपनी इच्छा अनुसार आगे का कार्य करने की अनुमति प्रदान कर दी ।

तब से मैं मल्लिकार्जुन क्षेत्र में निवास कर रही हूं . जैसा कि तुम भी जानते होंगे कि जिन क्षेत्रों में ज्योतिर्लिंग की स्थापना होती है वहां आध्यात्मिक शक्तियों की प्रचंडता अपने आप स्थापित हो जाती है। इसी प्रकार से जिन स्थानों में शक्तिपीठों की स्थापना होती है वहां भी एक विशिष्ट प्रकार की ऊर्जा फैली रहती है।

ऐसे स्थान दुर्लभ होते हैं जहां पर ज्योतिर्लिंग भी हो और शक्तिपीठ भी हो।

मल्लिकार्जुन एक ऐसा ही क्षेत्र है यहां पर शिव की प्रचंडता भी है और शक्ति की सौम्यता भी है ,,,,,

इन दोनों के सानिध्य से एक विशिष्ट किस्म की उर्जा इस क्षेत्र में फैली रहती है जो साधना करने वाले साधकों के लिए बहुत ज्यादा उपयोगी और अनुकूल होती है।

यह बात देवकी गुरुक्कल ने स्वयं मुझे समझाई थी और इसी क्षेत्र में साधना करने का सुझाव भी दिया था।

इसमें एक लाभ यह भी था कि यहां से गुरुकुल पास में ही है और बड़ी आसानी से किसी भी प्रकार की आवश्यकता पड़ने पर देवकी गुरुकल से संपर्क कर सकती थी।

मैं जिज्ञासु भाव से उनकी बातों को सुन रहा था !
उन्होंने आगे कहा - गुरुकुल से निकलकर यहां आने के बाद मैंने भगवान शिव के पशुपति स्वरूप की साधना प्रारंभ कर दी । लगभग 3 वर्षों तक मैं उसी खंडहर में साधना करती रही, जहां पर तुमने मुझे देखा था । वह भगवान शिव का एक पुराना मंदिर है जो कम से कम 300 साल पुराना होगा उस मंदिर के नीचे एक गर्भ गृह है । वही मेरा साधना स्थल था ।
जैसे-जैसे मेरी साधना की तेजस्विता बढ़ती गई .....
मेरा आभामंडल भी बढ़ता चला गया !
एक स्थिति ऐसी भी आई....
जब मुझे स्वयं अपने शरीर से निकलते हुए प्रकाश का अनुभव होता था ।
जैसे-जैसे हम साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ते जाते हैं वैसे वैसे हमारे शरीर से ऊर्जा का उत्सर्जन होने लगता है.....
यह ऊर्जा ऐसी होती है जो आंखों से दिखाई नहीं देती.....
लेकिन.....
दूसरा उच्च्य कोटि का साधक उसे महसूस कर सकता है । यही नहीं कुछ अन्य लोको की शक्तियां जैसे यक्ष

गंधर्व किन्नर आदि भी इस शक्ति को महसूस करते हैं । जिन्हें आधुनिक विज्ञान की भाषा में एलियन भी कहा जा सकता है ।

इस ब्रह्मांड में अनेक प्रकार के लोक माने जाते हैं । जिसमें से जो जनसामान्य में प्रचलित है वह है शिवलोक, विष्णुलोक, देवलोक, नागलोक इत्यादि ! लेकिन इसके अलावा भी अनंत प्रकार की शक्तियाँ है और सबके अपने अपने लोक हैं ....

लेकिन वे हमे दिखाई नहीं देते ।

जैसे किसी फोटोग्राफ में दो आयाम होते हैं ... लंबाई और चौड़ाई ।

जब हम उस में देखते हैं तो हमें बनी हुई चीजें तो दिखाई देती हैं लेकिन उनके बीच का जो अंतर या दूरी या गहराई है वह दिखाई नहीं देता ।

ठीक इसके विपरीत....

हमारी आंखें तीन आयाम में देखती है ।

उसे लंबाई चौड़ाई और गहराई तीनों चीजें दिखाई देती है ।

जब हम अपनी आंखों से किसी वस्तु को देखते हैं तो उस वस्तु की लंबाई चौड़ाई के साथ साथ हम उसकी अपनी आंखों से दूरी भी महसूस कर सकते हैं ।
इसी प्रकार एक वस्तु और दूसरी वस्तु के बीच की दूरी भी महसूस कर लेते हैं ।
यानी हम तीन आयाम तक की वस्तुओं को देख सकते हैं लेकिन इससे परे भी कई प्रकार के आयाम होते हैं ।
जिनमें हमारी पहुंच नहीं होती.....
लेकिन वह लोक विद्यमान होते हैं !
इन लोकों को वही लोग देख सकते हैं जो इन आयामों में पहुंचने की क्षमता या योग्यता प्राप्त कर लेते हैं या विकसित कर लेते हैं ।

इसी प्रकार से एक विशिष्ट लोक है यक्ष लोक । यह एक ऐसा लोक है जहां यक्ष और यक्षिणियाँ रहती हैं ।
इस लोक के विषय में तुमने भी सुना होगा....

आमतौर पर अप्सरा और यक्षिणी साधना का उल्लेख सभी तांत्रिक किया करते हैं, इसलिए इन दोनों के विषय में सभी को जानकारी होती है....
तुम भी अवश्य उनके विषय में जानते होगे ।

मैंने सहमति में सिर हिलाया।

वह आगे बोली - मेरी आध्यात्मिक ऊर्जा बढ्ने से यक्षलोक की शक्तियां मेरी ओर आकर्षित होने लगी और मुझसे मिलने के लिए आने लगी।

यह शुरुआत थी ....

धीरे-धीरे उन्होंने मुझे अपनी कुछ विद्याएँ सिखाई और मैंने भी उनको अपनी कुछ विद्याएँ सिखाई।

इस प्रकार से हमारा आपसी संबंध और संपर्क बढ़ता गया। धीरे-धीरे वहां से आने वाले लोगों की संख्या बढने लगी तो मुझे अपने साधना में विघ्न लगने लगा।

फिर मैंने एक निश्चित दिन तय कर दिया जिस दिन वह सभी लोग मुझसे मिलने के लिए आ सकते थे। उनमें से जो उच्च कोटि की शक्तियां होती हैं वह मुझसे शुक्ल पक्ष में एकादशी की रात्रि को मिलती है !

जो अन्य शक्तियां होती है वह कृष्ण पक्ष में एकादशी की रात्रि को मिलती है। इस प्रकार से मुझे भी अपनी अन्य साधनाओं के लिए समय मिल जाता है।

कल एकादशी की रात्रि थी....

इसलिए वह सारी शक्तियां आई हुई थी !

इस अवसर पर मेले जैसा माहौल रहता है। जिसमें वे अपने विभिन्न क्रियाकलापों के द्वारा मनोरंजन भी करते हैं और मुझे रिझाने का प्रयास भी करते हैं।

वह मेरा सम्मान भी करते हैं और मेरा कार्य भी करते हैं। हां एकादशी की रात को उनके लिए मेले का अवसर होता है। जब वे अपनी सभी कलाओं का प्रदर्शन करके खुद भी प्रसन्न होते हैं और मुझे भी प्रसन्न करने की कोशिश करते हैं। इसी घटना के तुम साक्षी रहे हो।

यक्ष लोक के विषय में मुझे जानकारी तो थी लेकिन इस प्रकार से वे साधकों के साथ संपर्क रखते हैं यह मुझे पता नहीं था।
हमारे सनातन धर्म में विभिन्न प्रकार की योनियों का वर्णन है जैसे नाग, यक्ष, गंधर्व, अप्सरा आदि.....
यह सभी अलग-अलग प्रकार की योनियाँ है जिनका स्वरुप कुछ-कुछ मानव जैसा और कुछ उनसे अलग हटके भी होता है।
उदाहरण के लिए अप्सराओं का शरीर लगभग 8 फुट का होता है लेकिन वह आवश्यकतानुसार अपने शरीर को छोटा बड़ा कर सकती हैं।

उनके अंदर नृत्य शीलता होती है । वह उल्लासमय जीवन व्यतीत करने के कारण...... जिस भी साधक के साथ जुड़ती हैं उसके अंदर भी इस उल्लास की उत्पत्ति कर देती हैं ।

अप्सरा साधना करते समय बहुत सारे साधक ऐसा सोचते हैं कि अप्सरा साक्षात प्रकट हो जाएगी और वे उसके साथ शारीरिक समागम कर सकेंगे ....

लेकिन.....

वास्तव में ऐसा नहीं होता है और अगर होता भी है तो करोड़ों में से कोई एक साधक ऐसी स्थिति को प्राप्त कर पाता है ।

इस प्रकार का एक प्रकरण हमें महर्षि विश्वामित्र के संदर्भ में पता चलता है उसका उल्लेख मै अवश्य करना चाहूंगा

जैसा कि आप लोग शायद जानते होंगे कि महर्षि विश्वामित्र पहले एक राजा थे । जब उन्होंने महर्षि वशिष्ठ के आश्रम की भव्यता और वैभव को देखा तो उन्हें अपने राजा होने पर जो अहंकार था वह समाप्त हो गया । उन्हें समझ में आ गया कि सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्य ऋषि बनने पर ही प्राप्त होगा !

उन्होंने राज सिंहासन का त्याग कर दिया और ऋषि बन गए ।

सिर्फ कपड़े बदल लेने से ऋषि नहीं बनते हैं !

उसके लिए घोर तपस्या भी करनी पड़ती है !

अपने अंदर का ब्रह्मत्व जगाना पड़ता है ।

अपनी चेतना को जागृत करना पड़ता है ....

विश्वामित्र इसके प्रयास में लग गए ।

विश्वामित्र के ऋषि बन जाने के बाद उनकी तपस्या की प्रचंडता से देव लोक में भी हाहाकार मचने लगा ।

इंद्रदेव को डर लगने लगा कि कहीं यह मेरा आसन प्राप्त करने के लिए तपस्या तो नहीं कर रहे हैं ....

उन्होंने अपने इंद्रसभा की सर्वश्रेष्ठ अप्सरा मेनका को महर्षि विश्वामित्र की तपस्या भंग करने के लिए भेज दिया......

महर्षि विश्वामित्र की तपस्या अपने प्रचंड स्वरूप में चल रही थी और मेनका वहां पर उनकी तपस्या भंग करने के लिए पहुंच गई ।

उसने अपने अत्यंत लास्य युक्त नृत्य को प्रस्तुत किया और विभिन्न प्रकार की भाव भंगिमा के द्वारा लुभाने का प्रयास करने लगी ।

काफी समय तक महर्षि विश्वामित्र इस प्रयास से अछूते रहे ...

लेकिन अप्सरा वास्तव में कामदेव की काम शक्तियों से संपन्न होती है ...

इसलिए जब भी वे अपने कार्य पर निकलती हैं तो अधिकांश समय वे सफल अवश्य होती हैं और अच्छे अच्छे ऋषियों की तपस्या भंग कर डालती है !

इस बार भी वैसा ही हुआ .....

अंततः मेनका ने महर्षि की तपस्या भंग कर दी और उन दोनों का मिलन हो गया ।

ऐसा हो जाने के बाद आमतौर पर अप्सराएं वापस इंद्रलोक को लौट जाती हैं !

क्योंकि .... उनका कार्य पूर्ण हो गया रहता है । ऋषि का ब्रह्मचर्य और उसके साथ साथ उसकी तपस्या भी भंग हो जाती है ।

लेकिन.....

महर्षि विश्वामित्र तो फिर विश्वामित्र थे !

उनकी बात ही अलग थी !!

वे प्रचंड पौरुष और प्रचंड तंत्र शक्ति का स्वरुप थे !

जब मेनका लौटने लगी तो उन्होंने मेनका को अपने मंत्रों से रोक दिया । उसे विवश कर दिया कि वह उन से विवाह करके उनके आश्रम में पत्नी की तरह रहे ।

मेनका ने इससे बचने के लिए प्रयास तो जरूर किया....

लेकिन ....,

विश्वामित्र के प्रचंड पौरुष , उग्र तपोबल और उनकी तंत्र शक्ति के सामने वह भी विवश हो गई ।

उसे विश्वामित्र की पत्नी बनकर उनके आश्रम में रहना पड़ा और उनकी संतान की माता भी बनी । इस प्रकार के प्रकरण हमारे धर्म ग्रंथों में कम ही मिलते हैं, जब कोई अप्सरा विवश होकर किसी ऋषि की पत्नी बनी हो......

इसी से आप समझ सकते हैं कि महर्षि विश्वामित्र कितनी प्रचंड शक्ति के स्वामी थे ।

कालांतर में यही महर्षि विश्वामित्र भगवान श्री राम के गुरु बने और उन्होंने विभिन्न प्रकार की शस्त्र विद्याओं का ज्ञान उनको प्रदान किया ।
यह वही विश्वामित्र थे जिन्होंने एक राजा जिसका नाम त्रिशंकु था उसकी याचना पर उसे सशरीर स्वर्ग भेजने का प्रयास प्रारंभ कर दिया । जिसे देखकर सभी देवता विचलित हो गए । यह स्थापित नियमों के विरुद्ध था कि कोई मनुष्य जीवित अवस्था में स्वर्ग लोक पहुंच जाए ।
तो....
सभी ने इसका विरोध करना प्रारंभ कर दिया !
इससे क्षुब्ध होकर विश्वामित्र ने भी एक नए स्वर्ग का निर्माण करने का संकल्प ले लिया । अपने तपोबल से उन्होने एक नए स्वर्ग का निर्माण प्रारंभ कर दिया ..... इस प्रकार के लोक निर्माण की क्षमता रखने वाले वे ब्रह्मा तथा विश्वकर्मा जी के बाद तीसरे थे ..... उस स्वर्गलोक का लगभग एक तिहाई निर्माण पूर्ण भी कर लिया .....
इसके बाद देवताओं और ऋषियों ने अपने विभिन्न तर्कों के माध्यम से महर्षि विश्वामित्र को समझाने में सफलता

प्राप्त कर ली कि इस प्रकार स्वर्ग का निर्माण करने से ब्रह्मांड की व्यवस्था में विभेद उत्पन्न हो सकता है ..... जो कि सभी के लिए नुकसानदायक होगा और वह इस कार्य को रोक दें ।

तब उन सभी की प्रार्थना को देखते हुए विश्वामित्र ने इस नए स्वर्ग के निर्माण कार्य को वहीं पर रोक दिया ....

लेकिन ऐसा माना जाता है कि अभी भी...

किसी आयाम में ....

वह स्वर्ग लोक !

जो अपूर्ण है !

आज भी विद्यमान है.......

अप्सराओं के बाद जो योनि सबसे ज्यादा भूलोक पर विचरण करने वाली मानी जाती है वह है यक्ष योनी । रावण का भाई कुबेर भी एक यक्ष है । जिसे देवताओं का कोषाध्यक्ष अर्थात ट्रेजरर माना जाता है । जो उनके धन संपत्ति का हिसाब किताब रखता है और उसकी सुरक्षा करता है ।

वर्तमान युग में अर्थात कलयुग में धन की प्राप्ति के लिए लक्ष्मी साधना के साथ-साथ कुबेर साधना को भी

उतना ही प्रभावशाली और असरदार माना जाता है । कुबेर देवताओं के कोषाध्यक्ष हैं और वे ठीक उसी प्रकार धन संपदा प्रदान करने में सक्षम है जिस प्रकार से देवी महालक्ष्मी धन प्रदान करती है । कुबेर साधना के साथ एक प्लस पॉइंट यह है कि लक्ष्मी को चंचला माना गया है, उनकी साधना अगर निरंतर न की जाए तो लक्ष्मी का आगमन विचलित होने लगता है, लेकिन कुबेर की साधना करने से इस प्रकार की समस्या कम आती है । इसलिए लक्ष्मी और कुबेर की संयुक्त साधना को वर्तमान समय के हिसाब से धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ माना गया है ।

अप्सराओं के समान सौंदर्य युक्त यक्षिणीयां तथा यक्ष मनुष्यों के संसर्ग में आने के लिए सदैव तैयार रहती हैं । इस प्रकार के साधकों और तांत्रिकों को वे खोजते रहते हैं ताकि वे उनके संपर्क में आ सके संभवत: ऐसा ही उन के साथ हुआ था......
मैं यही सब सोच रहा था तभी वह आगे बोली - जिस युवती को देवकी गुरुकल अपना उत्तराधिकारी चुन रही है.....

वह मेरी तीसरी पुत्री है ।
वह एक अति विशिष्ट कार्य के लिए समर्पित होने जा रही है जो कि एक बहुत बड़ा सौभाग्य है । मैं अपने आप को और अपने गर्भ को सौभाग्यशाली समझती हूं कि ऐसे एक गुरुकुल की भावी गुरु को मैंने अपने गर्भ में धारण किया था ।

यह सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि उस युवती की उम्र मुश्किल से 20-22 साल की लगती थी । जबकि उसके कथनानुसार उसकी पुत्री कम से कम 17 या 18 साल की अवश्य हो गई होगी । देवकी गुरुक्कल के गुरुकुल की परंपरा के अनुसार 16 साल तक विभिन्न विद्याओं का अभ्यास करने के बाद 1 से 2 साल कामाख्या साधना करना जरूरी होता है ।
उसके बाद ही आगे के प्रक्रम में उनको प्रवेश दिया जाता है ।
यानि उनकी पुत्री की उम्र कम से कम 17 या 18 साल की रही होगी । उस हिसाब से कम से कम उनकी उम्र 35-40 साल के बीच में होनी चाहिए थी .....
लेकिन वे लगभग 22-25 साल की लग रही थी ।

मेरे मन में यह विचार चल रहा था .....

तभी वह बोली - जब साधनाओं के द्वारा शरीर पूरी तरह से सिद्ध हो जाता है, विशेष रूप से कामाख्या साधना के बाद.... तो उम्र का आभास कम होने लगता है !

जिसकी वजह से तुम्हें मैं कम उम्र की लग रही हूं !

मेरी वास्तविक उम्र अभी 42 साल की है ।

मैं पिछले 10 वर्षों से यहां साधना कर रही हूं ।

मेरा नाम मदालसा है !

मैं उन युवतियों में से एक हूं जो देवकी गुरुकुल के साथ कामाख्या से आई थी । हम कामाख्या की वे साधिकाए हैं जिनका जन्म ही तंत्र साधनाओं के लिए होता है .....

तुम यूं समझ सकते हो कि मैं पहले रस भैरवी की शिष्या थी उसके बाद देवकी गुरु कल के साथ जुड़ी !

इसलिए मुझे कामाख्या तंत्र पहले से ही सिद्ध है ।

कामाख्या तंत्र , तंत्र साधनाओं में सबसे विशिष्ट और गोपनीय होता है । इस तंत्र के माध्यम से ऐसा कोई कार्य नहीं है .... जो संभव ना हो पाए ।

सौंदर्य की प्राप्ति ऐसे साधकों के लिए बेहद सरल और सहज होती है, इसलिए मेरा स्वरूप ऐसा ही बना हुआ है ।

जब .... उसकी.... इच्छा होगी !
तो मेरे चेहरे पर आयु प्रकट होने लगेगी तब तक मेरी अवस्था इसी प्रकार बनी रहेगी ।

यहाँ पर मुझे देवकी गुरुकल के द्वारा बताई गई रस भैरवी की कथा भी याद आई.....
क्योंकि.....
वह भी इसी प्रकार नव युवती जैसी दिखाई देती थी !
और उसकी उम्र 100 साल के आसपास थी ।
मैं आंखें फाड़ फाड़ कर उसकी ओर देख रहा था क्योंकि वह किसी भी दृष्टि से 42 साल की नहीं लग रही थी....
मेरे इस प्रकार से देखने पर वह खिलखिला कर हंस पड़ी और बोली - यह तंत्र है ! इसमें कुछ भी संभव है !!
मेरे पास सहमति में सिर हिलाने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं था ।

मदालसा आगे बोली - मेरी पुत्री का नाम चंपा है !
जिसको देवकी गुरुक्कल अपना उत्तराधिकारी बना रही है । उसी प्रक्रम में कुछ विशेष क्रियाएँ मल्लिकार्जुन मंदिर में संपन्न करवानी है ।
जिसके लिए तुम्हें यहां बुलाया गया है ।

मैंने कहा - बताइए मुझे क्या करना होगा ।

वे बोली - तुम्हें मंदिर में एक पाशुपत यज्ञ और फिर ब्रह्म भोज का आयोजन करना है । जिसमें कम से कम 1000 लोगों को भोजन करवाना होगा । हर मास त्रयोदशी को प्रदोष पड़ता है जिसे भगवान शिव की विशेष रात्रि कहा जाता है... इसलिए परसों प्रदोष के अवसर पर लोगों की संख्या भरपूर रहेगी । उस दिन इस भोज का आयोजन किया जाएगा .....

यह सुनकर मुझे बनारस की याद आ गई !
जहां पर कुछ आत्माओं की मुक्ति के लिए इसी प्रकार का अनुष्ठान उनके निर्देश पर मैंने संपन्न करवाया था ।
जैसा कि उस समय भी मन में विचार आया था....
अभी भी मेरे मन में विचार आया कि इस कार्य में काफी धन की आवश्यकता लगेगी ।
मेरे मन में इस विचार के आते ही उन्होंने कहा - धन की चिंता तुम मत करो !
मैंने धनदा यक्षिणी की साधना की हुई है और उनकी साधना करने से जीवन में धन की प्राप्ति होती रहती है .....

ऐसा कह कर वे पद्मासन में बैठ गई और मेरे हाथ में एक टोकरा दे दिया ।

वह टोकरा लगभग 1 फुट व्यास का रहा होगा जो बांस से बना हुआ था ।

उसके बाद उन्होंने मुझे पद्मासन लगाकर बैठने के लिए कहा !

मैं भी पद्मासन लगाकर बैठ गया ।

उन्होंने कहा - जब तक मैं ना कहूं !

तब तक तुम्हें आंख नहीं खोलना है ।

किसी भी प्रकार का अनुभव होने से भी .....

जब तक मेरी आवाज में तुम यह न सुनो की आंख खोलो तब तक तुम्हें आंख नहीं खोलना है ।

इस बात का ध्यान रखना ....

मैंने सहमति जताई ।

इसके बाद उन्होंने कुछ विशेष मंत्रों का जाप प्रारंभ कर दिया ....

दस पंद्रह मिनट के अंदर कमरे में भारीपन बढ़ने लगा .....

किसी शक्ति का आगमन होने वाला था ....

ऐसा मैं महसूस कर सकता था !

मैंने अपनी अंतर दृष्टि से बाहर होने वाली घटनाओं को देखने का प्रयास किया !

लेकिन सफल नहीं हो पाया !!

क्योंकि मेरी सारी शक्तियां उस समय काम नहीं कर रही थी ।

कुछ समय बीते बीते माहौल का भारीपन बढ़ने लगा और अचानक एक अजीब सी खुशबू झोपड़ी में फैल गई !

वह खुशबू बेहद मादक थी !!

बिल्कुल महुए की खुशबू की तरह......

जिसे सूंघने मात्र से ही नशे का आभास होता था ।

वह खुशबू धीरे-धीरे बढ़ती चली गई और अचानक मेरे हाथ में रखे हुए टोकरे का भार बढ़ गया !

ऐसा लगा जैसे उसके अंदर कोई चीज आ गई हो । मेरी बहुत इच्छा हुई कि मैं आँखें खोलकर उसे देख लूं .....

लेकिन.....

उनसे वादा कर चुका था इसलिए मैंने आंखें नहीं खोली !

लगभग दो तीन मिनट के बाद मुझे ऐसा लगा कि कोई बात कर रहा है ।

वह कोई स्त्री का स्वर था जो उनसे बात कर रही थी !

भाषा मेरी समझ में नहीं आ रही थी !

पर बातचीत दो लोगों के बीच में हो रही थी.....

जिसमें से एक स्वर मदालसा बंजारन का था और दूसरा स्वर संभवत: उस आई हुई शक्ति का रहा होगा ।

उसके बाद वह आवाज शांत हो गई ।

जैसे वह वहाँ से चली गयी हो ......

धीरे-धीरे वह महक जो कमरे में मौजूद थी.....

वह भी कम होने लगी !

धीरे-धीरे वापस परिस्थितियां सामान्य हो गई !

मुझे लगने लगा कि वह संभवतः चली गई है लेकिन निर्देशानुसार आँखें नहो खोल सकता था ।

तभी उनकी आवाज आई - अघोरानंद ! आंखें खोलो !

जैसे ही मैंने आंखें खोली !

मैंने देखा कि मेरी टोकरी में 100-100 के नोटों के चार बंडल पड़े हुए थे ।

मैं समझ गया कि यह उसी ब्रह्म भोज के लिए धनराशि उन्होंने मुझे प्रदान की है ।

वह बोली - इतना काफी होगा।

मैंने कहा - बिलकुल इसमें व्यवस्था हो जाएगी ।

अब दिक्कत यह थी कि वहां की भाषा मुझे आती नहीं थी और ऐसी स्थिति में व्यवस्था करना थोड़ा सा मुश्किल हो जाता ।
मैं इसी ऊहापोह में पड़ा हुआ था ।
तभी.....
उन्होंने मेरी मुश्किल को आसान करते हुए कहा - मैं तुम्हारे साथ चलूंगी लेकिन मंदिर के अंदर पाशुपत यज्ञ का यजमान तुम्हें बनना होगा तथा ब्रह्म भोज की व्यवस्था तुम्हें करनी पड़ेगी क्योंकि इस पूजन में जो शामिल होगा उसी को ब्रह्म भोज करवाना है ।
चंपा को यहां लाना संभव नहीं है, क्योंकि संपूर्ण प्रक्रिया संपन्न होने से पहले उसे गुरुकुल से बाहर निकालना खतरे से खाली नहीं है ।
मैंने पूछा - कैसा खतरा ?

मदालसा बोली - तंत्र साधना में स्त्री शक्ति का बहुत महत्व होता है । वही ब्रह्मांड में स्थित शक्तियों को अपने अंदर समाहित करके उसका प्रस्फुटन पुरुष के अंदर करने में समर्थ होती है । कन्या पूजन इसीलिए

किया जाता है क्योंकि उन के माध्यम से भगवती तक उस पूजन द्रव्य को पहुंचाया जाता है !
वह वास्तव में उस परा शक्ति का स्वरुप होती हैं ।

जो कन्या पुरुष के संपर्क में नहीं आई है उसमे इस शक्ति तत्व की मात्रा बहुत ज्यादा रहती है ! जैसे जैसे उसका पुरुष संपर्क बढ़ता जाता है यह शक्ति उसके अंदर क्षीण पड़ती जाती है ।

इसके विपरीत जो कन्या पुरुष संपर्क में नहीं आती है !
अक्षत योनि होती है !
वह प्रचंड ऊर्जा का केंद्र होती है ।
यदि वह तंत्र साधना में प्रवृत्त होती है तो उसके अंदर साक्षात महामाया का प्रादुर्भाव होने लगता है !
वह असंभव कार्यों को करने में भी सक्षम हो जाती है ।

किसी भी तांत्रिक के पास इस प्रकार की कन्या अगर साधना के लिए उपलब्ध हो जाए तो वह उस के माध्यम से अनेक दिव्य शक्तियों को अपने सामने प्रकट भी कर सकता है और उनकी कृपा भी प्राप्त कर सकता है ।

इसमें सकारात्मक शक्तियां भी शामिल है अर्थात देवी शक्तियां भी शामिल हैं ....
और नकारात्मक शक्तियां भी शामिल है ।

दैवीय शक्तियों के पूजन से उस कन्या के अंदर विशेष शक्ति का प्रभाव बढ़ने लगता है और वह ज्यादा चैतन्य और प्रभावशाली होने लगती है ।
ऐसी स्थिति में उसे साक्षात महामाया का स्वरुप मानकर उसकी चरण वंदना करते हुए पूजन संपन्न किया जाता है ।
इससे सहयोगी तंत्र साधक को भी अनेक शक्तियों का साक्षात्कार प्राप्त होता है और उसके अंदर तांत्रिक शक्तियों का विकास होने लगता है !
यूं समझ लीजिए कि वह सिद्ध तांत्रिक बन जाता है !
हाँ ! इसमें आत्म नियंत्रण अति आवश्यक होता है ।

इसके विपरीत अगर आसुरी या नकारात्मक शक्तियों का आह्वान उस के माध्यम से किया जाता है तो उसकी प्राणशक्ति धीरे-धीरे कमजोर होने लगती है और कालांतर में कन्या मृत्यु को प्राप्त हो जाती है .....

या फिर वह तांत्रिक स्वयं उसकी बलि दे देता है और उसकी आत्मा को अपने वश में करके उससे उचित अनुचित सभी प्रकार के कार्य कराने की कोशिश करता है ।

इस प्रक्रिया में कई नकारात्मक शक्तियां भी जागृत हो जाती है और उन शक्तियों के सानिध्य से तांत्रिक के अंदर कुछ विशेष क्षमताएं विकसित हो जाती हैं । जिससे वे कई प्रकार के दुष्कर्म , जैसे अभिचार कर्म, जो दूसरों को नुकसान पहुंचाते है ,वह संपन्न कर सकते हैं । इसलिए ऐसे तांत्रिक भी इस प्रकार की कन्याओं की खोज में रहते हैं ।

चंपा विशिष्ट तांत्रिक मुहूर्त में पैदा हुई एक अद्भुत शक्ति संपन्न अक्षत योनि कन्या है । जिसका अपहरण करने के लिए कोई तांत्रिक प्रयास कर सकता है ।

पूर्णिमा को सोमवार है , सर्वार्थ सिद्धि योग है और रोहिणी नक्षत्र मे चंद्र ग्रहण है जो कि तांत्रिक साधनाओं के लिए एक अति विशिष्ट संयोग है क्योंकि चंपा का जन्म भी रोहिणी नक्षत्र में हुआ था ।

इसी अति विशिष्ट मुहूर्त में सिद्धि प्राप्ति के लिए तुम दोनों को यह पूजन संपन्न करना है ।

इस गुरुकुल को समाप्त करने के लिए तथा यहां की शक्तियों को छिन्न-भिन्न करने के लिए कई प्रकार के प्रयास निरंतर होते रहते हैं । जिस पर निरंतर नजर रखनी पड़ती है ।

गुरुकुल के चारों ओर एक बहुत मजबूत तांत्रिक कवच का निर्माण किया गया है । जिसमें योगिनी शक्तियों के साथ साथ कई प्रकार की अन्य शक्तियां भी शामिल है । जो ऐसे किसी भी प्रयास का तोड़ निकालने में सक्षम है।

लेकिन गुरुकुल से बाहर निकल जाने के बाद चंपा को अपने स्तर पर सुरक्षित रहना पड़ेगा ....

जो अभी की परिस्थिति में खतरे से खाली नहीं है ।

पूर्णिमा को अंतिम पूजन संपन्न हो जाएगा....

उसके बाद वह स्वयं इतनी शक्ति संपन्न हो जाएगी कि कोई उसका बाल भी बांका नहीं कर पाएगा । तब तक उसकी सुरक्षा करना अनिवार्य है ।

मैंने सहमति में सिर हिलाया ।

फिर हम दोनों झोपड़ी से निकलकर उस विमान की ओर चल पड़े ।

जैसा कि मैंने बताया था कि मैं आदतन जिज्ञासु हूं और मुझे चीजों के बारे में जानने की जिज्ञासा हमेशा बनी रहती है । इसलिए अब मेरे मन में विमान के विषय में जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा हिलोरे मार रही थी । तो....

मैंने झिझकते हुए उनसे पूछ ही लिया - यह विमान आपको कहाँ से मिला ?

उन्होंने बताया - वास्तव में विमान बनाने की प्रक्रिया हमारे सनातन धर्म में काफी पहले से विद्यमान है । जो ग्रंथ हैं वह यह बताते हैं कि अंगिरा ऋषि ने विश्वकर्मा के साथ मिलकर वह पुष्पक विमान बनाया था जो रावण के पास था । उन्होने जो विमान बनाया था, उसे यक्ष राज कुबेर को दिया था । साथ ही उनको विमान बनाने की प्रक्रिया भी सिखाई गई थी । इसलिए यक्ष लोक में यह विद्या आज भी विद्यमान है । यक्ष लोक में कई प्रकार के विमान आज भी प्रचलन में है । जो गुप्त रूप से हमारे पृथ्वी पर उड़ते हैं ।

इनमें से एक अति विकसित किस्म का विमान यह भी है जो यक्षों ने मुझे भेंट किया है ।

मैंने उनसे पूछा - यह चलता कैसे हैं ? क्योंकि इसमें किसी प्रकार की आवाज भी नहीं आती । हमारे यहां जो विमान चलते हैं उनके चलने से तो जमीन फटने जैसी आवाज आती है । लेकिन यह तो बिल्कुल बेआवाज है । क्या इसे चलाने में ऊर्जा या शक्ति की आवश्यकता नहीं होती ?

वह बोली - इसे चलाने में भी शक्ति की आवश्यकता होती है , लेकिन इसमें जिस शक्ति का प्रयोग किया जाता है वह हमारे अंतर्मन की शक्ति होती है । जिसे एकत्रित करके इसका संचालन किया जाता है । इसकी तकनीक सीखनी पड़ती है जो अभी केवल यक्ष लोक के प्राणियों के पास ही मौजूद है । उनके संपर्क में आने के कारण उन्होंने मुझे यह विद्या भी सिखाई है ।

हम दोनों तब तक विमान के पास तक पहुंच चुके थे । विमान के चारों पल्ले खुल गए और हम दोनों उसके अंदर चले गए !

जैसे ही हम उसके अंदर गए उसका आकार थोड़ा सा बड़ा हो गया .....
ताकि हम दोनों आसानी से वहां खड़े रह सके ।
यह देख कर मुझे फिर आश्चर्य हुआ !

मुझे आश्चर्यचकित देखकर उन्होंने कहा - शायद तुमने पुष्पक विमान के विषय में नहीं सुना है ?
मैंने कहा - सुना है ! वह रावण का विमान था , जिसमें बैठकर उस ने सीता का हरण किया था ।

वे बोली - इसके अलावा तुम पुष्पक विमान के बारे में क्या जानते हो ?
मैंने तुरंत कहा - वह मन की गति से उड़ता था और रावण उसे चलाता था ।
वह मेरे इस बचकाने उत्तर पर वे हंस पड़ी और बोली - यह तो वह बातें हैं जो जनमानस में प्रचलित है, लेकिन इसके विषय में एक और बात थी कि उस विमान में अपने आप छोटा बड़ा होने की क्षमता भी मौजूद थी ।
पुष्पक विमान मे जितने लोग चढ़ते थे उसमें से एक और व्यक्ति के चढ़ने लायक वह स्वतः बड़ा हो जाता था ।

यानी अगर पांच व्यक्ति उसमें चढ़े तो उसमें छह व्यक्तियों के लायक जगह बन जाती थी !

अगर उसमें 10 व्यक्ति चढ़े तो उसमें 11 व्यक्तियों के लायक जगह बन जाती थी !

अगर उसमें सौ व्यक्ति चढ़े तो उसमें एक सौ एक व्यक्तियों के लायक जगह बन जाती थी !

यह भगवान श्री विश्वकर्मा की निर्माण कला का एक अद्भुत नमूना था !!

यह विमान भी उसी प्रकार बना हुआ है लेकिन इसकी क्षमता उतनी नहीं है। यह ज्यादा से ज्यादा 5 लोगों को ले जा सकता है। लेकिन आकार छोटा बड़ा करने की क्षमता इसमे मौजूद है !

जब तुम आए तब इसमें एक ही व्यक्ति के खड़े होने लायक जगह की जरूरत थी इसलिए उतनी ही जगह थी और अब जब हम दो हैं तो इसमें जगह बढ़ गई है।

इसके बाद वह विमान अपने आप बंद होने लगा और पुनः उसी प्रकार से कमल की आकृति में आ गया।

उसमे धीरे-धीरे घूमने की गति होने लगी और वह अपने स्थान से ऊपर उठ गया।

पुनः उसी प्रकार कृष्णा नदी में उसने लैंड किया ।

जैसे वे सूरजमुखी के आकार के पत्थर पानी से बाहर निकले थे वैसे ही फिर से बाहर निकले !

हम उनके ऊपर से होते हुए तट पर आ गए । वहां काफी सुनसान था इसलिए किसी ने यह सारी घटना नहीं देखी ।

उतरने के बाद हम किनारे पर पहुंचे तो उन्होंने उस विमान की तरफ देख कर कुछ मंत्र पढ़े और हाथों का इशारा किया !

आश्चर्य !

वह विमान दिखाई देना बंद हो गया ।

जिन पत्थरों के ऊपर से चलकर हम आए थे वह तो पहले ही गायब हो चुके थे ।

अब वहां देखने से आभास भी नहीं होता था कि कोई विमान वहां पर कभी खड़ा भी रहा होगा ।

हम लोग और आगे बढ़ गए और चलते-चलते मल्लिकार्जुन मंदिर पहुंचे ।

पाशुपत यज्ञ

मंदिर में पहुंचने के बाद वहां के पुजारी से उन्होंने मेरा परिचय करवा दिया । वह उनको जानता था तथा उनका काफी सम्मान करता था ।

उन्होंने पूरी प्रक्रिया के विषय में समझाया । वह टोकना मेरे हाथ में रखा हुआ था फर्क केवल इतना था कि उसे एक कपड़े से ढक दिया गया था ।

उन्होंने सारी व्यवस्था कर लेने का आश्वासन दिया और इसके लिए लगभग ₹25000 लगने का बताया जो हम लोगों ने उन्हें दे दिया ।

अगले दिन दोपहर को भोजन की व्यवस्था होनी थी उन्होंने 11 बजे विशेष पूजन के लिए मंदिर में आने के लिए कहा ।

इसके बाद हम लोग पूजन सामाग्री बेचने वाली एक दुकान पर पहुंचे !

वहां पर उन्होंने भगवान शिव के पूजन में काम आने वाली बहुत सारी वस्तुएं खरीदी ।

उसके बाद हम माता जी की श्रृंगार सामग्री तथा अन्य वस्तुएं लेने के लिए कपड़े की दुकान तथा ज्वेलरी शॉप

गए तथा वहां से यह सारी वस्तुएं लेने के बाद हम देवी मंदिर पहुंचे ।

वहां हमने पूजा अर्चना की तथा भेंट सामग्री चढ़ा दी ।

यह एक प्रकार से महामाया से अनुमति लेने जैसा था ।

उसके बाद हम वापस शिव मंदिर में पहुंचे तथा वहां विधिवत पूजा अर्चना करके हमने वहां भी भेंट सामग्री चढ़ाई और उसके बाद वापस विमान में बैठकर उस बंजारन के झोपड़े तक वापस आ गए ।

वहां आने के बाद रात को उन्होंने मुझे एक विशेष मंत्र देकर उसका जाप करने के लिए कहा ।

मैंने रात भर मंत्र का जाप किया ।

सुबह हुई !

लगभग 10.50 को हम मल्लिकार्जुन मंदिर में पहुंचे ।

वहां पुजारी जी से पहले ही बातचीत हो चुकी थी उन्होंने विशेष पूजन की व्यवस्था की हुई थी ।

उस दिव्य सानिध्य में बैठकर हम लोगों ने पूजन संपन्न किया लगभग एक घंटे का यज्ञ पशुपत मंत्रों के माध्यम से किया गया । जिसमे अनेक प्रकार की जड़ीबूटियों का हवन सामग्री के रूप मे प्रयोग किया गया ।

अंतिम चरण में एक लगभग नीले रंग के पुष्प से 108 आहुतियां दी जानी थी । वैसे पुष्प मैंने पहले कभी नहीं देखे थे । संभवतः उसी इलाके में होते होंगे । वह कुछ कुछ कनेर के फूलों के जैसे थे लेकिन आकार में उससे थोड़े और बड़े थे । प्रत्येक फूल में 11 पंखुड़ियाँ थी और सारी की सारी नीली थी ...... जिन के निचले हिस्से में हल्का सा सफेद रंग दिखाई देता था ।

भगवान पशुपति के मंत्रों के उच्चारण के साथ उन पुष्पों का हवन प्रारंभ हुआ ।

लगभग 80 आहुतियाँ हुई होंगी ।

जब यज्ञ कुंड में से अचानक नीली नीली लपटें निकलने लगी जो लगभग 3 फुट तक ऊपर जा रही थी ।

यह देखते ही पुजारी ने पास में खड़े हुए शिष्य को कुछ निर्देशित किया .....

उसने घी में डूबे हुए 11 धतूरों को एक साथ अग्नि में समर्पित कर दिया ....

उसके बाद अचानक वे लपटें सात आठ फुट तक लप लपाने लगी और उनका रंग गहरा लाल हो गया ।

गहरे लाल रंग की लपटों के बीच इस संसार के समस्त पशुओं के अधिपति देवाधिदेव महादेव पशुपति नाथ का स्वरुप परिलक्षित हुआ !

ऐसा लगा ....

जैसे ....

उन अग्नि की शिखाओं ने साक्षात महादेव का स्वरुप धारण कर लिया हो !

मैं उस दृश्य को देखकर स्तंभित सा बैठा रह गया ....

मेरे हाथ रुक गए....

मेरे पुष्प न डालने पर पुजारी ने मुझे घूरा और पुष्प डालने का इशारा किया ....

मेरी स्थिति ऐसी नहीं थी कि मैं पुष्प डाल पाता !

मैं तो अपने आराध्य के उस बिंब को मंत्रमुग्ध होकर देखने में व्यस्त था !

कुछ क्षणों के लिए वह बिंब मुझे दिखाई दिया उसके बाद वह स्वरुप विलुप्त हो गया।

पुजारी जी मेरे पुष्प डालने के इंतजार में रुके हुए थे ताकि अगले मंत्र का उच्चारण कर सके .....

लेकिन .....

मेरा ध्यान उधर नहीं था......

फिर जब मेरी नजर उनकी तरफ उठी तो
पुजारी ने पुनः क्रोधित नेत्रों से मेरी तरफ देखा और पुष्प डालने का इशारा किया .....
मैंने तुरंत वह पुष्प अग्नि को समर्पित कर दिया ।

फिर....
आगे की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई ।

इस दौरान बीच-बीच में अग्नि की लपटों के बीच में कई प्रकार की आकृतियां बनती बिगड़ती रही और मैं अपने आराध्य के उस दिव्य विश्वरूप को ध्यान करता हुआ पुष्प की आहुतियां देता रहा .....
हम देवी देवताओं के होने या ना होने के विषय में बहुत ज्यादा संशय करते हैं, लेकिन अगर आप किसी अच्छे साधक के द्वारा किए गए यज्ञ की बहुत सारी फोटो निकालें, तो उनमें से कई फोटो में आपको ऐसी आकृतियां दिखाई देंगी, जो आपके अनुष्ठान में प्रयोग किए जा रहे मंत्र के अधिपति देवी या देवता की आकृति से मिलती-जुलती होगी ।

मैंने पिछले दिनों ऐसी ही एक फोटो शेयर की थी जिसमें मेरे पाठक ने अग्नि में ओम की आकृति अपने आप प्रकट होने के विषय में जानकारी दी थी ।
खैर .....

इस प्रकार से हमारा वह पशुपति यज्ञ संपन्न हुआ !

उसके बाद ब्रह्म भोज का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ ग्यारह सौ के आसपास लोगों ने भोजन ग्रहण किया । जो सामग्री मंगाई गई थी वह पर्याप्त रही ।
उसके बाद हम भगवान शिव के श्री चरणों में प्रणाम करने के बाद देवी भ्रमरम्बिका के मंदिर पहुंचे ।
कई बार ऐसा होता है कि जब आप भोजन खुद बनाएं ....
तो....
आपको खाने की इच्छा नहीं होती ।
कई बार ऐसा होता है कि जब आप इस प्रकार से लोगों को भोजन करवा रहे हो.....
चाहे वह माता की खिचड़ी हो....
या कोई लंगर हो.....
जब आप इस प्रकार से लोगों को भोजन बांटते हैं ....

उन्हें खाता हुआ देखते हैं......

तो.....

जो तृप्ति होती है !

वह आपको अंदर से इतना भर देती है कि आपको ऐसा लगने लगता है कि आपको भूख नहीं लगी है और आपका पेट भरा हुआ है ।

वह तृप्ति का एहसास इतना गहरा होता है......

मेरे साथ भी वैसा ही हो रहा था !

मैं सुबह से भूखा था लेकिन मुझे कुछ खाने की इच्छा नहीं हो रही थी इसलिए मैंने मंदिर का प्रसाद भी थोड़ा सा ही ग्रहण किया ।

मुझे भ्रमराम्बिका मंदिर में छोड़कर वह बंजारन चली गई ।

उसने मुझसे कहा - मेरा कार्य यहां पर समाप्त होता है । अब तुम्हें देवकी गुरुकुल द्वारा दिए गए कामाख्या मंत्र का नौ हजार जाप करना है और उसके बाद मुझे याद करना ! मेरा विमान तुम्हें देवकी गुरुकल के पास पहुंचा देगा ....

मैंने सहमति में सिर हिलाया और मंदिर के पास एक चबूतरे पर चढ़कर जाप करने बैठ गया ।

समय आगे बढ़ता चला गया ....
मेरा मंत्र जाप जारी था और मैं धीरे-धीरे भाव समाधि में चला गया !
मुझे महामाया के बिंबात्मक दर्शन होने लगे ।
मुझे समय का पता नहीं चला ।
उसी प्रकार से बैठे-बैठे रात हो गई !
रात गहराने लगी थी और उस समय रात के लगभग 11 या 11:30 का समय रहा होगा, जब मेरी आंखें खुली ।
मैं उठकर किसी सुनसान इलाके की तरफ जाने लगा , जहां पर मैं मदलसा को याद करके वह विमान मँगवा सकूँ ।
मैं धीरे-धीरे जंगल की ओर बढ़ रहा था !
अचानक मुझे बड़े जोरों की भूख लगने लगी ।
मैंने सुबह से थोड़े से पंचामृत के अलावा कुछ भी नहीं खाया था ।
संभवतः 2 दिन से कुछ नहीं खाया था !

सामान्यतः तीन-चार दिन तक मैं बिना कुछ खाए आराम से रह लेता हूं....

लेकिन.....

अचानक मुझे भयंकर भूख लगने लगी !

ऐसा लगने लगा कि जैसे मुझे अगर अभी तुरंत कुछ नहीं मिला ....

तो मैं मर जाऊंगा !

इतनी तेज भूख ....

जिस रास्ते पर मैं चल रहा था वहां पर न रोशनी थी और ना ही कोई दूसरा आदमी या औरत आता जाता दिखाई दे रहा था !

खाने की चीज की व्यवस्था होना तो असंभव सी बात थी।

मैं किसी प्रकार अपने पेट को हाथों से पकड़े हुए चला जा रहा था ....

तभी ....

अचानक !

किसी ने मुझे आवाज दी !

मुझे लगा कि मुझे भ्रम हुआ है....

इतनी रात को मुझे कौन आवाज देगा ?

लेकिन....

तभी....

दोबारा से वह आवाज आई ।

इस बार वह आवाज पहले की तुलना में पास थी । वह किसी महिला की आवाज थी !

मैं ठिठक कर रुक गया !

अंधेरे में कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था !

कुछ क्षणों के बाद मुझे एक महिला की आकृति दिखाई देने लगी ....

वह धीरे धीरे मेरे पास आई !

मेरे पास आकर उसने पूछा - भूख लगी है ?

मेरे मुंह से अनायास निकल गया -हां ।

उसने कहा - ले चने खा ले ।

एक कपड़े की पोटली उसने मेरा हाथ पकड़ कर उसमें रख दी और आगे चली गई ।

मुझे सोचने का अवसर भी नहीं मिला ।

जैसे ही मैं थोड़ा सा स्थिर बुद्धि हुआ तो मैंने आँखें फाड़ फाड़ कर सामने की तरफ देखने का प्रयास किया .....

वह अज्ञात महिला उस अंधेरे में लुप्त हो चुकी थी !

लेकिन......

मेरे हाथ में थी.....

चने से भरी हुई वह कपड़े की पोटली !

घनघोर अंधेरी रात में इस तरह चने की पोटली पहुंचाने के लिए कौन आया होगा ?

यह आप समझ सकते हैं ।

इतने जोरों की भूख लगी थी कि यह सब सोचने से पहले मैंने पोटली खोलकर चने को उदरस्थ कर लिया ।

चना खा लेने के बाद जब पेट पूरा भरा.....

तब मुझे एहसास हुआ .....

कि.....

वास्तव में इतनी रात को कोई अनजान महिला मेरे लिए चना क्यों लेकर आएगी ?

उसे कैसे पता चला होगा कि मुझे भूख लगी है ?

फिर समझ आया !

जरूर माई ही रही होगी ।

क्योंकि.....

उसी को अपने बच्चों की इतनी फिक्र होती है .....

चने खा लेने के बाद अच्छा लग रहा था !

भूख काफी हद तक शांत हो चुकी थी ।

मैं फिर आगे बढ़ने लगा और एक सुनसान स्थान तक पहुंच गया ।

मैंने मदालसा बंजारन को याद किया ...

वह विमान अचानक वहां पर प्रकट हो गया ।

उसकी पंखुड़ियां उसी प्रकार से खुली और मैं उस पर चढ़ गया ।

मेरे चढ़ते ही वह विमान प्रारम्भ मे घूमने के बाद आसमान में उड़ता चला गया ।

लगभग 2-3 मिनट के बाद वह उतरा ।

जब वह खुला तो मैं देवकी गुरुकल के आश्रम में मौजूद था । सामने देवकी गुरुकल का कक्ष दिखाई दे रहा था ।

जैसे ही मैं उस कक्ष में पहुंचा ....

वहाँ देवकी गुरुकल मेरी प्रतीक्षा कर रही थी !

वापस पुरुष शरीर की प्राप्ति

देवकी गुरुक्कल का पूरा शरीर एक दिव्य आभा से जगमगा रहा था !
वह किसी देवी की तरह दिखाई दे रही थी !!
मैं उनका गुलाबी आभा मंडल स्पष्ट देख रहा था ....

मेरे पास पहुंचते ही उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा....

जैसे ही उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा मुझे एक बिजली का झटका लगा !
और हम दोनों वहां से लुप्त हो गए !
उसके बाद हम दोनों उसी गुफा में प्रकट हो गए जहां मीनम्मा से मेरी मुलाकात हुई थी !
देवकी गुरुकल ने मुझे झरने में स्नान करके आने के लिए कहा । दिगंबर अवस्था में झरने में स्नान करने के बाद में वापस उनके पास लौटा ।
अभी भी मैं स्त्री स्वरुप में ही था ।
उन्होंने मुझे पद्मासन में बैठने के लिए कहा । मैं पद्मासन में बैठ गया । उसके बाद उन्होंने मेरे माथे पर अपना हाथ

रखा और उसके बाद सहस्रार वाले बिंदु पर और मेरी शिखाभाग पर भी हाथ रखा ।

उसी प्रकार से उन्होंने मेरे सभी चक्रों पर अपने अंगूठे का स्पर्श किया .....

दायें पैर के अंगूठे से मेरी नाभि पर स्पर्श किया.....

नाभि पर उनके पैरों का स्पर्श होते ही मुझे वहां पर तीव्र जलन का आभास होने लगा !

वह जलन बढ़ने लगी ।

मुझे अत्यंत पीड़ा महसूस होने लगी !

मैं दर्द से चीखने लगा ....

अंगूठा मेरी नाभि में अभी भी लगा हुआ था !

उनका एक पैर जमीन पर था .....

दूसरे पैर का अंगूठा पूरी ताकत से मेरे नाभि स्थल में दबाव बनाता हुआ मौजूद था !

मुझे ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने अंगूठे को मेरी नाभि के अंदर घुसा देना चाहती हों !

वह जितना दबाव डालती थी उतना मुझे दर्द होने लगता था ....

लगभग एक मिनट तक यह स्थिति रही !

फिर संभवतः दर्द की अधिकता से मैं बेहोश हो गया......

अगले दिन जब मैं होश में आया तो गुफा के अंदर बहते हुए पानी में लेटा हुआ था.....

अभी भी मुझे अपने शरीर में तपिश का एहसास हो रहा था !

लेकिन .....

ताकत का एहसास भी हो रहा था !

जैसे कि मैं सामान्य हो गया हूं .....

मैंने अपने शरीर की तरफ देखा तो मुझे बहुत ज्यादा खुशी हुई !

क्योंकि.....

मैं वापस पुरुष बन चुका था ।

मैं वापस अघोरानंद बन चुका था ......

इतने दिनों तक स्त्री रुप में रहने के बाद अपने वास्तविक रुप में वापस लौट जाना किसी लॉटरी के लगने से कम नहीं था और मैं खुशी से उठकर नाचने लगा ......

जब मैं थोड़ा सामान्य हुआ तो मैंने गुफा में एक चक्कर लगाया !

वहां कोई नहीं था !
गुफा पूरी तरह खाली पड़ी थी......

यह बड़ी खुशी की बात थी कि मैं वापस अपने मूल स्वरुप में आ चुका था .....
मैंने कपालिनी को याद करने का प्रयास किया !
लगभग आधे घंटे तक प्रयास करने के बाद कपालिनी की उपस्थिति का आभास हुआ ....
मेरे कानों के पास हल्की सी सरसराहट मुझे महसूस हुई !
कपालिनी की !
उसकी फुसफुसाती आवाज मेरे कानों में गूंजी - यह निषिद्ध क्षेत्र है !
यहां मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकती !
लेकिन सावधान रहना एक तांत्रिक आक्रमण कर सकता है......

इतना बता कर वह शांत हो गई....
फिर मैंने काफी प्रयास किया लेकिन कोई आवाज नहीं आई ।

मैंने सोचा कि गुरुदेव को याद करता हूं.....

लेकिन फिर मुझे लगा कि ऐसी कोई समस्या तो आई नहीं है.... फिर गुरुदेव को कष्ट देने की क्या आवश्यकता है ।

यह सोचकर मैं शांत हो गया और बाहर झरने के पानी में स्नान करने के बाद अंदर आकर चबूतरे पर बैठ गया ।
उस समय सुबह के लगभग 8 या 9 बजे होंगे, क्योंकि धूप की गर्मी बहुत तेज नहीं हुई थी ।
स्नान करके आने के बाद चबूतरे पर बैठ कर मैं अपनी नित्य की पूजा संपन्न करने लगा । गुरु मंत्र का जाप करते करते मेरे मानस पटल पर एक भयानक पुरुष की छवि दिखाई देने लगी ।
वह लगभग साढ़े छह फुट ऊंचा रहा होगा ।
दुबला पतला शरीर होने के कारण वह और भी लंबा दिखाई दे रहा था ।
किसी बांस की तरह उसका शरीर था ।
धूप की अधिकता की वजह से उसका गोरा रंग तांबई हो चुका था ।
उसकी आंखें बड़ी बड़ी थी !

सर के बाल करीने से बांधकर चोटी की शक्ल में लटके हुए थे और हाथ में मोटा सा दंड रखा हुआ था, जिस के ऊपरी हिस्से में एक खोपड़ी मूठ की तरह लगी हुई थी ! उसके शरीर में कमर पर बंधी हुई काले रंग की एक लंगोट के अलावा कुछ भी नहीं था ।

गले में काले काले मनको वाली माला पड़ी हुई थी , जिसका आकार सामान्य मनको से काफी बड़ा था , लगभग टेबल टेनिस के बाल के आकार के मनके थे.... वह भी बिल्कुल काले काले.....

ऐसा प्रतीत होता था जैसे किसी पत्थर के बने हुए हैं! संभवत काली हकीक के पत्थर के दाने रहे होंगे !वे चमकदार थे !कुल मिलाकर उस तांत्रिक का व्यक्तित्व काफी प्रभावशाली और भयानक लग रहा था ....

मुझे आभास हुआ कि संभवत यही वो तांत्रिक है... जिसके विषय में कपालिनी ने मुझे सचेत रहने के लिए कहा था ।   मन में थोड़ी सी चिंता उठी की निषिद्ध क्षेत्र होने की वजह से मेरी शक्तियां काम कर पाएगी या नहीं ? यह विचार मन में आया !

फिर मैंने उसे छिटककर परे किया और पूजन संपन्न करने के बाद चबूतरे पर बैठ कर सोचने लगा कि ऐसी परिस्थिति में क्या किया जाना चाहिए ?
तभी मन में विचार आया की भगवती जब समय आएगा तब कोई ना कोई मार्ग अवश्य दिखा देगी ।

मैं आराम से चबूतरे पर थोड़ी देर के लिए लेट गया ।
गुफा के बाहर झरना गिर रहा था !
झरने के पानी की वजह से जो हवा चल रही थी वह भी काफी ठंडी ठंडी चल रही थी !
मुझे उस समय कोई काम नहीं था !
पूजन संपन्न हो गया तो चबूतरे पर लेटते ही मेरी आंख लग गई ।
सुबह भूख का आभास होना चाहिए था लेकिन वैसा कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था ।
संभवत: भगवती के द्वारा दिए गए उन चनों की वजह से ऐसा रहा होगा .....
पेट भरा हुआ महसूस हो रहा था !
अपने अंदर में अतिरिक्त शक्ति का आभास भी कर रहा था !

श्यामा साधना........

लगभग एक दो घंटे का समय बीता होगा जिसके बाद देवकी गुरुक्कल गुफा के मुहाने से उड़ती हुई अंदर आई ....

उनके साथ में थी.....

चंपा !

चंपा बंजारन !!

उसकी वेशभूषा बंजारन महिलाओं के जैसी ही थी लेकिन उसका सौंदर्य अद्भुत था .....

उसका रंग बिल्कुल वैसा था जैसे कि दूध में हल्का सा केसर मिला दिया गया !

ऐसा रंग जिसमे अगर आप अपनी उंगली से छू भी दें तो लाल रंग का निशान बन जाए ।

उसकी देहयष्टि बिल्कुल कसी हुई थी !

जैसा आमतौर पर कसरती लोगों की होती है ।

अब यह तो आप लोग समझ ही गए होंगे कि वह कलारिपयट्टू जैसे मार्शल आर्ट की प्रशिक्षित युवती थी !

उसका शरीर गठा हुआ होना ही था .....

उसके बाल घने काले रंग के थे और कमर तक बिखरे थे .....

अंडाकार चेहरे में दो कमानीदार भवे और उनके नीचे कमल की पंखुड़ियों के समान खूबसूरत और बोलती हुई आंखें......

सुर्ख गुलाबी रंग के फूल जैसे होंठ !

जैसे कुछ बोलना चाहते हो....

सुराही दार गर्दन से नजर फिसलती हुई उन्नत वक्ष स्थलों पर जाकर टिक जाती और वहां से जब नजरे हटी तो पतली कमर के बाद पुनः विस्तृत जघन और कदली स्तम्भ जैसे पैरों से होते हुए जब मेरी नजर नीचे पहुंची .....

उसके पांव बहुत सुडौल थे ...

जैसे कि मंदिरों में बनी हुई मूर्तियों के होते हैं । मांसल और सुंदर !!

कुल मिलाकर वह सौंदर्य की प्रतिकृति थी ।

मैं अवाक उसे देखता रह गया ....

क्योंकि वैसा सौंदर्य किसी को भी अभिभूत कर देने के लिए सक्षम था !

उसके नाक नक्श मदालसा से मिलते जुलते थे लेकिन यह उससे भी ज्यादा खूबसूरत थी !

उस अद्भुत सौंदर्य की स्वामिनी ने मुझे हाथ जोड़कर प्रणाम किया....

तब मैं होश में आया !

और मैंने भी हाथ जोड़कर उसके प्रणाम का उत्तर दिया !

देवकी मेरी इस अवस्था को देखकर मुस्कुरा उठी....

और पूछा- अघोरानंद ! साधना कर पाओगे ?

उनके इस कटाक्ष को सुनकर मैं संभल गया !

मैंने कहा - इस युवती में तो साक्षात त्रिपुर सुंदरी का सौंदर्य है..... भगवती की इच्छा रही तो अवश्य यह साधना में कर पाऊंगा !

देवकी गुरु कल ने हम दोनों को साथ में बैठा कर कुछ पूजन संपन्न करवाया ....

कुछ विशेष तांत्रिक क्रियाएं संपन्न करवाई !

देवकी गुरुक्कल ने अपनी आँखें एक क्षण के लिए बंद की .....

तभी उनके चेहरे पर तनाव की रेखाएं दिखने लगी !

मैंने पूछा - क्या हुआ ?

वे बोली - कुछ नहीं ! मैं देख लूंगी ! तुम साधना पूर्ण करो !

हम दोनों झरने में स्नान करके आए और चबूतरे में आमने सामने बैठ गए !
देवकी गुरुक्कल ने हमारे चारों तरफ एक विशेष रक्षा घेरा बनाया !
अपनी कमर में बंधी हुई थैली मे उन्होंने हाथ डाला और उसके अंदर से काले चावल निकाले और उनको हमारे चारों तरफ गोल घेरे में डाल दिया और उनके जाने के बाद हमें साधना प्रारंभ करने का निर्देश देकर वह गुफा के मुहाने की ओर चली गई .....

वहां उन्होंने पुनः वही क्रिया संपन्न की !
मैं उनके मुख से काल भैरव की स्तुति सुन रहा था ....

लं लं लं लम्ब दन्तं ल ल ल ल लुलितं दीर्घ जिह्वाकरालं ।
धूं धूं धूं धूम्रवर्णम स्फुट विकृत मुखंमासुरं भीम रूपं ॥

रुं रुं रुं रुण्डमालं रुधिरमय मुखं ताम्र नेत्रं विशालं ।
नं नं नं नग्नरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥

स्तुति पूर्ण करने के बाद उन्होंने वहां भी काले चावल के दाने बिखेरे.....

और जिस प्रकार से आई थी उसी प्रकार से झरने के पानी से होती हुई बाहर चली गई .....

उस समय दोपहर के लगभग 12:00 बजे होंगे
हम दोनों का मंत्र जाप प्रारंभ हो चुका था ....
जैसा कि आप लोग जानते हैं कि श्यामा साधना में निर्वस्त्र अवस्था में स्त्री और पुरुष को एक दूसरे के सामने बैठना होता है ....
और.....
आंखें खुली रख के 24 घंटे तक एक ही आसन पर मंत्र जाप करना होता है !
इस पूरे कालखंड में ना तो मन में और ना ही शरीर में किसी प्रकार का विकार आना चाहिए!
यदि ऐसा कुछ भी हुआ तो दोनों साधकों की मृत्यु अवश्यंभावी होती है ।

यह तंत्र क्षेत्र की सबसे उच्च श्रेणी की साधना है !
यह तलवार की धार पर चलने के समान होती है!
यह साधना तभी करनी चाहिए जब आपके पास कोई
ऐसा गुरु हो जिसने स्वयं श्यामा साधना संपन्न की हो ।

यदि किसी भी कारणवश श्यामा साधना के आसन पर
बैठने के बाद साधक या साधिका दोनों मे से कोई भी
विचलित हो जाए.....
कोई ऐसी घटना हो जाए या कोई ऐसा दृश्य सामने
आ जाए जिसकी वजह से मानस में विचलन पैदा हो
और अगर साधक या साधिका दोनों में से कोई भी एक
अपना आसन छोड़ दें .....
तब भी सामान्य परिस्थितियों में या तो दोनों की मृत्यु
हो जाएगी या फिर दोनों की मानसिक अवस्था विक्षिप्त
अर्थात पागल जैसी हो जाएगी ।

इसलिए ऐसी साधना तभी करनी चाहिए जब आप
साधना के क्षेत्र में अनुभवी हो !
आपके पास अनुभवी गुरु हो !
और आप यह रिस्क लेने के लिए तैयार हो .....

मृत्यु हो गई तब आप का जीवन समाप्त हो जाएगा और अगर आप विक्षिप्त या पागल हो गए तब भी आपका जीवन होना या ना होना बराबर है .....

उसके बाद आपके पास सड़क पर भीख मांगने के अलावा कोई और रास्ता नहीं बचेगा ....
इसलिए इन साधनाओं में प्रवेश करने के लिए कभी भी किसी नौसिखिये स्वयंभू बाबा या तांत्रिक के साथ.....
या अपने आप.....
चलो करके देखते हैं वाला प्रयोग हरगिज हरगिज़ ना करें ..... यह आपके लिए भयंकर घातक हो सकता है ।

इसलिए इस प्रकार की साधना को समाज से अलग गुप्त स्थानों पर संपन्न किया जाता है ।
जितने ज्यादा आप मानवीय संपर्क में अर्थात लोगों के संपर्क में रहेंगे उतने ज्यादा लोगों की विचारधारा उनके अंदर की वासनाएं उनके अंदर की भावनाएं और उनके अंदर के गलत विचार आपको प्रभावित करेंगे ....
उदाहरण के लिए यदि आप किसी ऐसे घर में बैठकर साधना संपन्न कर रहे हैं.....

जहां दूसरे कमरे में कोई और स्त्री पुरुष आपसी संसर्ग में लगा हुआ है तो आप यह मान कर चलिए कि उसके विकार आप को प्रभावित कर सकते हैं....
आपके मन मे कामभाव उत्पन्न हो सकता है। ऐसी स्थिति में आपकी साधना खंडित हो सकती है।

कुल मिलाकर यह साधना गृहस्थ में रहने वाले व्यक्तियों के लिए नहीं है।
यह केवल उन तांत्रिकों के लिए है जो गृहस्थ और समाज दोनों को छोड़कर साधना और सिद्धि के राह पर निकल चुके हैं ....
जिन्हें ना अपने शरीर का मोह है और ना ही किसी प्रकार की चिंता.....

अघोरानंद के विषय मे जैसा कि आप लोग जानते हैं....
गृहस्थ जीवन में होते हुए भी एक अघोरी तांत्रिक का जीवन व्यतीत कर रहा हूं !
मेरी पत्नी का स्वर्गवास हो चुका है !
मेरे परिवार में कोई है ही नहीं...
इसलिए किसी भी प्रकार के सामाजिक बंधन में मैं बंधा हुआ नहीं हूँ !

जीवन के प्रति बहुत ज्यादा मोह भी नहीं है...
क्योंकि जब कोई संबंध ही नहीं है ....
तो मोह तो अपने आप समाप्त हो जाता है ।

ऐसी स्थिति में आप इस प्रकार की साधना में संलग्न हो सकते हैं क्योंकि विपरीत परिस्थिति आने पर भी आपके चिंता करने की कोई वजह नहीं है...
या यूं कह लीजिए कि पागल हो जाएंगे तो भी आप सड़क पर घूम सकते हैं ....
किसी को दिक्कत नहीं होगी....
अन्यथा आपके परिवार वाले रो-रोकर पागल हो जाएंगे !

खैर .....

मंत्र जप प्रारंभ हो चुका था।
मंत्र की ध्वनि गुफा के अंदर टकरा टकरा कर गूंज रही थी और एक अद्भुत वातावरण की सृष्टि कर रही थी ।
हम दोनों लगभग एक ही सुर में देवी कामाख्या के मंत्र का उच्चारण कर रहे थे ।

मंत्र जाप जैसे जैसे आगे बढ़ता जा रहा था वातावरण में धीरे धीरे ऊष्मा बढ़ने लगी थी ।

लगभग 3 घंटे के मंत्र जाप के बाद उस गुफा का तापमान बढ़ने लगा ....

आप कल्पना करें कि जिस गुफा के सामने पानी का झरना गिर रहा हो....

उस गुफा का तापमान अगर बढ़ने लगे तो उस मंत्र जाप में कितनी शक्ति और ऊर्जा होनी चाहिए । धीरे-धीरे कमरे का तापमान बढ़ रहा था । जो बढ़ते बढ़ते लगभग गर्मी के दिनों में जब धूप चढ़ती है उस समय के तापमान के बराबर हो चुका था । यानी कि लगभग 35-40 डिग्री के करीब तापमान रहा होगा ।

हमारे शरीर से पसीने की बूंदे धार की तरह बहती जा रही थी ।

शाम के ढलने तक इसी प्रकार गुफा का तापमान बढ़ता रहा ।

ऐसा लग रहा था जैसे हम किसी अग्निकुंड के बाजू में बैठे हुए हैं ।

शरीर की चमड़ी में जितनी गर्मी लग रही थी वह ऐसा भाव पैदा कर रही थी जैसे चमड़ी अब जलने ही वाली हो !

यह आभास कुछ-कुछ वैसा था जैसा श्मशान मे दाह संस्कार मे होता है ...

अगर आपने किसी का दाह संस्कार करीब से देखा हो । जब अग्नि की लपटें आकाश छूने को आतुर होने लगती है, उस समय आप चिता के पास दो या 3 फीट की दूरी पर गए हो, तो जिस प्रकार की जलन का आभास हमारी चमड़ी में होता है, ठीक वैसा ही आभास मुझे हो रहा था ....

चम्पा का पूरा शरीर सुर्ख लाल हो चुका था !

कमरे की दीवाल पर एक मशाल लगी हुई थी....

जो अंधेरा होते ही अपने आप जल उठी !

अब गुफा के अंदर हल्की-हल्की पीली रोशनी बिखरी हुई थी ।

मशाल के जलने के बाद...

लगभग 7 बजे के आसपास.....

धीरे-धीरे गुफा का तापमान कम होना प्रारंभ हो गया....

उसके बाद अचानक मशाल की रोशनी जो शुरू में एकदम हल्की सी थी ...

वह धीरे-धीरे बढ़ने लगी....

मशाल छोटा सा था !

लगभग एक बड़ी कटोरी जैसे आकार का ...

जिसमें कोई अजीब सी चीज पड़ी हुई थी ....

जो जलने पर लार जैसे पिघलती थी और रोशनी करती थी ।

रात के लगभग 8 बजे होंगे ।

जब हवा तेज चलने लगी ...

हवा इतनी तेज चल रही थी कि झरने का पानी गुफा के अंदर तक आ रहा था ....

उसके छींटे हम दोनों के ऊपर पड रहे थे ।

ठंडी हवा और पानी के वे छींटे ठंड का एहसास करा रहे थे ....

ऐसी स्थिति में भी आसन को छोड़ना संभव नहीं था ।

क्योंकि....

साधना के नियम अनुसार एक बार आसन में बैठ जाने के बाद पूर्णता से पहले उसे नहीं छोड़ना चाहिए .....

धीरे-धीरे समय आगे बढ़ता जा रहा था ....

हवाओं की गति भी बढ़ती जा रही थी....

जिसने धीरे-धीरे तूफान की शक्ल ले ली !

पानी की बूंदे टपकने की आवाज धीरे धीरे आने लगी

और फिर जोरो से बारिश होने लगी ।

अंदर पानी और बाहर तूफान !

कुल मिलाकर वातावरण काफी भयानक सा हो चुका था ।

गुफा के अंदर हमारी श्यामा साधना चल रही थी ।

यह सुनने में जितना आसान और आकर्षक लगता है

करने मे इतना आसान नहीं है !

किसी भी पुरुष के लिए इस संसार का सबसे बड़ा मोह

या आकर्षण है सुंदर युवा स्त्री !

अगर आप अपने आसपास देखें तो जितने भी चित्र विचित्र प्रकार के प्रसंग आपको सुनाई देते हैं उनमें से अधिकांश के पीछे पुरुष का स्त्री के प्रति यही मोह प्रधान कारक होता है ।

कभी पत्नी के रूप में !

कभी प्रेमिका के रूप में !

तो कभी वेश्या के रूप में !!

स्त्री का मन मोहिनी स्वरूप पुरुष को अपने मार्ग से हमेशा विचलित करता रहा है....

और भविष्य में भी करता रहेगा ....

क्योंकि .....

वह उस महामाया की सबसे बड़ी माया है !!!

अब आप स्वयं कल्पना करें !

एक अत्यंत सुंदर और यौवनवान सुंदर स्त्री !

पूर्ण निर्वस्त्र अवस्था में !

आपके सामने !

एक निर्जन गुफा में मौजूद है !

जहां आपको देखने वाला कोई नहीं !

आप हर प्रकार से स्वतंत्र है.....

ऐसी स्थिति में.....

आपको अपने मन पर नियंत्रण रखना है ॥

आपको अपने शरीर पर नियंत्रण रखना है ॥

उसके साथ-साथ आपको अपनी आंखें खुली रखकर बिना किसी वासना या विचलन के मंत्र जाप भी करना है ॥

यह सारी चीजें इतनी जटिल है जो कि आप कल्पना कर सकते हैं ।

करने के बारे में उसके बाद सोचिएगा !

यह कुछ कुछ वैसा ही है जैसे किसी 4 दिन के भूखे व्यक्ति के सामने छप्पन भोग की थाली पड़ी हो.....

उसके बावजूद न तो उसे उस छप्पन भोग में से कोई भी चीज ग्रहण करने की अनुमति है....

और न ही उस भोजन को देखकर उसके मुंह में लार आनी चाहिए !!!

इतनी जटिल है यह साधना ।

धन्य है वह साधक.....

जो इस साधना को संपन्न कर पाते हैं !

और भगवती के कृपा कटाक्ष का अनुभव कर पाते हैं !!

हवा इतनी तेज चल रही थी कि जब उसके थपेड़े आते थे तो ऐसा लगता था जैसे हम आसन से नीचे गिर जाएंगे ....

लेकिन वैसा कुछ भी नहीं हुआ ।

इस प्रकार का तूफानी मंजर लगभग एक घंटे तक चलता रहा ।

हम दोनों उसी प्रकार मंत्र जाप करते रहे ।

धीरे-धीरे तूफान शांत होने लगा ....

अब बिजलियों का कड़कना प्रारंभ हो गया ।

बिजलियों की कड़क गुफा के मुहाने पर किसी फ्लैशलाइट की तरह चमकती थी ...

उसके बाद अंधेरा छा जाता था ।

केवल बारिश की बूंदों के गिरने की आवाज सुनाई देती थी ....

कुछ समय के बाद फिर से बिजली कड़कती ....

रोशनी का धमाका होता ......

फिर से सब कुछ अंधेरे के गर्त में छुप जाता ।

प्रकृति का तांडव जारी था !

ऐसी स्थिति में अपने आप को संभालना थोड़ा मुश्किल होता है !

हम दोनों अपने आसन पर बैठे हुए थे ।

दीवाल पर लगी मशाल फफक फफक कर जल रही थी और वापस अपने सामान्य स्थिति में आ जाती थी ।

गनीमत यह थी कि वह बुझी नहीं थी ।

तभी ....

जोर की हवा चली और इस बार वह मशाल बुझ गई । मशाल के बुझते ही गुफा के अंदर धुआं फैलने लगा । काफी विचित्र धुआँ था । जिसकी सुगंध कुछ पत्तों के जलने के जैसी थी और कुछ गुग्गुल के जलने जैसी मिलती-जुलती किसी राल की गंध आ रही थी ....

लेकिन धुएं की वजह से सांस लेने में थोड़ी सी परेशानी हो रही थी ...

कुछ क्षण वैसे ही धुआँ उठता रहा उसके बाद फिर से हवा का एक झोंका आया ....

और वह मशाल फिर से जल उठे ।

इस बार उसकी रोशनी पहले के जैसे पीली नहीं थी , बल्कि मध्यम नीले रंग की लौ जल रही थी ।

लपट का आकार सामान्य मशाल के जैसा नहीं था । वह बिल्कुल एक आंख के जैसे लग रही थी । बिलकुल वैसे ही जैसे भगवान शिव के तीसरे नेत्र की स्थिति होती है !

खड़े हुए आंख के जैसी !!

उस अंडाकार लपट से नीला नीला प्रकाश चारों तरफ बिखर रहा था ....

उसका आकार लगभग 3 इंच के आसपास रहा होगा ।

धीरे-धीरे वह आकार बढ़ने लगा और उसकी आकृति लगभग एक फुट लंबे आंख के जैसी हो गई । जिसमें से नीले रंग की रोशनी फैली हुई थी ,।

हवाएं शांत हो चुकी थी ।

पानी भी अब रिमझिम बारिश का रूप ले चुका था ।

तूफानी हवाएं और बिजलिओं का कड़कना बंद हो चुका था ।

माहौल लगभग शांत हो चुका था ...

इसी प्रकार मंत्र जाप चलता रहा ....

रात के 11 बजे के आसपास वह मशाल बुझ गई ।

गुफा के अंदर अंधेरा छा गया ।

गुफा मे अचानक अट्टहास की आवाज आने लगी !

ऐसा लग रहा था जैसे वहां बहुत सारी महिलाएं एक साथ अट्टहास कर रही हो ....

कुछ देर तक अट्टहास की ध्वनिया आती रही जो कुछ समय के बाद खिलखिलाहट की ध्वनियों में बदल गई .....

यह कुछ कुछ वैसा था जैसे कुछ महिलाएं आपस में चुहलवाजी कर रही हो और खिल खिला रही हो ।

दबी दबी सी वह आवाज भी उस माहौल में रीढ़ की हड्डियों में कंपकंपी पैदा कर रही थी ....

हम दोनों का मंत्र जाप जारी था ।

अचानक आवाजे बंद हो गई !

पूर्ण शांति छा गई !

कुछ देर की शांति के बाद वैसी ध्वनियाँ आनी चालू हो गई .....

जैसा कि बंगाल की महिलाओं को दुर्गा पूजा के समय करते हुए आप देखते हैं ...

जीभ को मोड़कर उलु लु लु लु जैसी आवाज करते हैं ....

ऐसा महसूस हो रहा था ....

जैसे बहुत सारी औरतें उसी प्रकार की आवाज कर रही हो ।

उन अजीब सी आवाजों के बीच हम बैठे हुए थे ।

रोशनी बिल्कुल नहीं थी ।

पूरा अंधेरा छाया हुआ था !

यह क्रम भी लगभग आधे घंटे में समाप्त हो गया !

उसके बाद फिर से वह मशाल अपने आप जलने लगा ।

इस बार उसकी रोशनी अपनी सामान्य रोशनी की तरह ही थी ।

उसमें से उसी प्रकार हल्के पीले रंग की रोशनी आ रही थी ।

उसे देखकर मुझे शांति का अनुभव हुआ ....

शायद परीक्षण समाप्त हो गया है और परिस्थितियां सामान्य हो गई है ....

लेकिन अभी भी लगभग 12 घंटे का मंत्र जाप बचा हुआ था .....

तंत्र साधना में अर्ध रात्रि का विशेष महत्व होता है ।

इसी समय में अनुभूतियां या इष्ट के आभास का समय होता है । अर्ध रात्रि का समय रात के 11:30 बजे से लेकर 1:00 बजे तक के बीच का समय माना जाता है ....

दिव्य दर्शन.......

लगभग 12:00 बजे का समय रहा होगा ....
गुफा के अंदर मशाल की हल्की पीली रोशनी बिखरी हुई थी ।
बाहर का वातावरण अब लगभग शांत हो चुका था ।
गुफा की दीवारें पानी की नमी की वजह से चमकदार दिख रही थी ।
लगभग 12:30 बजे के आसपास गुफा के मुहाने पर फिर से बिजली कड़की !

वहां....
एक अत्यंत सुंदर मुख मंडल दिखाई देने लगा । जिसके बाकी शरीर का कुछ आभास नहीं हो रहा था ।
केवल गर्दन के ऊपर का हिस्सा दिखाई दे रहा था ।
सिर पर स्वर्ण मुकुट जटित वह एक सुंदर स्त्री का मुख मंडल था ....
जिसके माथे पर लाल रंग की गोल बिंदी लगी हुई थी ....

उस चेहरे का आकार लगभग उस गुफा के मुहाने के बराबर था यानी कि लगभग 10 से 15 फीट के व्यास का वह चेहरा रहा होगा ...

बाकी शरीर नहीं दिख रहा था ...

लेकिन अगर वह शरीर भी मौजूद होता तो संभवतः वह आकृति लगभग 100 फुट की होती .....

उस चेहरे को देखकर अत्यंत आनंद की अनुभूति हो रही थी ....

श्याम वर्णी महामाया का वह विश्वरुप गुफा के मुहाने पर कुछ देर तक दिखता रहा ....

चंपा शांत भाव से बैठी हुई मंत्र जाप कर रही थी क्योंकि उसका चेहरा मेरी ओर था और उसकी पीठ गुफा के मुहाने की तरफ थी !

यह चित्र विचित्र प्रकार के जो प्रसंग हो रहे थे उनका साक्षी मुझे होना था और साथ-साथ मंत्र जाप करना था ।

बस 2-3 सेकेंड के लिए वह दिव्य आकृति उसी प्रकार गुफा के मुहाने पर दिखाई देती रही और उसके बाद आकृति के चेहरे पर एक मंद मुस्कान आई और आकृति लुप्त हो गई ....

भगवती का सानिध्य और उनका आशीर्वाद दोनों प्राप्त हो चुका था ....

यह अत्यंत खुशी की बात थी !

लेकिन अभी साधना पूर्ण नहीं हुई थी !

अभी भी 10 घंटे के आसपास का मंत्र जाप बचा हुआ था ।

समय धीरे-धीरे आगे बढ़ता जा रहा था ।

मैं श्यामा साधना में एक बार पहले भी प्रवृत्त हो चुका था इसलिए आत्म नियंत्रण कर पा रहा था ।

चंपा भी अपनी आयु के हिसाब से काफी संयमित अवस्था में बैठी हुई थी ।

आप जानते होंगे कि 15 से लेकर 22 वर्ष तक का जो समय होता है उस अवस्था में सबसे ज्यादा काम भाव मानस मे उठता है क्योंकि उसी समय सबसे ज्यादा काम शक्ति शरीर में मौजूद रहती है.....

उस आयु में अपने आप को नियंत्रण करना सबसे कठिन काम होता है...

चंपा उसी आयु की थी !

लेकिन बेहद तटस्थ भाव से बेहद सामान्य भाव से वह मंत्र जाप कर रही थी ।

उसे देखकर ऐसा नहीं लगता था कि यह बालिका है वह किसी सिद्ध साधिका की तरह मंत्र जाप कर रही थी .....

ब्रह्म मुहूर्त का समय रहा होगा जब कमरे के अंदर सफेद रंग का धुआँ फैलने लगा !
ऐसा तब होता है जब देवाधिदेव महादेव या उनके स्वरुप साक्षात गुरुदेव की उपस्थिति होने वाली हो और यह दोनों ही स्थितियां मेरे लिए जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य हैं ....
मैं प्रसन्न होकर उस क्षण की प्रतीक्षा करने लगा तभी उस धुंध ने एक आकार लेना प्रारंभ कर दिया.....

उस आकार के बीच में दिखाई दिया देवधिदेव महादेव का दिव्य स्वरुप .....
कर्पूर के समान गौर वर्ण वाले....
जो करुणा के साक्षात् अवतार हैं।
जिनकी आंखों मे अपने भक्तों के लिए और इस संपूर्ण सृष्टि के लिए केवल करुणा का भाव ही विद्यमान रहता है ....
जो उनकी आधी खुली आंखों से बिखरता रहता है !

वे जो इस संपूर्ण सृष्टि का मूल है वे जो समस्त सृष्टि के सार हैं।

ऐसे साक्षात् देवाधिदेव महादेव......

अपने गले में भुजंग अर्थात सर्प का हार धारण किए हुए मौजूद थे ......

साथ मे थी मंद स्मित के साथ महामाया ......

किसी अज्ञात स्रोत से गुंजरित हो रहा था वह श्लोक जो हम पूजन के अंत में उच्चारण करते हैं.....

कर्पूरगौरं.....

करुणावतारं.....

संसारसारं.....

भुजगेन्द्रहारम्.....

सदा बसन्तं.....

हृदयारविन्दे.....

भवं भवानी सहितं नमामि.....

उस दिव्य स्वरुप को देखने मात्र से जीवन की सार्थकता मिल जाती है ऐसे मेरे परम आराध्य महादेव जगत जननी

महामाया के साथ अपना आशीर्वाद प्रदान करने के लिए सूक्ष्म रूप से वहां उपस्थित हुए !

कुछ क्षणों के लिए उनकी उपस्थिति रही और फिर वह बिंब लुप्त हो गया .....

उसके बाद मंत्र जाप चलता रहा और कोई विशेष घटना नहीं हुई ।

इसी प्रकार से 12:00 बज गए और हमारी साधना पूर्ण हो गई.....

वह चतुर्दशी थी !

जब हम लोगों ने दोपहर 12 बजे से श्यामा साधना का प्रारंभ किया था । अगले दिन यानि पूर्णिमा के दोपहर पर इस साधना का समापन हो चुका था ।

पूर्णिमा की रात्रि अर्थात उसी रात को लगभग 10:40 से 2:15 तक चंद्र ग्रहण पड़ने वाला था और उसी कालखंड में हमें वह विशेष साधना संपन्न करनी थी ।

हम दोनों साधना पूर्ण करने के बाद प्रणाम तथा क्षमा प्रार्थना करने के बाद अपने आसन से उठने के बारे में सोच ही रहे थे ....

तभी ......

वह भयानक तांत्रिक......

मैंने देखा....कि ....

गुफा के मुहाने पर वही तांत्रिक खड़ा हुआ है !

जिसे मैंने ध्यान में देखा था !!

बिल्कुल वही आकृति.....

लगभग साढे छह फुट ऊंचा और दुबला पतला वह तांत्रिक गुफा के मुहाने पर खड़ा हुआ था ।

जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया था कि वह निषिद्ध क्षेत्र होने की वजह से वहां पर मेरी शक्तियां कार्य नहीं कर रही थी ....

या यूं कह लीजिए कि मैं लगभग सामान्य आदमी की तरह हो गया था ।

अब स्थिति यह थी कि मैं शरीर और डीलडोल के हिसाब से भी उस तांत्रिक से लड़ने की क्षमता नहीं रखता था और तांत्रिक शक्तियों की तो प्रतिबंधित होने की वजह से बात ही संभव नहीं थी ।

फिर भी संभवत: उसे लगा होगा कि मैं बाधा खड़ी कर सकता हूँ ......

उसने हवा में हाथ लहराया और उसके हाथ में एक बजरबट्टू आ गया ।
उसने अपने हाथ में रखे हुए बजरबट्टू को मंत्रों का उच्चारण करते हुए मेरी तरफ उछाल दिया .....
वह बजरबट्टू हवा में सनसनाता हुआ मेरी तरफ बढ़ा.....
सामान्य परिस्थिति अगर होती और मेरी सिद्धियां साथ होती तो क्षण के दसवें भाग में मैं उसका उत्तर दे सकता था ......
लेकिन अभी मैं विवश था ......
वह बजरबट्टू मेरी तरफ बढ़ रहा था और मैं शांत भाव से खड़ा हुआ उसे देख रहा था । बजरबट्टू मेरे पास आया और उसने मेरे चारों तरफ गोल घेरा लगाया । उसके घेरा लगाते ही मैं बंधन में आ गया अर्थात मेरे शरीर में मेरे अंगों को हिलाने की मेरी क्षमता समाप्त हो गई ...

यह तंत्र साधना के क्षेत्र में बंधन या स्तंभन कहलाता है ।
यह कई प्रकार का होता है !
इसमें शरीर की गति को बांध देना !
युद्ध क्षेत्र में शत्रुओं को बांध देना !
बहते हुए रक्त को बांध देना !

और किसी बोलते हुए व्यक्ति के मुख को बांध देने से लेकर जलते हुए चूल्हे पर रखी हुई कढ़ाई को बांध देना भी आता है ।

जब ऐसा किया जाता है तो कढ़ाई में रखी हुई चीज चूल्हे पर रखी होने के बावजूद गर्म नहीं होती है, ऐसा कहा जाता है ।

मैं भी इसी प्रकार के एक बंधन में आ गया था । एक प्रकार से आप यूं समझ लीजिए कि मेरे अंगों पर मेरा ही नियंत्रण नहीं रह गया और मैं किसी पत्थर की प्रतिमा की तरह वहीं बैठा रह गया ।

यह इतनी तेजी से हुआ की चंपा को इसका आभास तब हुआ जब वह बजरबट्टू मेरे चारों तरफ चक्कर लगाने लगा .....

वह बिजली की तेजी से पलटी.....

और उसे दिखाई दिया वह तांत्रिक ।

तब तक......

वह तांत्रिक दूसरा बजरबट्टू चला चुका था !

वह बजरबट्टू तेजी से चंपा की ओर बढ़ रहा था । जब वह उस के काफी करीब पहुंचा तभी उसने नाराची मुद्रा

का प्रदर्शन करते हुए अपनी तर्जनी उंगली को थोड़ा सा मोड़ा और उसे बजरबट्टू की तरफ छटक दिया ......

जैसे ही उसने ऐसा किया !

बजरबट्टू के चार टुकड़े हो गए .....

और वह पूरी तेजी के साथ उस तांत्रिक की ओर लपके .....

ठीक वैसे ही जैसे किसी बम के विस्फोट के बाद उस में पड़े हुए धातु के टुकड़े बाहर की ओर लपकते हैं ....

इस क्रिया को मैं बड़े आश्चर्य से देख रहा था क्योंकि इस प्रकार की क्रिया वही तांत्रिक कर पाते हैं जिन्होंने मुद्रा सिद्धि प्राप्त कर रखी हो ।

मुद्राओं का प्रदर्शन तंत्र साधनाओं का एक विशेष क्षेत्र है और कई सारी क्रियाएं केवल मुद्राओं के प्रदर्शन मात्र से संभव हो जाती हैं ।

ऐसी ही एक क्रिया के माध्यम से चंपा बंजारन ने उस तांत्रिक के द्वारा किए हुए स्तंभन प्रयोग को नष्ट कर दिया था ..... और तांत्रिक को बचाव की मुद्रा में ला दिया था ।

वह तांत्रिक भी कम नहीं था ......

जैसे ही बजरबट्टू के टुकड़े उसकी तरफ सनसनाते हुए आगे बढ़े ....

उसने अपने हाथ में पकड़े हुए दंड को किसी चकरी की तरफ घुमा दिया ....

वे टुकड़े सनसना कर जाते हुए उस नर मुंड के अंदर समा गए जो उस दंड के ऊपर लगा हुआ था ।

किसी सिद्ध तांत्रिक के पास में रखा हुआ डंडा जिसे दंड कहा जाता है....

काफी महत्वपूर्ण होता है ।

कई तांत्रिक इसमें भैरव को सिद्ध करके रखते हैं । कई अन्य विशेष श्मशानी शक्तियों को भी सिद्ध करके इसमें आबद्ध किया जाता है !

ऐसे दंड काफी प्रभावशाली और शक्तिशाली होते हैं ....

जिसके चलते इस प्रकार के दंड के द्वारा स्पर्श हो जाने से ही कई प्रकार की शक्तियां डर कर भाग जाती है ।

इसका प्रयोग कई तांत्रिक भूत प्रेत आदि को भगाने के लिए भी करते हैं ।

उसका जो दंड था वह बेहद खतरनाक दिखाई देता था !

उसकी आकृति सर्पाकार थी !

उसके ऊपर एक नरमुंड लगा हुआ था ....
ठीक वैसा ही जैसा मुझे ध्यान के दौरान दिखाई दिया था ।

अब चंपा बंजारन और वह तांत्रिक आमने-सामने थे ।
तांत्रिक समझ चुका था कि लड़की छोटी जरूर है मगर जानकार है.....
मैं यह सोच रहा था कि यह तांत्रिक इस क्षेत्र में किस प्रकार से घुसा होगा ?
जो निषिद्ध क्षेत्र होता है वहां पर साधक अपने तांत्रिक प्रयोगों के द्वारा रक्षा कवच बनाकर रखता है .....
गुरुकुल के ऊपर भी देवकी गुरुक्कल का रक्षा कवच काम कर रहा था ......
फिर यह तांत्रिक उन शक्तियों को भेदकर अंदर कैसे आ गया ......
यह मेरे मन में विचार उठा क्योंकि यह तभी संभव था जब यह तांत्रिक उन शक्तियों को समाप्त करने में सक्षम हो जो रक्षा कवच के रूप में स्थापित की गई थी ....
या उन्हीं शक्तियों का साधक हो !

तांत्रिक आपने अगले प्रयोग के लिए तैयार हो चुका था !

उसने अपने हाथ में काली मिर्च के दाने प्राप्त किए और प्रयोग करने के लिए तैयार हो गया ।

काली मिर्च के दाने स्तंभन क्रिया का एक और उच्चतर आयाम होता है ।

जिसमें सामने वाले को लगभग लकवा ग्रस्त स्थिति में पहुंचा दिया जाता है ।

जिसके बाद वह कुछ करने की अवस्था में नहीं होता......

उसके बाद उससे मनोवांछित कार्य कराया जा सकता है !

तांत्रिक का लक्ष्य भी यही दिखाई दे रहा था .....

क्योंकि वह चंपा को वहां से लेकर जाने के लिए आया था.....

जैसा कि संदेह मदालसा ने भी जताया था !

कपालिनी ने भी मुझे ऐसा ही संकेत किया था ।

मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं ?

क्योंकि .....

मेरी शक्तियों को आह्वान करने की क्षमता वहां पर कुंद हो गई थी ।

काली मिर्च के दानों को अपनी हथेली में रहकर वह मंत्र पढ़ रहा था !

इधर चंपा भी सावधान मुद्रा में खड़ी थी !!

उसका दाहिना हाथ हवा में अंकुश मुद्रा में उठा हुआ था !

अंकुश का तात्पर्य होता है .....

वह छोटा सा हथियार !

जिसे हाथी चलाने वाला महावत उसे नियंत्रित करने के लिए इस्तेमाल मे लाता है ।

यह एक नुकीला अस्त्र होता है, जिससे हाथी को उसके कान पर चोट करके नियंत्रित किया जाता है । इसका प्रयोग विशेष परिस्थितियों में किया जाता है ..... जब हाथी महावत की बात नहीं मानता है ।

यानी......

यह एक ऐसा हथियार है जो हाथी को भी नियंत्रित कर लेता है !

उसी तरह की मुद्रा का नाम है अंकुश मुद्रा !

इस मुद्रा का प्रयोग करके चंपा संभवत किसी नियंत्रक शक्ति का आह्वान कर रही थी......

मैं मूकदर्शक बनकर देख रहा था .....

उन दोनों का कोई जोड़ नहीं था......

एक तरफ लगभग साढ़े छह फुट का वह भयानक स्वरूप वाला लंबा तांत्रिक !

जिसके हाथ में नरमुंड वाला दंड था !

दूसरे हाथ में काली मिर्च के दानों को रखकर वह अपनी लाल-लाल आंखों को और भयानक बनाता हुआ मंत्र जाप कर रहा था .....

उसकी बड़ी बड़ी आंखें अब क्रोध से लाल हो गई थी ......

जो उसके चेहरे को और ज्यादा भयानक बना रही थी ।

जो उग्र प्रयोग होते हैं उसमें मंत्र का उच्चारण क्रोध के साथ किया जाता है जिससे उसकी क्षमता और प्रभाव बढ़ जाता है......

ऐसा ही वह कर रहा था ।

दूसरी तरफ एक मासूम सी लगने वाली युवती खड़ी थी......

जो न जाने किस प्रयोग को करने का प्रयास कर रही थी !

मुझे अपनी विवशता पर दुख भी हो रहा था क्योंकि मैं कुछ नहीं कर पा रहा था ....

अंकुश मुद्रा का प्रदर्शन करते हुए चंपा खड़ी हुई थी और उस तांत्रिक ने काली मिर्च के दानों को चंपा की तरफ उछाल दिया।

जैसे ही वे काली मिर्च के दाने चंपा के करीब पहुंचे और उससे टकराए !

उसके मुंह से जोर की चीख निकली !

और वह जमीन पर गिर गई.........

उसके जमीन पर गिरते ही तांत्रिक के चेहरे पर कुटिल मुस्कान बिखर गई ।

वह सधे हुए कदमों से चंपा की तरफ बढ़ा।

मेरे मन में विचार आया कि विमान बुलाते समय मैंने मदालसा के साथ मानसिक संपर्क बनाया था और उसने तुरंत विमान भेज दिया था अर्थात वह मेरी मानसिक तरंगों को पकड़ सकती है....

यह विचार मन में आते ही मैंने मन ही मन उसे याद किया ....

मेरे मानस पटल पर उसका चित्र दिखा !

वह बैचेन दिखी और उसने संकेत दिया कि वह पहुंच रही है......

यह बड़ी अजीब सी स्थिति थी !

चंपा जमीन पर पड़ी हुई थी और वह तांत्रिक उसकी ओर सधे हुए कदमों से बढ़ रहा था।

मैं अपने स्थान पर बंधन में बंधा हुआ खड़ा था और कुछ करने की स्थिति में नहीं था।

तंत्र साधना के क्षेत्र में परिदृश्य को बदलने में भी समय नहीं लगता।

कुछ घड़ी पहले हम दोनों श्यामा साधना पूर्ण करके अगले चरण के विषय में विचार कर रहे थे और.....

अभी परिस्थितियां पूरी तरह बदल चुकी थी !

हम दोनों के प्राण संकट में थे।

वह तांत्रिक चंपा के पास पहुंचा और उसे किसी गुड़िया की तरह उठाकर अपने कंधे पर डाल लिया और जिस

प्रकार से अचानक प्रकट हुआ था उसी प्रकार चुटकी बजाते ही वहां से गायब हो गया !

जैसे ही वह वहां से गायब हुआ देवकी गुरुकल वहां पर प्रकट हो गई और उसके साथ साथ आई मदालसा...... ऐसा लगा जैसे दोनों को संभवत: कोई टेलीपैथी सिग्नल मिला हो कि कोई समस्या आ गई है और वे दोनों उसके समाधान के लिए पहुंच गई थी....

लेकिन थोड़ी सी देर हो चुकी थी।
या यूं कहें कि वह तांत्रिक ज्यादा तेज निकला और उनके आने से पहले ही अपना काम करके निकल गया।

अब दिक्कत यह हो गई थी कि चंपा बंजारन जोकि इस पूरी साधना प्रक्रिया की प्रमुख कड़ी थी, वह उस तांत्रिक के हाथ में लग चुकी थी।

देवकी गुरुक्कल और मदालसा वहां पहुंचते ही वहां का दृश्य देखकर परिस्थितियों को समझ गई और चिंतित हो गई .....
देवकी गुरुकुल ने मदालसा को इशारा किया !

मदालसा नीचे की तरफ झुकी ।

वहां किसी चीज को खोजने लगी !

उसके हाथ में कुछ आया ....

संभवतः वह तांत्रिक के पाँव की धूल थी या फिर बाल जैसी कोई छोटी चीज जिसे उसने अपने हाथ में उठाया ....

आंखें बंद की......

और वह वहां से उसी प्रकार लुप्त हो गई , जिस प्रकार वह तांत्रिक हुआ था।

संभवत: उसकी खोज में गयी होगी।

मैं अभी भी बंधन में था ......

मेरे शरीर का कोई अंग नहीं हिल रहा था !

इसलिए मैं आवाज भी नहीं दे पा रहा था।

देवकी अपने ही चिंतन में इतनी ज्यादा लीन थी कि उसे मेरी तरफ देखने का अवसर नहीं मिल रहा था !

शायद आगे की कार्यवाही की योजना बना रही होगी।

कुछ क्षण बीतने के बाद संभवत: उसे मेरे वहां होने का आभास हुआ होगा।

उसकी नजर मेरी तरफ उठी !

फिर उसने अपनी कमर की पोटली में हाथ डालकर थोड़ी सी भस्म निकाली, उसे अभिमंत्रित किया और मेरी ओर उड़ा दिया .....

मेरा बंधन टूट गया !

कंकालेश्वरी.....

मैंने उनसे पूछा - यह तांत्रिक कौन था ?

वह बोली - इसका नाम मुंडालू है ! यह एक विशेष तांत्रिक समुदाय से संबंध रखता है । यह घोर तमसिक विद्या का साधक है !
इसमें विभिन्न आत्माओं के द्वारा कई प्रकार के निकृष्ट कार्य कराए जाते हैं । इसमें माध्यम का विशेष महत्व होता है । यह माध्यम आमतौर पर महिलाएं होती हैं और इसमें जो सर्वश्रेष्ठ माध्यम हैं वह कन्या होती है ....
इस माध्यम के द्वारा वह तांत्रिक आत्माओं को अपने नियंत्रण में कर लेते हैं .....
और उसके द्वारा इच्छित काम को पूरा करते हैं ।
वह भी इसी क्षेत्र में साधना कर रहा है।
इससे पहले भी वह इसी प्रकार का प्रयास कर चुका है लेकिन उसमें सफल नहीं हो पाया था ।
वह कंकालेश्वरी नामक तामसी मसानी देवी की साधना में लगा हुआ था।

जिस प्रकार से उसने मेरे द्वारा बनाए गए रक्षा कवच का भेदन किया है ! उससे यही प्रतीत होता है कि उसने कंकालेश्वरी देवी को सिद्ध कर लिया है।

आंध्र प्रदेश और उड़ीसा के सीमा पर घना जंगल है और उन्हीं घने जंगलों में स्थित है इस देवी का एक गोपनीय सिद्ध पीठ !

यह सिद्ध पीठ 108 मुंडी आसन पर बना हुआ है । इस पीठ में पहले नरबलि का भी आयोजन किया जाता था और प्रत्येक दीपावली को अर्ध रात्रि में नर बलि दी जाती थी ।

जब मैं असम में रस भैरवी के पास थी ......

उस समय उसने मुझे इस सिद्ध पीठ के विषय में भी बताया था । वह यहां आने के बाद मुझे एक बार उसे दिखाने के लिए भी ले गई थी । वह बेहद घने जंगलों के बीच में एक पहाड़ी के बीच जमीन से लगभग 30 फुट नीचे स्थित एक कंदरा में मौजूद है ।

वहां पर लगभग 15 फीट ऊंची कंकालेश्वरी देवी की मूर्ति स्थापित है .....

जो लाल पत्थरों से निर्मित है ।

वह शक्ति सुसुप्त अवस्था में थी क्योंकि रसभैरवी के गुरु ने अपनी मंत्र शक्ति के माध्यम से बांधकर उस गुफा को कीलित कर दिया था ।
वहां की तामसिक प्रक्रियाओं को नियंत्रित करने के लिए ही इस स्थान पर यह गुरुकुल स्थापित किया गया था ताकि सात्विक शक्तियों का आधिपत्य स्थापित हो सके और आवश्यकता पड़ने पर वे किसी भी तामसिक शक्ति का सामना कर सकें ।

मैंने पूछा - देवी को रसभैरवी के गुरु ने क्यों सुसुप्त किया था ?
देवकी - रस भैरवी के गुरु मुद्गर भैरव को हिमालय के अंदर स्थित सनातन धर्म के साधना केंद्र, जहां से सारी आध्यात्मिक क्रियाओं का संचालन होता है , से मिले निर्देश के अनुसार इस स्थान पर तामसिक शक्तियों का प्राबल्य हो गया था । जिसे संतुलित करने के लिए यहां एक गुरुकुल की स्थापना करनी थी ।
गुरुकुल की स्थापना करने के लिए मुझे चुना गया था, लेकिन गुरुकुल की स्थापना को रोकने के लिए उस

पीठ के तत्कालीन पुजारी जोगलू ने बहुत सारे प्रयास किए .....
यहां तक कि उसने मुझे मारने के लिए तीन बार मारण प्रयोग भी किए थे । उसके लगातार इस प्रकार का प्रयोग करने की वजह से मुद्गर भैरव जी क्रोधित हो गए और उसके बाद यह सीधे उसी मंदिर के पास पहुंच गए !

मुद्गर भैरव जी ने अपनी साधना शक्ति से वहां के पुजारी को परास्त किया था । दोनों ने एक दूसरे के ऊपर तंत्र प्रयोग किए थे ....
जिसमें उस मंदिर का पुजारी मृत्यु को प्राप्त हो गया था ....
मुंडालू उसी पुजारी का बेटा है।
जो उस समय बालक था ।
जिसे उन्होंने छोड़ दिया था .....
कालांतर में वह भी उसी तामसिक साधना के मार्ग पर आगे बढ़ गया । अभी वह कितना शक्तिशाली हो चुका है यह तुम स्वयं देख चुके हो । संभवतः पुजारी के द्वारा लिखे गए गोपनीय ग्रंथ उसके हाथ लग चुके हैं । जिसमें कंकालेश्वरी देवी को सिद्ध करने का मंत्र

तथा विधि लिखी हुई थी । यह ग्यारह वर्ष की साधना थी .... जिसे उसी सिद्ध पीठ पर बैठकर पूरा करना था । मुन्डालू की शक्तियां अभी बहुत प्रबल है और उसे नियंत्रण में करने के लिए हमें विशेष प्रयास करना होगा।

हमें हर हालत में चंपा को बचाना होगा क्योंकि चंद्रग्रहण का यह मुहूर्त कंकालेश्वरी साधना के लिए भी विशेष रुप से सिद्ध मुहूर्त माना जाता है ! वह भी खासतौर से और प्रभावशाली हो जाता है अगर पंद्रह दिन के अंतराल में सूर्य ग्रहण भी पड़ रहा है जैसा कि इस बार पड़ रहा है । इस अवसर पर मुंडाली अवश्य कुछ विशेष करने की सोच रहा है।

जिस प्रकार से उसने अपनी शक्तियों को बढ़ाया है उसे देखते हुए ऐसा लग रहा है कि वह किसी विनाशकारी कार्य के लिए प्रयास कर सकता है .....

उसे रोकना होगा ।

मैंने कहा - मेरी शक्तियां तो मेरे पास नहीं है ..... अन्यथा मैं आपकी सहायता करने की कोशिश अवश्य करता ।

देवकी गुरुक्कल ने कहा - वह प्रतिबंध केवल श्यामा साधना के पूर्ण होते तक था । श्यामा साधना पूर्ण होने के 3 घडी बाद तुम्हारी शक्तियां वापस आ जाएंगी । तुम यहीं रुको !

मैं कुछ सामग्रियों की व्यवस्था करके लौटती हूं । इतना कहकर वह चली गई

एक घड़ी का तात्पर्य लगभग 24 मिनट होता है ।

साधना पूर्ण किए हुए हमें लगभग दो घड़ी के आसपास समय हो चुका था !

अब केवल एक घड़ी अर्थात 24 मिनट और बाकी था ......

जब हम किसी चीज का इंतजार करते हैं तो समय का आभास ज्यादा होता है वे 24 मिनट मुझे बहुत लंबे लगे ....

क्या किसी तरह से भी समय भी निकल गया और साधना के बाद की तीन घड़ी गुजर जाने के बाद मेरी शक्तियां वापस लौट आई .....

मैं सबसे पहले चंपा के बारे में पता करने के लिए कपालिनी को भी याद किया

मुझे अपने कानों के पास कपालिनी की सरसराहट स्पष्ट सुनाई दे रही थी !

मैंने गुरुदेव को प्रणाम किया और गुरु मंत्र का उच्चारण किया और आगे की प्रक्रिया के लिए तैयार हो गया।

मैंने कपालिनी से पूछा - चंपा कहाँ है ?

कपालिनी - वह कंकालेश्वरी मंदिर में है। मंदिर के अंदर की स्थिति बताने में मैं अक्षम हूं क्योंकि मेरी गति वहां तक नहीं है ।

मैंने पूछा - तांत्रिक को परास्त करने के लिए क्या करना होगा ?

कपालिनी की आवाज मेरे कानों में सरसराहट की तरह गूंजी - मुंडाली एक अत्यंत ही उच्च कोटि का साधक है। उसे परास्त करने के लिए अपनी सारी सिद्धियों का प्रयोग करना पड़ेगा। यदि संभव हो तो तुम तीनों को संयुक्त रूप से किसी विशेष शक्ति का आह्वान करना पड़ेगा तभी मुंडालू पर नियंत्रण किया जा सकता है।

मैंने पूछा - क्या चंपा सुरक्षित है ?

कपालिनी बोली - हाँ । वह अवश्य सुरक्षित होगी । आज चंद्र ग्रहण की रात्रि है और कंकालेश्वरी देवी को

इस अवसर पर नरबलि देकर प्रसन्न किया जाए तो साधक की शक्तियां बहुत ज्यादा बढ़ जाती है । अगर वह इसमें सफल हो गया तो उसकी शक्तियां कई गुना बढ़ जाएंगी और उसे रोकना बहुत मुश्किल हो जाएगा। मै उस सिद्ध पीठ के अंदर की कोई भी बात आपको नहीं बता पाऊंगी !

इतना कहकर कपालनी विलुप्त हो गई ।

छिन्नमस्तिका देवी .....

मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मुझे क्या करना चाहिए ?

इस संसार में तीन तरह के तत्व होते हैं सत्व रज और तम । सत्व अर्थात सात्विकता, तम का अर्थ होता है तामसिकता और रज का अर्थ होता है इन दोनों के बीच का अर्थात जिसमें सात्विक गुण भी हो और कुछ तामसिक गुण भी है ।
देवता सात्विक गुण संपन्न माने जाते हैं ।
राक्षस तामसिक गुण संपन्न माने जाते हैं और मनुष्य इसके बीच की प्रजाति है ।
जिसमें यह दोनों गुण पाए जा सकते हैं ।

जैसा कि प्रसंग से पता चल रहा था तांत्रिक मुन्डालू पूर्ण रूप से तामसिक पद्धति से कंकालेश्वरी देवी की साधना कर रहा था । ऐसी स्थिति में उसका सामना करने के लिए तामसिक शक्तियों का या कम से कम राजसी शक्तियों का होना जरूरी है ।

कहने का तात्पर्य है कि आपके पास भी वैसे ही हथियार होने चाहिए जैसे आपके दुश्मन के पास है। या वैसी तकनीक होनी चाहिए जैसी दुश्मन के पास है। यह सभी क्षेत्रों में लागू होता है।

यह कुछ कुछ वैसा ही है जैसे अभी आप लोगों ने हमास और इजरायल के बीच में हुए युद्ध के दौरान देखा होगा..

हमास ने मिसाइल से हमला किया !

जवाब देने के लिए इजराइल के पास भी मिसाइल थी उसने भी मिसाइल से हमला किया।

यानी चोट दोनों तरफ से समान प्रकार की हुई ......

पूरी घटना हो जाने के बाद की स्थिति देखें तो इजराइल को कम नुकसान हुआ और हमास को ज्यादा नुकसान हुआ !

जबकि दोनों के पास मिसाइल थी !

एक बार तो ऐसा हुआ था जब हमास ने 1000 मिसाइलें लगातार दागी थी लेकिन इजराइल के पास जो सुरक्षा तंत्र था....... जिसे वे आयरन डोम कहते हैं ...... उसने

1000 मिसाइलों में से 850 मिसाइलों को हवा में ही समाप्त कर दिया ....
अगर वे ऐसा नहीं कर पाते तो संभवतः इजराइल में तबाही का मंजर कुछ और होता।

इस उदाहरण का तात्पर्य यह है कि आपके पास प्रहार क्षमता कितनी है यह महत्वपूर्ण है लेकिन आपके पास सुरक्षा की क्षमता कितनी है यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है ।
अगर आप सामने खड़े हुए प्रतिरोधी के प्रहार का सामना करने में सक्षम है !
उसे न्यूट्रल कर सकते हैं !
तो इस बात की बहुत ज्यादा संभावना है कि आप युद्ध में आगे रहेंगे ।
लेकिन.....
अगर आपमे अपने सामने खड़े हुए प्रतिरोधी के प्रहार का सामना करने की क्षमता नहीं है तो हो सकता है कि उसके एक प्रहार से ही आपका काम तमाम हो जाए !

यही बात साधनाओं के क्षेत्र में भी लागू होती है ।

अगर आप तंत्र प्रयोग कर रहे हैं तो आपको यह जानकारी होनी चाहिए कि सामने खड़ा हुआ साधक किस प्रकार का तंत्र प्रयोग कर रहा है तभी आप उसकी काट निकाल पाएंगे ।

यही सोचता हुआ मैं वहां पर चबूतरे पर बैठा हुआ था । तभी मदालसा वहां पर प्रकट हुई उसके चेहरे पर तनाव के चिन्ह स्पष्ट दिखाई दे रहे थे मैं उसके कुछ बोलने की प्रतीक्षा करने लगा ......
वह बोली - हमें छिन्नमस्तिका महाविद्या का आह्वान करना पड़ेगा । कंकालेश्वरी देवी के रक्षा कवच को तोड़ने के लिए उसकी जरूरत पड़ेगी !
मैंने सहमति में सिर हिलाया ......

जगदंबा के 10 स्वरूप माने गए हैं जिनको महाविद्या कहा जाता है उनमें से एक स्वरुप है छिन्नमस्ता । इसमें दो शब्द है पहला है छिन्न , जिसका मतलब होता है कटा हुआ । दूसरा शब्द है मस्ता या मस्तिका इसका मतलब होता है सिर या मुंड । छिन्नमस्ता का मतलब हुआ एक ऐसी देवी जिसका सिर खंडित है या जिसका सिर कटा हुआ है ।

इनके उद्भव के संबंध में जो कथा है वह भी बड़ी विचित्र है ।

देवी की दो प्रिय सखियां हैं जिनका नाम है जया और विजया । एक समय जब वे देवी के साथ विचरण कर रही थी तब उनको बड़े जोर की भूख लगी । वे अत्यंत क्षुधातुर होकर देवी से अपनी भूख को शांत करने की प्रार्थना करने लगी । उस समय वहां पर कुछ भी उपलब्ध नहीं था । उनकी क्षुधा सुनकर देवी को भी क्षुधा की उत्पत्ति होने लगी .....

बार-बार उनके याचना को सुनकर व्यथित देवी ने स्वयं अपना सिर काट दिया और उनकी गर्दन से रक्त की तीन धाराएं निकलने लगी ......

जिसमें से एक धारा जया के मुख में गई ।

दूसरी धारा विजया के मुख में गई और तीसरी धारा स्वयं देवी छिन्नमस्तिका के कटे हुए शीश के मुख मे आकर गिरने लगी ।

उनका स्वरुप इसी प्रकार का है ।

वह विपरीत रति में संलग्न रती कामदेव के ऊपर खड़ी हुई है ।

उनका कटा हुआ मुंड उनके हाथ में है ।

उनके गर्दन से निकलती हुई तीन धाराओं में से एक रक्त धारा उनके हाथ में रखे हुए मुंड पर गिर रही है और जया विजया अगल बगल में खड़ी होकर बाकी दोनों रक्त धाराओं से अपनी क्षुधा को शांत कर रही हैं ।

शत्रु संहार तथा तांत्रिक प्रयोगों के निवारण के लिए छिन्नमस्तिका साधना से श्रेष्ठ कोई साधना नहीं है । उनकी क्षुधा हर प्रकार के शत्रुओं का सर्वनाश करने में सक्षम है । इसलिए प्रचंड मारण प्रयोग और तांत्रिक प्रयोगों में इसी महाविद्या का प्रयोग होता है ।

इस महाविद्या का सिद्ध पीठ है रजरप्पा !

झारखंड के रांची से लगभग 80 किलोमीटर दूर यह सिद्ध पीठ स्थापित है ऐसा माना जाता है कि यह लगभग 6000 साल पुराना है ।

शत्रु सुधार के लिए यह मंदिर अपने आप में विश्व प्रसिद्ध है । ऐसी मान्यता है कि छिन्नमस्ता का सिद्ध साधक रजरप्पा शक्तिपीठ पर, यदि किसी दुष्ट शत्रु जो मृत्यु तुल्य कष्ट दे रहा हो , जिस का नियंत्रण आवश्यक हो, उसके नाम से चावल के दाने सिद्ध करके अगर प्रयोग संपन्न कर दें तो वह शत्रु सौ प्रतिशत नियंत्रित हो जाता है ।

यह महाविद्या अत्यंत ही उग्र है !
अब आप स्वयं सोचे कि जो स्वयं अपने सिर को काट सकती है वह महाविद्या कितनी उग्र होगी । उसका साधक क्या क्या नहीं कर सकता ?
यह तंत्र क्षेत्र की प्रचंडतम साधनाओं में से एक है और ऐसी महाविद्या की साधना हमें करनी थी ताकि हम चंपा को बचा सकें ।

थोड़ी देर में देवकी भी गुफा में प्रकट हुई !
उसके पास बहुत सारी सामग्रियां थी और साथ में था एक काले रंग का बकरा .....
जिसे संभवत बलि के लिए लाया गया होगा ।

उस समय दोपहर के लगभग 2:00 बज रहे थे । सामान्य तौर पर महाविद्या साधना रात्रि के समय ही की जाती है......
लेकिन विशेष आवश्यकता होने पर दिन में भी साधना संपन्न की जा सकती है !
यह अवसर ऐसा था जिसमें हमारे पास समय नहीं था .....
इसलिए तत्काल साधना जरूरी थी ।

उस चबूतरे के ऊपर देवकी गुरुक्कल और मदालसा ने मिलकर छिन्नमस्ता यंत्र का निर्माण कर दिया ।
इसका निर्माण लाल रंग से रंगे हुए चावलों से किया गया था !
इसकी आकृति थोड़ी सी जटिल होती है इसलिए इसके निर्माण में लगभग 1 घंटे का समय लग गया ......

यंत्र का निर्माण संपन्न हो चुका था !
इस यंत्र में एक त्रिकोण होता है !
त्रिकोण के तीन कोने होते हैं !
तीन कोने पर हम तीनों बैठ गए और उसके बाद मंत्र जाप प्रारंभ हुआ ।

जैसे-जैसे मंत्र जाप आगे बढ़ा !
गुफा के अंदर का वातावरण धीरे-धीरे उग्र होने लगा !
हवाएं साँय साँय करने लगी......
एक अजीब सी खामोशी छा गयी !
सन्नाटा सा छाने लगा !
वातावरण भारी होने लगा......
ऐसा लग रहा था......
जैसे सांस लेने में भी दिक्कत हो रही हो !

हवा भारी हो गई हो ......

जैसे कि मैंने आपको बताया था कि वह एक खड़ी पहाड़ी पर बनी हुई गुफा थी । जिसके सामने एक छोटा सा प्लेटफार्म जैसा बना हुआ था । उसके अलावा वहां तक पहुंचने का कोई रास्ता नहीं था । ना ही आसपास कुछ और था । ट्रेकिंग के उपकरण रस्सी वगैरह लिए बिना वहां तक पहुंच पाना सामान्य परिस्थिति में संभव नहीं था । पानी गिरने की वजह से पूरी चट्टान फिसलन भरी हुई थी । इसलिए ट्रैकिंग कर के ऊपर पहुंचना भी इतना आसान नहीं होता !

कुल मिलाकर वह एक गोपनीय जगह थी !

जहां पर सिद्धि प्राप्त योगी आसानी से वायु गमन के द्वारा पहुंच सकते थे !

अन्य किसी भी प्रकार से पहुंचना थोड़ा असंभव सा कार्य था.....

लगभग एक घंटे के मंत्र जाप के बाद गुफा के अंदर कुछ अजीब सी ध्वनियाँ आने लगी .....

ऐसा लग रहा था......

जैसे गुफा के अंदर कोई चल रहा हो !

यह ध्वनि कुछ कुछ वैसी ही थी ....

जैसे....

अगर आप 2 मंजिला इमारत में रहते हो !

आपके कमरे के ठीक ऊपर के कमरे में कोई आदमी कूद रहा हो तो उसके कदमों की जो आहट होती है....

ठीक वैसे ही आहट सुनाई दे रही थी !

धमक भरी हुई !

भयभीत करने वाली !

ऐसा लग रहा था .....

जैसे......

वह जो भी था......

वह हमारे उस चबूतरे के चारों तरफ गोल गोल घूम रहा था !

उस समय कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था ....

लेकिन स्पष्ट महसूस हो रहा था कि कोई हमारे चारों तरफ घूम रहा है ।

फिर......

धीरे-धीरे कमरे में एक अजीब सी बदबू भरने लगी । यह बदबू ठीक वैसी ही थी जैसे श्मशान में चिताओं मे शरीर के मांस और बाल के जलने से पैदा होती है ......

अगर आप किसी व्यक्ति के अंतिम संस्कार के लिए
श्मशान में गए होंगे तो आपने अवश्य इस बदबू को
महसूस किया होगा ......
ठीक वैसी ही गंध गुफा में समाने लगी थी ।
ऐसा प्रतीत हो रहा था कि ....
हम उस गुफा में नहीं....
बल्कि किसी श्मशान में बैठे हुए हैं !
वह गंध धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी !
उसका आभास हम तीनों को हो रहा था क्योंकि मैं उन
दोनों के चेहरे पर भी उस भाव को देख सकता था .....
पर हमारा मंत्र जाप जारी था ।
मंत्र जाप करते करते लगभग 2 घंटे का समय व्यतीत हो
चुका था !
सूरज धीरे धीरे ढल रहा था !
उसकी रोशनी कम होती जा रही थी !
यानी शाम आने वाली थी !
चंद्र ग्रहण का समय रात्रि 10:40 से प्रारंभ होने वाला
था .....
उस हिसाब से हमारे पास समय बहुत कम था !

मुंडालू से टक्कर लेने के लिए भगवती छिन्नमस्ता का आशीर्वाद प्राप्त होना अनिवार्य था और हम उसी के लिए प्रयास कर रहे थे ।

तीनों का मंत्र जाप एक सुर में जारी था ।

हमारे चारों तरफ घूमती हुई वह आकृति अब हल्की-हल्की धुंधली सी दिखाई देने लगी थी ।

वह काले रंग के धुयेँ जैसी आकृति थी जो लगभग 10 फीट के आसपास ऊंची रही होगी !

यह स्पष्ट नहीं हो रहा था कि वह पुरुष की है या स्त्री की आकृति है .....

लेकिन वह हमारे चारों तरफ घूमती हुई दिखाई दे रही थी !

यह स्थिति कुछ 10 मिनट के आसपास रही होगी । उसके बाद वह धुंधली आकृति गायब हो गई ।

वातावरण में ....

हवा में....

वह अजीब सी गंध अभी भी बिखरी हुई थी ।

तभी ....

गुफा के मुहाने पर सियार के रोने की आवाज आने लगी ....

आप किसी सुनसान जगह पर बैठे हो....

अकेले हो....

और अचानक से कुत्ते की रोने की आवाज आए.....

तो यकीन मानिए आपकी आत्मा काँप जाएगी !

सियार के रोने की आवाज उससे भी थोड़ी और भयावह होती है .....

उसकी आवाज सुनकर आप अंदर से कुछ अजीब सा महसूस करने लगेंगे ।

सियार के रोने की आवाज गुफा के मुहाने के पास से आ रही थी ।

जैसे कि मैंने बताया वहां पर किसी का पहुंचना संभव नहीं था !

चाहे वह जानवर हो या इंसान....

लेकिन सियार के रोने की आवाज....

बिल्कुल गुफा के मुहाने से आ रही थी !

पहले यह आवाज सिर्फ एक सियार के रोने की थी .....

लेकिन धीरे-धीरे वह संख्या बढ़ती हुई महसूस होने लगी .....

और.....

थोड़ी देर में ऐसा लगने लगा .....

जैसे वहां बहुत सारे सियार हो .....

जो एक साथ चीख रहे हो ।

हल्के हल्के कदमों की आहट हमारी तरफ आती हुई

महसूस होने लगी ।

गुफा के मुहाने से सियारों का एक झुंड हमारी तरफ आ

रहा था ।

उनके आने का आभास उस काले बकरे को भी होने लगा

था .....

वह अपने स्थान पर बेचैन होने लगा ।

सियारों का झुंड धीरे-धीरे हमारी तरफ बढ़ने लगा ।

अब वे सियार स्पष्ट दिखाई दे रहे थे !

वे धीरे धीरे चबूतरे पर चढ़ने लगे !

सबसे पहले एक सियार चढ़ा और ठीक देवकी के पास

जाकर बैठ गया ....

वह उसकी बाई और बैठा था !

दूसरा सियार उसकी दाहिनी ओर जाकर बैठ गया ।

अजीब बात यह थी कि दोनों सियार उसके चेहरे की

तरफ ही देख रहे थे ......

कुछ क्षण के बाद वे सारे सियार चबूतरे के ऊपर चढ़ गए और हम तीनों को घेर कर बैठ गए ।

वे दो सियार जो पहले चढ़े थे वे अब भी देवकी के आजू-बाजू बैठे हुए थे ।

मुंह उसकी तरफ उठाकर ....

यह कुछ कुछ वैसा ही था जैसे अगर आप ने कुत्ता पाला हो तो देखा होगा कि जब आप बैठे रहते हैं तो आपकी तरफ देखकर वह अपने मुंह को ऊपर की तरफ उठा कर बैठा रहता है ....

ठीक वैसे ही मुद्रा मे वह दोनों सियार बैठे हुए थे ।

बाकी के सारे सियार बिल्कुल शांत मुद्रा में हमारे चारों तरफ एक घेरा बनाकर बैठे हुए थे ......

बेहद भयावह स्थिति थी !

आप खुद कल्पना करें कि ....

एक सुनसान गुफा....

उस पर एक चबूतरा.....

जिसमें आप बैठे हुए हैं ....

और....

आप के चारों तरफ लगभग 10-15 सियार आपको घेर कर बैठे हुए हैं ....

और....

सबसे अजीब बात यह थी कि....

वह सारे के सारे बिल्कुल शांत बैठे हुए थे !

मंत्र जाप अब भी जारी था ......

हां !

छिन्नमस्ता साधना में उसी को प्रवृत्त होना चाहिए जो इस प्रकार की जटिल परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम हो !

जिसका ह्रदय मजबूत हो !

क्योंकि अजीब अजीब तरह की घटनाएं और विचित्र प्रकार की आकृतियां आपके साधना कक्ष में घूम सकती हैं .....

जो बेहद डरावना अनुभव होता है........

लगभग आधे घंटे तक सियार उसी प्रकार बैठे रहे ।

सूरज ढलने की स्थिति में पहुंच रहा था । धीरे-धीरे अंधेरा छा रहा था । हल्की हल्की रोशनी बिखरी हुई थी ....

यानी संध्या काल का समय रहा होगा !

तभी....

अचानक.....

देवकी के अगल-बगल बैठे हुए सियारों ने रोना चालू कर दिया ...

जैसे ही उन्होंने रोना चालू किया हमारे चारों तरफ बैठे हुए सियार भी बड़ी जोर से रोने लगे !

वह कुल मिलाकर दिल दहला देने वाली ध्वनि थी !

ऐसा लग रहा था कि वहां से उठकर भाग जाऊं !

बिल्कुल कान के पीछे....

चार सियार और अगल-बगल में लगभग 10-15 सियार उच्च स्वर में अपना दर्दनाक संगीत बजा रहे थे !

अगर आप सियार के चिल्लाने की आवाज सुनेंगे तो आपको उसमें दर्द और डर का अनुभव अवश्य होगा .....

क्योंकि उनकी आवाज ही ऐसी होती है !

ठीक वैसे ही परिस्थिति में हम तीनों उस समय बैठे हुए थे ।

छिन्नमस्ता साधना थी.... और इसका मतलब होता है कि आप अपने आसन को छोड़कर किसी परिस्थिति में नहीं उठ सकते !

अगर उठ गए तो आपकी साधना खंडित हो गई !

संकल्प 3 घंटे का था !

जो लगभग पूरा होने वाला था ....

हम अपना मंत्र जाप जारी रखे हुए थे ।

सियारों का वह रोना कुछ 5 मिनट के आसपास चला होगा । वे पुनः शांत हो गए ।

हमारा 3 घंटे का जाप हमारा पूर्ण हो चुका था अर्थात् संकल्पित अवधि पूर्ण हो चुकी थी ।

भगवती का आशीर्वाद अभी प्राप्त नहीं हुआ था !

लेकिन तभी......

मैंने देखा कि देवकी के चेहरे के भाव बदल रहे थे.....

उसके चेहरे में लाली बढ़ती जा रही थी !

ऐसा प्रतीत हो रहा था......

जैसे शरीर का सारा खून उसके चेहरे की ओर बढ़ रहा हो !

चेहरा पूरा सुर्ख लाल हो गया था और आंखें भी वैसे ही लाल दिखाई दे रही थी !!

वह हम दोनों को बारी-बारी से घूर कर देख रही थी !

उसे देखकर भय की अनुभूति होती थी !

संभवत: उसके अंदर देवी का आवेश आ रहा था ।
वे दोनों सियार उसी की तरफ देख कर बैठे हुए थे जैसे किसी आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हो ...

तभी देवकी ने उन दोनों सियारों की तरफ देख कर कुछ संकेत किया .....
और उस बकरे की तरफ देखा ....

वे दोनों सियार एक अजीब सी आवाज में चिल्लाये !
उनके चिल्लाते ही वे सारे सियार चबूतरे से उतरकर उस बकरे की ओर लपके ।
पूरा झुंड उस बकरे पर टूट पड़ा !
कुछ ही पल में उसके टुकड़े-टुकड़े करके वे अपने अपने मुंह में दबाकर धीरे-धीरे गुफा के मुहाने की तरफ बढ़ते हुए गायब हो गए....
हां !
वे दोनों सियार अपने ही स्थान पर देवकी के अगल-बगल बैठे हुए थे....
जैसे वह उसके साथ बंधे हुए हो ।
देवकी के शरीर में तनाव आता जा रहा था ...
ऐसा लग रहा था....

जैसे उसका शरीर अकड़ रहा हो ।

अचानक उसने अंगड़ाई ली ....

जैसा कि मैंने बताया था देवकी की आयु 60 वर्ष से ज्यादा हो चुकी थी । इस आयु में पहुंचने के बाद सामान्यतः शरीर ढलने लगता है । झुर्रियां दिखाई देने लगती हैं और वक्षस्थल भी ढलने लगता है । देवकी की स्थिति वैसी ही थी , जैसी किसी बुजुर्ग महिला की होती है ।

हाँ ! उस का मेरुदंड बिल्कुल सधा हुआ था....

बिल्कुल सीधा.....

जैसा कि साधकों का होता है......

उसका शरीर सुर्ख लाल होता जा रहा था !

साथ ही उसके शरीर में भी अजीब से परिवर्तन दिखाई दे रहे थे !

उसके ढलके हुए वक्ष स्थल अचानक सुदृढ़ होकर वापस किसी युवती के समान हो गए और शरीर का स्वरूप भी किसी नवयुवती की तरह लगने लगा । ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे 20-22 साल की युवती का शरीर हो ....

उसके संपूर्ण शरीर में झुरझुरी सी उठती थी और उसका सारा शरीर थरथरा उठता था ....

उसके बाद वह अपने हाथों को ऊपर उठाकर एक जोर की हुंकार निकालती थी ....

जो किसी डीजे साउंड के स्पीकर की तरह भयानक जोरदार लगती थी ....

जिसे सुनकर आसन से उठ कर भाग जाने का मन करता था .....

लेकिन हम दोनों अभी शांत भाव से उस आसन पर डटे हुए थे....

अचानक देवकी अपने आसन से उठ खड़ी हुई !

देवकी का शरीर अब बिलकुल युवा हो चुका था !

ठीक वैसा ही जैसा भगवती के चित्र में दिखाई देता है !

यौवन की आभा से दमकता हुआ मुख मंडल !

पर्वत शिखरों के समान उन्नत वक्ष स्थल !

क्षीण कटि !

विस्तृत जघन मंडल ....

ऐसा प्रतीत हो रहा था .....

जैसे साक्षात देवी सामने खड़ी हो ....

महामाया छिन्नमस्ता का आवेश देवकी के शरीर में आ चुका था ।

वह क्रोधित मुद्रा में खड़ी हुई थी !

उसकी आंखें लाल-लाल थी !

वह हम दोनों को घूर रही थी !

हमारा मंत्र जाप अभी भी जारी था ....

हां !

हम उसे देखकर अचंभित अवश्य थे कि अब पता नहीं क्या होने वाला है ?

महामाया छिन्नमस्ता जैसे भगवती के जितने उग्र स्वरूप हैं ...

वे इतने प्रचंड हैं कि उनको देखना और उस तेज को संभालना बहुत मुश्किल होता है !

इसलिए कई बार वे किसी माध्यम के द्वारा स्वयं को प्रकट करती हैं .....

ताकि भक्त या साधक उनकी प्रचंडता को सहन कर सके !

वह अपने स्थान से उठने के बाद नृत्य करती हुई हमारे चारों तरफ घूमने लगी ....

उसके पीछे पीछे वे दोनों सियार भी अपनी कमर मटकाते हुए घूम रहे थे ।

ऐसा लग रहा था जैसे वे भी उसके नृत्य का अनुकरण करने की कोशिश कर रहे हो ।

वह बेहद अजीब सा नृत्य था !

बिल्कुल वैसा जैसे जंगल के आदिवासी करते हैं ।

वह नृत्य करते हुए आगे बढ़ रही थी .....

और उसके पीछे-पीछे वे सियार !

अंधेरा धीरे-धीरे छाने लगा था .....

अचानक.....

देवकी गुरुक्कल कूदकर यंत्र के मध्य में आ गई.....

ठीक त्रिकोण के बीच बने हुए वृत्त के अंदर आकर खड़ी हो गई.....

अब कोई संदेह नहीं था कि भगवती का आगमन हो चुका है......

मदालसा ने अपने पास में रखा हुआ भोग द्रव्य का पात्र उठाकर उनकी तरफ बढ़ा दिया....

जिसे उन्होने ग्रहण कर लिया और पात्र को हवा मे उछल दिया ......

वे दोनों सियार यंत्र के दाहिने और बाएं हिस्से में खड़े हुए थे और वह बिल्कुल यंत्र के मध्य में खड़ी थी ।

मैं भौचक्का सा उसे देख रहा था .....

मदालसा ने मुझे मंत्र जाप का इशारा किया और मैं फिर से मंत्र जाप करने लगा !

वह कभी मदालसा की तरफ देखती और कभी मेरी तरफ.....

उसकी आंखे इतनी तेजस्वी और चमकदार लग रही थी कि उन आंखों से एक क्षण के लिए भी नजर मिलाना संभव नहीं हो पा रहा था !

अपने आप आंखें झुक जाती थी !

फिर.....

अचानक......

उसने मेरी छाती पर एक लात मारी और मैं पीछे की तरफ लुढ़क गया ....

देवकी ने मुझे बालों से पकड़ा और खींच कर यंत्र के ऊपर डाल दिया ।

अब मैं यंत्र के ऊपर पड़ा हुआ था ...

मेरे दाएं बाएं वे दोनों सियार खड़े थे !

मुझे लगा कि कहीं यह दोनों मुझे नोच कर खा तो नहीं जाएंगे.....

क्योंकि उनके दांत बाहर निकले हुए थे !

नुकीले नुकीले !

जीभ बाहर की तरफ लप-लप कर रही थी ।

उन्हें देखकर ऐसा लगता था जैसे वह अपने सामने पड़े हुए भोजन को लालच के साथ देख रहे हो और कुछ ही क्षण में उसे निपटा देने की मंशा रखते हो ।

मेरे मन में इसी प्रकार के विचार आ रहे थे.....

लेकिन...

तंत्र साधना में परीक्षण का सामना तो करना ही पड़ता है ......

इसलिए मैं उसी मुद्रा में पड़ा हुआ था ।

तभी......

उसका दाहिना पैर मेरे माथे पर पड़ा और वह माथे पर पैर रखकर खड़ी हो गई।

मेरा सर पत्थर मे चुभ रहा था लेकिन अपने आप को नियंत्रित करके मैं लेटा हुआ था ।

लगभग 10 सेकंड तक वह मेरे माथे पर अपना पैर रखकर खड़ी रही......

मेरे माथे में जोरदार जलन का आभास होने लगा !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे दोनों भौंह के बीच वाली जगह पर कोई आग जल रही हो !

मुझे अपने शरीर में भयंकर शक्ति का भी आभास हो रहा था ......

कुछ समय के बाद वह मेरे माथे से उतर गई और उसका अगला आघात मेरी नाभि पर था !

नाभि पर उसने अपनी एडी से चोट मारी !

मुझे ऐसा लगा जैसे मेरी नाभि नीचे पत्थर से जा टकराई हो ....

इतनी जोर का था उसका आघात !

उसके बाद उसका पांव नीचे की तरफ गया और मेरे गुप्त भाग के ऊपर पैर रखकर वह खड़ी हो गई ....

मुझे भयंकर पीड़ा का आभास होने लगा....

यह वही स्थान था जहां स्वाधिष्ठान चक्र की उपस्थिति मानी जाती है !

वहां अपना पांव रखकर वह दबा रही थी ।

मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे मेरा वह सारा भाग कहीं मेरे शरीर से बाहर ना निकल जाए....

वह इतने ताकत से दबा रही थी कि मुझे जबर्दस्त दर्द का आभास हो रहा था !

किसी प्रकार मैं अपने होठों को दातों से भींच कर अपनी चीख को बाहर निकलने से रोक रहा था ।

वह मुझे देखकर कुटिल मुद्रा में मुस्कुरा रही थी !

जैसे उसे मेरी पीड़ा देखकर आनंद आ रहा हो .....

मैं उसी प्रकार उस पत्थर पर पड़ा हुआ था और वह कुछ क्षणों तक उसी प्रकार अपने पांव से उस भाग को कुचलती रही !

उसके बाद उसके अंगूठे का जोरदार आघात मेरे मूल भाग पर पड़ा ....

जैसे ही वहां आघात पड़ा मेरा अंग पूर्ण उत्थित अवस्था में आ गया !

मुझे ऐसा लगने लगा जैसे मेरे पूरे शरीर का खून एक साथ उस दिशा में दौड़ पड़ा हो !

मेरे मन में प्रचंड काम भाव की उत्पत्ति होने लगी ....

मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करुं ?

मेरा शरीर किसी दहकते अंगारे की तरह तप रहा था और उस समय मुझे उस की शांति के लिए प्रचंड आघात की आवश्यकता महसूस हो रही थी .....

तभी वह आगे बढ़ी और उसने बाल पकड़कर मदालसा को उठा लिया.......

मदालसा पद्मासन मे बैठी हुई थी !

वह कम से कम 50-55 किलो की अवश्य रही होगी....

देवकी भी उसी के आसपास के वजन की रही होगी !

लेकिन उसने मदालसा को किसी गुड़िया की तरह बाल पकड़कर उठा लिया .....

मदलसा के चेहरे पर पीड़ा के भाव दिखाई दे रहे थे लेकिन वह उसके हाथ में बालों के सहारे लटकी हुई थी......

जैसा कि मैंने बताया मेरा अंग पूरी तरह से तैयार हो चुका था......

देवकी ने मदालसा को उठाकर मेरे उसी अंग पर पटक दिया.......

मुझे ऐसा लगा .....

जैसे मेरी चमड़ी छिल गई हो .....

अब विपरीत रति की अवस्था में मदालसा मेरे ऊपर विद्यमान थी ......

तभी एक जोरदार लात मदालसा की पीठ पर पड़ी और हम एक दूसरे के ऊपर लेटी हुई अवस्था में आ गए !

अगले ही क्षण देवकी कूदकर मदालसा के ऊपर चढ़ गई.......

अब यह बिल्कुल वैसे ही मुद्रा थी जैसे भगवती के चित्र में दिखाई देती है.....

विपरीत रति की मुद्रा में अवस्थित रति और कामदेव के ऊपर विद्यमान भगवती महामाया प्रचंड शत्रु नाशिनी छिन्नमस्ता का स्वरुप ....

वह उसी मुद्रा में खड़ी थी और दोनों सियार मुंह फाड़ कर उसके आजू बाजू खड़े थे ....

तभी ....

मैंने देखा ....

उसके दाहिने हाथ में एक बड़ा सा चंद्रहास खंड्ग प्रकट हुआ जो सोने के जैसे सुनहरे रंग का था !

अचानक उसने उस खंड्ग का वार आपने गर्दन पर कर दिया !

कटी हुई गर्दन को अपने हाथ में रख लिया.....

गर्दन में से तीन धाराएं रक्त की निकलने लगी ....

ऐसा लग रहा था जैसे तीन पाइप को खोल दिया गया हो ....

उसमें से एक एक धार दोनों सियारिनों के मुंह में जाकर गिरने लगी और तीसरी धारा स्वयं उस कटे हुए मुंड पर जाकर गिरने लगी !

भयानक !

डरावना !

विचित्र !!

लेकिन.....

अद्भुत !

अविस्मरणीय !

और पारलौकिक दृश्य.....

मेरे सामने था ।

मदालसा मेरे ऊपर औंधी लेटी हुई थी ....

इसलिए उसे यह दृश्य पूरा दिखाई नहीं दे रहा था

लेकिन मैं स्पष्ट देख पा रहा था ....

कटे हुए सिर को.....

जो उसके हाथ में रखा हुआ था....

और गर्दन से निकलती हुई रक्त की उन तीन धाराओं को ....

जो तीन अलग-अलग मुखों में जाकर गिर रही थी !

जैसे कि वह उनकी प्यास को तृप्त कर रही हो !

उस भयानक दृश्य को देखकर मेरी आंखें बंद होने लगी.....

तभी एक भयानक हुंकार की आवाज आई !

ऐसा लगा जैसे पूरी गुफा थरथरा गई हो ।

पूरी गुफा हिलने के जैसी आवाज आई और देवकी के पैरों का एक जोरदार आघात मदालसा की पीठ पर पड़ा ।

जिसे मैं भी महसूस कर सकता था कि वह कितना जोरदार रहा होगा ....

उसके बाद अचानक गुफा में धुआं फैलने लगा और फिर मुझे ऐसा लगा कि मैं शायद बेहोश हो गया हूं !

जब मुझे होश आया.....

तो वहां पर ना तो देवकी गुरुकल थी !

और ना ही मदालसा !!

केवल मैं ही वहां पर अकेला पड़ा हुआ था !!!

वहां पर उन सियारों का कोई अस्तित्व दिखाई ही नहीं दे रहा था .....

ऐसा लग रहा था जैसे वहां पर कुछ भी नहीं हुआ हो .....

लेकिन वह यंत्र वहां मौजूद था !

जिसके ऊपर मैं पड़ा हुआ था ....

और रक्त की कुछ बूंदे जमीन पर बिखरी हुई थी ....

यंत्र के इर्द-गिर्द.....

जो इस बात का प्रमाण थी कि वहां पर कुछ घटित तो अवश्य हुआ था ....

मेरा सर बहुत जोर से दर्द कर रहा था !

मैंने अपने सर को छू कर देखा तो सर से खून बह रहा था ......

फिर मैंने अपने शरीर को देखा तो मेरे शरीर पर खरोंच के निशान मौजूद थे जो उस घटना के साक्षी थे ....

बेहोश होने के पहले जो दृश्य मैंने देखा था उस भयानक दृश्य को याद करके मेरे शरीर में झुरझुरी उठ रही थी .....

भगवती का देवकी गुरुकुल के ऊपर आवेशित होना.....

फिर अपने ही हाथों से अपनी गर्दन को काट लेना......

उस कटे हुए सर पर खून की धारा का गिरना !

वह सब कुछ किसी स्वप्न की तरह महसूस हो रहा था !

लेकिन उसकी भयानकता को याद करके दिल कांप जाता था ......

मन में एक विचार यह भी आया कि देवकी गुरुकल का सिर कट गया है !

वह अब जीवित होगी या नहीं होगी ?

कहीं साधना के प्रक्रम में उसकी मृत्यु तो नहीं हो गई ?

यह भी एक चिंतनीय विषय था !

यही सब सोचता हुआ मैं वहां पर बैठा हुआ था.....

पांच सात मिनट में मेरा मन थोड़ा स्थिर हुआ !

गुफा मे अंधेरा छाया हुआ था !

शाम ढल चुकी थी......

जैसा कि उस गुफा में सामान्यतः होता है अचानक मशाल भभक कर जल उठी !

उसके जलते ही मैं अपनी विचार श्रृंखला को तोड़कर बाहर निकल आया !

तभी मुझे चंपा का विचार आया.....

उसे बचाने के लिए कंकालेश्वरी मंदिर जाना था !
मुझे उसका रास्ता नहीं मालूम था ....
देवकी और मदालसा दोनों वहां उपस्थित नहीं थे । ऐसे में मुझे क्या करना होगा ?
दो क्षण तक मैंने यह चिंतन किया और फिर निर्णय लिया कि मैं यहां से सीधा कंकालेश्वरी मंदिर की ओर रवाना होता हूं .....
आगे की क्रियाएं वहां जाकर जैसी होगी वैसी देखी जाएंगी ।

निर्णय लेना भी एक कला है । जीवन में कई बार जटिल परिस्थितियां आती हैं और उसमें निर्णय लेना पड़ता है । कई बार यह निर्णय सही साबित होते हैं और कई बार गलत भी.....
लेकिन समय पर निर्णय लेना जरूरी होता है । यह वैसी ही एक घड़ी थी, जहां निर्णय लेना जरूरी था और वह भी जल्द से जल्द .....

रात्रि 10:40 पर चंद्र ग्रहण चालू हो जाता । यदि उसके पहले कोई व्यवस्था नहीं हो सकी तो दो चीजें लगभग तय थी.....

एक तो संभवत: चंपा जीवित नहीं बचती !
और दूसरा मुंडालू इतना शक्तिशाली हो जाता कि उसे पराजित करना और कठिन हो जाता ।
दोनों ही स्थितियां हमारे लिए प्रतिकूल थी !
समय कम हो और निर्णय लेना हो तो ज्यादा परेशानी होती है .....

मैं चबूतरे पर थोड़ी देर के लिए आसन लगाकर बैठ गया .....
गुरुदेव को याद किया !
उनके बिम्ब को अपने सामने स्पष्ट करके मैंने प्रणाम किया और आगे बढ़ने की अनुमति मांगी !
आशीर्वाद की मुद्रा में उनका हाथ उठा और उसके बाद वे विलुप्त हो गए.......
गुरु तब तक शिष्य के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करता , जब तक बहुत ज्यादा जरुरी ना हो !
या उसके प्राण संकट में ना हो ....
यह वैसी स्थिति नहीं थी इसलिए गुरुदेव ने कुछ निर्देश नहीं दिया था अर्थात अब मुझे स्वयं निर्णय लेना था कि क्या करना है ?

मै यही सब सोच रहा था.....

तभी .....

गुफा के मुहाने पर वही दिव्य विमान दिखाई देने लगा,

जिसमें मदालसा के साथ मैंने यात्रा की थी ।

वह विमान धीरे-धीरे गुफा के अंदर आकर स्थिर हो गया ।

उसका द्वार खुला !

अंदर मदालसा विद्यमान थी !

लेकिन....

देवकी गुरुक्कल उसमे मौजूद नहीं थी !

यह देखकर मेरे मन में चिंता का भाव आया ?

क्यों नहीं आई ?

क्या हुआ होगा ?

ऐसे विचार मन मे कौंधने लगे ।

तभी .....

मदालसा ने मुझे अंदर आने का इशारा किया !

मन में ढेर सारे विचारों और सवालों को लेकर मैं उस विमान पर सवार हो गया । वह अपनी जगह से उठा और फिर हवा में उड़ता हुआ तेजी से आगे बढ़ने लगा !

मदालसा के मुख मंडल पर चिंता और परेशानी की लकीरें दिख रही थी ।

तनाव बढ़ा हुआ था और उसकी पेशानी पर बल थे !

मुट्ठियाँ भिंची हुई थी और दांत कसे हुए थे !

जैसे किसी कठोर निर्णय को क्रियान्वित करने के लिए तैयार हो रही हो ......

या किसी गंभीर घटना के घट जाने के बाद उसकी चिंता में लीन हो.....

दोनों ही स्थितियां हो सकती थी ।

देवकी गुरुकल उसके साथ नहीं थी, ऐसी संभावना हो सकती थी कि उस आवेश के आ जाने के बाद उन्होंने अपनी गर्दन को काट लिया और वे मृत्यु को प्राप्त हो गई हो ......

साधना के क्षेत्र में कुछ भी हो सकता है !

साधक के साथ कुछ भी अजीबोगरीब हो सकता है ।

विशेष रुप से उग्र साधनाओं में और शमशान साधनाओं में .....

जहां क्या होने वाला है ?

यह बता पाना लगभग असंभव होता है ।

भगवती महामाया का स्वरूप क्या करवा दे....

क्या कर दे.....

यह नहीं कहा जा सकता ।

इसी प्रकार अगर आप पैशाचिक या तामसिक शक्तियों की बात करें तो उनके साथ इससे भी जटिल स्थिति होती है !

वे अत्यंत क्रूर और उग्र होती हैं !

वह साधकों का ऐसा ऐसा परीक्षण लेती है कि कई साधक उसी परीक्षण में ही अपने प्राण खो देते हैं ।

इसलिए सामान्यत: भूत प्रेत पिशाच आदि की साधना करने से रोका जाता है ।

लेकिन वैसी साधनाएं विद्यमान है और उसके साधक भी मौजूद हैं ।

शायद यह प्रकृति की लीला है....

जिसके बारे में वही जानती है ।

जो भी हो......

मदालसा के चेहरे के तनाव की रेखाओं को देखकर मेरी उससे कुछ पूछने की हिम्मत नहीं हो रही थी । मैंने बात करने की कोशिश की.....

लेकिन उसने कोई ध्यान नहीं दिया !

यह देखकर मैं भी शांत हो गया ।

बड़ी अजीब सी स्थिति थी.......

कंकालेश्वरी मंदिर

विमान आगे बढ़ता हुआ कंकालेश्वरी मंदिर के पास पहुंच गया ! वह एक पहाड़ी थी जो लगभग 50 फुट के आसपास ऊंची रही होगी ।

उसको पार करके विमान उसकी पिछली तरफ चला गया .....

वहां वैसी और तीन पहाड़ियां थी !

जिनकी ऊंचाई उसके आसपास ही रही होगी ।

उन पहाड़ियों के बीच में एक गड्ढा बना हुआ था .....

उसी मे था कंकालेश्वरी मंदिर का गुप्त द्वार !

उस द्वार से लगभग 20 फुट की ऊंचाई पर पहुंचा होगा तभी विमान को एक झटका सा लगा । चिंगारियाँ सी चारों तरफ बिखर गईं ....

जैसे वह किसी चीज से टकरा गया हो ....

विमान को हिचकोले लगने लगे....

ऐसा लगा जैसे वह नीचे गिर जाएगा या पहाड़ से टकरा जाएगा..... लेकिन कुछ क्षणों में ही वह संभल गया ।

फिर विमान वापस ऊपर की ओर उठ गया !

मदालसा की आंखें गुस्से से लाल हो गई !

कंकालेश्वरी मंदिर के उस गुप्त द्वार के ऊपर संभवत:
किसी प्रकार का तांत्रिक रक्षा कवच बना हुआ था ।
जिससे विमान टकरा गया था.....

विमान के ऊपर उठते ही मदालसा ने अपनी आंखें बंद
कर ली और कुछ विशेष मंत्रों का उच्चारण करने लगी ।
लगभग 5 मिनट बीता होगा ....
मदालसा ने उस यंत्र के अंदर बने हुए एक गोल आले में
अपना दाहिना हाथ रख दिया !
उसमें हाथ जैसे खांचे बने हुए थे .....
जिसके ऊपर उसने अपना हाथ रखा था !
उसके हाथ रखते ही विमान के अगले हिस्से से लाल रंग
की किरणें निकलने लगी.....
जो उस गड्ढे की तरफ जाने लगी । वहाँ गड्ढे के ऊपर वह
किसी अदृश्य दीवाल से टकराई । एक जोर का धमाका
हुआ और लाल किरण लुप्त हो गई ।
मदालसा के चेहरे पर हल्की सी मुस्कुराहट आई । उसके
बाद विमान भी धीरे से नीचे की तरफ उतरता हुआ.....
उस गड्ढे के बगल में जाकर उतर गया .....

हम दोनों विमान से उतरे और उस गड्ढे की ओर बढ़ गए ......

उधर कंकालेश्वरी पीठ पर मुन्डालू की तैयारी भी जोरों पर थी !

तांत्रिक मुन्डालू अपनी तैयारी में दोपहर से लगा हुआ था । उसने चंपा को एक विशेष प्रकार का नशीला द्रव पिला दिया था । जिसकी वजह से वह अब भी बेहोशी की अवस्था में थी ।

गुफा के अंदर लगभग 20 फुट के आसपास ऊंची एक पत्थर की प्रतिमा बनी हुई थी !
उसकी आकृति बिल्कुल वैसे ही थी जैसे किसी कंकाल की होती है । विशालकाय सिर जो बिल्कुल खोपड़ी के आकार का था और बाकी शरीर की सारी हड्डियां अलग अलग दिखती हुई .....
एक हाथ में एक बच्चे का कटा हुआ सिर था और दूसरे हाथ में उसका धड़ था ।
उसके सामने बलि यूथ बना हुआ था अर्थात वह स्थान जहां पर सिर रखकर बलि दी जाती है ।

कुछ मटके रखे हुए थे.....
जिसमें संभवत मदिरा थी ।
आठ पात्रों में विभिन्न प्रकार के मांस खंड रखे हुए थे ।
पास के चबूतरे पर चंपा बेसुध अवस्था में पड़ी हुई थी ....
उस मूर्ति से लगभग 5 फुट की दूरी पर एक आसन बिछा हुआ था......
और उस आसन पर विद्यमान था मुंडालू !!!
मुंडालू अपने मंत्र जाप में लीन था !
आज की रात उसके लिए एक अति विशिष्ट रात थी ......
जिसमे वह एक विशेष नरबलि का अनुष्ठान संपन्न करने वाला था .....
जिसके बाद कंकालेश्वरी देवी उसके शरीर में स्थापित हो जाती और वह लगभग अजेय हो जाता !

आपको याद होगा कि रस भैरवी के गुरु ने मुंडालू के पिता को अपनी शक्तियों से मार दिया था .....
उन्होंने कंकालेश्वरी की प्रतिमा को भी कीलित करके गुप्त कर दिया था ताकि सामान्य आदमी उसे ना देख

सके । उसी दिन से गुफा में स्थित वह प्रतिमा गायब हो गई थी ।

अपने पिता की मृत्यु के बाद बालक मुंडालू इसी मंदिर के प्रांगण में रोता हुआ बैठा था !
तभी.....
उसे अपने सामने उसके पिता की आकृति दिखाई दी ....
उसे देखते ही उसके मन में खुशी की लहर दौड़ गई !
वह उनकी आत्मा थी !
जो अपने पुत्र को कंकालेश्वरी देवी की सिद्धि प्रदान करना चाहती थी ।
कोई भी गुरु अपने पुत्र को सिद्धि दान में नहीं दे सकता । हर एक साधक को अपना प्रयास और साधना स्वयं करनी पड़ती है । उसके बाद ही कोई शक्ति उसे प्राप्त होती है ।
यह बात मुंडाली के पिता को भी मालूम थी.....

उन्होंने उसे एक गोपनीय साधना पद्धति बताई । जो बेहद कठोर थी और लगभग ग्यारह वर्ष की अवधि तक संपन्न करनी थी ।

मुंडालू ने इस पूरी प्रक्रिया को संपन्न किया ।

जब वह इस कठिन साधना को पार कर गया, तब सबसे पहले कंकालेश्वरी देवी की मूर्ति पुनर्स्थापित हुई और उसे दिखाई देने लगी । इसके अलावा उसे उस मंदिर के अंदर से कुछ गोपनीय कक्ष और तहखानों के विषय में जानकारी होने लगी ....

अर्थात वे उसको दिखाई देने लगे !

कई तांत्रिक वस्तु ऐसी होती हैं , जो सिद्धि प्राप्त लोगों को ही दिखाई देती हैं । यह कुछ कुछ वैसा ही था ।

उसमें से एक गोपनीय कक्ष में उसे कंकालेश्वरी की पूर्ण सिद्धि की गोपनीय विधि प्राप्त हुई थी ।

जिसमें उसे ग्रहण काल में एक ऐसी कन्या की बलि देनी थी , जिसने स्वयं श्यामा साधना संपन्न कर ली हो ।

श्यामा साधना, साधना के क्षेत्र में एक अत्यंत ही उच्च स्तर की साधना होती है । जिसे पार कर लेने के बाद कई प्रकार की सिद्धियां धीरे-धीरे उसे प्राप्त होने लगती हैं । इसमे लगभग छह माह से साल भर का समय लगता है ।

ऐसे ही किसी कन्या साधिका की बलि मुंडालू को देनी थी ।

वह श्यामा साधना पूर्ण होने के इंतजार में गुफा के बाहर गुप्त रुप से खड़ा था ।
उसकी सिद्धियों के कारण वहां की शक्तियां उसे रोक नहीं पाई थी और वह अपने कार्य में सफल हो गया था ।

मुंडालू और उसकी सहयोगिनी....

सफलता का वह आत्मविश्वास उसके चेहरे पर चमक रहा था !

वह अपनी साधना में लीन था !

उसके हाथ में एक माला थी जिसमें मनुष्य की उंगली की हड्डियां गूँथी हुई थी, जिसके द्वारा वह अपना मंत्र जप ऊंचे स्वर में कर रहा था ।

वह पूरा कक्ष उसकी आवाज से गूंज रहा था.....

ऐसा प्रतीत हो रहा था !

जैसे कोई सिंह गर्जना कर रहा हो.......

साधक जैसे-जैसे साधना में आगे बढ़ता जाता है वैसे वैसे उसका आत्मविश्वास भी बढ़ता जाता है !

साथ ही उसके आवाज में ओज, तेज और सिंहत्व भी आता जाता है ......

कुछ-कुछ वैसा ही मुंडालू के शब्द में भी दिखाई देता था ....

उच्च स्वर में उसका मंत्र जाप चल रहा था .....

उसके सामने एक लगभग 30 वर्ष के आसपास की आयु की आदिवासी महिला बैठी हुई थी ।

उसका रंग गहरा सावला था ।

उसने अपने बालों को जूड़े की शक्ल में बाई तरफ करके बांधा हुआ था ।

नाक में मोटी नथनी लगी हुई थी और गले में विचित्र प्रकार के पत्थरों से बनी हुई एक माला थी .....

जिसके बीच में एक हड्डी लटक रही थी !

उसके गठीले शरीर पर काले रंग की एक हाफ साड़ी थी !

जो लगभग उसके घुटनों तक रही होगी.....

वह उसके ठीक सामने बैठी हुई थी !

उसकी आंखें बंद थी और मुंडालू उसे देखते हुए मंत्र जाप कर रहा था ।

संभवत:

वह उस महिला के शरीर में कंकालेश्वरी देवी का आह्वान कर रहा था !

उसके सामने तीन मटके रखे हुए थे !

जिनमें मदिरा भरी हुई थी !

बाई तरफ एक धूनी जल रही थी .....
जिसमें कोई ऐसी चीज पड़ी हुई थी......
जिसकी वजह से हल्का काले रंग का धुआँ उठ रहा था !
उसमें में एक अजीब सी बदबू थी.....
जो कुछ कुछ वैसी ही थी .....
जैसे चर्बी के जलने से आती है

मुंडालू बड़ी सहजता से गुफा से चंपा को उठाकर ले आया था ....
उसकी वजह से उसका आत्मविश्वास बढ़ गया था
और उसे ऐसा लगने लगा था कि वहां के लोग उसकी शक्तियों के सामने नहीं टिक सकते ।
उनका सुरक्षा चक्र उसने बड़ी आसानी से तोड़ दिया था ....
उनके सबसे गोपनीय स्थान से वह उनकी संभावित उत्तराधिकारी को उठा लाने में सफल हो गया था .....
एक ऐसी कन्या को.......
जो श्यामा साधना पूर्ण कर चुकी थी ।

उसे उसके सहयोगी साधक के सामने से उठाकर ले गया था और उस साधक को अर्थात मुझे बंधन में बांध गया था ।

यह सारी चीजें इतनी सहजता से संपन्न हुई थी कि उसे ऐसा लगने लगा था कि उसका विरोध करने के लिए अब कोई आने वाला नहीं है......

वह निश्चिंत होकर अपनी साधना में तल्लीन हो गया था ......

उसके साथ बैठी थी .... उसकी सहयोगिनी पल्ली !

पल्ली लगभग 10 वर्षों से मुंडालू के साथ थी ।

साधनात्मक रूप से वह भी काफी अच्छे स्तर पर थी !

उन्होंने आपस में कई बार युगल साधनाएं संपन्न की थी और शक्तियों का साक्षात्कार किया था ....

लेकिन ग्रहण काल....

वह भी रोहिणी नक्षत्र से युक्त ग्रहण काल में.....

साधना करने का संयोग पहली बार बना था ....

जिसके विषय में मुन्डालू ने उसे बताया था कि यह दुर्लभ संयोग 112 वर्षों के बाद आया है , जब रोहिणी नक्षत्र में चंद्रग्रहण के साथ-साथ कुछ ऐसे संयोग

भी बने हैं जो कंकालेश्वरी साधना के ग्रंथ में दिए गए विवरण के अनुसार हैं ।

ऐसे संयोग में कंकालेश्वरी का प्रकटीकरण करके उन्हें नरबलि प्रदान करने से वह साधक और साधिका के शरीर में संपूर्ण रुप से स्थापित हो सकती है यह उस विधान में लिखा हुआ था ......

लेकिन.....

उसके साथ एक चेतावनी भी थी कि....

अगर किसी कारणवश यह विधान पूर्ण नहीं हो पाया तो ....

साधक की मृत्यु हो सकती है ......

उसको अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा !

देवी स्वयं उसकी बलि ले लेगी ......

ऐसी स्थिति में देवी की मूर्ति फिर से गुप्त होकर लुप्त हो जाएगी .....

उसे जागृत करने के लिए फिर किसी साधक को ग्यारह वर्षों की साधना पुनः संपन्न करनी पड़ेगी ।

तभी उसे कंकालेश्वरी की मूर्ति दिखाई देगी !

यह एक जबरदस्त खतरा था !

जिसे मुंडालू ने उठाया था....

मुंडालू पर अपने जीवन काल में इस साधना को संपन्न करने का पागलपन सवार था !
वह उसे किसी भी हालत में पूरा करना ही चाहता था !
पल्ली ने उसे कई बार समझाने की कोशिश की और यह भी कहा कि तुम्हारे पास जो सिध्दियाँ है....
वह अद्भुत हैं !
कंकालेश्वरी देवी की तुम्हारे ऊपर कृपा पहले से है, जो विरलों को प्राप्त होती है ।

यह नरबलि वाली प्रक्रिया बेहद खतरनाक हो सकती है और तुम्हारी मृत्यु का कारण भी बन सकती है !
लेकिन....
उसने पल्ली को झिड़क दिया और उसे साधना के लिए तैयार होने का निर्देश दे दिया.....

पल्ली उसका निर्देश मानने के लिए विवश थी क्योंकि उसने उसकी प्राण रक्षा की थी ।
एक बार पल्ली अपनी मां के साथ जंगल में लकड़ियां बीनने के लिए आई हुई थी । अचानक एक शेर ने उन पर हमला कर दिया । शेर ने उसकी मां को धर दबोचा उसे चीर फाड़ कर खत्म कर दिया । वह उसे देख कर

घबरा कर दूसरी ओर भागी । भागते भागते उसका पांव एक किंग कोबरा के पुंछ पर लग गया और कोबरा ने उसे डस लिया । उसका सारा शरीर नीला पड़ गया और वह बेहोश होकर वहीं गिर पड़ी ।

कुछ समय बाद मुंडालू वहां से गुजरा.....
उसने पल्ली को देखा और उसके मुख लक्षण और हस्त रेखाओं का अध्ययन करके उसे आभास हो गया कि यह अत्यंत ही श्रेष्ठ कोटि की साधिका बन सकती है ......
बस फिर क्या था ?
उसने अपनी मंत्र शक्ति से उस कोबरा को वापस आने के लिए विवश किया और फिर उसी के द्वारा पल्ली के शरीर का विष बाहर खिंचवा लिया ।
निश्चित मृत्यु को प्राप्त हो चुकी पल्ली को उसने मौत के हाथ से खींच कर वापस जीवन प्रदान कर दिया था ।
पल्ली को वह अपने साथ लेकर एक गुफा में आ गया । विष के प्रभाव की वजह से पल्ली का शरीर काम नहीं कर रहा था । मुंडालू ने अपने मंत्र और औषधियों का प्रयोग करके उसे 15 दिनों की सेवा के बाद बचा लिया......

तब से पल्ली उसकी सेविका बनकर उसी के साथ उसकी साधना में सहयोगिनी बनी हुई है ।

मुंडाली का मंत्र जाप जोर शोर से चालू था !
हम लोग गुफा के मुहाने पर पहुंच चुके थे !
वहां से हमें नीचे उतरना था.....
मदालसा ने सावधानी से उतरने का इशारा किया !
हम धीरे-धीरे अंदर की ओर बढ़ते चले गए .....
थोड़ा आगे बढ़ने पर मंदिर में जलते हुए मशाल का प्रकाश दिखाई देने लगा.....
धूनी की बदबू आने लगी !
इससे यह आभास हो गया कि हम अपनी मंजिल के पास तक पहुंच चुके हैं !
मैं और मदालसा और सावधानी से धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे ।
मुंडालू का मंत्र जाप तेजी से जारी था ।
उस समय रात के लगभग 10 बजे के आसपास का समय रहा होगा !
मुंडालू के सामने बैठी हुई पल्ली अपने स्थान पर थरथरा रही थी .....

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उसके अंदर कंकालेश्वरी का आगमन हो रहा हो !

थोड़ी देर में वह उठ कर खड़ी हो गई ....

उसके बाद वह मुंडालू के चारों तरफ मंद गति से चक्कर काटने लगी !

हर चक्कर के बाद वह उसके सामने खड़ी हो जाती और अपने सर को दाएं बाएं घुमा कर उसे विचित्र सी नजरों से देखती !

दो-तीन चक्कर लगाने के बाद उसने अपने जूड़े को खोल दिया ....

अब उसके खुले हुए बाल कुछ उसकी पीठ पर और कुछ उसके वक्ष स्थल पर बिखरे हुए थे !

उसकी सांसें तेजी से चल रही थी !

उन सांसो के साथ उसका वक्षस्थल भी ऊपर नीचे हो रहा था !

कुछ देर तक वह इसी प्रकार चक्कर लगाती रही .....

उसके बाद उसने अपने वस्त्र को उतार फेंका ।

अब वह दिगंबर अवस्था में उसके सामने खड़ी हुई थी ....

मुंडालू पहले से ही दिगंबर अवस्था में बैठा था !

उसका मंत्र जाप जारी था !

उसके चेहरे पर किसी प्रकार के भाव नहीं थे !

ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह ऐसी स्थितियों से पहले भी गुजर चुका हो !

उसकी आंखें लाल-लाल थी ......

वह पूरे उत्साह के साथ मंत्र जाप कर रहा था ।

तभी.....

अचानक पल्ली ने एक अजीब सी आवाज निकाली !

वह आवाज चीखने और रोने के मिश्रण के जैसी थी !

उसके बाद उसके मुंह से एक सीत्कार की ध्वनि निकली......

जैसे चटखारा लेते समय हमारे मुंह से निकलती है ।

यह सुनते ही मुंडालू ने सामने रखे हुए तीन मटको में से एक मटका उसकी ओर बढ़ा दिया !

जिसे उसने हाथों से पकड़ा और होठों से लगाकर एक ही बार में खाली कर दिया ....

और मटके को हवा मे उछाल दिया ......

मुंडाली वापस अपने आसन पर बैठ चुका था !

वह मदिरा पीकर उन्मत्त हो रही थी....

उसके बाद लड़खड़ाते हुए पुनः उसके चारों तरफ चक्कर काटने लगी ....

लगभग तीन चक्कर काटने के बाद उसने फिर से वैसी ही आवाज निकाली और एक ज़ोर का अट्टहास किया !

मुंडालू फिर उठा ....

उसने अगला मदिरा का पात्र उसे प्रस्तुत कर दिया !

एक ही बार मे उसने दूसरा पात्र भी समाप्त कर दिया !

उसका शरीर थरथराने लगा !

थोड़ी देर के बाद उसने अपने सर को इधर-उधर पटकना प्रारंभ किया और नाचते हुए मुंडालू के चारों तरफ चक्कर लगाने लगी !

उसकी सांसे तेजी से चल रही थी ......

तेज सांसो के साथ उसके उन्मुक्त वक्षस्थल भी ऊपर नीचे हो रहे थे !

वह उसी प्रकार उसको देखते हुए उसके चारों तरफ गोल घेरे में चक्कर काट रही थी और नृत्य करती जा रही थी ।

कुछ चक्कर काटने के बाद वह फिर उसके सामने आकर उकड़ूँ बैठ गई !

उसके बैठते ही मुंडालू ने तीसरा मदिरा पात्र उसकी और बढ़ा दिया ।

पल्ली ने उसे आधा ग्रहण किया और बाकी द्रव को मुंडालू के मुंह से लगा दिया ।

उसे मुंडालू ने ग्रहण कर लिया ।

पल्ली ने उस पात्र को हवा में उछाल दिया ।

जमीन पर गिरने से वह मटकी टुकड़े टुकड़े होकर बिखर गई ।

अंदर जल रहे मशाल का प्रकाश बढ़ गया .....

अब मुंडालू के सामने पल्ली बैठी हुई उसे घूर रही थी !

थोड़ी देर उसी मुद्रा में बैठने के बाद उसके मुख से एक अजीब किस्म की आवाज जो कुछ-कुछ सीटी के जैसी लग रही थी.....

वह निकली......

संभवत: यह किसी प्रकार का संकेत था !

जिसे सुनते ही मुंडालू जमीन पर लेट गया । उसका शरीर पूरी तरह से तैयार था । पल्ली आगे बढ़ी और उसके ऊपर सवार हो गई । मुंडालू का मंत्र जाप अब भी जारी था......

ग्रहण का समय प्रारंभ हो चुका था......

उसी के साथ पल्ली के आघात का क्रम भी प्रारंभ हो चुका था.....

उसने मुंडालू के बालों को अपने बाएं हाथ से पकड़ा हुआ था और बेहद प्रचंड आघात कर रही थी !

उसकी तीव्रता का अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि पूरी कंदरा उस प्रहार की आवाज से गूंज रही थी.....

वह किसी शव की तरह लेटा हुआ था ....

अचानक...

आवेशित पल्ली ने अपने दोनों पाव उठाकर तांत्रिक के वक्षस्थल पर एडी का जोरदार प्रहार किया !

मुंडालू की चीख निकल गई !

लेकिन वह उसी मुद्रा में लेटा रहा ......

दस मिनट के आसपास हो चुके थे !

पल्ली के आघात की तीव्रता बढ़ती जा रही थी !

मुंडालू के चेहरे पर तनाव के लक्षण दिखाई दे रहे थे . .....

पल्ली की तीव्रता बढ़ती जा रही थी.......

उसकी आंखें लाल हो चुकी थी....

शरीर धनुष की तरह तन चुका था आंखों में एक पैशाचीक चमक दिखाई दे रही थी !

बाल बिखर गए थे !

हर प्रहार के साथ मुख से चीत्कार की ध्वनियाँ भी निकलती थी .....

जो इस बात का प्रमाण था कि वह इस संपूर्ण प्रक्रम को पूर्ण आनंद के साथ ले रही थी .....

लेकिन मुंडालू की हालत धीरे-धीरे खराब होती जा रही थी........

आरंभिक चरण में ऐसा लग रहा था कि मुंडालू क्रियाओं का अभ्यस्त है......

लेकिन जैसे-जैसे पल्ली की तीव्रता बढ़ती गई....

मुंडालू के चेहरे पर तनाव के लक्षण दिखाई देने लगे.......

हम वहाँ तक पहुँच चुके थे ....

मेरी नजर चंपा की तरफ गई !

वह पद्मासन में बैठी हुई थी . ...

चंपा के होठों से कुछ मंत्रों का उच्चारण हो रहा था और गूढ आवाहन मुद्रा उसकी अंगुलियों से बनी हुई थी और उसे वह पल्ली की तरफ इंगित करकर प्रदर्शित कर रही थी ......

मुद्रा हाथ की उंगलियों से बनाई जाती है ।

यह कई प्रकार की होती हैं । तांत्रिक साधना ओं में मुद्राओं का काफी महत्व होता है । मंत्र जाप के साथ-साथ अगर यह मुद्राएं भी दिखाई जाएँ तो इष्ट जल्दी प्रसन्न होते हैं ।

प्रत्येक देवी या देवता की कुछ विशेष मुद्राएं होती है । उसी प्रकार से उन्हें बुलाने के लिए भी विशेष मुद्रा का प्रयोग किया जाता है जिसे आवाहन मुद्रा कहते हैं । पूजन समाप्त हो जाने के बाद उनके विसर्जन के लिए भी इसी प्रकार मुद्राओं के दिखाए जाने का प्रावधान है ....

कुछ मुद्राएं सामान्य होती हैं ! जो लगभग सभी को मालूम होती हैं ।

कुछ विशेष मुद्राएं होती हैं ! जो अत्यंत गोपनीय होती हैं ! ये विशेष सिद्ध तांत्रिकों को ही मालूम होती है ॥

वैसी ही एक आवाहन मुद्रा थी जो चम्पा दिखा रही थी ......

मैंने अपनी बाईं तरफ देखा तो मदालसा के मुख से भी कुछ मंत्रों की हल्की हल्की ध्वनियाँ आ रही थी......

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वे उस शक्ति को और उत्तेजित कर रही हो....

उसकी उग्रता को और बढ़ा रही हो.....

जब दुश्मन शक्तिशाली हो तो कई बार ऐसे प्रयोग भी करने पड़ते हैं जो उसे पराजित करने के लिए आवश्यक हो ।

संभवत यह उसी की प्रक्रिया थी जिसके तहत वे दोनों छिन्नमस्ता मंत्रों के द्वारा पल्ली मे आवेशित कंकालेश्वरी की तीव्रता को बढ़ा रहे थे ...

यह मेरी समझ में आ गया !

जैसे ही यह बात मेरी समझ में आई तो मुझे लगा कि मुझे भी कुछ करना चाहिए ।

तभी मुझे मेरी जंघा पर दबी हुई मदन कामेश्वर गुटिका की याद आई । यह गुटिका मुझे तारापीठ पर मिली थी । जिसके विषय में जानने के लिए आप पूर्व प्रकाशित रचना "तारापीठ की छाया" पढ़ सकते हैं ....

गुफा के अंदर भारीपन बढ़ता जा रहा था ....

किसी श्मशान की तरह आभास हो रहा था ....

अजीब अजीब सी आवाजें न जाने कहां कहां से निकल कर आ रही थी ....

कभी ऐसा लगता .....जैसे कोई चीख रहा हो ....

कभी ऐसा लगता.....जैसे कोई रो रहा है ....

कभी किसी छोटे बच्चे के दर्द से कराहने जैसी आवाज आती.......

तो कभी भयानक अट्टहास गूंजने लगता ......

धुंधली धुंधली आकृतियां यहां वहां दिखाई देने लगी थी ......

कुल मिलाकर वातावरण भयानक था ।

अधिकांश उग्र शक्तियां और तामसिक शक्तियां शमशान वासिनी होती है ।

जब श्मशान जागरण की क्रिया संपन्न होती है तो उसके साथ साथ उनके अनुकूल वातावरण बनने लगता है और वह प्रकट होने लगती हैं ....

या यूं कहिए कि उनको अपने अनुकूल वातावरण लगने लगता है और वे साधक के समक्ष अपनी उपस्थिति का आभास विभिन्न प्रकार से कराती है । कुछ-कुछ वैसा ही हो रहा था ......

मेरा बाया हाथ मदन कामेश्वर गुटिका वाली जगह पर स्थापित हो गया । दाएं हाथ से मैंने अपने गले में पड़ी हुई वह माला अपने हाथ में ले ली जो मेरे गुरु ने मुझे दी थी !

इस माला में रुद्राक्ष के दाने थे और सुमेरु के स्थान पर एक गौरी शंकर रुद्राक्ष था......

जो मेरे गुरुदेव ने मुझे दिया था ।

गौरी शंकर रुद्राक्ष शिव और पार्वती के संयुक्त कृपा का कारक माना जाता है । यह रुद्राक्ष दरअसल दो रुद्राक्ष के जुड़ने से बनता है जो प्राकृतिक रुप से जुड़े होते हैं अर्थात पेड़ मे ही यह इसी प्रकार जुड़े हुए होते हैं ।

इनमें से एक बड़ा और एक छोटा होता है !

कई बार दोनों बराबर होते हैं !

अर्धनारीश्वर साधना संपन्न करने के बाद गौरी शंकर रुद्राक्ष की तेजस्विता बहुत ज्यादा बढ़ गई थी !

जैसे ही मैंने माला गले से उतार हाथ मे लेकर अर्धनारीश्वर मंत्र का उच्चारण कर उसे स्पर्श किया मुझे बिजली का एक जोरदार झटका लगा ...

यह झटका कुछ-कुछ वैसा ही था जैसे अचानक आप किसी खुले तार के संपर्क में आ जाए ....

आपका हाथ या पाव उससे स्पर्श हो जाए तो आपको जैसा महसूस होता है.....

बिल्कुल वैसा ही....

जबरदस्त बिजली का झटका मुझे लगा !

मेरा शरीर किसी कमान की तरह तनने लगा ......

ऐसा लग रहा था जैसे कोई उसे पकड़ कर दोनों तरफ से खींच रहा हो ।

उसके साथ ही मेरा शरीर भी पूर्ण स्तंभन की स्थिति में आ गया ।

मेरे दाहिने हाथ में अब गौरी शंकर रुद्राक्ष युक्त वह माला थी और मेरा बाया हाथ मदन कामेश्वर गुटिका के ऊपर रखा हुआ था .....

मैंने भगवती महामाया कामकला काली के मंत्रों का मन ही मन जाप करना प्रारंभ कर दिया ।

सभी प्रकार की युगल साधनाओं के मूल में यही मंत्र काम करता है ।

यह भगवती काली का सबसे विशिष्ट और अद्भुत स्वरुप है ...

यह गोपनीय भी है.....

और शक्तिशाली भी !

ऐसा माना जाता है कि इन से परे कोई शक्ति नहीं है ....

ऐसी भगवती महा कामकला काली का मंत्र जाप मैं अपनी उस गुरु माला से प्रारंभ कर चुका था......

जैसे-जैसे मेरे हाथ मनको पर आगे बढ़ते जाते थे ......

वैसे वैसे मैं एक अजीब सी उत्तेजना का अनुभव अपने अंदर करने लगा था !

यह कुछ कुछ वैसा ही था .....

जैसा गुफा में देवकी गुरुकल के ऊपर भगवती छिन्नमस्ता के आगमन के समय शरीर में महसूस होने लगा था .....

इस बार की प्रचंडता कुछ ज्यादा ही थी !

उधर पल्ली के आघात की तीव्रता लगातार बढ़ती जा रही थी ....

बिल्कुल उन्मुक्त भाव से.....

विद्युत की गति से .....

प्रचंड आघातों के साथ उसकी क्रिया आगे बढ़ रही थी ...

उधर मुंडालू के चेहरे पर अब तनाव की लकीरें और ज्यादा बढ़ने लगी थी ....

अब तक वह हमें देख चुका था.....

उस साधना के क्रम के बीच में वह कुछ भी करने की स्थिति में नहीं था। उसे हर हालत में अपनी इस साधना को संपूर्ण करना ही था .....

अन्यथा उसकी मृत्यु अवश्यंभावी थी.......

भैरवी साधना सुनने में बहुत आकर्षक लगती है !

लेकिन यह तलवार की धार पर चलने के समान है!

जब देवी का आवेश भैरवी पर होता है तो उसकी शक्ति असीमित हो जाती है......

साधक को उस समय तक उसका साथ देना पड़ता है.......

जब तक उसकी इच्छा हो !

यदि उसके पहले विसर्जन हो गया तो भयंकर कोप का सामना भी करना पड़ता है !

देवी जितनी उग्र होगी...

उसका कोप भी उतना ही भयानक होगा ।

इतना ही नहीं घात प्रतिघात की प्रचंडता भी उसी प्रकार बढ़ती जाती है !

यह तो साक्षात तामसिक शक्तियों का पूंजी भूत स्वरुप कंकालेश्वरी थी !

इसलिए उसकी उग्रता भी उसी प्रकार की थी !

आघातों की आवाज से गुफा गूंज रही थी ......

लगभग 10 मिनट तक ऐसा ही चलता रहा !

अब पल्ली की सीत्कार की आवाजों के साथ मुंडालू की चीखें गूंजने लगी ....

थोड़ी देर में मुंडालू की चीख़ों की तीव्रता भी बढ्ने लगी ।

मुंडालू के अंगों से खून का बहना प्रारंभ हो चुका था ......

हम तीनों का मंत्र जाप चालू था !

एक तरह से मुंडालू बुरी तरह फस चुका था !

उसे कंकालेश्वरी के साथ उस क्रिया में सहयोग करते हुए उसे पूर्णता तक पहुंचाना था !

अगर इसमें वह असफल हो जाता तब भी उसके साथ कुछ भी घटित हो सकता था .....

उधर चंपा हम दोनों को मंत्र जाप करता हुआ देखकर उस मूर्ति की ओर मुड़ कर बैठ चुकी थी और कुछ विशेष क्रियाएं संपन्न कर रही थी ।

मदालसा ने मेरी ओर देखा और मानसिक रूप से आगे की क्रिया देख लेने का संकेत किया और चंपा की तरफ आगे बढ़ गई ......

उसके हाथ में एक थैली थी !

जिस पर मैंने ध्यान नहीं दिया ......

उसमें क्या था ? यह मैं नहीं देख पाया ......

लेकिन कोई ऐसी चीज थी जो जिंदा थी और हिल रही थी.......

चंपा के बगल में बैठ कर उसने वह चीज झोले से बाहर निकाल ली ......

वह एक काले रंग का मुर्गा था .....

जो निश्चित रूप से कंकालेश्वरी की बलि के रूप में लाया गया होगा ......

अब पासा पलट चुका था !

कंकालेश्वरी के सामने पूजन करने के लिए बैठे हुए व्यक्ति बदल चुके थे !

अब वहां पर चंपा और मदालसा दोनों बैठी हुई थी और कुछ विशेष गोपनीय क्रियाओं को संपन्न कर रही थी .....

और इधर......

पल्ली का आघात बढ़ता जा रहा था ।

मुंडाली के मन में हमें देख कर विकार आना प्रारंभ हो गया था ......

वह विचलित हो रहा था .....

उसे पता चल गया था कि अब उसकी साधना खंडित हो सकती है.....

पल्ली की चेतावनी उसने नहीं सुनी थी....

पल्ली का पूर्वाभास सही था ।

उसका अति आत्मविश्वास उसके लिए परेशानी का कारण बनने वाला था और संभावित मृत्यु का भी .....

जो गृहस्थ हैं वे जानते होंगे कि अगर आप अपने सहयोगी के साथ हो और आपके मन में कोई तनाव या

चिंता आ जाए तो प्रक्रिया अधूरी रह जाती है । ठीक वैसी स्थिति मुंडालू के साथ हो चुकी थी ....

उसका स्तंभन क्षीण होने लगा था .....

उसके साथ पल्ली की चीत्कार की आवाजें अब क्रोध की हुंकार जैसी प्रतीत होने लगी थी .....

अब वह क्रोध स्वरूप धारण कर चुकी थी !

उसके मुंह से किसी चोट खाई हुई सिंहनी के समान गुर्राने की आवाजें निकलने लगी थी।

उसने मुंडालू की गर्दन दबा दी और आघातों की तीव्रता बढ़ा दी .....

लेकिन.....

मुंडालू अपना स्तंभन खो चुका था !!!

यह उस आवेशित स्थिति में कंकालेश्वरी के लिए बिल्कुल स्वीकार्य स्थिति नहीं थी !

उसने मुंडालु को गर्दन पकड़ कर उठा लिया और दूर फेंक दिया ....

पल्ली मुश्किल से साढ़े चार या पाँच फुट की थी .....

वह तांत्रिक मुंडाली 6 फुट का विशाल व्यक्ति था .....

लेकिन उस आवेशित अवस्था में पल्ली ने उसे किसी गुड्डे की तरह गुफा के दूसरे छोर मे उछाल दिया .....

मुंडालू का शरीर हवा में उछलता हुआ गुफा की छत से टकराया !

उसके छत से टकराते ही उसका सर फट गया और खून की धार बह निकली.......

कुछ ही क्षणों में उसका निर्जीव शरीर गुफा के दूसरे कोने में पड़ा हुआ था .....

जो पूरा का पूरा खून से लथपथ हो चुका था ......

सर से बहता हुआ खून उसके चेहरे और सीने में बह रहा था ......

एक प्रचंड तांत्रिक !

जो कुछ समय पहले तामसिक शक्तियों की स्वामिनी कंकालेश्वरी की पूर्ण सिद्धि को प्राप्त करने के लिए एक गोपनीय क्रिया को संपन्न कर रहा था ....

वह उसके आवेश को संभालने में असमर्थ होने की वजह से अब मृत्यु के आगोश में जा चुका था ।

जैसा कि मैंने पहले भी बताया था......

भैरवी साधना !

सुनने में बेहद आकर्षक अवश्य लग सकती है !

लेकिन.....

उससे भयानक साधना !

उससे खतरनाक साधना .....

शायद ही कोई और हो ।

यह साधना वही कर सकता है जिसने मृत्यु को स्वीकार कर लिया हो .....

क्योंकि इसमें कुछ भी हो सकता है ।

कभी पूर्ण सफलता मिल जाती है ...

कभी एक क्षण की गलती और जीवन से हाथ धो देने की स्थिति सामने खड़ी हो जाती है ।

साधक को दोनों स्थितियों के लिए तैयार होना पड़ता है ।

ऐसी साधनाएं केवल और केवल कापालिक और अघोरियों के लिए होती है.......

जो इस संसार का त्याग कर चुके होते हैं......

और......

सभी मोह माया के बंधनों से दूर हो चुके होते हैं ।

जिनके जीवन में किसी प्रकार की प्रतिबद्धता या रिश्तों का कोई महत्व नहीं होता .....

जो परिवार और समाज की सीमाओं से दूर हो चुके होते हैं .....

ऐसे साधक ही इस प्रकार की साधना को संपन्न कर सकते हैं ।

गृहस्थ साधक को भूल कर भी ऐसी साधनाओं को करने के विषय में नहीं सोचना चाहिए......

क्योंकि वह बहुत कमजोर मानसिक स्थिति का स्वामी होता है ....

और सहजता से विचलित हो सकता है ।

जिसका परिणाम ......

खैर ....

पल्ली के अंदर कंकालेश्वरी का आवेश अभी तक शांत नहीं हुआ था ! उसे शांत करने के लिए यह जरूरी था कि उसकी क्रिया को संपूर्ण कर दिया जाए .....

अन्यथा वह विध्वंसक स्थिति में पहुंच सकती थी !

उसका क्रोध चरम पर पहुंच चुका था और वह सामने रखी हुई चीजों को उठा उठा कर इधर-उधर फेंक रही थी .....

मटकिया चकनाचूर हो चुकी थी और खोपड़ियों को उसने लात मारकर गुफा के छोर तक उछाल दिया था ।

ऐसा प्रतीत हो रहा था ......

जैसे वह सारी गुफा को तहस-नहस कर देने को आतुर हो गई हो !

आवेशित पल्ली क्रोधित अवस्था मे चीजों को उछालती हुई उस गुफा मे पाँव पटकती हुई घूम रही थी ......

फिर वह क्रोधित अवस्था में उस मूर्ति की ओर बढ़ने लगी.....

जिसके सामने चंपा और मदालसा बैठी हुई थी और विभिन्न प्रक्रियाओं को संपन्न कर रही थी ......

उसके बढ़ने की स्थिति से ऐसा लग रहा था कि वह अभी उन दोनों की गर्दन दबा देगी ......

वह लगभग उनके पास पहुंचने ही वाली थी तभी मेरे दिमाग में एक विचार कौंधा ......

मुझे लगा कि संभवत: इससे बात बन सकती है ।

मैं आगे बढ़ा......

और.....

उस चबूतरे पर उत्तान अवस्था में लेट गया ......

वहाँ लेटते ही मेरे सारे शरीर में आग सी लगने लगी .....

आखिर वह कंकालेश्वरी के साधक मुंडालू का सिद्ध आसन था .....

एकदम चैतन्य .....

सिद्ध.....

प्रचंड तामसिक ऊर्जा से भरा हुआ ......

मुझे लगा कि मेरे शरीर के तैयार हो जाने के पीछे भगवती की कोई इच्छा रही होगी ..... तभी इस प्रकार से मेरे साथ हो रहा था ।

वहां लेटते ही मेरे अंदर उत्तेजना का सागर सा उमड़ पड़ा....

मेरे अंदर भयानक क्रोध उभरने लगा.....

अपने अंदर अचानक प्रचंड शक्ति का आभास मुझे होने लगा ..... मुझे ऐसा लगने लगा कि मैं अगर एक मुक्का मारूंगा तो वह चबूतरा ही दो टुकड़े में फट जाएगा .....

उधर आवेशित पल्ली उन दोनों से मुश्किल से दो कदम की दूरी पर थी ....

तभी .....

अचानक .....

मेरे मुंह से किसी हिंसक जानवर की तरह चीख निकलने लगी ....

यह कुछ कुछ वैसी ही थी.....

जैसी कि कुछ समय पहले कंकालेश्वरी देवी के मुख से निकल रही थी ।

उसके बाद मैंने एक जोर की हुंकार मारी.......

पल्ली उनकी गर्दन पकड़ने ही वाली थी तभी मेरे हुंकार को सुनकर वह मेरी ओर पलट गई......

मुझे इस प्रकार लेटा देखकर आवेशित पल्ली उछलती हुई मेरी तरफ आई !

ऐसा लग रहा था ......

जैसे किसी बच्चे को उसका सबसे पसंदीदा चॉकलेट दे दिया गया हो ......

वह तेजी से उछलती हुई आई......

किसी जंगली मृग की तरह ......

और कूदकर मेरे ऊपर सवार हो गई !

फिर प्रारंभ हो गया .....

प्रचंड आघातों का वैसा ही क्रम !

जैसा मुंडालू के साथ चल रहा था ।

मैंने मदन कामेश्वर गुटिका के ऊपर अपना हाथ फेरा और गुरुदेव और महा कामकला काली को याद करके......
उनके मंत्रों का उच्चारण करके......
अपना ध्यान नाभि के मध्य भाग पर केंद्रित करके स्थिर कर लिया.......
अब मेरा मन पूरी तरह से मेरे नियंत्रण में था और आसपास की किसी भी चीज का आभास लगभग समाप्त हो चुका था .....
मैं उस क्रिया में देवी कंकालेश्वरी को अपने आप को पूर्ण रूप से समर्पित कर चुका था और उनकी संतुष्टि के लिए सन्नद्ध हो गया था .....

अब मेरा अंग पूर्ण अवस्था में था !
पल्ली उस पर लगातार प्रहार कर रही थी !
कुछ समय के बाद मुझे महसूस होने लगा कि मेरे अंग से खून का रिसाव प्रारंभ हो गया है !
और क्रिया जारी थी ......

पल्ली के आघात की तीव्रता लगातार बढ़ती जा रही थी ....

बिल्कुल उन्मुक्त भाव से.....

विद्युत की गति से .....

प्रचंड आघातों के साथ उसकी क्रिया आगे बढ़ रही थी ...

लगभग 20-25 मिनट तक वैसा ही चलता रहा !!

उसके बाद पल्ली की आवेशित स्थिति शांत होने लगी .....

संभवतः वह संतुष्ट हो चुकी थी ....

वह निढाल होकर मेरे ऊपर गिर गई ।

मैं अभी भी उत्तान अवस्था में उसी चबूतरे पर पड़ा हुआ था और आगे की स्थितियों के विषय में सोच रहा था ।

तभी......

पल्ली को एक जोरदार झटका लगा और वह मुझ से परे हट कर गिर गई ।

संभवतः उसके ऊपर से आवेश हट चुका था । उसके साथ ही कंकालेश्वरी देवी की वह मूर्ति जगमगाने लगी ।

ऐसा लग रहा था जैसे वे स्वयं वहां पर प्रकट हो गई हो........

मूर्ति से लाल रंग का प्रकाश बिखरने लगा और वह कंकाल जैसी उनकी आकृति सफेद रंग के प्रकाश से चमचमाने लगी ......

कंकालेश्वरी देवी जागृत हो चुकी थी और अब उसके सामने नरबलि देना अनिवार्य था ....

जैसा कि आप जानते हैं कंकालेश्वरी साधना का यह विशिष्ट संयोग लगभग 112 वर्षों के बाद आया था ।

उस संयोग में इस विशिष्ट पूजन को संपन्न करने के लिए यह अनिवार्य था कि अंत में एक ऐसी स्त्री की बलि दी जाए......

जिसने श्यामा साधना संपन्न की हुई हो ......

अन्यथा कुछ भी हो सकता था !

वह गुफा ध्वस्त हो सकती थी !

हम सारे के सारे लोग एक साथ उसी में समाप्त हो सकते थे.....

कंकालेश्वरी कुछ भी अघटित को अंजाम देने में सक्षम देवी थी .....

मैं सोच रहा था कि अब आगे क्या होगा ?

आगे क्या करना चाहिए ?

उधर पल्ली को धीरे-धीरे होश आ रहा था !

कंकालेश्वरी देवी के प्रकटीकरण के साथ गुफा के अंदर

लाल रंग की रोशनी बिखरी हुई थी .....

उसके प्रभाव से संभवत: पल्ली पुन: जागृत हो गई थी

और वह उठ कर खडी हो गई थी........

जैसे ही उसने देवी के विग्रह को चमचमाते हुए

देखा ....

वह दौड़ती हुई आई और उस विग्रह के सामने लेट

गई ......

उसके दोनों हाथ पीठ की तरफ थे और नितंब के ऊपर

उन दोनों हाथों को उसने आपस में बांधा हुआ था .....

उसका शरीर कांप रहा था......

किस वजह से कांप रहा था ?

यह मेरी समझ में नहीं आया !

संभवत: किसी अनिष्ट की आशंका से होगी......

या फिर भावावेश की वजह से......

जो भी था......

उसके शरीर की थरथराहट मुझे स्पष्ट दिखाई दे रही थी !

उसी के बगल में चंपा बैठकर कुछ प्रक्रिया संपन्न कर रही थी ......

उसके बाद जो हुआ.....

वह मेरी कल्पना से परे था ....

अचानक वहां पर हल्का गुलाबी रंग का धुआं फैलने लगा......

ऐसा तभी होता है जब कोई विशेष शक्ति का आगमन होने वाला हो !

कुछ 2-3 सेकंड लगे होंगे जब उस गुलाबी रंग के प्रकाश के भीतर से देवकी गुरुक्कल की आकृति प्रकट हुई.....

हाथ में था चमचमाता हुआ चंद्रहास खड़ग ......

नरबलि....

उसके बाद जो घटित हुआ.....

वह बेहद लोमहर्षक था !

डरावना !

भयानक !

ऐसा......

जिसे याद करने पर आज भी मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं ......

देवकी गुरुकल की आवाज गूंजी - चम्पा !

चंपा और मदालसा अब भी देवी की ओर देखती हुई......

अपने प्रयोग में संलग्न थी !

इस आवाज को सुनकर चंपा पलटी और देवकी के बिम्ब को देखते ही अपने स्थान से उठ कर खड़ी हुई.....

जैसे उसे कोई मानसिक संकेत मिल गया हो कि आगे क्या करना है ....

चंपा के मासूम चेहरे पर उस समय आत्मविश्वास, दृढ़ निश्चय और प्रचंडता सब एक साथ बिखरी हुई थी ।

उसका यौवन और सौंदर्य से भरा हुआ चेहरा इस समय लाल सुर्ख हो चुका था !

उसकी आंखें क्रोध से भरी हुई थी !

उनमें लाल रंग के सुर्ख डोरे दिखाई दे रहे थे !

ऐसा लग रहा था ......

जैसे वह कुछ कर देने को संकल्पित हो गई हो .....

तभी ....

देवकी गुरुक्कल ने वह खड्ग चम्पा की ओर उच्छाल दिया ....

चम्पा ने उसे लपक लिया ।

जैसे ही उसने उस खड्ंग को अपने हाथ में लिया उसके शरीर में एक झटका सा लगा .....

ऐसा लगा जैसे कोई आवेश उसके अंदर समाहित हो गया हो ।

फिर ....

उसके हाथ में रखा हुआ वह चंद्रहास खड्ग हवा में उठा और तेजी से नीचे गिरा !

खचाक.......

की आवाज गुफा मे गूंज उठी ....

और ......

एक ही बार में पल्ली की गर्दन उसके धड़ से अलग हो गई !

मैं आंखें फाड़ फाड़ कर दृश्य को देख रहा था !

मुश्किल से 18 वर्ष की वह मासूम युवती !

जिसके साथ मैंने साधना संपन्न की थी !

वह......

जिसे देखने से ऐसा प्रतीत होता था .....

जैसे.....

वह आस पड़ोस में रहने वाली कोई कॉलेज जाने वाली युवती हो ......

वह अपने हाथ में रक्त से लिपटे हुए चंद्रहास खड्ग को लेकर खड़ी थी !

जिससे अभी-अभी उसने एक नरबलि संपन्न की थी .....

एक ऐसी क्रिया......

जो प्रचंड अघोर और कापालिक साधना में सिद्ध तांत्रिक भी कभी कभार संपन्न करते हैं ....

वह उस युवती ने अपने यौवन के प्रारंभ में ही संपन्न कर दिया था ....

मैं मन ही मन सोच रहा था कि यह कितनी उच्च्च स्तर की आत्मा होगी ......
जो इतनी अल्पायु में न सिर्फ विभिन्न विद्याओं में पूर्ण हो चुकी है.....
वरन श्यामा साधना संपन्न करने के बाद इतनी विपरीत परिस्थितियों में तामसिक शक्तियों की सिद्ध देवी कंकालेश्वरी के सामने नरबलि भी दे चुकी है ....
अब मुझे समझ में आ रहा था कि देवकी गुरुक्कल ने उसे इस गुरुकुल का उत्तर दायित्व सौंपने के योग्य क्यों समझा था !

पल्ली का मुंड कटकर कंकालेश्वरी देवी के चरणों में पड़ा हुआ था ....

अचानक गुफा सियारों के रूदन से गूंज उठी !

ऐसा लग रहा था जैसे ढेर सारे सियार एक साथ रो रहे हों ......
अजीब सा भयानक माहौल हो चुका था ......
कंकालेश्वरी देवी का विग्रह अपने स्थान पर हिलने लगा ......

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वहां भूकंप सा आ गया हो लेकिन उस मूर्ति के अलावा कोई भी चीज नहीं हिल रही थी !

संभवतः वे क्रोधित थी !

कि......

उनका साधक असफल हो गया था ......

जो प्रक्रिया संपन्न हो रही थी .....

उसके अंत में नरबलि होनी थी !

जो हो चुकी थी .....

तभी चंपा ने आगे बढ़कर उस नरमुंड को उठाया और उसे हिलती हुई उस मूर्ति की तरफ हवा में उछाल दिया !

जो सीधे उस मूर्ति के खोपड़ी नुमा मुंह वाले स्थान पर जाकर चिपक गई ....

और....

ऐसा लगने लगा .....

जैसे वह उस सिर के अंदर से रक्त और मांस को ग्रहण कर रही हो !

चबाने की चपर चपर की आवाजें आ रही थी ....

फिर.......

थोड़ी ही देर में वह मुंड उस मूर्ति के अंदर चला गया ....

और गायब हो गया !

अब केवल पल्ली का धड़ जमीन पर पड़ा हुआ

था ......

देवी का विग्रह अभी भी हल्का-हल्का हिल रहा था

। चंपा और मदालसा दोनों मूर्ति के दाहिने और बाएं

जाकर खड़ी हो गई ......

उन्होंने मुझे इशारा किया और मैं मूर्ति के ठीक सामने

जाकर खड़ा हो गया ....

मेरे वहां खड़ा होते ही मूर्ति का हिलना बंद हो गया !

उसमें से एक तीव्र प्रकाश की किरण निकली जो सीधे

मेरे माथे से टकराई ....

वह एक प्रचंड आघात था !

मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा सर फट गया हो.......

मेरे सारे शरीर मे आग लग गयी हो ....

उस तेज को सहन न कर सकने के कारण मैं पीछे की

तरफ गिर गया .....

गिरते-गिरते मैंने देखा मूर्ति का हिलना बंद हो चुका

था.......

चंपा और मदालसा किसी नीले रंग के बेल से उस मूर्ति को चारों तरफ से बांध रही थी ....

संभवत: वे उसे पुन: कीलित कर रही होंगी ।

गिरते गिरते मुझे ऐसा लगा जैसे पीछे से देवकी गुरुकल ने मुझे संभाल लिया और धीरे से जमीन पर लिटा दिया ......

उसके बाद मैं बेहोश हो गया ।

लगभग 10-15 मिनट तक शायद मैं बेहोश रहा । उसके बाद जब मुझे होश आया तो चंपा और मदालसा ने मिलकर उस मूर्ति को नीले रंग के बेल से कई बार लपेट दिया था ......

देवकी गुरुकल का बिम्बात्मक स्वरूप वहां से लुप्त हो चुका था ....

उस मुर्गे को सामने रखकर कुछ मंत्र जाप कर रही थी .....

कुछ अन्य क्रियाएं करने के बाद उन्होंने उस मुर्गे की बलि भी वहां प्रदान कर दी .....

कंकालेश्वरी देवी पुन: कीलित हो चुकी थी ....

सियारों का झुंड अचानक फिर से वहां पर प्रकट हो गया और पल्ली और मुन्डालू के शरीर का भी वही हाल हुआ जो गुफा के अंदर बकरे का हुआ था ....
उन्होने उसकी बोटियाँ नोच डाली और सारे के सारे टुकड़ों को लेकर वहां से रफा-दफा हो गए ....

रात्रि का 11:30 या 12:00 बजे का समय रहा होगा अर्थात चंद्रग्रहण का लगभग आधा समय व्यतीत हो चुका था ....
लेकिन अभी आधा चंद्र ग्रहण काल बाकी था ।
मदालसा ने मुझे और चंपा को साथ में आने का इशारा किया और हम तेजी से गुफा के दरवाजे की ओर निकल पड़े ......
गड्ढे के बाहर वह विमान प्रतीक्षा में था.....
बाहर निकलकर चम्पा ने हवा मे हाथ हिलाया और उसके हाथ से एक किरण से पहाड़ी मे टकराई । पहाड़ी मे एक दरार बन गई और उसमे से पानी निकलकर उस गड्ढे मे भरने लगा ....
उस विमान में बैठकर कुछ ही मिनटों के बाद हम वापस अपनी गुफा में पहुंच चुके थे । गुफा में पहुंचने के

बाद मदालसा ने साधना के अगले चरण की प्रक्रिया समझाई और वहां से वापस चली गई ।

वहां हमने लगभग डेढ़ घंटे तक भगवती के विश्वरूप कामकला काली का गोपनीय पूजन संपन्न किया और अगली सुबह मदालसा वाले गांव में लौट आए ....

वहां मदालसा मौजूद थी.....

लेकिन देवकी गुरुकल दिखाई नहीं दे रही थी !

मेरे मन में विभिन्न प्रकार के विचार दौड़ रहे थे ....

मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या कहूं ?

मैंने मदालसा से पूछा - देवकी गुरुकल कहां है ?

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया और मुझे एक झोपड़ी की तरफ जाने का इशारा किया .....

मैं उस झोपड़ी की ओर बढ़ गया ....

झोपड़ी के अंदर एक बिछौना बिछा हुआ था । जिसके ऊपर देवकी गुरुक्कल लेटी हुई थी । वह बेहोश थी .....

उनका शरीर पीला पड़ चुका था.....

ऐसा लग रहा था जैसे शरीर में बिल्कुल खून बाकी नहीं हो .....

मैंने उन्हें छूना चाहा लेकिन वहां मौजूद दो महिलाओं ने मुझे रोक दिया !

वह उनके हाथ पैर पर कुछ लेप लगा रही थी और एक अन्य महिला उनके माथे पर भी कुछ लेप लगा रही थी ।

उनके पूरे शरीर में सफेद रंग का झाग जैसा कुछ लगा हुआ था.....

वह भी शायद किसी प्रकार का कोई लेप रहा होगा ।

सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि झोपड़ी के अंदर वह दो सियारिनें मौजूद थी जिनको मैंने देवकी के साथ देखा था ।

वह उसी पलंग के नीचे लेटी हुई थी.....

संभवत: वे उनकी सुरक्षा के लिए वहां मौजूद रही होंगी .....

जो भी हो.......

मेरी समझ में कुछ नहीं आया लेकिन उन्हें सुरक्षित देख कर मुझे बहुत अच्छा लगा ।

जिस अवस्था में मैंने उन्हें देखा था उसके बाद उनके जीवित होने की कल्पना करना भी मेरे लिए लगभग असंभव था .....

आप स्वयं कल्पना करें ! कि..... किसी व्यक्ति की कटी हुई गर्दन को स्वयं उसके हाथों में आप देख ले और उसके बाद उसके जीवित रहने की संभावना आपके हृदय में कितने प्रतिशत आएगी ?

बिल्कुल वैसी ही स्थिति मेरी थी.....

लेकिन देवकी गुरुकल को इस प्रकार से सुरक्षित देखकर मुझे अत्यंत आनंद की अनुभूति हुई ।

दो दिन से भारी व्यस्त जटिल साधनात्मक कार्यवाही चल रही थी......

इसलिए आंखें बोझिल होने लगी......

मैंने अपने शरीर को देखा......

पूरे शरीर पर खरोंच के निशान थे ।

बिलकुल वैसे ही.......

जैसे किसी जंगली जानवर के साथ मुठभेड़ हो जाने के बाद शरीर पर आते हैं ।

नाखून के निशान मेरे पूरे शरीर में मौजूद थे और साथ ही उन सभी से हल्का हल्का खून निकल रहा था ....

यही नहीं मेरे अंग पर भी मुझे तीव्र पीड़ा का आभास हो रहा था ......

वहां भी खून निकलता हुआ प्रतीत हो रहा था ।

हर तरफ दर्द ही दर्द महसूस हो रहा था ....

लेकिन.........

इन सबके बावजूद मुझे बड़े जोरों की नींद आ रही थी ।

मदालसा ने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया ।

वह मुझे अपनी झोपड़ी में ले गई और वहां बिछे हुए पुआल पर सो जाने का इशारा किया । मैं तो इसी की प्रतीक्षा कर रहा था । नींद से मेरी आंखें बोझिल हो रही थी । पुआल पर लेटते ही मुझे गहरी नींद आ गई ।

किसी के हिलाने पर मेरी नींद खुली !

उठने की इच्छा तो बिल्कुल नहीं थी लेकिन आंखें खोल कर देखा तो एक महिला एक पात्र में कुछ द्रव लेकर खड़ी थी ......

पूरा शरीर सुस्त हो गया था और बड़े जोरों की भूख लग रही थी ......

इच्छा तो हो रही थी कि कुछ खाने को मिल जाता तो अच्छा रहता......

लेकिन जो मिल गया वही ठीक ....

सोच कर मैंने उस पात्र को अपने हाथों में लिया और अपने होठों से लगा दिया !

पहला घूंट अंदर जाते ही मुझे उसे बाहर थूक देने की इच्छा हुई ......

करेले के जूस से भी कड़वा था वह ....

लेकिन मैं उसे बाहर थूक नहीं पाया.......

क्योंकि जो महिला उसे लेकर आई थी वह इसके लिए पहले से तैयार थी ।

उसने मेरी नाक को पकड़कर दबा दिया और पूरे द्रव को मेरे गले में उतार दिया ।

जैसे ही वह द्रव मेरे गले से नीचे उतरा.....

मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने कोई जलता हुआ पदार्थ मेरे गले से उतार दिया हो.....

जिस जिस जगह से वह द्रव पदार्थ बहता हुआ जा रहा था......

ऐसा लग रहा था कि वह उस भाग को जला रहा हो । तीव्र जलन का एहसास हो रहा था । मैं बुरी तरह छटपटा गया और वापस पुआल पर गिर गया और संभवत: बेहोश हो गया......

उस दवा का असर कुछ चार छह घंटे रहा होगा। जब मुझे होश आया तब दोपहर ढल रही थी। यही कोई दो तीन बजे का वक्त रहा होगा।
उस पेय पदार्थ के पी लेने की वजह से मेरे शरीर में वापस तंदुरुस्ती का एहसास हो रहा था ....
मैंने अपने शरीर को देखा तो जिन स्थानों पर त्वचा छिली हुई थी....
वहां उसी प्रकार के सफेद झाग का लेप लगा हुआ था... जैसा देवकी गुरुक्कल के ऊपर लगा था....
अर्थात मेरी बेहोशी की अवस्था में किसी ने मेरे घांवों पर दवा लगाई थी।

आंखें खुलने के बाद कुछ देर मै इधर उधर देखता रहा....
लेकिन कक्ष में कोई भी मौजूद नहीं था। यह देखकर मैं कक्ष से बाहर आया। कक्ष के बाहर निकलते ही मैं धूप में आ गया और मेरी आंखें मिचमीचाने लगी मैंने उससे बचने के लिए अपनी आंखों पर हाथ रख लिया .....
तभी मेरा हाथ अपने माथे पर लगा !

ठीक उस स्थान पर जहां तीसरे नेत्र की स्थिति बताई जाती है !

वहां पर एक गूमड़ सा निकला हुआ था ।

जो वहाँ पहले नहीं था ....

सुनने में अजीब लग सकता है .....

लेकिन जैसे-जैसे आप का मंत्र जाप और साधना की अवधि बढ़ती जाती है....

आपके आज्ञा चक्र में और आपके ब्रह्मरंध्र में अर्थात दोनों भव के बीच की जगह और सिर के ऊपर की जगह पर कभी-कभी इस प्रकार का उभार दिखाई देने लगता है ....

क्यों दिखाई देने लगता है ?

यह एक रहस्य है ।

जो भी हो वह गूमड़ करीब एक छोटे से अंगूर के दाने के बराबर था और वह मैं स्पष्ट महसूस कर रहा सकता था । मैंने उसे दबाने की कोशिश की लेकिन वह दब नहीं रहा था ।

कई लोग शरीर मे चक्र की स्थिति को लेकर संशय शील होते हैं ...... लेकिन चक्रों की जो स्थिति बताई

गई है ..... वह उससे संबंधित क्रियाकलाप करने पर अपनी उपस्थिति का एहसास करा देते हैं ।

यह भी कुछ-कुछ वैसा ही था !

मैं अपने माथे को सहलाता हुआ झोपड़ी के दरवाजे पर खड़ा था ....

मदालसा का गांव देवकी गांव से बिल्कुल अलग था । यहां की अधिकांश जनसंख्या ऐसी महिलाओं की थी जिनकी आयु 25 वर्ष या उससे अधिक की लगती थी.....

अजीब बात यह थी कि गांव में एक भी बच्चा दिखाई नहीं दे रहा था और ना ही कोई पुरुष ....

महिलाएं थी और उनकी संख्या भी 10-12 से ज्यादा नहीं थी और झोपड़ियों की संख्या भी लगभग उतनी ही थी ।

मेरे सामने वह झोपड़ी थी.....

जिसमें मैंने देवकी को देखा था । मेरी इच्छा हो रही थी कि मैं फिर से जाकर देवकी को देखू । उनकी हालत के बारे में पता करू.....

जो कि स्वाभाविक था !

यह पूरा प्रक्रम जो हो रहा था उसमें शामिल होने का कारण वही थी !

उन्हीं के कहे अनुसार में इस पूरी प्रक्रिया में शामिल होने के लिए सहमत हुआ था !

और वही अब एक विचित्र स्थिति में पहुंच गई थी .....

जो कि मेरे लिए चिंता का विषय अवश्य था ।

लेकिन....

इस बात की खुशी भी थी कि उन्होंने जो संकल्प लिया था....

वह पूर्ण हो गया था !

उन्होंने अपना उत्तराधिकारी चुन लिया था और वह सारे परीक्षणों को पार करके स्वयं को सिद्ध कर चुका था !

चंपा के रुप में उस गुरुकुल को एक नया गुरु मिल चुका था और अब चंपा बंजारन चंपा गुरुक्कल बनने वाली थी......

केवल उस की आधिकारिक घोषणा देवकी गुरुकल को करनी थी.......

देवकी गुरुक्कल ने महामाया छिन्नमस्ता को अपने शरीर में धारण किया था ....

या यूं कह लीजिए कि उनका आवेश उनके शरीर में आ गया था ....

बिंबात्मक रूप से हमने उनको छिन्नमस्ता के स्वरूप में देखा था ....

जिसमें उनके गर्दन से रक्त की धाराएं बह रही थी .....

यह धाराएं जो उनकी गर्दन से बही थी .....

उसी की वजह से उनका शरीर पीला पड़ चुका था और कमजोरी की वजह से उस स्थिति में आ गई थी.......

यह बात मेरी समझ में आ गई....

लेकिन मुझे यह लगा कि इसमें मुझे कुछ करना चाहिए । मगर उनके आसपास जो स्त्रियां खड़ी थी वह मुझे उनके पास तक जाने नहीं दे रही थी । इसकी वजह से मुझे कोई उपाय निकालने में दिक्कत जा रही थी ।

मैंने सोचा कि एक बार और कोशिश किया जाए ....

हो सकता है कि उनसे बात करने या मिलने का अवसर प्राप्त हो जाए .....

मैंने चारों तरफ देखा तो मुझे सभी अपने-अपने काम में लगे हुए दिखाई दिए ....

उनमें वे स्त्रियां नहीं थी जो देवकी गुरु कल के यहां चौकीदारी में लगी हुई थी !

यह एक अच्छी बात थी !

मैं धीरे-धीरे देवकी गुरुकल की झोपड़ी की ओर बढ़ने लगा ....

झोपड़ी का दरवाजा बाहर से बंद था ,,,

यानी अंदर कोई नहीं था ।

मैं ऐसी ही किसी स्थिति की प्रतीक्षा कर रहा था ।

मैं झोपड़ी के दरवाजे तक पहुंच गया.......

उसे खोला .... और धीरे से अंदर की ओर सरक गया

और वापिस दरवाजा बंद कर दिया ।

देवकी बिछौने पर सोई हुई थी....

और जो दो सियार नीचे बैठे थे.... वे गायब थे । उनके शरीर में जो पीलापन था.....

वह थोड़ा सा कम हो चुका था ।

मैं उनके पास पहुंचा और उनके माथे पर हाथ रखा ।

उनका माथा बुखार से तप रहा था । कुछ 102 डिग्री के आसपास बुखार रहा होगा ।

मैंने उनकी कलाई पकड़ कर देखी ... नाडी भी बेहद मंद गति से चल रही थी.....

यह चीजें स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छी नहीं थी ।

ऐसी स्थिति में मुझे अपने गुरुदेव के द्वारा दिए गए गोपनीय महामृत्युंजय मंत्र का स्मरण आया ।
मैंने अघोरेश्वर महादेव को उनके मृत्युंजय स्वरुप में स्मरण किया और देवी काली जो उनकी मूल शक्ति है उनका स्मरण करते हुए महामृत्युंजय मंत्र का जाप करने लगा .....

लगभग 10 मिनट के जाप के बाद हवा में हल्की-हल्की कपूर की सुगंध आने लगी ....
मेरे रीढ़ की हड्डी मे स्पंदन महसूस होने लगा ....
मंत्र का उच्चारण करते हुए मैंने अपना दाहिना हाथ देवकी गुरु कल के माथे पर रख दिया.......
और बाया हाथ उनकी नाभि पर रख दिया और मंत्र जाप करने लगा ।
मैं वज्रासन में बैठा हुआ था ......
और उसी आसन में बैठकर मंत्र जाप कर रहा था । मुझे अपने शरीर के अंदर विद्युत प्रवाह जैसा महसूस हो रहा था .....

जो धीरे-धीरे तेज होता जा रहा था और वह मेरे पूरे शरीर में से होता हुआ हाथों के माध्यम से देवकी के शरीर में प्रवाहित होता जा रहा था .....
कुछ दस पंद्रह मिनट तक ऐसा चलता रहा और मुझे अपना शरीर निढ़ाल होता हुआ लगा । ऐसा लग रहा था जैसे मेरे शरीर के अंदर से ऊर्जा निकलकर देवकी गुरुक्कल के शरीर में समाहित होती जा रही है और मैं निर्बल होता जा रहा हूं ....

इसे आप स्पर्श चिकित्सा का एक स्वरुप कह सकते हैं । स्पर्श चिकित्सा सनातन धर्म में प्राचीन काल से मौजूद रही है । इसी के माध्यम से कई सिद्ध पुरुष केवल अपने स्पर्श से विभिन्न रोगों का उपचार कर दिया करते थे ....
वर्तमान रेकी चिकित्सा इसी का एक लघु स्वरुप है । रेकी एक जापानी भाषा का शब्द है जो “रे” और “की” से मिलकर बना है। रे का अर्थ है सर्वव्यापी और की का अर्थ है जीवनशक्ति या प्राणशक्ति अर्थात रेकी का शाब्दिक अर्थ सर्वव्यापक जीवनशक्ति है।

ऐसा माना जाता है कि हमारे भौतिक शरीर के अलावा हमारे सात शरीर मौजूद है , जो दिखाई नहीं देते और सूक्ष्म रूप से मौजूद रहते हैं । भौतिक शरीर जहाँ हम सुख-दुःख एवं चिंता इत्यादि को महसूस करते हैं वास्तव में हमारी संरचना का केवल एक भाग है। बाकी का लगभग 90% भाग अलग-अलग ऊर्जा की 7 परतों से बना है। जिसे हम साधारण आँखों से नहीं देख पाते हैं।

हमारे शरीर के चारों तरफ 4-6 इंच के घेरे में हमारा ऊर्जा शरीर होता है जिसकी वजह से हमारा आभामंडल बनता है , इसे अंग्रेजी में AURA भी कहते है। रोग एवं तनावग्रस्त व्यक्ति में यह सिकुड़ जाता है और केवल कुछ सेंटीमीटर रह जाता है। इसके विपरीत जो साधक या सिद्ध-पुरुष होते हैं उनका AURA या आभामंडल कुछ मीटर या उससे भी ज्यादा हो सकता है। इसलिए उनके पास बैठने से कई बार हम बेहतर महसूस करने लगते हैं ,,,,,,

रेकी शरीर मे स्थित 24 मुख्य छोटे-बड़े ऊर्जा चक्रों या महत्वपूर्ण ऊर्जा केन्द्रों को हाथ के स्पर्श से नियंत्रित करने का अभ्यास है .....
इसके माध्यम से दूसरे व्यक्ति में उर्जा का संचार किया जाता है........
परिणाम स्वरुप वह व्यक्ति काफी शांत एवं ऊर्जावान महसूस करता है।

आपने देखा होगा कि जो व्यक्ति अधिक बीमार या कमजोर होता है उसे अस्पताल में ले जाकर ग्लूकोज चढ़ाया जाता है..... जिसके बाद वह कुछ बेहतर महसूस करने लगता है, इसे आप सूक्ष्म रुप से ग्लूकोज चढ़ाने जैसा मान सकते हैं ......

मैंने अपनी पूरी प्राणशक्ति को एकत्रित करके उस उर्जा को देवकी के अंदर ट्रांसफर कर दिया था और एक स्थिति ऐसी आई जब मुझे इतनी कमजोरी लगी कि मैं वही अपने आसन पर लुढ़क गया ।

जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कि मैं उसी बिछौने पर लेटा हुआ हूं और देवकी गुरुक्कल मेरे ऊपर पंखा चल रही है .....

पाँव की तरफ मदालसा बैठी हुई है और मेरे तलवे पर किसी प्रकार का लेप लगा रही है ।

वह महिलाएं सिलबट्टे पर कुछ औषधियों को पीस रही है...

मुझे खुशी हुई कि मेरे द्वारा किए गए महामृत्युंजय जाप की वजह से देवकी गुरुकुल को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो गया था.....

मैंने उठने की कोशिश की लेकिन शरीर में इतनी कमजोरी लग रही थी कि मैं उठ नहीं पाया ......

देवकी गुरुक्कल ने मेरे माथे पर हाथ रख कर लेटने का इशारा किया ......

उन लोगों ने मेरे शरीर पर कुछ औषधियों का लेप किया और फिर वही करेले के रस जैसे वाला द्रव्य मुझे जबरदस्ती पिला दिया गया और मैं फिर बेहोश हो गया ।

जब दोबारा मुझे होश आया तो शाम ढल चुकी थी और रात का अंधेरा चारों तरफ बिखरा हुआ था। जिसे चांद की मध्यम रोशनी अपनी तरफ से काटने का भरपूर प्रयास कर रही थी....

लेकिन उस अंधेरे घनघोर जंगल में उसकी रोशनी का कतरा कतरा ही जमीन पर पहुंच रहा था ....

झोपड़ी के अंदर बनी हुई खिड़की में से वही हल्की-फुल्की रोशनी अंदर की तरफ आ रही थी ....

हल्की ठंडी ठंडी हवा चल रही थी ....

जंगल के प्राकृतिक वातावरण में एक अलग ही आनंद होता है ......

जिसे महसूस करता हुआ मैं कुछ देर यूं ही लेटा रहा.......

अपने हाथ पैर को हिला कर देखा तो सब ठीक-ठाक लगा ......

मैं धीरे से उतर कर जमीन पर खड़ा हो गया !

अब मुझे अपने शरीर की स्थिति सामान्य लग रही थी।

हालांकि थोड़ी कमजोरी का एहसास बाकी था ......

झोपड़ी के अंदर कोई नहीं था !

मैं धीरे से झोपड़ी के बाहर निकला ...

बाहर निकल कर जब मैंने देखा तो वहां भी कोई नहीं था......

मैंने आसपास चल फिर कर देखा .....

लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया । लगभग घंटा डेढ़ घंटा ढूंढने के बाद मैं वापस झोपड़ी में आ गया ।

झोपड़ी में बैठने के बाद मैंने ध्यान लगाया तो एक आवाज आई ....

अघोरानंद ! देवकी गुरुक्कल चम्पा को अपना उत्तराधिकार सौंप रही हैं ! कल मुलाक़ात होगी ! वहीं प्रतीक्षा करो.....

यह था मदलसा का मानसिक संकेत .....

जिसे अङ्ग्रेज़ी मे टेलीपैथी कहा जाता है ....

उच्च कोटि के तांत्रिक इस प्रकार के मानसिक संकेत आपस में भी भेजते हैं और अपने शिष्यों के साथ भी इसी प्रकार के संकेतों के माध्यम से बातचीत कर लेते हैं ......

साधनात्मक क्षेत्र में जो गुरु परंपरा है उसमें यह माना जाता है कि सुबह तीन बजे से पाँच बजे तक का जो समय होता है उस बीच में गुरु मंडल चैतन्य होता है । उस समय अगर कोई शिष्य अपने गुरु को कोई बात

कहना चाहता है या कोई निर्देश उनसे प्राप्त करना चाहता है तो वह ध्यान की अवस्था में बैठकर इसे प्राप्त कर सकता है ।

जितने भी चैतन्य गुरु हैं...... वे इस कालखंड में अपने शिष्यों के लिए मानसिक रूप से उपलब्ध होते हैं .....

अस्तु.....

मैं समझ गया कि अब मेरा वहां जाना संभव नहीं है क्योंकि मैं पुरुष रूप में आ चुका था और उस क्षेत्र में पुरुषों का प्रवेश निषेध था .....

मैं ध्यान में बैठा हुआ था तभी मेरे मानस पटल पर एक देवी मंदिर स्पष्ट हुआ !

वह मंदिर काफी पुराना लग रहा था ...

पत्थरों से बना हुआ था !

उस मंदिर के बाहर बहुत सारे दीपक जल रहे थे । अंदर में देवी की विशाल मूर्ति थी .....

जिसमें स्वर्ण आभूषण लदे हुए थे और वह चमचमा रहे थे ।

देवी की मूर्ति मुस्कुराती हुई प्रतीत हो रही थी !

ऐसा लग रहा था जैसे अभी बोल पड़ेगी ....

मुझे दिखा कि उसके सामने मैं हाथ जोड़कर खड़ा हुआ था और मेरे साथ खड़ी थी देवकी गुरुक्कल ....

मैं उनके दिव्य स्वरुप के दर्शन करके अभिभूत होता हुआ बैठा रहा ....

कुछ क्षणों मे वह बिम्ब गायब हो गया ....

मुझे समझ में नहीं आया कि वह क्या था ?

लगा ... संभवत: आगे की यात्रा का कोई संकेत होगा !

थोड़ी देर तक उसके विषय में विचार करता रहा......

फिर उन विचारों को परे किया और अपना मंत्र जाप आदि संपन्न करके वहीं बिछौने पर सो गया ।

अगली सुबह मदालसा और देवकी गुरुकल दोनों झोपड़ी में प्रकट हुई ।

उसके बाद देवकी गुरुक्कल ने मुझसे कहा - तुम्हारे सहयोग से मुझे अपना उत्तराधिकारी मिल गया है और अब मैं आखरी बार केरल में अपनी कुल देवी के दर्शन करना चाहती हूं ....

अगर तुम चलना चाहो तो मेरे साथ चल सकते हो ।

यदि वापस जाना चाहो तो मदालसा का विमान तुम्हें वापस छोड़ देगा !

यह तुम्हारी इच्छा पर है ।

मेरे मानस पटल पर कल रात की घटना जो मेरे ध्यान में आई थी .... अचानक से कौंध गई !
मैं समझ गया कि भगवती का संकेत है कि मुझे उनके पास पहुंचना है ।

जितने भी सिद्ध पीठ हैं वहां पर जाना हर किसी के लिए संभव नहीं होता ।
भगवती की जब इच्छा होती है तभी कोई उस स्थान पर पहुंच पाता है....
जब उसकी इच्छा है तो इंकार करने का अधिकार तो मेरा था ही नहीं !
मैंने सहमति में सिर हिलाया और जाने के लिए खड़ा हो गया ।
देवकी गुरुक्कल मुस्कुराई .... जैसे यह बात पहले से जानती थी ।
हम दोनों झोपड़ी से बाहर निकले !
मदालसा का विमान वहां पर तैयार था ।
मदालसा वहीं रुक गई मैं और देवकी विमान पर चढ़कर रवाना हो गए .....

कोडुंगलुर भगवती मंदिर......

मेरी जिज्ञासा जागी - मैंने पूछा - हम किस देवी के मंदिर में जा रहे हैं ? क्या आप उसके विषय में कुछ बताएंगे ।

देवकी गुरुकल ने उस मंदिर के विषय में बताया -

केरल के त्रिशूर नामक जिले में कोडुंगलुर नामक स्थान पर भगवती भद्रकाली का एक अत्यंत प्राचीन मंदिर स्थापित है । जिसे श्री कुरंबा भगवती मंदिर के नाम से भी जाना जाता है ......

अघोरानंद ! तुम जानते ही होगे कि ....

प्राचीन काल में दक्ष यज्ञ संपन्न हुआ था । उसमें भगवान शिव की शक्ति तथा दक्ष प्रजापति की पुत्री देवी सती अपने पति का अपमान सहन न कर पाने की वजह से मृत्यु को प्राप्त हो गई थी । इस समाचार के प्राप्त होते ही भगवान शिव अत्यंत रुष्ट हो गए क्रोध से तमतमा गए ......

वास्तव मे प्रजापति दक्ष उनसे विद्वेष रखता था....

उनका अपमान करने के लिए ही उसने इस यज्ञ का आयोजन किया था। इस यज्ञ में भगवान शिव को छोड़कर बाकी सभी देवी देवताओं और ऋषियों को आमंत्रित किया गया था ...

यह बात भगवान शिव को पता थी इसलिए उन्होंने भगवती को जाने के लिए मना किया था लेकिन वह मायके का मोह नहीं त्याग पाई !

वहां पहुंचने के बाद जब उन्हें यज्ञ में भगवान शिव का स्थान नहीं दिखा तो उन्होंने इस विषय में पूछा ...

जिस पर बड़े ही बेरुखे ढंग से पिता दक्ष ने जवाब दे दिया....

वहां सम्मिलित सारे लोग भी इस विषय पर ज्यादा चिंतित नहीं दिखे....

यह देखकर भगवती अत्यंत अपमानित महसूस करते हुए विचलित हो गई और अपने प्राण त्याग दिए।

उनके प्राण त्यागने के साथ ही वहां उपस्थित सारे लोग किसी अनहोनी की आशंका से भयभीत होने लगे....

क्योंकि....

भगवती सती महादेव की पत्नी थी !

महाकाल की पत्नी थी !!

उस रुद्र की पत्नी थी जो संहार का देवता है !!!
इस घटना के बाद संहार निश्चित था ....
सभी घबराए हुए थे.....

उधर भगवान शिव को जब यह सूचना प्राप्त हुई तो वे अत्यंत उत्तेजित क्रोधित अवस्था में आ गए । उन्होंने अपनी जटाओं में से एक जटा को खींच निकाला और उसे पास पड़ी शिला पर दे मारा !
वह दो भागों में विभक्त हो गई !
उसमें से प्रलयंकारी स्वरूप में एक पुरुष स्वरूप और एक स्त्री स्वरूप प्रकट हुआ ....
दोनों का रंग घोर काला था .....
उस प्रचंड स्वरूप का नाम था वीरभद्र और भद्रकाली.....

इसे दूसरे शब्दों में अगर हम देखें तो भद्रता जीवन का सौंदर्य है !
हम आपस में भद्रता से व्यवहार करें तो एक भद्र समाज की उत्पत्ति होती है ! जहां लोग प्रेम और सद्भावना के साथ आपस में एक दूसरे की मदद करते हुए एक दूसरे

की भावनाओं का सम्मान करते हुए जीवन व्यतीत करते हैं !

इसके विपरीत अगर अभद्रता चालू हो जाए....

अगर लोग एक दूसरे के ऊपर अत्याचार करना चालू कर दें....

एक दूसरे की चीजों को हड़पने लग जाएं !

एक दूसरे के ऊपर दुर्व्यवहार करना चालू कर दें .....

तो......

एक पाशविक समाज की उत्पत्ति होती है जो किसी भी स्थिति में उचित नहीं कही जा सकती ।

जब इस प्रकार से नियमों का उल्लंघन होता है तो स्थितियों को नियंत्रित करने के लिए शक्तिशाली शक्तियों को जोकि अत्यंत उग्र होती है उनको भेजना पड़ता है .....

उदाहरण के लिए जब करोना का स्तर बढ़ गया था और परिस्थितियां ऐसी थी कि.....

लोगों के बाहर निकलने से...

बेवजह घूमने से....

इसके बढ़ जाने की संभावना थी !

लोग इस बात को स्वीकार नहीं कर रहे थे ! और अपनी मर्जी में चल रहे थे !

तो.....

अंततः.....

पुलिस और प्रशासन ने सख्त रुख अपनाया !

उग्रता दिखाई !

डंडे मारे !

चालान काटे !

और भी कई गतिविधियां चली ....

जिसके बाद वापस सामान्य स्थिति बनी ।

यानी भद्रता स्थापित हुई !!!

यह एक सामान्य नियम है । अभद्रता को भद्रता में बदलने के लिए आमतौर पर भय की आवश्यकता पड़ती है.....

भय तभी आ सकता है जब भय दिखाने वाला व्यक्ति उग्र और शक्तिशाली हो ....

कोई दुबला पतला मरियल सा आदमी अगर आपको धमकाने की कोशिश करें तो ज्यादा संभावना यह है कि आप उसे दो झापड़ मार दे ।

इसके विपरीत अगर कोई हट्टा कट्टा मुस्टंडा सा व्यक्ति आपके सामने आकर खड़ा हो जाए तो आप उसकी बात ना मानने से पहले पचास बार सोचेंगे ....

अर्थात शक्तिशाली व्यक्ति ही भद्रता की स्थापना कर सकता है ...
यह एक शाश्वत सत्य है !!!

भगवान शिव तो स्वयं इस सृष्टि का मूल है । वह इस तथ्य को जानते थे । उन्होंने इसीलिए अति उग्र स्वरुप में भद्रकाली की उत्पत्ति की..... साथ में उनके सहयोगी के रुप में वीरभद्र भी उत्पन्न हुए । यह दोनों अत्यंत प्रचंड स्वरुप है !
भगवान शिव के और शक्ति के अत्यंत प्रचंड स्वरुप !!
इतने प्रचंड कि जब यह अपनी उग्रता पर आ जाते हैं....
तो किसी को कुछ नहीं समझते !!!
ऐसे इन दोनों स्वरूपों की उत्पत्ति के बाद भगवान शिव ने उन्हें निर्देश दिया कि यज्ञ और यज्ञ कर्ताओं में से किसी को भी नहीं छोड़ना है ....
संपूर्ण विध्वंस कर देना है....

दोनों ने सिर झुका कर भगवान शिव के आदेश को स्वीकार किया और दक्ष यज्ञ स्थल की ओर चल पड़े......

दक्ष यज्ञ के स्थल पर ब्रह्मा मौजूद थे !

भगवान विष्णु मौजूद थे !!

अन्य समस्त देवी देवता मौजूद थे !!!

सभी ऋषि मौजूद थे !!!!

इन सबके बावजूद किसी ने भी भगवान शिव के अपमान का विरोध नहीं किया था और इस अभद्रता का दंड उनको वीरभद्र और भद्रकाली ने मिल कर दिया ...

हर किसी को दंडित किया गया....

हर किसी को प्रताड़ित किया गया ....

हर किसी को यह बताया गया कि भगवान शिव फाइनल अथॉरिटी है ।

उनके आगे कुछ भी नहीं है !

यह शाश्वत नियम है !

इस नियम का पालन करना है !

भद्रता का अनुशीलन करना है ......

इसके लिए अगर प्रजापति दक्ष का सर काटना पड़ जाए तो वह भी स्वीकार्य है ।

यही हुआ......

प्रजापति दक्ष का सर वीरभद्र ने काट दिया ।

यज्ञ का संपूर्ण विध्वंस कर दिया ।

देवताओं और ऋषियों को भयंकर प्रताड़ना झेलनी पड़ी ...

उसके बाद पुनः शिव शासन स्थापित हुआ ।

भगवान शिव की श्रेष्ठता प्रतिष्ठित हुई ।

वह स्थिति बनी.....

जहां पर उसके बाद किसी ने भी इस प्रकार की अभद्रता दिखाने की कोशिश नहीं की

शिव शासनतः !

शिव शासनतः !!

शिव शासनतः !!!

अर्थात सब कुछ भगवान शिव के शासन के अधीन है ।

आज भी स्थितियां वैसी ही है ...

अगर आपको अभद्रता को नियंत्रित करना है तो अहिंसा से काम नहीं चलेगा !

वहां पर आपको शक्ति का प्रदर्शन करना पड़ेगा !
तभी अभद्रता नियंत्रित होगी .....

तो....
सार यह कि ....
अभद्रता को नियंत्रित करने वाली शक्ति है
भद्रकाली !!!
इनकी साधना और पूजा से साधक के जीवन में भी भद्रता आती है और वह दूसरों में भद्रता की स्थापना करने की शक्ति भी प्राप्त कर लेता है ......

इतना कहकर देवकी गुरुक्कल ने मेरी ओर देखा और फिर बोली - यह भगवती के उसी उग्र स्वरुप का मंदिर है....
इन्हें भगवती काली का मूल स्वरूप माना जाता है !
ऐसा माना जाता है कि भगवान श्री परशुराम ने यहां पर भगवती भद्रकाली की स्थापना की थी !
कालांतर में भगवतपाद आदि शंकराचार्य ने यहां पर पाँच श्री चक्रों की भी स्थापना की थी जिसकी वजह से यह मंदिर अत्यंत ही तेजस्वी तथा सिद्ध पीठ माना जाता है ।

प्राचीन काल में यहां पर बलि प्रथा प्रचलित थी जो कालांतर में बंद हो गई है और अब वहां पर प्रतीकात्मक रूप से लाल रंग के वस्त्र चढ़ाए जाते हैं ।
इतना कहकर वे चुप हो गईं ...

मैंने मन ही मन मे सोचा कि कुल मिलाकर अगर कहा जाए तो वह एक अत्यंत ही उच्च कोटि का तांत्रिक शक्तिपीठ है .....
मैं उसे देखने के लिए उत्सुक हो उठा !

कुछ देर में हमारा विमान एक बेहद सुंदर प्राकृतिक वातावरण से भरे हुए स्थान पर उतरा । विमान के अदृश्य होने के बाद हम दोनों आगे की ओर बढ़े । थोड़ा सा आगे बढ़ने पर एक सुंदर मंदिर दृष्टिगोचर हो रहा था । वहां के लोग संभवत: देवकी गुरुकल को जानते थे और काफी सम्मान से उनको प्रणाम भी कर रहे थे ।
हम मंदिर के अंदर पहुंचे !
भगवती की मूर्ति काफी बड़ी थी !
उसकी आठ भुजाएं थी !
अद्भुत चैतन्य प्रतिमा ...
ऐसी प्रतिमा मैंने इससे पहले नहीं देखी थी ।

दक्षिण भारत के मंदिरों में जो मूर्तियां स्थापित होती हैं....

वह काफी खूबसूरत होती है !

अधिकांश मूर्तियां जो देवी की होती है वह काले पत्थरों की बनी होती है उनमें एक अलग ही चमक होती है । इसमें भी एक अद्भुत चमक विराजमान थी । देवी की मूर्ति उत्तर दिशा की ओर देखती हुई खड़ी थी । उनके आठ हाथ थे जिसमें एक हाथ में नरमुंड था जिसे भगवती ने धारण किया हुआ था । देवकी ने बताया था वह दारुक नामक दैत्य का था ।

मूर्ति स्वर्ण से लदी हुई थी ...

उन का मुख मंडल सोने का बना हुआ था !

सोने का मुकुट धारण किया हुआ था !

उनके वस्त्र सोने के थे !

यहां तक कि उनकी भुजाओं पर भी सोने का ही कवर चढ़ा हुआ था........

यह बिल्कुल वैसी ही थी ...

जैसा मैंने अपने ध्यान में देखा था !

उसे देख कर मैं अभिभूत हो गया ....

मेरी आंखें नम हो गई....

ठीक वैसे ही जैसे माता को देखकर शिशु की आंखें

चमक उठती है...

नम हो जाती हैं...

बिल्कुल वैसा ही मुझे महसूस हुआ !

देवी काली अत्यंत मातृत्व युक्त भगवती है....

उनके दर्शन मात्र से मुझे अपने अंदर के शिशु के जाग जाने का एहसास होता है... कुछ-कुछ वैसा ही मुझे उस समय महसूस हो रहा था ।

देवकी गुरुकल ने मुझे बताया कि वह वहां पर रह जाएंगी और उसके बाद मुझे वापस अकेले लौट जाना है ।

मंदिर एक बहुत ही सुंदर स्थान पर स्थापित था ।

लगभग आठ दस एकड़ के आसपास की भूमि थी जो बरगद और पीपल के पेड़ों से शोभायमान हो रही थी ...

वहां वीरभद्र और विघ्नेश्वर गजानन भी विराजमान थे ...

उनके साथ विराजमान थी सप्त मातृकायें !!!

वहां जाने पर मुझे पता चला है कि देवी की जो मूर्ति है वह लगभग 7 फुट ऊंची है और लकड़ी से बनी हुई है....

यह एक नई जानकारी थी !

आमतौर पर भगवती की मूर्तियां पत्थरों से बनी होती है यह मूर्ति पत्थर जैसी लग रही थी लेकिन लकड़ी की थी ।

आगे एक कुंड बना हुआ था !

जिसका नाम पुष्करिणी था !

आमतौर पर केरल के मंदिरों में इस प्रकार के कुंड होते हैं ... जहां स्नान करने के बाद दर्शन करने की परंपरा है ।

हम दोनों वहां पहुंचे ।

ऐसा माना जाता है कि यह कुंड भगवती के खडग के प्रहार से बना था ।

मुझे देवकी गुरुकल के मुख मंडल पर एक अद्भुत तेज दिखाई दे रहा था ....

मुझे लगा कि यह संभवत: भगवती के क्षेत्र में आने के कारण होगा ....

लेकिन वह तेज बिल्कुल अलग ही किस्म का था !

ऐसा प्रतीत हो रहा था....

जैसे कोई दैवीय शक्ति उनके अंदर विराजमान हो गई हो ....

स्नानादि कर्मों से निवृत्त होने के बाद हम मंदिर में पूजन के लिए पहुंचे ....

इष्टलीन...

देवकी गुरुकुल के मुख से गुरु गंभीर वाणी उच्चरित हुई :-

अघोरानंद !

एक साधक का सबसे बड़ा सौभाग्य होता है कि वह अपने इष्ट को प्राप्त कर ले ....

उससे भी बड़ा सौभाग्य होता है कि वह अपने इष्ट में ही लीन हो जाए ....

इतना कहकर वह मुस्कुरा उठी !

मैंने सहमति में सिर हिलाया ....

लेकिन वह जो कहना चाहती थी ...

वह मैं समझ नहीं पाया था ।

जो बाद में मुझे समझ में आया ।

हम मंदिर पहुंचे ...

मंदिर के गर्भ गृह में उस समय पुजारी मौजूद था । उसने देवकी गुरुकल को देखते ही उसे प्रणाम किया .....

संभवत वह देवकी को पहले से जानता रहा होगा ।

देवकी ने उन्हें कान में कुछ कहा ...

वह हाथ जोड़कर वहां से चले गए ।

अब गर्भ गृह पूरा खाली था !

यह एक अजीब सी बात थी कि मंदिर के बाहर परिसर में भी कोई मौजूद नहीं था ...

यह कुछ कुछ वैसा था ...

जैसे अभी के वीआईपी गेस्ट जैसे राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री किसी मंदिर में पहुंचते हैं तो सामान्य जन का प्रवेश निषेध हो जाता है ।

कुछ वैसा ही दिखाई दे रहा था ।

किसी अज्ञात शक्ति ने जैसे सब को रोक लिया था ।

अब मंदिर के गर्भगृह में सिर्फ मैं और देवकी गुरुकल मौजूद थे ....

देवकी गुरु कल के कंठ से उग्र स्वर में भगवती भद्रकाली का ध्यान उच्चरित होने लगा....

डिम्भं डिम्भं सुडिम्भं पच मन दुहसां
झ प्रकम्पं प्रझम्पं, विल्लं त्रिल्लं
त्रि-त्रिल्लं त्रिखलमख-मखा
खं खमं खं खमं खम् ।
गूहं गूहं तु गुह्यं गुडलुगडगुदादाडिया डिम्बुदेति,

नृत्यन्ती शब्दवाद्यैः प्रलयपितृवने श्रेयसे वोऽस्तु
काली ......

अचानक मंदिर के गर्भ गृह में धुंध सा उठने लगा ......
मूर्ति और हम दोनों उस धुंध के भीतर थे !
उसके बाहर का कुछ दिखाई नहीं दे रहा था और संभवत
ऐसा ही बाहर के लोगों के लिए भी रहा होगा !
कुछ भी उसके आर पार नहीं दिख रहा था .....

देवकी गुरुकुल का ध्यान जारी था ...
उन्होंने अचानक नृत्य करना चालू कर दिया !
नृत्य बेहद उग्र स्वरुप का था !
जैसे प्रहार करते समय देवी का स्वरुप दिखाया जाता
है !!
अत्यंत उग्र मुद्रा में वे नृत्य कर रही थी और मैं एक तरफ
खड़ा हुआ था ।
ऐसा लग रहा था जैसे वे नृत्य करके विभिन्न मुद्राओं के
माध्यम से भगवती को प्रसन्न करने का प्रयास कर रही
हो ....
देवी की प्रतिमा धुंध के भीतर सामने जल रहे दीपक के
प्रकाश में जगमगा रही थी ...

देवी के मुख मंडल में लगा हुआ स्वर्ण पत्र....

उनके वक्ष स्थल पर लगा हुआ स्वर्ण कवच....

उनके पूरे शरीर पर लगा हुआ स्वर्ण....

जगमगाने लगा था ।

उनकी आंखें अब हल्के नीले रंग में प्रकाशित होने लगी ...

वे आंखें जो स्वर्ण की बनी हुई थी उनके भीतर से हल्के नीले रंग का प्रकाश निकल रहा था ।

उस अद्भुत दृश्य को देखकर मैं खड़ा हुआ था ...

तेजस्विता !

चैतन्यता !!

और प्रचंडता भरी हुई वह मूर्ति ......

भगवती भद्रकाली की वह मूर्ति......

ऐसा लग रहा था.....

जैसे अब कुछ बोल पड़ेगी !

अब कुछ कर उठेगी !

इतनी चैतन्यता उस मूर्ति में आ गई थी ।

उसके सामने देवकी गुरुकल विभिन्न मुद्राओं का प्रदर्शन कर रही थीं !

बिजली की तत्परता के साथ वे ऐसी ऐसी मुद्राओं का प्रदर्शन कर रही थी जिसको मैंने आज तक नहीं देखा था ....

उन मुद्राओं में छुपी हुई थी विभिन्न प्रकार की तांत्रिक मुद्राएं...

वह मुद्राएं जो किसी भी इष्ट को सामने आने के लिए बाध्य कर देती है ...

वह मुद्राएं जो यह बताने के लिए पर्याप्त है कि वह साधक योग और साधना की पूर्णता को प्राप्त कर चुका है ॥

और ऐसी ही साधिका थी देवकी !!!!

मैं उनको एकटक देखता खड़ा था ......

अचानक......

वे शांत होकर खड़ी हो गई ! वे एकटक मूर्ति की ओर देख रही थीं ......

उनके शांत होते ही मुझे एहसास हुआ और मेरी नजर उन से हटकर मूर्ति की तरफ गई !

मूर्ति संपूर्ण रूप से सोने के रंग से जगमगा रही थी !

स्वर्ण प्रकाश बिखरा हुआ था......

जैसे सूर्य भूमि पर उतर आया हो !

प्रकाश की किरणें !!

अद्भुत किरणें !!!

अद्भुत ...... जिनकी व्याख्या नहीं हो सकती...... वह बिखर रही थी ।

उनका स्पर्श मेरे शरीर पर हो रहा था तो मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी अनंत ऊर्जा के स्रोत से आप्लावित हो रहा हूं ।

गर्भ गृह का तापमान बढ़ चुका था ...

वह गर्म हो चुका था ...

वे संपूर्ण रश्मियां जो बिखर रही थी वे धीरे-धीरे एकत्रित होकर केवल देवकी गुरुकल के ऊपर केंद्रित हो गई थी .....

और उसके बाद घटित हुआ......

अद्भुत !

अविश्वसनीय !!

अकल्पनीय !!!

असंभव !!!

देवकी गुरुकल का शरीर अब भगवती के समान स्वर्णिम आभा से चमचमा रहा था !

स्वर्णिम किरणें जो भगवती के विग्रह से निकल रही थी ..... वह देवकी गुरुकल के संपूर्ण शरीर को आप्लावित कर चुकी थी ।

धीरे-धीरे उनका शरीर देवी के विग्रह की ओर बढ़ता जा रहा था !

उनका शरीर हवा में उठ चुका था और धीरे-धीरे उस दिव्य विग्रह की ओर बढ़ रहा था......

मेरी आंखें फटी हुई थी ....

आश्चर्य !

महा घोर आश्चर्य !!!

जो दृश्य मैं देख रहा था ...

वह कल्पना से भी परे था !

ऐसा दृश्य जो सिर्फ कथाओं में पढ़ा था !

वह मेरे सामने घटित हो रहा था !!

देवकी गुरुकुल का शरीर उस स्वर्णिम प्रकाश में आबद्ध होता हुआ धीरे-धीरे उस देवी विग्रह की ओर बढ़ता जा रहा था ....

अंततः ....

वह जाकर उस विग्रह में समाहित हो गया !

देवकी गुरुक्कल जीवित अवस्था में भगवती के विग्रह में समाहित हो गई थी ।

उसके साथ रोशनी का एक जबरदस्त धमाका हुआ ।

मुझे ऐसा लगा जैसे उस गर्भ ग्रह में साक्षात सूर्य भगवान प्रकट हो गए हो ...

उसके बाद क्या हुआ ?

मुझे पता नहीं चला ।

उस तीव्रता की वजह से या उस शक्ति की प्रचंडता की वजह से मैं अपने होश खो बैठा......

मैं बेहोश था ....

देवकी गुरुकल के विग्रह मे समाहित होने के साथ-साथ धीरे-धीरे वह प्रकाश क्षीण होता चला गया !

वह धुंध भी छटती चली गई ....

कुछ समय के बाद में पुजारी जब वापस लौटा तो मैं जमीन पर पड़ा हुआ था !

दंडवत मुद्रा में !!!

उसे लगा कि मैं भावावेश में वैसा पड़ा हुआ हूं ।

उसने मुझे उठने के लिए कहा ... लेकिन मैं तो बेहोश था ।

मुझे उठने का होश कहां ?

मैं तो मंत्रमुग्ध था !

मैं तो आत्म विभोर था !!

मैं तो भाव विभोर था ॥

जगत जननी !

सृष्टि की अधिष्ठात्री !

भगवती महामाया के उस दिव्य स्वरूप को देख लेने के आनंद में डूबा हुआ.....

किसी और संसार में निमग्न......

जब पुजारी को कुछ समझ में नहीं आया तो उसने वहां रखे हुए कलश से पानी निकाल कर मेरे ऊपर छोड़ दिया...

जैसे ही वह पानी की बूंदे मेरे ऊपर गिरी मुझे होश आने लगा ...

जब मुझे होश आया तो मैं वापस भगवती के चरणों में साष्टांग दंडवत प्रणाम करता हुआ लेट गया !

आभार व्यक्त करता हुआ !

अपने संपूर्ण देह को...

अपने सर्वस्व को उनके चरणों में समर्पित करता हुआ कि...

सब कुछ तो तेरा है माँ !

मेरा तो कुछ भी नहीं ...

जो तेरा ही है.....

वही मैं तेरे चरणों में समर्पित कर रहा हूं .....

----------समाप्त -----------

॥ श्री गुरु चरणार्पणमस्तु ॥

सस्नेह

अनिल शेखर

BOOKS BY THIS AUTHOR

तांत्रिक अघोरानंद ।

अघोरानंद की अप्सरा ।

अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत

अघोरानंद और तारापीठ की छाया

अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।

अघोरानंद और छाया की माया

अघोरानंद और कमीना प्रेमी

अघोरानंद और महमारण प्रपंच

अघोरानंद और भैरवम भीषणम

अघोरानंद और बौनों की बस्ती

अघोरानंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी